

धीरे बहे दून रे

रुम म बदनी सत्तुति के चित्रण का
महान मानवीय उपन्यास

मिखाइल गोलोखोव

अनुवादक गोपीकृष्ण गोपेन

प्रथम खण्ड



राजकमल प्रकाशन

© १९६५ राजबमल प्रकाशन प्राइवट लिमिटेड दिल्ली ।

मूल्य आठ रुपये

प्रकाशक
राजबमल प्रकाशन प्राइवट लिमिटेड
दिल्ली
मुद्रक
श्री प्रिंटगमन नं० दिल्ली ५

क्रम

भाग १
६ स १३०

भाग २
१३१ स २६८

भाग ३
२७० स ४६४

*Not by the plough is our glorious earth furrowed
Our earth is furrowed by horses' hoofs
And so it is our earth with the heads of Cossacks
Fair is our quiet Don with young widows
Our father the quiet Don blossoms with orphans
And the waves of the quiet Don are filled
with fathers' and mothers' tears.*

*Oh thou our father the quiet Don !
Oh why dost thou our quiet Don so sludgy flow ?
How should I the quiet Don but sludgy flow !
From my depths the cold springs beat
Amid me the quiet Don the white fish leap*

Old Cossack Songs.

Not by the plough is our glorious earth furrowed
Our earth is furrowed by horses' hoofs
And sown is our earth with the heads of Cossacks
Far is our quiet Don with your widows
Our father the quiet Don blossoms with orphans
And the waves of the quiet Don are filled
with fathers' and mothers tears.

Oh thou our father the quiet Don !
Oh why dost thou our quiet Don so sludgy flow ?
How should I the quiet Don but sludgy flow !
From my depths the cold springs bear
Amid me the quiet Don the white fish leap

Old Cossack Songs

मेलेखाव परिवार का काम गाँव के अन्तिम छोर पर था। उत्तर की ओर दारा के बाड़े का फाटक था। फाटक दान की ओर खुलता था। बाड़े के बाएँ पचास फुट लम्बा टाल था। विनारे की खडिया कई स मढी हुई थी। ऊपर की ओर गम्बुक के सीपों का पत्तारा था बाएँ में गोल चिकने परत्यों की जहाँ-तहाँ से टूटी पट्टी थी और इसके नीचे नगी की इस्पाती नीली सतह थी। सहरिया का हवा क थपड़े रह रहकर छेड़ जात था। पूव में बेंतों की टट्टियों वाल खलिहानों के पार हेतमान का चौड़ा रास्ता था चिरायते की भूरी भाडियाँ थीं जानवरों के छुरों में रौंदी जगली यास के हलके भूरे गभिन भाड के चौराह पर खड़ा सलीब था और फिर क्षण-क्षण पर छा जाने और कट जाने वाली धुँध से लिपटा स्टेपी का मदान था। दक्षिण में खडिया की पहाडियों का सिलमिना था। पश्चिम में सड़क थी। सड़क चौक को पार कर चरागाहों की ओर निकलती थी।

पिछली लड़ाई से पहल की सुर्की लड़ाई चल रही थी कि प्रायोक्ती मनखाव नाम का बजड़ाक अपने गाँव का सौटा। सौटा ता अपने साथ एडो से छोटी तक शास में लिपटी एक बीवी लाया। बीवी अपना बहरा सदा ढके रहती। उसकी उजड़ी उजड़ी प्यासी-प्यासी-सी प्राँशों को भूनक घायद ही कभी किसी को मिलती। उसका रेशमी शास अजीब अजीब-सी सुगंधियों से मह-मह करता और शाल के इन्द्रयनुपी

नमूनों को देखकर गाँव की स्त्रियाँ ईर्ष्या से भर उठती। ऊँदी बनाकर लाई गई यह प्रोकोफी के सगे-सम्बन्धियों से पटो-कटी रहती। यह दस प्रोकोफी के पिता बूढ़ भलखोव ने जल्दी ही मडके का हिस्सा बाँट कर दिया और फिर जीवन भर लडके के यहाँ कदम नहीं रखा। अपमान का काँटा उस सदा-मदा सालता रहा।

प्रोकोफी ने सारा प्रबंध जस्दी-जल्नी कर डाला। बट्टइयों से उसने अपनी भोंपड़ी बनवाई। ठोरो के बाड़े की बाह स्वयं लडकी की और शरद के शुरू होते-होते अपनी दखी घुटी विदेगी पत्नी को साथ ले नये घर की ओर चल पड़ा। दुनिया भर के सामानों से जदी बैलगाड़ा घाग घाग चली। क्या बूढ़े क्या बच्चे—सभी लोग गन्धियों में दौड़े चले आए। पुरुष तो होंठों ही-हाँ मुसकराकर रह गए, किन्तु स्त्रियाँ धम्म-बाण बरमाने लगीं। मत्र-कुर्वने कज्जाक लडकों की भीड़ हल्सा गुल्ला करती उन दोना के पीछे ही थी। किन्तु प्रोकोफी अपने घोवरकोट के बटन खोले इस तरह घीरे घीरे घाग बढ़ता रहा, जैसे कि हस को लीको पर चम रहा हो। इस बीच अपनी बड़ी बड़ी कानी-काली हथिनियों में उसने पत्नी की दुबल बसाई बस रथी। सिर पर स्ट्रों का मफद टोप सथा रहा और उसका नीचे दामो के छल्ले इस तरह एँटे रहे जैसे कि दुनिया के सामने गीना तानकर खड़े हों। गालों की हड्डियों के नीचे की गिस्टियाँ फूल-फन और काँप-काँप उठती रहीं और तनी हुई भौंहा के बीच पसीने की बूँदें झनकती रही।

इसके बाद वह फिर कमी गाँव में नजर नहीं आया और कज्जाकों की मभा-समारोहों में भी हिस्सा नहीं लिया। दान के बिनार दन अपने मकान में एकाकी जीवन व्यतीत करता रहा। उसके विषय में अपने-विभिन्न कथाएँ गाँव में फैल गईं। चरागाह की सड़क के पार गया के बट्टइयों को चराने वाले लडकों ने कहा—

एक दिन राम की दिन बन रहा था कि हमने प्रोकोफी को देखा। वह अपनी पत्नी को गोद में लिये तातार टील पर चढ़ा। वहाँ एक पुरानी छत्र छिन्नीली बट्टान के छहारे उभर प्रोकोफी बिठा गया। फिर दोनों ही सामने के स्टेपी मदान के धार-धार टकटकी बाँधकर देखते रहे और

तब तक दलत रहे जब तक कि घोंघरा न हो गया । उसक बाद प्राकोफ्री उठा उसने अपनी पत्नी को भेड़ की खाल स ढका और घर का लौट आया ।

गाँव-का-गाँव घटकलें लगान सगा कि भाखिर प्रोकोफ्री ऐसा विचित्र व्यवहार करता क्यों है । घोरतें तो इस पचायत म इस तरह झुबनी कि एक-दूमरे की जुए बीनना तक भूल जातीं । प्राकोफ्री की पत्नी क विषय में भा तरह-तरह की घड़वाह फन गई । कुछ लोग कहत कि उसके रूप म जादू है घी कुछ कहते कि नहीं ऐसा कुछ कहा है । भाखिरकार एक दिन यह भेद भी खुला । हुआ यह कि एक फौजी का मत्स्यन्त साहना पत्नी मावरा सभोर लने क बहान दौड़ो-दौड़ो प्रोकोफ्री क घर गई । प्राकोफ्री खुमार लाने क लिए लठकर कोठरी म गया कि मावरा ने उसकी पत्नी पर नजर डाली तो खुला कि प्रोकोफ्री का तुर्की की जोत भवानक है ।

थोड़ी दर बाद मावरा का तमतमाया चहरा पतलो-सी गली म दाता । वहाँ बड़े घोरतों की भीड़ जुटाकर प्रोकोफ्री की पत्नी का मजाक उठान लगी—

‘न जान उसने उसम ऐसा क्या दाता ? यह भा कोई भीरम है । जानवर है जानवर । उसत कही सुबमूरत ता हमार यहाँ की ब लठकियाँ हैं बिनक रग घाटे ढक हुए हैं । मन्नाह झूठ न बुलवाए बड़ी-बड़ी काली-काली घालि शतान की तरह पकमक करनी है । भव तो पूरे दिन है ।

पूर दिन है ? त्विमाँ भाइय से बाली ।

‘मैं कोई झुधमूँही बच्चो ता नही हूँ । तीन-तीन तो मिन खद जने हैं ।

‘बहरा कैसा है ?

‘उसका बेहरा ? पाला—घालों म कमक नहा । घबनकी अगह सायद पमल नही घाना । और नई वान मतताऊँ बह पात्रमा पहनतो है पात्रमा—प्राकोफ्री का पात्रमा ।

‘नहीं घोरतों की सस नीचे-की-नाथ घोर ऊपर-का-ऊपर रहे गई ।

मैं तो गुद धखकर घाई हूँ बस यह है कि उसमे घारियाँ नहा हैं । वन प्रोकोफी का रोजमर्रा के पहनने का पाजामा हागा । घोर हा वह नम्बी कुरती भी पहनती है । उस उधाड दा तो भोजों म दुमा पाजामा निकल घाए । मरा तो उन देखते ही खून टण्डा पड गया ।

इसके बाद ता गाँव म सब यही कहते कि प्रोकाफी की स्त्री डाइन है । घस्ताखोव-परिवार प्राकोफी की बिसकुल बगल म रहता था । घस्ताखोव के लडके की बहू कसम खाती हुई बोली यभी उस दिन मेने देखा कि प्रोकोफी की घोरत नगे पाँव सिर के बाल गाले बँठी हमारी गाय दुह रही है । बस उसके बाद न ही गाय के घन सिकुडने सगे तो बच्चे की मृट्टी क बराबर रह गए । दूध तो फिर गाय ने लिया ही नहीं घोर थोडे ही दिनों बाद मर भी गई ।

उस साम जानवरों की मौतें गैर-मापूली तीर पर हुद्द । हर दिन मरी हुई गायों घोर बछड़ों के घड दोन के बछार म नउर घाए । फिर घोडा की वारी घाई । गाँव की घरागाह म घरते घरते घोडा के भण्ड-क भुण्ड घायब होने लग । गाँव की गमी-गली म बदनामी पक्ष लगाकर उडने लगी ।

गक दिन बज्जाकों न मिलकर एक सभा की घोर फिर सब-के-सब प्रोकोफी क घर गय । प्रोकोफी बाहर निकसकर सीड़िया पर घाया घोर घमिघादन म भुका— लायन बुजर्गो क्या हुकम है ?

कोई कुछ नहीं बोला । भीड सीड़ियो की तरफ बढ़ी । वहाँ घाराव के नने क घूर एक बूढ न थीलुबन कहा घपनी डाइन का घसीटकर घर के बाहर ला । हम साग उसस मवान जयाब करेंगे

वह मुलते ही प्रोकाफी घन्दर की घार भागा बिल्लु कुछ लोगों ने उस बीच में ही पकड लिया । एक हट्ट-कट्ट जूगनिया नाम से भुसाए जान वाले बरजाक ने उसका सिर दीवार स मझा दिया घोर बोला— हुगामा न कर । मार घाराबा करन की जरूरत नहीं । हम तुम्हे हाव नहीं मगायेंगे लकिन तरी घोरत की छोडेंग नहीं उस गोल्बर जमीन में गाड देंग । सारे गाँव क जानवर मरें इसमे गो यही बहतर है कि उस ही खतम कर दिया जाए । देख मँह न खुने नहीं तो दीवार से

टकराकर तरा मिर चूर-चूर कर डालूया ।

डाइन का खीचकर प्रहात म न आभा । मीनियों पर लूठ सोण चौक । प्राकोफ्री को रजोमेट क उसन अपन एक साथी न हा उस तुर्की औरत के सिर क बास एक हाथ में कम घोर दूमर म बिल्लाहट को दशन क लिए उसका मुँह दबाया । या उस बरमाती म घसीटना हुआ लाया और लाकर उस भीड़ क नदमों में डाल दिया । तागों क शार-गुल का घोरती एक पनसी-या चौख निकसी ।

प्रोकोफ्री ने कोई भावी दजन कज्जाकों का झुका देकर एक धार कर दिया अपन हूमा अन्दर गया और दाशर पर नटकी नटार का निय दौड़ता हुआ बाहर आया । कज्जाक एक-दूमर पर गिरत-पड़ते घर म बहर भागे । प्राकाफ्री चमचमाता हुई नटार का अपन सिर क चारों ओर मनमनाता मोड़ियों क नीच आया । भीड़ पाछे श्टो और भाग प्रहात म जहाँ-तहाँ बिखर गए ।

लूगनिया गरीर का भारा था । वह खलिहान तक पहुँचत पहुँचत प्राकाफ्री क हाथ आ गया । प्रोकोफ्री न नटार क एक तिरधे वार स बाएँ कंध म कमर तक उसका गरीर एक का दा कर दिया । बाह क वेंतों को घोरती हुई भीड़ खलिहान पार कर स्टेपी की धार भागा ।

सगभग भाघे घटे बाद भीड़ न फिर हिम्मत बाँधी घोर लोग प्राकाफ्री क फ्राम म पहुँचे । दा लोग बड़ी सावधानी स रास्त नी तरफ बह । बावर्चीखान की ल्योडी पर खून म हूवी प्राकाफ्री की पत्नी पड़ी मिली । उसका मिर अजीब-सी हालत में पीछे की तरफ भून रहा था । हाँड पीडा म एँठ रहे प और जवान मुँह म बाहर सटप रही था । प्राकोफ्री का सिर हिचकियों क कारण रह रहकर काँप रहा था । वह बिलखत हुए, एक छोटी-सी गेंद-असी चीज को गून्प दृष्टि स निहारत हुए नड की खान में लपट रहा था । बरषा समय से पहल नी पना हो गया था ।

प्रोकोफ्री का पत्नी उसी दिन गाम को मर गई । उसका बूने माँ को बरष पर दया हा आई और उसने बच्च क सामन-पानन का भार अपने ऊपर ले लिया । उसक शरीर पर चाकर-गुक्नी का प्लास्टर चनाया

मैं तो खुद देखकर घाई हूँ बस यह है कि उसमें घारियाँ नहीं हैं। यह प्रोकोफी का रोजमर्रा का पहनने का पाजामा हागा। घीर ही यह लम्बी कुरती भी पहनता है। उसे उपाह दो ती मोर्जों म ठुमा पाजामा निकल घाए। मरत तो उम दखते ही खून छन्दा पड गया।

इसके बाद तो गाँव म सब यही कहत कि प्राकाफी की स्त्री डाइन है। अस्ताखोव परिवार प्राकोफी की बिल्कुल बगल म रहता था। अस्ताखोव के लडक की बहू कसम खाती हुई बोली ममी उस दिन मैंने दखा कि प्रोकोफी की घीरत नग पाँव सिर के घाल खोले बठी हमारी गाय दुह रही है। बस उसक बाद म ही गाय क थन सिकुडने सगे तो बच्चे की मुठ्ठी के बराबर रह गण। दूध मो फिर गाय ने दिया ही नहीं घीर घोडे ही दिना बाद मर भी गई।

उस साल जानवरों की मौतें घर-भाभूसी तीर पर हुड। हर दिन मरी हुई गायों घीर बख्खा के घड दोन क बख्खार मे नखर घाए। फिर घोठों की वारी घाई। गाँव की बरागाह म खरते खरते घाडों के झुण्ड-क झुण्ड घायब होने सगे। गाँव की मनी-मसी म बदनामी पल मगाकर उठने लगी।

एक दिन बज्जाकों न मिनकर एक सभा की घीर फिर सब-के-सब प्रोकोफी के घर गये। प्रोकोफी बाहर निकलकर सीढ़ियों पर घाया घीर घभिवादन म मुका— सायक बुजुर्गों क्या हुकम है ?

कोई कुछ नहीं खाला। भीड सीढ़ियों की तरफ बढा। वही धराय क नये म खूर एक बूढ न खीलकर कहा 'अपनी डाइन का घधीटकर घर के बाहर सा। हम साल उससे सवाल जमाव करौं

यह सुनने ही प्रोकाफी अन्दर की घीर भागा किन्तु कुछ सागो ने उसे बीध म ही पकड लिया। एक हट्ट-कट्ट भूगनिया नाम स बुलाए जाने खान करवाक ने उसका सिर दीवार स सडा दिया घीर खाला— 'हगामा न कर। गार गरावा करन की उरुरत नहीं। हम तुम्हे हाप नहीं सगायेंगे लेकिन तेरी घीरत की छाडेग नहीं उस खोन्कर अमीन में गड देग। सारे गाँव के जानवर मरें इससे ता यही बेहतर है कि उसे ही खतम कर दिया जाए। देख मँह न खूने नहीं ता दीवार से

टकराकर सरा मिर चूर चूर कर डालूंगा ।

डाइन का खाचकर प्रहात म ल घामा । मात्रियों पर खडे योग घोष । प्राकौफ्री को रजामेंट क उसरु अपन एक माधी न हा उम तुर्की औरत क सिर क बाल एक हाथ म कम घोर दूसर म विल्लाह्न को दबाने क लिए उसका मुंह दबाया । यों उस बरमाती म घसीटना हुमा लाया और ताकर उस भीड क बदमा म डाल दिया । सार्गो के दार-गुल का चीरती एक पतली-सा चीख निकली ।

प्रोकौफ्री ने कोई माधी दजन करवाकों का भ्रुका देकर एक भार कर दिया ऋपटना हुमा अन्तर गया और अवार पर चटकी बगार को लिय दीप्ता हुमा बाहर घाया । करवाक एक-दूसर पर गिरत-पडते पर म बाहर भागे । प्राकाफी चमकमाती हुई कटार को अपने सिर क चारा भार मनसनाता सीदियों म नीब घाया । भीड पीछ हटी और लाग प्रहात में जह्नी-सही बिखर गए ।

लूगनिया शरीर का भारी था । वह खतिहान तक पहुँचत पहुँचते प्राकाफी के हाथ भा गया । प्रोकौफ्री ने कटार क एक तिगछ बार स बाएँ कच मे कमर तक उसका शरीर एक का दो कर दिया । बाड क बँतों को चीरती हुई भीड खतिहान पार कर स्तपी को घोर भागा ।

लगभग आध घट बाद भीड न फिर हिम्मत बांधी और लोग प्रोकौफ्री क फाम में पहुँचे । दा लोग बड़ी सावधानी से रास्त की तरफ बढ । बावर्चोखान की बंदोरी पर मून म डूबी प्राकाफी की पत्नी पडी मिली । उसका मिर अजीब-सी हालत में पीछ की तरफ भूज रहा था । हाँठ पीछा स ऐँठ रहे थ और जवान मुँह म बाहर लटक रही थी । प्राकौफ्री का सिर हिचकिचों क कारण रह रहकर काँप रहा था । वह विलमत हुए, एक छोटी-सी रेंद-जसी चीज को गूय दृष्टि स निगारत हुए नद की छान म लपट रहा था । बच्चा समय स पहल ही पदा हो गया था ।

प्राकाफी की पत्नी उसी दिन शाम को मर गई । उसकी बूबी माँ को बन्ध पर दया हा घाई और उमन बन्ध क तालन-यालन का भार अपने ऊपर स लिया । उमक शरीर पर बाकर-बुकनी का प्लास्टर चढ़ाया

गया धीरे उम षोढी का दूध पिनाया गया । एक मन्तीने वाक कही जाकर विश्वास हुआ कि बासक जो जाएगा । अब सावन देखने म तुर्का सा लगते । उम बच्च को गिरज में न जाया गया और उसका बपतिस्था कराया गया । नाम बाबा के नाम पर रखा गया—पन्तेला ।

प्रोकोफी निर्वासन का दण्ड भोगकर बारह बष बाद रूमो निवास से सैस गाँव को लौटा ता तराणी हुई ललछरी दाँतो म जहाँ-तहाँ सफा बाल नखर भाए । इस रूप म वह बज्जाक तो जस लगा ही ननी । अब उसने अपने बटे को अपनी माँ स बापस निया धीरे अपने काम म आ बसा ।

पन्तेला बडा हुआ तो उमका रग धीरे ढक गया । स्वभाव ऐसा कि उस पर हुकम किसी का न चल । नाक-नङ्गा धीरे गठन ऐसी कि उस देखा तो उमकी माँ को साद भाए । प्रोकोफी ने उसकी शादी पढास व एक बज्जाक स कर दी ।

इसव वाक स तुर्की खून बज्जाक खून म घुनने मिलन लगा । इस प्रकार मुवासी नाकोवासा दखन-मुनने म बहुत ही मुत्तर सोर्गो का मेनेखोव-परिवार गाँव म अस्तित्व म आया । गाँववाप इस परिवार के सोर्गो को तुक कहने लगे ।

प्रोकोफी की मृत्यु हुई तो पन्तेमी न पाप सम्हाल निया । उसने अपना घर फिर से छवाया फ्राम में एक एकड जमीन धीरे बढ़ाई नये रोड बनवाये धीरे रोहे की खातर की छतवाली एक खसी तयार करवाई । यही नहा टोन का काम करन वाल कारीगर से उसने कच्चे साहे की पत्तियों की दो मौसम उजागरियाँ बनवाई धीरे एक दिन स्वय ही जाकर खसी की छत पर वह उहें जमा आया । होते होते मेनेखोव क मेत धाँगन की शाभा बढ़ गई । फ्राम हर दृष्टि से पूण धीरे भरा-पूरा लगने लगा ।

ज्यों-ज्यों उम बढ़ी पन्तेली प्रोकोफियविष गठीला धीरे भटपटा होता गया । वह चौडा गया षोठ कुछ कुषी किन्तु बृद्ध होने पर भी हट्टा-बट्टा रहा—हट्टियाँ कहा एक नही । हाँ जवानी क दिनों में शाही फौजों के प्रगान क मिलसिदे में टाँग तोड मने के कारण वह हरदिस रेस म लँगदाता अब तक था । बस बाएँ नान मे खाँदी की अथ पाद बानी वह अब

भी पहनसा और उसके सिर तथा दाढ़ी के बाल अब भी काले सगत और चमकते । गुस्ता उसका खराब होता । गुस्म मे वह अपना भावे से बाहर हा जाता । इसका कुप्रभाव उसकी पत्नी पर पड़ा । कभी वह जीता जागता हुल्ल थी पर आज समय स पहले बूढ़ी लगने लगी थी और उसके चेहरे पर झुर्रियो ने अपना जाला-सा बुन लिया था ।

पन्तेसी के दो लडके हुए । बडा प्योन अपनी माँ को पढा—भारी भरकम उठी हुई नाम हलके भूरे बाम पीये रग की हलकी झड़ मारती भाँखें । छोटा मिगोरी अपने पिता को गया—उम्र म छ साल छोटा होने पर भी प्योन से भावा हाप सम्बा पिता की तरह बाणों-सी नाम नीली पुतलियों वाली तिरछी भाँखें चहरे की हड्डियाँ नुकीली भरा हुआ चहरा । मिगोरी अपने पिता की ही भाँति कुछ भागे की घोर झुककर चलता यहाँ तक कि उसकी मुसकान भी पिता की दुलारी देखने में सुंदर पन्तेसी के एक लडकी भी थी । पिता की दुलारी देखने में सुंदर नाम दूग्या—ऊद सम्बा बदन धरहरा भाँखें बडी । उसकी पुत्रवधू प्योन की पत्नी का नाम दारिया था । उसके एक नन्हा-मुन्ना सा बच्चा भी था ।

यह था पन्तेसी का पूरा परिवार ।

२

तडक के मुटपुटे के घासमान म तारे अब भी जहाँ-तहाँ म झाँक रहे थे । बादलों क नीच से हवा चली आ रही थी । दोन के ऊपर धुप लहरें ले रही खडिया की एक पहाडी के ढाल पर जमा हो रही और फनहीन भूरे साँप की तरह नाने-नालियों की घोर रँगती जा रही थी । नदी का बायाँ किनारा रेत का पमारा जगल क पीछे के तान-तलवा बँतों क दनदनी क्षेत्र और मोम से नहाए पेड सुबह क उजाले म लौ-सी दे रहे थे । सित्तज के पार मूय न जमुहाई ली किन्तु दसन नहीं लिए । पर में सबसे पहले पन्तेसी प्रोकोफियविच की नींद खुली । कसी के काम वाली कमीज के बटन बन्द करता वह बाहर निकलकर सीडियों पर भाया । प्रदात की पास रुपहली घोस स डकी दीखी । उसने पाँजुमों को

सड़क पर निकाला। दारिया दूध दुहन सामने से गुजरी ता उसका नगे उजले पैरों की चिड़ियों पर धीमे छिड़क उठी। उसका पीछे धुंधला देता सा सपाट बादल-सा उठता रहा। पंन्तला प्रोकाक्रियत्रिच ने कुछ गगा। तब दारिया के पाँवों में दब गई घास की पत्तियाँ का गिर उठाते दखा धीरे सोने के कमरे में नोट आया।

सपाट झुली चिड़की से सामने का बाग दिखलाई दे रहा था। चिड़की के दामे पर फूलती हुई चरी के पैरों की साल पत्तुडियाँ पड़ी हुई थी। प्रिगोरी पीठ के बल पड़ा सो रहा था। एक हाथ पाटी पर भूल रहा था।

प्रिगोरी चलाता है मछली पकड़ने? पन्तेला ने पूछा।

क्या? प्रिगोरी ने धीमे स्वर में पूछा और एक टाँग नीचे लटका दी।

जलो धाब धाम तक मछली पकड़ेंगे।' पंन्तलो बोला।

नाक में गहरी साँस ल प्रिगोरी ने खूटी पर सटका रोज पहनन का पाजामा उतारकर पहना सफेद ऊनी मोझे चटाय और दबी हुई एडियो को सीधा करले हुए धीरे धीरे अपने सटिस परा में डाल।

मैं न मछली का चारा उखाता है कि नहीं? पिता के पीछे-पीछे धरसातो में आते हुए प्रिगोरी ने भारी स्वर में पूछा।

हाँ उवाच दिया है। तू नाव पर चल मैं आया एक मिनट में।

बूढ़ ने ज़ोरों से महकती उबली राई जग में भरौ गिरे हुए दाने सावधानी से उठाए और सगडावा हुआ नदी के किनारे की ओर चल दिया।

किन तरफ चला जाए? प्रिगोरी ने पूछा।

बाएँ किनारे की तरफ। अभी उस दिन जिस सड़क का घास-घास यथ से भाज भी वही किस्मत आज़माएँगे।

अपने पीछे के हिस्से में उमान का रगड़ते हुए नाव न किनारा छोड़ा और सड़कों पर बढ़ चली। धारा हिंसकीर दती उमटने की धमकियाँ देनी उस अपन माप बहा ल चली। प्रिगोरी ने डाँड नहीं माधे कथा पतवार सम्हानी।

आ क्यों नहीं रहे हा? पिता ने पूछा।

बीच धार म ता भा जाएँ पहल ।

सास बड़ी धारा का काटते हुए नाव बाए तट का धार मुड़ी । उस पार स घाती मुर्गे की कुन्डू कू उनक बाना म पटी । पानी क बाहर उमरी कनरीली काली घट्टान की सर्रोचती नाव नीचे क ताल म भा गई । तट स भाई चालीस फुट दूर हूवे हुए एल्म वृक्ष की ऐंठी हुई डालियाँ पानी से मुक्त दीखीं । पेड़ के चारो ओर फन की भवरें बचनी स नाव ओर चक्कर काट रही था ।

मैं चारा पानी मे फँकता हू तब तक तुम बसी ठीक करो । धीमे स पल्लवी वाला । जग क भाप छोड़ते मुह म हाथ डाला ओर पानी क ऊपर राई छिउरा दा । भावाज हुई गिब ! प्रिगोरी ने फूल हुए दाने हूक में फसाए ओर मुसकरा उठा ।

बली भाओ सुनती हो छोटा मछलियो तुम भी ओर बड़ी मछलियो तुम भी

पानी म बसी की डोगी क चक्रपटे डारी कड़ीपटो ओर फिर डीली हो गई । प्रिगोरी ने बसी के सिरे पर अपना पाँव जमाया ओर होगियारी स इयर उघर थली टटोली ।

पापा आज तकदीर साम नहीं देगी । चाँदनी इन दिना घटाव पर हे । वह बोना ।

दियामलाई साया है ?

हाँ ।

जरा जला

भूटा घुर्पा उठाने लगा । उसने एल्म-वृक्ष की चाटी क पीछ ठिठने सूरज पर एक नजर डाली । बोला न जाने कव काप' फन जाए कभी तो घोंघियारी रातों में भी हाथ सग जाता है ।

'सगता है कि छोटी मछलियाँ धार मे मुह लगा रही हैं ।

पानी क थपेड नाव क दोनो ओर खोर-खोर स लगते रहे । अपनी चौकी ऐंठती पूँछ से पानी मचती कराहती हुई एक धार फुटी काप मछली

सड़क पर निकाला । दारिया दूध दुहने सामने स मुजरी सा उसक नग उजम परों की निहलिया पर भास दिहक उठी । उसक पीछे घुमा देता-सा सगट बादल-सा उठता रहा । पँतनी प्रोकोफियविच न कुछ धापा तब दारिया के पर्वों ने दब गई घास की पत्तियों का तिर उठात देखा और सोने के कमरे में लौट आया ।

सपाट खुली गिडकी से सामन का धाग दिखलाई दे रहा था । खिडकी के दासे पर फूलती हुई धरी के पेटो की साल पलुडियाँ पड़ी हुई थी । प्रिगोरी पीठक बस पढा सो रहा था । एक हाथ पाटा पर भूल रहा था ।

प्रिगोरी चलता है मछली पकडन ? पत्तेला ने पूछा ।

क्या ? प्रिगोरी ने धीमे स्वर में पूछा और एक टाँग नीचे सटका दी ।

चलो भाब गाम तक मछली पकड़ेंगे ।' पँतनी बोला ।

माथ से गहरी साँस ल प्रिगोरी ने खूँटी पर लटका रोक पहलन का पाजामा उतारकर पहना । सफ़द ऊनी माब चढाय और दबी हुई एडिया को सीधा करते हुए धीरे धीरे अपने सडिभ परों में डाल ।

माँ ने मछला का चारा उवाला है कि नहा ? पिता के पीछ-पीछ दरसाठी में भासे हुए प्रिगोरी न भारी स्वर में पूछा ।

हाँ उवाल लिया है । तू नाथ पर चल मैं आया एक मिनट में ।

बूढ़े ने जोरा स महकती उबसी राई जग में भरी गिर हुए दाने सावधानी से उठाये और सगडाला हुआ नदी के किनारे की ओर चल लिया ।

किम तरफ चला जाए ? प्रिगोरी ने पूछा ।

काल किनारे की तरफ । अभी उम दिन जिस सडु का घास पास बडे व धाब भी वहीं निस्पन आइमाएँगे ।

अपने पीछे के हिस्सा का जमोन का रगडते हुए नाथ में किनारा छोडा और सहरों पर बह चली । धारा हिमकोरे देती उसटने की धमकियाँ देनी उम अपने साथ बहा में चली । प्रिगोरी न लौट नहा माथ पढा पनवार सम्हामी ।

मे क्यों नहीं रहे हो ? पिता ने पूछा ।

‘बीच धार म ता भा जाए पहल ।

छास बढी धारा वा फाटते हुए नाव वाएँ तट वा भीर मुढी । उस पार स धातो मुगें की कुन्डू-कूँ उनक बानों म पडी । पानी के बाहर उभरी कनरीली काली चट्टान की सराबरी नाव नोचे क ताल म भा गई । तट स कोई घानास फुट दूर दूब दूब एल्म वृक्ष की ऐंठी हुई छालियाँ पानी से मुक्त दीखा । पेड़ क धारों भीर फेन की भवरें बचनी स नाव भीर बचकर काट रही थी ।

मैं धारा पानी मे फेंकता हू तब तब तुम बसी ठीक करो । धीमे स पैन्तली बाना । जग क भाप छोडते मुह म हाथ डाला भीर पानी ने ऊपर राई छिनरा टा । भावाज हुई शिक' प्रिगोरी ने फूल हुए दाने दूब में फेंसाए भीर मुसकरा उठा ।

बली धामो सुनती हो छोटा मछलिया तुम भी भीर बढी मछलिया, तुम भी

पानी में बसी का डारो क चक्कपड डारो कडोपडी भीर फिर डोली हो गई । प्रिगोरी ने बसी के सिरे पर अपनी पाँव जमाया भीर होशियारी स इधर उधर थला टटोली ।

“पापा भाज तकडीर साथ नहा देगी । चाँदनी इन दिनों घटाव पर है । यह बोला ।

‘नियामलाई लाया है ?

‘हाँ ।

‘जरा जला

बूझा धुमाँ उडाने लगा । उसने एल्म-वृक्ष की धागों के पीछे ठिठके गुर्रम पर एक नजर डाला । बाला न जाने कब काप' फेंव जाए कभी तो धंधियारी राता म भी हाथ लग जाती है ।

‘सगता है कि छोटी मछलियाँ धारे म मूँह लगा रही हैं ।

पानी के चक्कपड नाव के दोनों धार जोर-जोर स लगते रह । अपनी चौड़ी ऐंठतो पूँछ से पानी मचती कराहता हुई एक धार फुटी काप मछली

उछलकर ऊपर भाई । भाग नाव भर म फन गया । बाप की चमक क्या थी मानो मछली रतनारे तबि म डबी हो ।

अब जरा ठहर ! यह से भोगी हुई दाही पाछकर पन्तेली बोला । दूब हुए वृष की साखाओ घौर नगी डालिया क बीच दो बाप एक साथ उछलकर ऊपर भाई । तीमरी जरा छोटी हवा म घौर किनारों के पास श्री पानी म इस तरह तरने लगी अब कि हाथ न आने की जिव ठान बेठी हो ।

प्रिगोरी बेचनी स सिगरेट का गोला सिरा खजाने लगा । कुहरे से ठका मूय अभी घाघा ही निकला था । पन्तेली ने बच हुए घारे को छित राया उदासी स होंठ सिकोड़े घौर बभी क गतिहीन सिरे की एकटक निहारने लगा ।

प्रिगोरी ने सिगरेट का बचा खुजा शिस्मा पानी म फेंक दिया घौर क्रोध म भरकर उसका हवा में उटना देखता रहा । मन ही मन पिता का क्रोशता रहा । उसने उसे इतनी जल्दी जो उठा दिया था । खाली पेट सिगरेट पीने से उसका मुँह खराब हो गया घौर उसस मूघर बे जम हुए बालों की-सी बास घाने लगी । वह झुककर एक घूलू पानी मन को हुआ ही था कि बसो के सिरे पर हल्की-सी हरकत हुई घौर वह घीरे घारे घूबने लगी ।

‘खाव सो !’ घूरे न साँस थी ।

प्रिगोरी ने उत्तजना म यमी कमबर पकड़ ली किन्तु वह धनुषाकार हो गई घौर उसका सिरा पानी में खला गया ।

पकड़े रहो ! नाव की किनारे से बकेन पन्तेली न सम्बी साँस लेते हुए रहा ।

प्रिगोरी ने बसो ऊपर उठानी चाही पर मछली भारी थी इसलिये वंसा धरमराकर टूट गई । प्रिगोरी भडखटा गया घौर गिरते गिरते बचा ।

‘बस का तरह जोरदार है पिता न ताज घारे म कटिया फेंमाते हुए कहा नेकिन कोणिस बकार गई । प्रिगोरी न हँसत हुए यमी म नया मूत बाँधा घौर उम पानी में फेंका । परन्तु मीमानव तक पहुँचा ही था

कि बंसी का सिरा भुक गया ।

'मछली क्या है शतान है' वह बाला । मछली सध नहीं पा रही थी और बीच धार म जाने का प्रयत्न कर रही थी ।

बसी खींचने स धार बीच स फट गई और उसके पीछे हरे पानी का दीवार सी बन गई । घपनी छोटी माटी उँगलियों म पन्तसी ने बलर की मूठ याम ली ।

'देखना मछली कही बसी न ताड द ।

चिन्ता न करो ।

इम बीच एक दही लाल पीली काप ऊपर उछली और पूँछ फटकारती भाग उठाती फिर सहरो म गोता लगा गई ।

मछली बडा जार लगा रही है । मेरा ता हाथ ही बटा जा रहा है नहीं तुम रहने दो ।

'पकड़े रहो प्रीणा । पिता न चीखकर कहा ।

मैं पकड़े हुए हूँ ।

रेखा कही मछली नाव क नीचे न सरक जाए ।

प्रिगोरी ने साँस खींचकर काप की नाव की तरफ खींचा । बूड ने मटके से पानी उलीचने वाला बलर बाहर किया किन्तु काप न घपनी भाखिरा ताकत लगाई और पाना में पठी ।

'इमका सिर ऊपर उठाओ ताकि थाड़ी हवा मुंह म चली जाएगी । बस इसके बाद ठही पठ जाएगी ।' पन्तेसी ने आदेश भरे स्वर म कहा ।

यकान से घूर हुई मछली का प्रिगोरी न एक धार फिर नाथ की ओर खींचा । वह मुंह फाड़े सहरो पर उतराती रही नाक नाव क ऊपर के ठबड-खावड हिस्सों स रगड खाती रही और उसक नारगी मुनहर सुफने मिलमिलाते रह ।

खरम हा गई । बलर क सहारे मछली को ऊपर उठात हुए पन्तेली बोला ।

काप-चटे आधा घटे तक बठ रहे और काप ने उछलना बन्द कर लिया ।

बसा सपट लो घाब का शिकार हो चुका ।' घन्ट म बूढ़े ने कहा ।

प्रिगोरी ने नाव किनारे म धागे की धार बन्वाई और नाव भेत समय अनुमान लगाया कि पिता क होंठों पर कोर् वात धा धाकर लोट जाती है। पर पन्तसी चुपचाप बठा पहाड़ी क धाँचस में बसी हुई भोपड़ियो की दस्ताना रहा।

प्रिगोरी मुना उमन घोर की गार अपने पाँव क नीच खीचा और सन्निध स्वर म कहना प्रारम्भ किया मैं देखता हूँ कि तुम और पक्षीनिया घस्ताखोवा

यह मुनते ही प्रिगोरी न नीचे से ऊपर तर जाल हो मुँह फेर लिया।

मैं धेताए देता हूँ। बूँ के स्वर म धव क्रोध घुन गया था—
‘स्त्रीपान हमारा पड़ोसी है और मैं तुम्हें उसकी घोरत के साथ छुट लेने नहा दूँगा। इस तरह की खीच से कभी भी लूफान खडा हो सकता है। मैं तुम्हें पहले स सबरदार किय दता हूँ। धव कभी मैंने तुम्हें उमक साथ देखा तो खाल उधड़कर रब दूँगा।

पन्तेशी ने अपनी गाँठोंवाली मुट्ठी कसी घोर धाँखें दबाकर बटे की धार देखने लगा। बटे के चेहर पर खून छलछला धाया।

यह सब भूठ है! प्रिगोरी मुनमुनाया और पिता की नाव के निसछरे सिरे की घोर देखने लगा।

चुप रहो! पिता खीखा।

मोग बकते हैं ता

धकवास न पर कुत्त का बच्चा!

प्रिगोरी पनवारों की घोर झुक गया। नाव उछल उछलकर धागे बढ़ती रही। दोनों मँह मिये रहे। तट के समीप धाते ही पिता ने कहा ‘भेरी बात का खयाल रह धाज स तेरा रात का बाहर निक्कना बंद घहाते के बाहर कदम न पड़े।

प्रिगोरी चुप रहा। नाव किनार पहुँची ता घोसा मछला क्या घोरतों की दे दूँ?

‘नही म जाकर देष धा। बूँने ने स्वर म धामलमा साकर कहा ‘जा मिन उसस अपने सिण विगरेट वगरह खरीद ता।

प्रिगोरी होट खयाता हुआ पिता क पीछ बन्ता गया। उमकी क्रोध

स भरी घाँखें बूट की सापटो छत्ता रण । उसन मन ही-मन मोचा—
‘चाह जा करो चाह तो मर पर बाट दा पर मैं रात का तो बाहर
जाऊँगा ही ।

घर पहुँचन पर उमने मछना को सावधानी से घोमा । उसक नयुनो
में एक छड़ी फँसाई और उन बचन क लिए चल पटा ।

फाम क फाटक पर ही उसकी भेंट अपने पुरान मित्र मीत्का कोरनूब
स हो गई । मीत्का अपनी चाँदी जडा पत्नी म खिलवाड करता बहसकदमी
कर रहा था । उसकी घाँखें पीसी और गोल थीं । घाँखों क तार बिल्ली
की घाँखो क तारों की तरह लम्ब थे । इसत भादमी कमबधीदा और
चरमबाज माजूम होता था ।

“कहाँ चल मछली लकर ? मीत्का ने पूछा ।

“भाज ही पकड़ी है । माखाव क हाथों बचने जा रहा हूँ ।

मीत्का न एक नजर म ही मछली क बचन का अनुमान लगा लिया
बोला ‘पन्द्रह पाठण्ड हागा ।

साठे पन्द्रह पाठण्ड है । हमने तराजू पर तोली है ।’

मुझे माय ल चलो मैं मास भाय करूँगा । मात्का न प्रस्ताव रखा ।

“बसा ।

और मुझ क्या मिलेगा ?

‘डरो नहीं । इस बात का लकर भगडा नही हागा । प्रिगाग न
हसकर कहा ।

गिरज की प्रार्थना अभी अभी समाप्त हुई थी । गाँव क साग लौट रह
थे । तानों गामिल बाधु लम्ब डग भरत हुए अगल-बगल चल धा रहे थे ।
एक मुजाहीन धलेवसी उनम सबसे बडा था और बीचम चल रहा था ।
जोजी टपूनि क कड़े कॉलर क कारण उसकी गदन सीधा रहती । घुघ
राल वाला वाली नुकीला दाड़ी कभी इधर तो कभी उधर को निकली
नजर आती । बायी घाँख रह रहकर भयक उठती । बात यह है कि बहुत
बय पहले निगानेवाड़ी करत समय हाथ की बन्दूक फट गई थी और साहे
का एक टुकडा उछलकर गाल म घुस गया था । तब से ही उसकी घाँख
समय असमय निरन्तर ही भपकती रहती थी । सभी से गाल के धार-धार

प्रिगोरी न नाव किनारे स घामे की धार बढ़ाई और नाव मते समय अनुमान लगाया कि पिता के होंठों पर कोई बात या धाकर छोट जाती है। पर पल्लवी चुपचाप बठा पहानी व शीतल में बसी हुई भोपड़ियों को दफना रखा।

प्रिगोरी मुनो उमन बोर की गति धपन पाँव व नीचे सीधी और सदिग्ध स्वर म कहना प्रारम्भ किया मैं दफता हू कि तुम और प्रकसीनिया घस्ताओवा

यह सुनते हा प्रिगोरी न नीचे ग ऊपर तक साल हो मँह फेर लिया।

मैं चेताए देना हूँ। बूढ़ के स्वर म ध्रुव क्रोध घुल गया था—

स्तीपान हमारा पडासी है और मैं तुम्हें उसकी औरत क साथ छूट लेने नंगा दूंगा। हम तरह की चीज स कभी भी लूकान खडा हा सकता है। मैं तुम्हें पहले स खबरदार किय दता हूँ। ध्रुव कभी मैंने तुम्ह उमके साथ देखा तो शाम उधड़कर रस दूंगा।

पल्लवी ने धपनी गँठोंवाली मुट्ठी बसी और शीतल दवाकर घटे की धार देगने लगा। घट के चहरे पर खून छनछला घाया।

यह सब भूठ है! प्रिगोरी मुनमुनाया और पिता की नाक के निखर सिरे की धोर दमन लगा।

धुप रहो! पिता चीखा।

लोग बकते हैं ता

बकवास न पर कुत्त का बच्चा!

प्रिगोरी पनवारों की धोर मुक गया। नाक उछल-उछलकर घामे बढ़ती रही। दोनों मँह मिय रह। तट के समीप घात हो पिता ने कहा मेरी बात का खयाल रह घाज स तेरा रात का बाहर निबटना बन्द घटाते व बाहर बरम न पड़े।

प्रिगोरी धुप रहा। नाव किनारे पहुँची ता योला मछला क्या औरतों को दे दूँ?

नहीं ल जाकर बच था। बूढ़े ने स्वर म कामलता लाकर कहा जा मिन उसस धपने लिए निगरेट बगरह खरीद ता।

प्रिगोरी हँसि खवाना हुआ पिता के पीछ बढ़ना गया। उमकी क्रोध

न भरी भाँखें बूट का सापटो छत्ती रहा । उमन मन ही-मन मोचा—
‘चाहूँ ना करा चाहूँ ता मर पर बाण दा पर मैं रात का ना बाहर
जाऊँगा हा ।’

घर पहुँचन पर उमन मछना का सावधानी स पापा । उसक रथुतों
में एक बड़ी फँसाई और उन बचन क लिए चल पडा ।

फ़ाम क फाटक पर ही उसकी भेंट अपने पुराने मित्र मीत्का कारगुनाव
स हो गई । मीत्का अपनी चाँगे जडा पटी म बिलबाड करवा चद्रमकुदमी
कर रहा था । उसकी भाँखें पीली और गोल थीं । भाँखों क तार बिल्ली
का भाँखो क तारों का तरह लम्ब थे । इसस आदमी चमकनाग और
चरकबाज मालूम होता था ।

‘कहाँ चल मछनी लकर ? मीत्का न पूछा ।

‘भाज ही पकडा है । माखोज क हापों बचने जा रहा हूँ ।

मात्का न एक नजर म ही मछनी क बचन का अनुमान लगा लिया
बाबा ‘पन्द्रह पाठण्ड हागो ।

साढ़ पन्द्रह पाठण्ड है । हमने तराजू पर तोषी है ।

मुझ साथ स जला मैं मान भाव करूँगा । मीत्का ने प्रस्ताव रखा ।
चला ।

और मुझ क्या मिलगा ।’

‘बरो नहीं । हम बाग का नेकर ऋगडा नहा हागा । पिगोरी न
हँसकर कहा ।

गिरजे की प्रायना अभी अभी समाप्त हुई थी । गाँव क लाग लोट रह
थ । लोगों शामिल बंधु नम्ब डग भरत हुए अगल-बगल खन भा रहे थे ।
एक मुजाहान अलखी उनन सत्रस बडा था और बीचमें चल रहा था ।
डोमी टपूनिक् क बडे कॉन्डर क कारण उसकी गन सोधी रहती । घुंघ
रान बानों वाला मुकीली दादा कभी इधर ठा कभी उधर का निकली
नजर आती । बायीं भाँख रह रहकर भ्रमक बठनी । बाठ यह है कि बहुत
वय पहल निशानेबाजी करत समय हाथ की बन्दूक फट गई थी और सोह
का एक टुकडा उड़लकर गाल म छुस गया था । तब स ही उसकी भाँख
समय असमय निरन्तर ही भ्रमकती रहती थी । तभी स गाल के भार-भार

प्रिगोरी न नाव किनारे स घागे की पार बडाई और नाव मते समय प्रनुमान लगाया कि पिता व हाठों पर कोई वान घा घाकर लोट जाती है। पर पन्तली चुपचाप बठा पन्तली व घावल म बसी हुई भापठियो को दखना रहा।

प्रिगोरी मुनो उमन वोर की गाँठ अपन पाँव व नीचे खीची और मदिग्ध स्वर म कहना प्रारम्भ किया मैं न्क्षता हूँ कि तुम और अकस्मीनिया अस्तासोवा

यह सुनते ही प्रिगोरी न नीचे म ऊपर तक नाज हो मुह पर लिपा। मैं चेताए देता हूँ। बूडे के स्वर म अथ क्रोध घुन गया था— 'स्तीपान हमारा पडासी है और मैं तुम्हें उसकी औरत के साथ छूट लेने नहा दूँगा। इन तरह की धोख म कभी भी तुफान खडा हो सकता है। मैं तुम्हें पहले स सबरदार किम देता हूँ। अथ कभी मैंने तुम्हें उमके साथ दखा तो खाम उधरकर रख दूँगा।

पन्तली ने अपनी गाँठोवाली मुट्टा बसी और अखें दबाकर घने की पार दखने लगा। बेटे के चेहरे पर अून छलछला घाया।

यह सब भूठ है! प्रिगोरी मुनमुनाया और पिता की नाव के निलछरे सिरे की ओर न्खने लगा।

चुप रहो! पिता धीखा।

सोग बकत हूँ तो

अकवास न कर कुत का बन्वा! '

प्रिगोरी पत्रवारों की ओर मुह गया। नाव उछल उछलकर घागे बन्ती रही। दोनों मह मिये रह। तट के समीप आते ही पिता ने कहा मेरी बात का ख्याल रख। आज स तेरा रात का बाहर निबन्ना बन् महात व बाहर बन्म न पद।

प्रिगोरी चुप रहा। नाव किनारे पहुँची ता बोला मछला क्या औरतों को दे दूँ ?

'नहीं स जकर बक भा। बूडे ने स्वर म कामधता लाकर कहा जा मिम उसम अपने लिए मिगरट वगैरह खरीद ला।

प्रिगोरी हॉठ धवाना हुआ पिता के पीछे बढता गया। उमकी क्रोध

स मरी घाँसों बूट की खापड़ी छूँता रहा। उसने मन-ही-मन सोचा—
चाह जा करो चाहे तो मर पर काट दो पर मैं रात का तो बाहर
जाऊँगा ही।

घर पहुँचने पर उसन मछली को सावधानी से धोया। उसक नधुना
में एक डबी फॉसाई और उम बचने के लिए चल पड़ा।

काम के फाटक पर ही उसकी नोट अपने पुराने मित्र मीत्का कारगूनोव
स हो गई। मीत्का अपनी चाँदी जड़ी पटी स खिलवाड़ करता चहलकूदमी
कर रहा था। उसकी घाँसों पीली और गोल थीं। घाँसों के तार बिल्ली
की घाँसों के तारों की तरह लम्बे थे। इसस आदमी कमबदीदा और
शरकबाज मालूम होता था।

कहाँ चल मछली लकर ? मीत्का ने पूछा।

घाज ही पकड़ी है। माखोव के हाथों बचने जा रहा हू।

मीत्का ने एक नजर म ही मछली के बचन का अनुमान लगा लिया।
बोसा 'पन्द्रह पाउण्ड हागी।

साढ़ पन्द्रह पाउण्ड है। हमने तराजू पर तोली है।

मुझे साथ स चलो मैं माल भाव करूँगा। मीत्का ने प्रस्ताव रखा।
चला।

घोर मुझ क्या मिलगा ?

'डरो नहीं। इस बात को लेकर झगडा नहीं हागा। प्रिगोरी ने
हसकर कहा।

गिरजे की प्रायना अभी अभी समाप्त हुई थी। गाँव के लाग लौट रहे
थे। तीनों शामिल बंधु उम्ब डग भरत हुए भगल-वगल चल आ रहे थे।
एक भुजाहीन अलेक्सी उनम सबसे बडा था और बीचम चल रहा था।
फ्रीजी टयूनिव के बड़े फॉन्ट के कारण उसकी गदन सीधी रहती। घुस
रान वाला वाली नुकीली दाढ़ी कभी इधर तो कभी उधर का निकली
नजर आती। बायीं घाँव रह रहकर रूपन उठती। बात यह है कि बहुत
बय पढ़स निशानेबाजी करते समय हाथ की बन्दूक फट गई थी और सोहे
का एक टुकड़ा उधसकर गाल में घुस गया था। तब से ही उसकी घाँस
समय असमय निरन्तर ही रूपनती रहती थी। तभी से गाल के धार-धार

प्रिगोरी ने नाव किनारे से घागे की ओर बगई धीरे नाव छूते समय अनुमान लगाया कि पिता के होंठों पर कोर्ब बान घा घाकर लोट जाती है। पर पैंत्लेनी चुपचाप बैठा पहानी के भाँसल म बसी हुई मॉपडिया की दखता रहा।

प्रिगोरी मुना उमन वीर की गाँठ घपन पाँव म नीच सीची धीरे सदिग्ध स्वर म कहना प्रारम्भ किया मैं दखता हूँ कि तुम धीरे धवसीनिया अस्ताखोवा

यह सुनते ही प्रिगोरी न नीचे मे ऊपर सब लाल हो महू फेर लिया।

मैं धताए देता हूँ। बूढ़ के स्वर म धन्न क्रोध धुल गया था—
‘स्तीवान हमारा पहोभी है धीरे मैं तुम्हें उसकी धीरत के साथ छूट लेने नडा दूँगा। इस तरह की बीड़ा स कभी भी तूफान खडा हो सवता है। मैं तुम्हें पहल स छबरदार किय देता हूँ। धव कभी मैंने तुम्हें उमके साथ देखा तो साल उधहकर रस्त दूँगा।

पैंत्लेनी ने घपनी गाँठावाली मुट्टी कसी धीरे धाँसि ावाकर बने की धार दखने लगा। बटे क चहरे पर झून छमछला घाया।

यह सब झूठ है! प्रिगोरी मुनभुनाया धीरे पिता की नाक के निसछरे सिरे की धीरे देखने लगा।

चुप रहो! पिता चौखा।

सोग बकते हैं ता

बकवास न कर कुल का बण्णा!

प्रिगोरी पनवारों की धार मुक गया। नाव उछल उछलकर घागे बडती रही। मोनों मँह मिय रह। सट के समीप घात ही पिता ने कहा मेरी बान का खपाल रह घाम स तरा रात का बाहर निकटना बन्न घहात क बाहर काम न पडे।

प्रिगोरी चुप रहा। नाव किनार पहुँची ता बीना मछला क्या धीरतों को दे द ?

‘नहा स जाकर बप घा। बूढ़ ने स्वर म कामसता साकर कहा जा मिन उसम घपने लिए मगरट वगरह खरोद सा।

प्रिगोरी हाट खवाता हुआ पिता क पीछे बडता गया। उमकी क्रोध

न भरी धाँके बूढ़े को धापहो छूँता रहों । तमन मन ही-मन माचा—
‘चाह जा करो चाह ता मर पर काट दा पर में रात बा तो बाहर
जाऊँगा हा ।

घर पहुँचन पर उमन मछना का मावधानी स धोया । उठक नधुना
में एक छडी फमाई और उन बचन क लिए चल पडा ।

काम क फाटक पर ही उसकी भेंट अपने पुराने मित्र मीत्का कारगुनाव
स हा गई । मीत्का अपना चाँदी-जडा पत्ती स किसकाड करता बहलबदमी
कर रहा था । उसकी भाँके पीली और गोल थीं । भाँकों क तार बिन्ती
की भाँको क तारों की तरह लम्ब थे । इससे घादमी चमकतीदा और
शरकवाज मानूम हाता था ।

कहाँ चल मछनी लकर ? मीत्का ने पूछा ।

घाज ही पकडा है । माछोव के हामा बचने जा रहा हू ।

मीत्का न एक नजर से ही मछनी क बचन का अनुमान लगा लिया
बाला ‘पन्द्रह पाठण्ड हागी ।

साठे पन्द्रह पाठण्ड है । हमने तराजू पर तोली है ।

मुझे साथ ल चलो मैं माव भाव करूँगा । मीत्का ने प्रस्ताव रखा ।
‘बसा ।

और मुझ क्या मिलगा ?

‘ढरो नहीं । इस बात को लेकर भगडा नहीं हागा । प्रिगोरी न
हँसकर कहा ।

गिरज की प्रायना अभी अभी समाप्त हुई थी । गाँव के साग सौट रह
थे । तानों गामिन बंधु सम्ब डग भरत हुए प्रगल-वगल चन था रहे थ ।
एक भुजाहीन प्रलेक्मी उनम सबसे बडा था और बीचमें चल रहा था ।
क्रीडी टयूनिन क बडे रॉन्टर के कारण उसकी गन्न सोधी रहती । घुँप
रान बसा। वाली नुकीला दाढ़ी कभी इसर ता कभी उधर का निकली
नजर घाती । बायीं भाँव रह रहकर रूपक उठती । बात यह है कि बहुत
बय पहल निशानेबाजी करत समय हाप को बन्दूक फा गई थी और सोहे
का एक टुकडा उछलकर गाल म धुन गया था । तब स ही उसकी भाँव
समय असमय निरन्तर ही भपकती रहती था । अभी से गाल क भार-भार

जनन का एक क्षण भी पट गया था। बायाँ हाथ कोहनी से कट गया था, पर धनवती एक हाथ से ही सिगरेट रोल कर सने में साहिर था। सीने से बटुए का दबाता दाँत से वाजिब लम्बाई का कागज काटता उसे मोड़ता उसमें लम्बाई भरता और रोल कर लेता। देखनेवाला सोच भी नहीं पाता कि यह करने क्या आ रहा है कि सिगरेट बनकर तयार हो जाती।

एक हाथ होने पर भी वह गाँव का सबप्रथम लड़का था। उसकी मुट्टी साधारण सागा की मुट्टी की भाँति सास तौर पर बड़ी नहीं थी— बस तितलीकी-सी थी। पर एक बार की बात है कि खेत जाते समय वह बस से नाराज हो गया। लेकिन कुछ नहीं उसने एक घुमा मारते ही बैस मत में लम्बा हो गया और उसके कानों से खून बह चला। फिर ता वह मर ही गया।

धनवती के बाकी दोनो भाई मार्टिन और प्रोखार सूरत-शकल में उसकी काइन काँपी थे। बस ही थोड़े बच्चे उतना ही भारी भरकम शरीर। प्रोखार या तो केवल इतना ही कि उन दोनो के हाथ बंदस्तूर थे।

मो प्रिगोरी ने शामिल-बच्चुओं का अभिवादन किया पर मोत्का धागे बढ़ता चला गया। कारण यह था कि एक बार हाथापाई होने पर धनवती ने उसने खूबसूरत दाँतो पर जरा भी रहम न दिखाया था और एक हाथ ऐसा जमाया था कि उगने से दाँत बर्फ पर धा गिरे थे।

प्रिगोरी पाम धाया तो धनवती की भाँस एक साथ पाँच बार भपकी। बाला वेचत हो ?

सरीहीने ?

‘क्या भाग ?’

‘एक जोड़ी बल और एक धोरत।’

क्रोध से भाँस भपकाते हुए धनवती ने अपने हाथ का बचा हुआ भाग भटका।

‘तुम भी क्या आदमी हो ! क्या कहने हैं !’ सभी धोरत माँगते हो फिर भाँस माँगते !

आधो अपना काम करो नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि धामिष

परिवार का नाम निगान तक मिट जाए। प्रिगोरी ने दाँत पीस।

गिरजे का बाढ़ क चौक म गाँवपाल जमा ये। गिरजे का सरसक एक कलहस ऊपर उठाय चीख रहा था 'भाल पचास कापक म जा रहा है। कोई कुछ घोर मगाता है? कलहस टेदी गदन स चारों घोर लडे सोगों पर नफरत बरसा रहा था।

एक घोर सफ़्त बालोवासा एक बूझा कुछ सोगो म घिय हाप नचा नचाकर कुछ कह रहा था। उसका सीना क्रॉमों घोर तमगों स भरा हुआ था।

'घो'का बाबा सुर्नी मुद्द की बोद्ध अपनी रामकहानी सुना रह हागे। मोला न उघर दम प्रिगोरी का सक्त निया भायो जरा मुनें ता सही।

'उघर कगानी सुनोग घोर इघर काप सडन घोर फूलन लगेगी।' प्रिगोरी ने विराध किया

ठीक है फूल आएगी तो बजन बढ जाएगा।

स्वयायर म कायर-काट-शड क पीछ घी भालोत्र क मकान की हरा छत। दानों सम्व टग भरत टुए भाग बढ कि बाहर की कोठरी क पास से गुजरते ही प्रिगोरी न पूका घोर मिर ऊपर उठाया। सहना ही पीप क पीछ स पतलून क बटन लगाता पेटो दानों में दवाए एक बूझ सामन भाया।

बटन लग नयी रहे क्या? मोल्का न ब्यग्य स कहा। बूझ ने प्राखिगी बटन बन्द किया घोर पेटो मुँह स निकाली।

'तुम्हें इसम क्या मना-धेना।

तुम्हारी दादी या नाक इसम फँस जाए तो तुम्हारी बुद्धिया एक हफ्त म भी न घो पाए इस।

मैं भी तुम्हें फँसा दूगा तब मानागे। बूझ नाराज हा गया।

मोल्का की प्राखि पूप म चौधियाइ ता उसने उह तिकोड़ा बोला

'बहुत जल्दी बुरा मानत हो।'

'भाग जा यहाँ स! सुघर का बच्चा! क्यों परधान कर रहा है मुझे? पेटो का मजा खतना चाहता है क्या?

प्रिगोरो खुपचाप मुमनराता रहा कि मीडियाँ पास आ गइ ।

जगन की रेलिंग म जगली भगूर-सता निपटी हुई थी । मीडियों क ऊपर झालमी गाय बिल्वरे हुए थे ।

देखा मीला कुछ लोग ऐम भी रहते हैं । प्रिगोरो बोला ।

दरवाज का हस्ता तक मुनहला है । बरामद का दरवाजा खालत हुए मीला ने नाक बजाई अब जरा सोचा कि वह बूढ़ा खबोस यहाँ रहता है ।

कौन ? दरवाज क पीछ स किसी न पूछा ।

प्रिगोरो सभुजाते हुए अन्दर घुमा ।

किससे मिलना है ?

अन्दर मुनापम बेंत की हिलने सुनने वाली कुर्सी पर एक लडकी बठी हुई थी । उसके हाथ म फरवियों की एक सशरी था । प्रगर खडा हो गया और फरवरी का रस लत उसके भरे गुलाबी हृदयकार होंठों की खुपचाप निहारने लगा । लडकी ने सिर टटा करके लडकों का ऊपर से नाचे तक देखा ।

प्रिगोरो की सहायता नो मीला भाग बडा धोर खायकर बोला
आपका मछली ता नही खगोदनी है ?

मछली ? अभी बतलाता हूँ ।”

उमने कुर्सी सीधी की धोर उठकर कमीने क काम वाल स्लीपरों म पैर डाले । उसके सफद निवास म धूप छनी । मारका की निगाह लडकों की टाँगों की धुंधली-सी रूपरसा और उमकी कमीज की लहराता हुई चौड़ी बेल पर पडी । वह उमकी नगी पिडसियों की चटक सफदी देखकर अच रज म पड गया । पीली सिफ छोटी गोल एडियों क ऊपर की खान थी सो दूध उम पिनाई में भी घुमा हुआ था ।

देखा प्रीका कंस कपडे हैं ? बिलकुल गीन की तरह ! हर पाज धार धार नडर घाती है । प्रिगोरो को कुहनी मारी ।

लडकी गर्मियारे क रास्ते क दरवाज स सीटी धोर धाराम स कुर्सी पर बंठ गई ।

उपर बावर्चोछाने में आधा । उसन भाजा दा ।

प्रिगोरी पर्जों के दल मकान म घुसा । उमके जाने क बाद पलकें
भपनाता हुभा भीत्का लडकी के मिर क उजल रिबन को दखता रहा ।
रिबन ने उमक वाली को लो सुनहरे गोलों में बाँट दिया था । लडका
भी अपनी गरारली शोख भाँखों से भीत्का को समझती रही ।

गाँव न हो ? उमन पूछा ।

‘जी !

किसके सडक हा ?

कारानूतोव का सडका ह ।

क्या नाम है ?

भीत्का ।

लडकी ने अपने रतनारे नाम्बूनों को ध्यान से दखा और तेजा से पर
समेट लिए । मछली तुमम से किसने पकडी ?

मेर दोस्त प्रिगोरी न ।

तुम भी मछली पकडते हो ?

जब कभी मन हाता है तब ।

बसी स ?

‘जा ।

एक बार मछली ने गिनार पर मैं भी जाना चाहती हूँ । जरा दर
चुप रहकर बह बोली ।

ठीक है अगर आप जाना चाहेंगे तो मैं ले चलूंगा ।

‘कस भला ? कसे होगा सब-कुछ ?

‘आपको बहुत सवेर उठना पडेगा ।

मैं उठ तो बठूगी, लकिन जगाना तुम्ह पडेगा ।

खर यह तो हो जाएगा पर आपक पिता ?

यस पिता ?

भीत्का मुसकराया वह मुझे चोर समझ बैठें और मेर ऊपर कुत
छोड दें तो ?

बकवास है । मैं उस कोने क कमरे में अकेली सोती हूँ । वह रही
खिडकी । उसन भँगुनी से इशारा किया “तुम आना लो खिडकी खटखटा

देना । मैं जग जाऊँगी ।

इस बीच प्रियोरी का दबी आवाज धीरे रसोइये का मोटा लचकीला स्वर रह रहकर बावर्चोखाने से सुन पडा । मोल्का चुप हा गया धीरे धपनी पटी म जड़ी खाँदा पर झँगुलियाँ फरता रहा ।

तुम्हारी घादी हो गई ? होठों होठों में मुसकराते हुए सडकी बोली ।

'क्यों ?

'मोह । कुछ नहीं, यो ही पूछ लिया ।'

'नहीं अभी मेरी घादी नहीं हुई ।

एकाएक मोल्का सज्जा से सात हा उठा । लडकी गरमपर से धाई फा पर फँनी करबरियों की एव टहनी उठानर उससे खेलन धीरे धोखो से मुसकराने लगे ।

मोल्का सडकियाँ तुम्ह पसन्द करती है ?

'कृष्ण करती हैं, कुछ नहीं करती ।

मूठ न बोसो धीरे तुम्हारी घाँसे बिलियों-जैसी क्यों है ?

बिलियों-जैसी ? अब मोल्का का बेहरा पूरी तरह सात हा गया ।

'हाँ बिलकुल बिलियों-जैसी है ।

घामद मेरी माँ की भाँति ऐसी थी धीरे उन्ही से मुझे मिली हैं ।

मैं क्या कर सकता हूँ ?

तुम्हारे घरवाल तुम्हारी शाणी क्या नहीं करते मोल्का ?

मोल्का अब सम्हल चुका था । सडकी के शब्द म द्विपे ध्यय का समझते ही उसकी पीली पुतलियाँ धमक उठा ।

"मुर्गा बडा सा हा मुर्गियाँ बहुत मिस जाएँगी !

सडकी ने धादबय मे नवें ऊपर उठाइ धीरे क्रोध स भरी धपना कुर्सी से उठ राही हुई । उसकी दाएिनर मुसकान ने मोल्का की बिच्छू की तरह डस लिया ।

स०ना सीडियों पर घाहट हुई । बकरी के मध्वे की खान क जूते पहने घट का मातिका सर्गई प्लातीनोविच मोखोव मोल्का क सामने से गुजरा धीरे उसकी धीरे विना देखे ही पूछा, मुझसे कोई काम है ?

पापा ! य लोए एक मछली भाए है । लठकी ने जवाब िया ।
धीर प्रिगोरी लोटा ता मछली उसके हाय मे नहा थी ।

३

प्रिगोरी गाम को जाने के बाद जब धूम फिरकर लोटा तो मुर्गे ने पहली बाँग दी । बरसाती से खटास से भरी हाप-लताओं धीर दूसरी चीजों की महक घाती रही ।

प्रिगोरी दब परों नमरे म धुमा कपड़े उतारे इतवार के दिन का खाम पतलून सावधानी से झूँटी पर टाँगा, काँस बनामा धीर फिर लेट गया । फर्श पर चाँदनी का मुनहरा ताल-सा लहरा रहा था । लठकी के चौसठे की परछाई चाँदनी का जहाँ-तहाँ से काट रही थी । कसीदाकारी वाल लौलिया से ढकी, बोन में रखी चाँदी की देव-मूर्तियाँ हल्के हल्के चमक रही थी । बिस्तरे के ऊपर की टाँड पर भक्त्तियाँ झिनभिना रही थी ।

जस म उसका नहा मुन्ना मतीजा काकचीखाने म रोने न लगता ता प्रिगोरी का नींद भा जाती । पर पालना गाछी के बिना प्रोज के पहिय की भाँति चूँ चरमर करन लगा । साथ ही भाभी दार्या की नाँ से भरी गुनगुनाहट उसके कानों में पड़ी—

‘सा जा मेरे साज ! तेरे बारण तो मेरा नीँ हुराम हो गई है ।

धीर बह महीन स्वर मे गुनगुनात लगी—

‘घने घरे तू रहा कहाँ ?

मेँ थोडा की निगरानी म लगा रहा—

धीर भला नया तूने देखा ?

मेँने देना ऐसा थोडा—

बिसकी काटी म साने की गाट लगी थी

पालने की भली लगने वाली तालमय चूँ चरर-मरर के बीच ऊँघत ऊँघत प्रिगोरी को याद आया ‘घरे, कल प्यात्र नम्य में चला जाएगा । दार्या बच्च के साथ झकसी रह जाएगी । हमें कटाई प्यात्र के बिना करनी पड़ेगी ।

उसने गरम तबिय म अपना सिर गड़ा लिया पर स्वर उसक कानो
में बराबर पडते रहे—

धोर कहाँ है तेरा घोडा

घाडा मरा फाटक बाहर—

धोर कहाँ है तेरा फाटक ?

फाटक यह बह गया घाट म

पोडे की निरंतर हिनहिनाहट ने उस धोर नही सोने दिया। धावाज

से उसने पहचाना। वह प्योन का कौबो घोडा था। दारवा क गोल न
उसकी पलकों पर फिर नीद उनार सी—

धोर कहाँ है कसहसों की सुपर जोडियाँ ?

वे सब बली गइ कि जहाँ जल-बेत उगे हैं—

धोर, कहाँ जल-बेत उगे हैं ?

उन्हें लटकियाँ काट ल गइ—

धोर लटकियाँ मला कहाँ हैं ?

उह ब्याहकर लोग न गए—

धोर कहाँ बज्जाक हैं मभी ?

मभी लाम पर चल गये हैं

योही देर बाद घाँसों मीचता हुआ प्रिगोरी अस्तबल म गया धोर
प्योन न घोड़े को हाँककर सटक पर ल धावा। मकड़ी का एक
जाला धाकर उसक बेहरे पर चिपका धोर प्रिगोरी की ऊँप एकदम भाग
गई।

दान क धार-धार घाँसी की तिरछी लहरदार किरणों बनी रहीं।
नदी के ऊपर लटक रही धुप धोर धुप के ऊपर घनाज के छितराय हुए
दानों से जगमगाते तारे। ऐस म धाडे ने पैर बहुत सँभाल सभालकर

जमाये। पानी की धोर का डाम खराम था। दूर स बसलों की धावाज
धार्ई। कधार क पास छिछने पानी मे एक मछली का छपाका हुआ
जैसे उसने किसी छोटी मछली पर झपट्टा मारा हो।

प्रिगोरी बहुत देर तक नदी के किनारे सटा रहा। चारों धोर स
एक तरह की बास-सी धा रही थी। पोडे क होंटों स एक बूँद गिरी।

शिगारी का मन एक सुसद धून्यता से भर उठा मानो उसकी सब विन्ताएँ मिट गईं। नोचते नमये उसने पूव के आकाश पर नजर डाली ता दस्ता कि रात का काजल कट रहा है।

वह दौड़कर अस्तजल से सगे घपना माँ के प्रकाष्ठ से पहुँचा।

घरे शौंका तू है ? वह घाना।

शौर हो मी कान सकता है ?

घाटे का पानी पिला साया ?

हाँ। उनसे मशिपल-मा उत्तर दिया।

माँ ने घानल से कह नये शौर भापठी का लौंगे ता उससे मूड-नग पाँसों से घाड़ट की।

‘जाकर आस्ताखाय का जगा दे। स्तीपान न कहा या कि मैं प्यात्र के माय जाऊगा।’

प्रभात की खूनका न शिगारी के शरीर को घमन्ती कँपकपी से भर लिया। उससे रागते खड्ड टा गण। उससे दौड़कर आस्ताखोव के घर का तान मीन्मियाँ पार का। दरवाजा खुला हुआ था। स्तीपान घावर्चीखान से दम्बन पर मो रहा था शौर उसकी पत्ना का सिर उससे बग पर था।

शिगारी ने मुबह के कुन्पुटे में दस्ता कि अकनीनिया का चादर घुटनों पर इकट्ठा हो गई है शौर वच को छाल से सफ़द उसकी टाँगें फनी हुई हैं। वह एक हाग खडा एकटक दडता रहा। मुहसा उसकी खबान उससे मुसुन नगी शौर दिमाग से लाहा-सा भर उठा कि वह पटन नगा। उससे उडा से अघनी घाँसे उघर न इटाइ शौर अजीब-सी घावाउ से चिन्साया भर। कोई है यहाँ ? उगा।

अकनीनिया एक भिषरा के माय जागी।

घाह ! कौन है ? उससे तुरन्त ही घानर घपनी नगी टाँगों पर डाल ला। तार लकिय पर गिरी पडी थी। मुबह के समय शौरतों की नाँ प्राय बहुत ही गहरी हाती है।

मैं हूँ। माँ ने तुम्हें जगाने का मुन्ने बेजा है।

अभी उटव है। पित्तुसुओं के कारण हम जमीन पर हो मो रहे

कि बहू भी मोरका क मित्र की भाँति ही सबक पर ज़ाधा क बन मठी हो जाए—चिन्ता नहीं कि गिरे ता बिच्छू क पौवों क नीच जा पड । बिन्यु उगकी माँ बिडकी पर खडो देव रही की धीर उमक गठ काष से बाँप रहे थ । दूया दुसी हाकर घर क घल्ल भाग गई । इम बीच पानी जोर म बरसने लगा । छत क ठीक ऊपर बिजली बडकी धीर दोन क पार तक सहरती घनी गई ।
बरसाती म पन्तली धीर पसाने स तर प्रिगारी ने पानी की छतह पर ठरने वाले जाल को क्लक स खींचकर बगन क कमरे स बाहर निकाना ।

बचा घागा धीर बडो सूई जल्नी करो ! प्रिगारी न पुकारकर दूया स कहा । दारवा जाल की मरम्मत करन बठ गई । बच्चे का मुनाती हुई उमकी सास मुनभुनाई—
धाय है धूँ महाराज' भया धीर तुम्हारे दिमाग म क्या घाणवा ।

बसा सोन का बक्त हुआ । मिट्टी क तेन की बीमत दिना तिन बडती हा जाती है । कहीं बग जा रहे हो भला ? स समय जाल म क्या फँसाभोग तुम ? इन गारखघचे म कही हूव न मगना । दरते नहीं हा घासमान घरती पर हूटा पड रहा है । मगड क भट्ट म कैमी बिजली खमक रही है ! हे यीगु ! हे माँ-मरी !
दाण भर का वाषर्षोस्तान म छठ नीली खमक भर गइ धीर भयानक

नीरयता छा गई । बन्द टागाडों पर पानी की बोछारें बजता रही । इसी समय बिजली क छिडकियों क छिपा लिया । दारवा ने चिल्ल बनाया । वृद्धा पिम्ली को कोष स

दामा करना यहाँ स छुड़ें प्रिगारी जा भला यह र

अपराधों ।
"म

बोक्षा औरता मरम्मत करा मरम्मत । बितनन्ति हूण कि मैंने तुमम
जाम ठीक करने कायदा था ।

‘इस नमम कौन-सी मरम्मत पकड़ोगे तुम ? पत्नी न वम पर
घोट थी ।

घरर तुम्हें भ्रम नही तो खबान बन्द रखा । मछलियाँ तूफान
से डरती हैं । इसी समय ता वे घाट की धार भाएँगी । अब तक तो
पानी गदता भी हो गया होगा । दूमा, दौटकर जा देख कि पानी
वहने की आवाज सुनाई देता है या नही ?

दूमा घमन से दरवाजा की धार बंदी ।

बुद्धा इसीधना स घुप नही रहा गया । धार देकर बोली तुम्हारे
माथ पाना म जान देन कौन जायेगा ? धारया नहीं जा सकती । उसको
ठड लग जाएगी ।

‘मैं जाऊंगा और मेर साथ प्रिगारा जायेगा । रहा दूसर जाल की
बात सो मरसीनिया को और किसी और औरत को बुला लेंगे ।

दूमा हाँफती हुई घन्दर भाई । उसकी धरीनिया से पाना की बूँदें
टपक रही थी और उसका बदन स तर वाली धरती की महक भा
रही थी ।

पाना बड़े जोरों से बह रहा है ।’ उसने लम्बी सीम लत हूण
कहा ।

तू चलेगी ?’

और कौन जाएगा ?

और औरत का बुला लेंगे ।

‘ता ठीक है ।

घपना फोट पहन ने और भागकर मरसीनिया ने पास चली जा ।
पत्नी बोना वह चल तो उससे कहना कि मलाका और फालोवा को
भी लेनी चल ।’

‘वह बफ में भी नहीं जमेगी । प्रिगारी ने कहा बधिया सूधर की
छरह फूली हुई है ।

माँ ने ससाह दी ‘घोका बटे तुम घोड़ी-सी सूली घात सीने म दबा

कि वह भी मोक्ष के मित्र की भाँति ही सड़क पर हाथा क बज लड़ी हो जाए—चिन्ता नहीं कि गिरे ता बिचड़ के पोषों क बीच जा पड़ । किन्तु उगकी माँ खिडकी पर खड़ी देख रही थी घोर उसका होंठ क्रोध से काँप रहे थे । दूया दुखी हाकर घर क अन्दर भाग गई । इस बीच पानी जोर म बरसने लगा । छत क ठीक ऊपर बिजली मडकी घोर दोन क पार तक लहरती चली गई ।

घरसाती म पन्तली घोर पसीन स तर प्रिगोरी ने पानी की सवह पर तरने वाज जाल को झटके स खीचकर बगल क कमरे से बाहर निवाला ।

बच्चा घागा घोरबडी मूर्ई जल्नी करो । प्रिगोरी ने पुनारकर दूया स कहा । दारया जात की मरम्मत करन बठ गई । बच्चे की भुसाती हुई उसकी सास मुनभुनाई—

घय है बूड मगराज भया घोरतुम्हारे दिमाग म क्या प्राणा । चला सोन का वक्त दूमा । मिट्टी क तेल की कीमत दिनों दिन बढ़ती हा जाती है । कहीं चत जा रहे हो भला ? हम समय जाल में क्या फँसायाग लुम ? हम गारसघय म कहीं दूव न मरना । देखते नहीं हो प्रासमान घरती पर दूया पड रहा है । माड क मट्ट में कसी बिजली चमक रही है । हे योगु ! हे माँ-मेरी !

हाग भर को वाक्चोखान म सज नीली चमक मर गई घोर भयानक नीरवता छा गई । बाप दरवाजा पर पानी की बौछारें बजती रही । इसी समय बिजली मडकी । दूया न जाल म मँह छिपा लिया । दारया ने खिडकियों घोर दरवाजा की घोर देखकर कास का चिल्ला बनाया । बूडा न पाँवों क पास घँठी पाँवो म अपना पाठ रगड़ती बिल्ली को क्रोध से तान हाकर देसा ।

दूया इस बिल्ली को बाहर भगा । माँ-मेरी मर अपराधों को दामा करना दूया बिल्ली का भगा दे बाहर भहाते म ! शि भाग यहाँ स चुहँल कही की ! लुकप

प्रिगोरी जाल को नीच रमकर मन ले मन हँसा ।
भला यह दार-गुल काहका है ? बस बस बहुत हा लिया । पन्तली

चाहा 'घोरता भरम्मन करा भरम्मन। कितन न्नि हूण कि मैंन तुमम
जास ठीक करने का नहा या ।

इस नमय कौन-नौ मछला पकड़ाग तुम पत्नी न उम पर
घोट की ।

अगर तुम्हें अकस नहीं तो जवान बन्द रखा । मछलियाँ तूफान
स डरती हैं । नौ समय ता व घाट की झार भाएँगी । अब तक ता
पाना गदला भी हा गया हागा । दून्या दौड़कर जा देख कि पानी
वहन की आवाज सुनाई देता है या नहीं

दून्या बमन स दरवाज की घोर बधो ।

बृदा आचना से पुप नहीं रहा गया । जोर देकर धाली "तुम्हार
माप पाना में जान दन कौन जायेगा ? दारया नहीं जा सकती । उसका
ठठ लग जाएगी ।"

मैं जाऊँगा घोर मेर साथ प्रिगारी जायेगा । रही दूसर जान की
बात सो अकनीनिया को घोर किसी घोर घोरत को बुला लेंगे ।

दून्या हाँफती हुई अन्दर आई । उसकी बरोनियों से पानी की बूँदें
टपक रहा थीं और उसका बदन स तर नालो धरती की महक भा
रही थी ।

पाना बहे आरों मे वह रहा है । उसन लम्बी साँस लत हूण
कहा ।

तु अन्गी ?

घोर कौन जाएगा ?

घोर घोरत को बुला लेंगे ।

ता ठाक ह ।

अपना काट पहन न घोर भागकर अकनीनिया के पास चली जा ।
पन्तनी बोना 'वह चन गा उसस कहना कि मलाका घोर शालोवा को
भी लगी चल ।

'वह बफ में भी नहीं जमेगी । प्रिगारय न कहा 'बचिया सूअर की
सरह पूनी हुई है ।"

माँ न ससाह दी दीका बट तुम पादी-नौ मूखी घास सीने में दबा

प्राह प्राह ! कहीं किनार के पास से मनसीनिया चीली । भयभीत हाकर प्रिगारी आवाज को दिना म तरा ।

मनसीनिया !

हवा और बहत हुए पाना को हरहराहट के मिठा और कुछ मुनाई न पडा ।

मनसीनिया !” भय से पीला हो प्रिगारी फिर चिन्ताया ।

० प्रिगारी ! दूर से पन्तेली को आवाज प्राह । सहसा ही कुछ उमक परों म बिपशा और उसे अपने हाथों म पकडन लगा । यह जाल था ।

प्राहका कहाँ ही तुम ? मनसीनिया की भरदि हुई आवाज प्राई ।

तुमन मरी आवाज का जवाब क्यों नहीं दिया ? घुटनों और हाथा के बल छट की और रेंगते हुए वह नापज होकर बोला ।

एसी के बल बैठते हुए उठोने जाल मुनभ्रया । वादन की गटखी हुई सीप तोडकर प्राई निकला । चरागाहों के पार म दिखली की दबी हुई गडगडाहट मुनाई दा । धरती घुमकर चमकन लगी । वर्षा से आकाश निमल हो उठा ।

जान को सुनभ्रत समय प्रिगारी ने मनसीनिया पर दृष्टि जमाई । मनसीनिया का खहरा खडिया को तरह उफर दा किन्तु कुछ ऊपर को उठे हुए उमक रतनारे होंठों पर मुसकान थी ।

‘अहरो ने किस तरह मुझे किनारे से टकराया ? वह बोली मेरे तो हाथ हवास हो गुम हो गए । डर म मेरी जान निकल गई मैंने सोचा कि तुम डुब गए ।

उनका हाथ एक-दूसरे म छू गए । मनसीनिया अपने हाथ उसकी कमीज म डालने लगी ।

‘सुशारी बाँध कितनी गम है ! उसने प्राह भरते हुए कहा और मैं तो ठड से जमी जा रही हूँ ।

‘जरा देखो कि मछनी जान बचाकर कहाँ म भागी, प्रिगारी ने उस जाल के बीचों-बीच कोई पाँच फुट सम्बी फनी हुई जगह दिखलाई ।

इस बीच कोई किनारे किनारे दोहता हुआ प्राया । प्रिगारी पहचान

गया कि यह दून्वा है। उसने बिन्नाकर कन्वा तागा मिल गया ?
 हाँ पर तुम वहाँ क्यों बठ हुए हो ? पापा न मुझे तुम्हारे पास
 भेजा है। वह तुम्हें ठिकान पर चाहत है भभी। हमन बोरी भरी मछलियाँ
 पकडी हैं।' उसक स्वर म विजय मरा गब स्पष्ट मनक रहा था।
 भनमानिया क दौत सर्गे स बजते रहे कि उसने जान ली डाला।
 इमक वाक व सब पूरी शक्ति लगाकर ठिकान का घोर दौड़ ताकि बदल
 में कुछ गर्मी आ जाए।

पन्तली छालों म भरी भगुलिया म निगरेट रोल कर रहा था। गब म
 वापा पहली बार में ही घाठ मछलियाँ घोर फिर दूसरी बार क
 नका घार उसन पाँव म बोरे की घार इगारा किया। भनसीनिया न
 उत्सुकता म बार क अनर नजर हासी तो हिलता ज्यती मछलियों की
 नि नि मुताइ पडी।

वर अब एक बार फिर हम घुटन घुटन तक पानी म जायगे घोर
 उसक बाद घर आइका जा पानी म। घर जाता क्यों नहीं ?
 प्रिगारा न मुन्न पडे पाँव भाग बनाए। भनमानिया हम तरह कीप
 रही थी कि जान ली घरयराहट स प्रिगारी का उसके नम्न का भन्दाइ
 हा रहा था।

कौपो नहीं।
 मैं कौपना कब चाहती हूँ पर कब क्या ?
 'मुना, मछलियाँ गाएँ जहन्नुम में। भनो घर चलें।
 नभी एक बडी-मी काप-मछला जाल पर उछली। प्रिगारी न जाल
 बीचकर घरा कम लिया। भनमानिया ऊपर को दौडी। पानी बालू स
 टकराया घोर लौट गया। जाल म एक मछली तड़फठान लगी।
 चरागाह म हाकर लौटना है ?
 नहीं जगल क रास्त नजदीक पड़ेगा। प्रिगारी न कहा।
 आ रहे हो तुम ?
 'तुम चला हम तुम्हें पकड लेंगे जरा जाल साफ़ कर लें।
 भनसीनिया न खोरा पडाई म्कट माडी कर्घों पर मछलियों
 का बोरा मादा घोर लगभग दुलकी बाल स कम दा। प्रिगारी न जाल

ता होने दो । लेकिन तुम्हारे गाने में कुछ मजा नहीं । हाँ तुम्हारा घीस्का खुद गाथा है । उसकी भावाज भावाज नहीं है चाँदी का तार है ।”

स्तीपान ने सिर पीछे की मटका खाँसा घोर धीमे सुरील स्वर म गाना शुरू किया

भाज सवर तडक-तडक

सूरज धमका

धाममान का कन-कन दमका

तोमालीन न घोरलों की तरह अपने गान पर हथेला रखी और अपने पतले दूध भरे स्वर म टेक पकड़ी । जार पड़ने से उसका माथ की नीली नसें फूलने लगी तो उहू देख-देखकर प्यात्र मुसकारने लगा ।

उमर की बारी

मुन्दर नागी

रस की माती

हाँ इठलाता

पानी भरने चली सकारे—

नदी किनारे

क्रिस्तानिया की धार सिर कर लटा स्तीपान फुहनी क बस मुठा ।
क्रिस्तानिया मिलापो स्वर—

घोर जवान

गया तुरत ही

सब-कुछ जान—

कसकर घोडा भूरी भूरी

उसने तय कर हाली दूरी—

स्तीपान न मुसकारते हुए प्योत्र की धार देखा । प्योत्र भा गाने लगा । यनी दाढ़ी से डेँक जयडा को खाल क्रिस्तानिया न ऐसी टीप मारी कि ऊपर का मोमजामा काँपने लगा

घाटा कसकर जवान

घाया धीष मदान

ताकि गोरी पर मारे

ननों के तीर तान

क्रिस्तोनिया ने अपने नये पर मगट लिए और प्योत्र के फिर से शुरू करने की राह देखन लगा। स्तीपान अखेँ मूँदे पसीन से तर चेहरा छाया म कर धामे धीम गान लगा। धम कमी स्वर मन्द्र-सप्तक पर रत्ता तो कमी तार-सप्तक पर पहुँच जाता।

गोरी सुनो मेरो बात—

इसकी घोड़े की जात—

प्यास कर रही है जोर

इसे जान दो जाने दो उस नदिया की घोर

और फिर क्रिस्तोनिया के भारी स्वर की गूज में दूसरे स्वर हूव गए। घास पास की गाड़ियों में बठे लोगाने भी उसका स्वर में स्वर मिलाए। पहियों के मोह के हाल झनझनाते रहे धूल के कारण घाबे रहे रहकर हींकिसे रहे और गीत के जोरदार स्वर हवा में सगटि भरते रहे। ऐसे में उजल पक्षो वाला एक पक्षी तपते मदान से उड़ता दिखाई पड़ा। उसने सपर पालोवाली गाड़ियों में घद के बाज्म उछाते घोड़े और सडक के किनारे चमते मली पडे गई सफद कमीजावाल लागो की घोर अपने पन्ने जैसी भाँवों से दखा और कीकता हुआ खड्ड की घोर उठ गया।

पर पक्षी गडे में उतरा और उमका काला सीना इधर उधर घुमते जानवरों के सुरों से सपाट बनी घास में छिया कि सडक का सारा दृश्य उसकी भाँवों से मोभल हो गया। गाड़ियाँ अब भी उमा तरह सडक पर बरती रहीं और पसीन से तर घोड़े काहे धनवाह अब भी घद के बादल उदात उमी तरह भाग ही भाग कदम रखते रहे। पर, इस बीच एक नई बात यह हुई कि कज्जाक अपनी अपनी गाड़ियों में उतर अपने नेता की घोर दोड़े घोर उम कारों भाग से घर हँस-हमकर लीट-पाट होने लग।

स्तीपान अपनी गाड़ी में तना खडा था। उसने एक हाथ से मोमजाम का पाल साप रखा था और दूसरे से वह ताल देता आ रहा था। वह एक दिल पकड़ने वाला गाना पूरी भावाज से, बहुत ही चलती हुई घुन में

छेडे हुए था

घरे, पास मे न बंठी
मेरे पास तो न बठी
नहीं तो कहेग लोग तुम्हे प्यार मुमस है—
तुम भा रहे हा पास
तुम्ह प्यार की है भास
तुम्हे बडा विश्वास
लेकिन छोकरा नही मैं ऐसी-बैसी ऐरी-नैरी

फिर तो दजनों कठों ने जो स्वर मिलाए तो भावाज की रूज स
सडक ने किनारे की घूस-गव बराबर हो गई

लकिन छानरी नही मैं एसी-बैसी ऐरी-नारी
लकिन छोकरा नही मैं जिसे पा सकोग तुम—

भपना सकोग तुम—

मैं लुटेरे की दुलारी

मैं लुटेरे की जनी

लकिन छोकरा नही मैं जिसे पा सकोग तुम—

भपना सकोगे तुम—

फिर प्यार हो गया है मुझे राजा के कुमार स—

क्या भा सकोग तुम ?

फेगेल बोदोम्कोव मोटी बजाने लगा । थोडो ने बमों पर जोर डाला ।
गाडी स बाहर भाँक भाँककर प्यात्र हसने घोर भपनी टोपी हिलाने लगा ।
स्तोपान ने खुगी से खिलनर भपन कष मुका लिए । सडक पर घूल ने
बादल उडने सगे । बिना पेटो की सम्बो कमीज पहन पसीने से तर
क्रिस्तोनिमा गाडी स नीचे कूट पडा घोर लट्ट की तरह घूम घूमकर
कन्डाक-नाथ नाथने लगा । देसमी भूरी घूल में उसके पैरो ने निगान
जहाँ-तहाँ बन गए ।

रेतीला था ।

पश्चिम में मेघ जमा होने लगे और उनका काश पक्षों से पानी की बूंदें चूने लगी । घोड़ों की पास के ताल में पानी पिसाया गया । पास की पुसिया के ऊपर के उदास सरपत हवा का भागे भुफ भुफ गए ।

ताल की छोटी छोटी लहरियों पर बिजली धमकी ता उसकी परछाई धरसर ही टूट टूट गई । हवा वर्षा की बूंदों को इस तरह इधर उधर छितराने लगी जैसे धरती की कासी हथेलियों पर गान के टके फेंक रही हो !

कज्जाको ने पिछले पत्तों का बांध घोड़ा को धरने छाड़ दिया और उनकी देखभाल के लिए तीन आदमी तनात कर दिए । बाकी लोगों ने प्राण जताई और गाइयों के बसों पर बतन लटका दिए ।

क्रिस्तोनिया जुधार पकाने लगा । अब उसे घम्मष से हिलात हुए उसन चारों ओर बठ हुए कज्जाकों की एक कहानी सुनानी शुरू की

एक टोला था—इसी टोल की तरह ऊँचा । उस समय मेरे पिता खिंदो थे । मैंने उनसे कहा—'बिना इजाजत के क्या प्रतामान' हमको टोला सादन देगा ?

अब क्या दून का हाँक रहा है ? घोड़ों के पास से लौटत हुए स्त्रीपान पूछा । फिर सिगरेट जलान के लिए उमने एक छोटा-सा धगारा उगाया तो उससे बहुत देर तक खिलवाड करता रहा ।

'ईश्वर उनकी प्रात्मा को शान्ति दे । मैं बतना रहा था कि मेरे स्वर्गीय पिता और मैंने खजाने की खोज कम की । वह मरकूलोव का टोला था । पिता बोल, क्रिस्तोनिया आओ मरकूलोव का यह टोला साद डालें ।' उनन कभी यावाने कहा हागा कि उसम खजाना गढा हुआ है । पिता ने भगवान से वायदा लिया मुझे खजाना दे दोग तो मैं एक गानदार गिरजा बनवा दूँगा ।' हम खन दिए । यह घाम जगह

* आरसाहा रूप के समाने मैं कज्जाक बनी और मरकूलोव की जगहाँ के विप क्रिन सेलो का चुनाव करते थे, उन्हें 'प्रतामान' कहते थे । मोटे तौर पर प्रतामान का अर्थ सनम्निष्—मुक्किया या मरणा ।

थी इसलिए घतामान ही हमको रोक सकता था। वहाँ तक पहुँचते पहुँचते धूप ढलने लगी इसलिए रात तक हम रुके रह फिर हमन धुर ऊपर फव्वलोंस खुदाई गुरू की। छ फुट गहरा गडदा हमन खोदा। घरती पत्थर की तरह सख थी। मैं पसीनेस तर-बतर हो गया। पिता प्राथनाएँ गुनगुनाते रहे पर बिश्वास करो भाइयो मरे पेट म ता चूहे इस तरह बूदने लग कि यम तुम्ह तो भासूम है गर्मिया म हम खाते क्या हैं यही दही घोर क्रास। पिता बोन पूह। क्रिस्तोनिया तू पापी है। मैं प्राथना कर रहा हूँ घोर तू अपनी भूल को वश म नही रख सकता। मुमम तो बदबू के मारे साँस भी नही ली जा रही। निक्कन जा तू टील कंघाहर नही तो फावड़े मे तेरा मित्र तोड़ डालूंगा। तरी बदबू स सञ्जाना जमोन म घँस जाएगा। मैं टील के नीचे जाकर पेट पकडकर पड रहा पर मेरे पिता वह बहुत ही मजबूत थ—पकल ही खुदाई करत रहे। उन्हें एक पत्थर की सिझ मिली। उँहोने आवाज लगाई। मैंने एक गंगाभा लगाकर उम उठाया। यकीन करो भाइयो चाँदनी रात थी घोर इन पर भी पत्थर के नीचे इतनी घमक थी कि

घम हाँक रहे हो क्रिस्तोनिया। मूँछों क सिरे सींचत हुग प्योत्र मुसकराया।

‘कीन हाँक रहा है। जाघो जन्नुम म। क्रिस्तोनिया न चोड़ी मोहरी क पाजामे की झटक भपन घाताघा की आर निष्ठारा नहा मैं झूठ नही मानता। भगवान् सुन रहा है। वही चमक थी मैंने देखा तो पत्थर का कोमला निकला। मरीच चालीस गुणम था। पिता बाल क्रिस्तोनिया घादर आजा घोर इन खोद डाल। मुबह तक मैं उम खोता रहा। मुबह मैंने देता घोर वह वह सामने था

कीन ? सोमालीन न पूछा।

मरे घतामान घोर कीन। मोके की बात वह मवारी पर उघर ही निकला। तुम्हें किमने खान्न की इजाजत दी? घोर न जान क्या क्या कहता रहा। उमने हम पकड लिया घोर सींचररगाँव म ल गया। रघारम सास हम कामेन्काया की घनालत म पेग हुए, लकिन मेर पिता पहल ही भागम समझ गए घोर इस दुनिया से बस दिए। हमने लिपकर

भेज दिया कि वह नहीं रह ।

क्रिस्तोनिया न उबनी हुई ज्वार का अपना बतन उठाया और ताडा स चम्मच सान चल लिया ।

भार तुम्हार पिता न क्या किया फिर ? उन्होंने गिग्जा बनवाना वायदा किया था न बनवाया नहीं ? उमक लौन पर स्तीपान न पूछा ।

‘तुम ता बवजूक हा स्तीपान ! लकना क कायन क बदल में भला वह क्या बनवाते ?’

जब उन्होंने वायदा किया था तो नह पूरा करना चाहिए था ।

यह बात ता नहा हुई थी कि चाह वायला निकल और घाटे खजाना हैमी का एक ठणका गुंजा । भाग भनककर जलन गयी । क्रिस्तोनिया ने सिर ऊपर उठाया और बिना वह यह समझे कि लाग क्यों हँस रह रहे खुद भी इन तरह ठहाक गान लगा कि दूमरा की आवाज दब गई ।

५

जब स्तीपान अस्ताखोव न माथ अकनोनिया का गाला हुई तब वह सबन वय की था । वह दान क उस पार वलुह मदान में वस दुवगावका नामक गाँव की नठकी थी ।

अपनी दादी म एक साल पहन वह अपन गाँव स कार्द घाठ वस्टे^१ दूर सत जात रही थी कि उसक पचाग-वर्षीय पिता न रात म उमके हाथ बाँध लिए और उमक माथ बलात्कार कर डाला ।

भूँह म नाँस भी निक्सी ता तुम्के जान म भार डालूगा । मकिन मगर मुह बन्द रखगी तो मैं तर लिए पना जानिट सम्ब माज और गासाग जूत ला दूंगा । याद रख गना घाल दूंगा । बाप न मइकी स कहा ।

अनोनिया फटा पेटाकाट पहन रात में ही नागी भागी घर आई

^१ पुराना रुमा नाप । एक अंगुल लगभग २।३ सें.म. के बराबर होता है ।

दिल म उनके लिए बाईं लंठ नही रहा रही बवल स्निधाचित करणा और अम्यास से बनी आदतें । एक साल क अन्दर ही अन्धा मर गया । जीवन का क्रम पूर्ववत् चलन लगा और जब प्रिगोरी मलखोष पर अकसीनिया की निगाह पडो ना अकसीनिया यह साचकर सिहर उठी कि वह उस भल हट्ट बट्ट जवान की आर लिख रही है । वह उस प्यार करता और बड़े धीरज और लगन से बदा म प्यार पाना चाहना । इसी धीरज और लगन स अकसीनिया काँप गई । उमने देखा कि प्रिगोरी को स्तीपान का बाईं डर नही है । वह समझ गई कि स्तीपान क कारण प्रिगोरी पीछे नही हटेगा । उमने यह मृसीवत टालनी चाही और पूरी ताकत स अपने मन पर काबू पाना चा । लेकिन उसने अनुभव लिया कि इस पर भी इतवार मा छुट्टियो क दिन वह बनाव भिगार किण बिना रह नहा पाती । यह अपने आपका घोवा देती और किसी-न किसी वहान प्रिगोरी के सामन पड ही जाती । प्रिगोरी की लुगी और प्यार स भरी निगाह को अपने आप पर जमी देखकर वह प्रसन्न हो उठती । एक दिन वह तडक उठी और दूध दूहन गई तो स्वय ही मुसकरा उठी । और इस मुसकान का कारण समझे बिना अपने आप सोचने लगी— आज का दिन खुशियों स भरा है पर क्या ? आह प्रिगोरी ओश्का ! वह आज की इस नई भावना से सिहर उठी । पर भावना थी कि उसक तन मन म समा गई था । अकसीनिया अपने विचारो म दूबी हाशियारी स राह टटोवने लगी जस कि माघ क महीन म बफ गल रही हो और गेम म वह दोन पार कर रहो हो ।

सो स्तीपान को कम्प क लिए विदा कर उमने निश्चय किया कि मैं प्रिगोरी क सामने कम-म कम पड गी । और मछली क गिकार क बाद की उस घटना स उमक निश्चय की बल ही मिला ।

८

द्विनिटी ' के दो दिन पहल गाँव की अरागाहो जमीन का बँटवारा

हुमा । व्यवस्था म पन्तेली न भी हिम्सा लिया । गाम को खान क समय पर सौटा तो भुनभुनात हुए जूते उतार फेंके और धकान स घूर भ्रमन परों को जोर म खुजलाता हुमा वाला—

हम साल किनारे क पाम की दुकड़ी मिली है । वहाँ की घास कोई इतनी अच्छी नही होती । ऊपरी हिम्सा जगल तक चला गया है । जगह जहाँ-तहाँ कटी फटी है । कही-कहा नम्वा नुकीला घास उगो हुई है । अच्छा तो घास काटना कब है ? त्रिगोरी न पूछा । छुट्टियों क बाद ।

तो धारया का भी साथ ल जायाने ? बुद्धिया न भौंह चटाते हुए कहा ।

पन्तेली न उम निडक दिया में धकला जाऊगा । जरूरत पडी तो उस भी साथ ल लूंगा । खाना तैयार करो न तुम यहाँ खडी मँह क्या फला रही हो ।

बृद्धा पत्नी न भट्टी का तस्ता खोला और बोध (बटगोभी का गरम घोरवा) बाहर निकाला । पन्तेली काफी देर तक खान पर बटा दिन मर की बातों और प्रतामान की चालबाजियों की चर्चा चलाता रहा । प्रतामान ने कन्झाका को ठग लिया था ।

दार्या टुपकी पिछल साल हा उसने कौन कम बदमाशी का थी । अभीनो क बटवारे क समय उसने मलाइका का किस तरह जटने की कोणिंग की थी ।

वह हमसा से ही हरामखोर रहा है कुत्त का बच्चा । पन्तेली ने जवाब दिया ।

अभिन पाया हगा कौन फिराएगा और कटा हुई घास की टाल कौन सगाएगा ? दूया न टरते हुए पूछा ।

क्यों तुम नहा करोगी ? मैं धकला ता कर नहीं सकती ।

हँ ! धकसीनिया घस्ताखाव स कह देगे । स्तीपान भी तो हमस पपनी घास काटने का कह गया है । दो दिन बाद मीरका कोरगूतोव सफ़द टाँगोवाल स्टलियन पाहे

पर सवार होकर मेलेसाव न अहाते की घोर धाया। उस समय मज की बू बें पड रही थी। गाँव में घना कोहरा छाया हुआ था। मीत्का भुका घोर भाँगन का छाटा दरवाजा खोल अन्दर घुसा। मुद्रिया ने सीढियों से ही उस ललकारा—

घो संतान की भाँत ! क्या चाहिए तुम्हें ? उसका स्वर में स्पष्ट असन्तोष भन्वका। वृद्धा क हृन्व में दीज-डाल भगडासू मीत्का क लिए जरा भी प्यार न था।

इलीचना तुम्हें भला क्या परशानी है ? मीत्का ने घोड़े को जगल से बाँधते हुए पूछा मैं प्रिगोरी क पास भाया हूँ। कहाँ है वह ?

‘शेड में सा रहा है वह। लेकिन किसी न तुम्हें पोटा है क्या ? तुम्हारा टाँग बकार हा गर् हैं क्या जो घोड़े पर चढ़ फिरते हो ?

हर बात में तुम भना अपना टाँग क्यों अडाती रहती हो ! मीत्का को क्रोध आ गया। अपने चमचमात पूतों पर चाबुक भाडता वह प्रिगोरी को अोजन धम दिया। प्रिगोरी गाड़ी न नीचे साता मिना। अपने बायीं घाँस दबाते हुए मीत्का न उस पर एक चाबुक अडा। बोला उठ बे मुजिक !

मुजिक स बड़ी कोशे गामी उस नहीं सुभी। प्रिगोरी अछलकर बैठ गया मानो अिग पर पडा रहा हो।

क्या बात है ?

‘उठो न बहुत सो चुके !

बेवदूअी की बातें न करो धीरका नहीं तो मुझे गुस्मा आ जाएगा।

उठा मुझे सुमसे पुछ जरूरी बातें करनी हैं।

‘हुआ क्या ?

मीत्का गाड़ी को अग्रम में बठ गया और एक छडी से पूतों की मिट्टी भाड़ते हुए बोला ‘धीरका, मरी अदरजती हो गई है।

कस ?”

* मुद्रिक जारकालीन रूप में रहे रहे, वेपदे लिखे किसान को कहते थे।

‘सो न मीत्का ने गालियो की बौछार कर डाली वह सफिटनट है न इमनिण शान दिखलाता है। उसने क्रोध स कहा। उसकी टांगें काँप रही थी। प्रिगारी उठकर बैठ गया।

कीन है सफिटनॉट ?

उसकी आस्तोन पकड़ मीत्का ने शान्ति से कहा घोड़े पर झटपट जोन कसो घोर चरागाह का चलो। मैं उसे दिखला दूँगा। मैंन उसस कहा ब्राइय हुजुर ! हम देख लेंगे। वह बोला, ‘तुम अपने सब माथियों और हिमायतियों को न आभा। मैं सबको हरा दूँगा। मेरी घाड़ी न पीसमदुग म अक्रमरों का हरविल रेन म इनाम जोत है। मला उसकी घोड़ी स मुके क्या लना-ना ! भाड में भोंको उन्हें ! मैं उन्हें अपने स्टलियन स भाग नहीं निकानन दूँगा।

प्रिगोरी न झटपट कपड़े पहन। क्रोध से लाल मीत्का उस हड बढाने लगा।

‘वह मोखोव परिवार म मिलने आया है। ठहरा मला-सा नाम है उसका। गायद बिस्तनित्की। लम्बा-चौड़ा है दखन म गम्भीर है। आँसा पर आमा चढ़ाता है। छर ता चढाय आमा। चरमा उसकी मदद नहीं कर सकता। मैं उन अपने घोड़े क पास तक फटकन नहीं दूँगा !

प्रिगोरी हँसा और अपनी बूटी घोड़ी पर सवार हो मीत्का क साथ बन दिया। निकला घोसार क दरवाजा स ताकि नहीं पिता स मुठभेड न हा जाए। लिस्तनित्की की घोड़ी स मीत्का क घोड़े की दौड हुई। मीत्का जीत गया।

कन ही इसन डेड मो वस्त तय किये हैं। अगर यह थकी न होती तो कारगूनाब तुम मुझम आगे न निकल पात। पेड स पीठ सटाए, सिगनेट पीस हुए लिस्तनित्की न भाग छोडती हुई अपनी घोड़ी की ओर सक्त कर कहा।

हा सकता है। मीत्का न उदारता से कहा।

मीत्का का स्टैलियन जिले में सबसे अच्छा है। एक लडक ने कहा। वह अभी अभी ही वहाँ आया था।

‘घोडा अच्छा है। मीत्का बोला और अपने स्टलियन की गदन पर

हाय फेरन लगा ।

फिर प्रिगारा घोर मीत्का गाँव का चक्कर लगात हुए घर लौट पडे । विस्तारिस्की ने उनस विदा ली । उसने दो प्रँगुलियाँ अपनी टापी क अन्दर जलीं घोर मूट गया ।

दोनों घर क पाम पहुँचे हां ये कि प्रिगोरी ने अकसीनिया को अपनी घोर आते देखा । वह एक डाला को छीमती बला भा रही थी । प्रिगोरी को दसते ह्ये उनने अपना मिर भुका लिया ।

तुम क्षम स लाल क्यों हुई जा रहा हो ? हम काई नये ला हैं नहीं ! मीत्का ने चिल्लाकर कहा घोर घोल मारो ।

नामन देयता हुआ प्रिगोरी उसक समोप आया हां या कि उसन अकक कर चलता हुई अपनी घोड़ी का हन्के स चाबुक मारो । घानी ने अपने पिछन परो पर बरकर अकसीनिया क ऊपर धूल की बोछार कर ग ।

पागल शतान कहो का !

प्रिगोरी घोड़ी को उसके पास ले आकर बोला पहचानती नहीं ?

‘तुम इस काविल नहीं ।

घोर इसीलिए मैंने तुम पर धून का बादल उछाला । इतना अकडो मत !

मुझे जाने लो । घाट की नाक के सामन हाय नचात हुए अकसीनिया बोला कुचल दागे मुझे अपने घाटे से ?

घोड़ी है घोडा नहीं ।

मुझे जसमे क्या जान दा मुझे !

अकसीनिया गुस्मा क्यों हो ? उस तिन की शरागाह वाली बात पर ता नाराज नहीं हा ?

प्रिगारा न उसकी आँखो म आँखें डाली । अकसीनिया ने कुछ कहने की कोशिश का कि एकएक उसकी बाली आँख की कार में एक आँसू भरक आया । उनक झोठ घरघराने लगे । आँसू बटिनाई से पोती हुई बोली प्रिगोरी चल जायो मैं गुस्मा नहीं हूँ मैं घोर यह खती गई ।

प्रिगोरी को आश्चर्य हुआ । दूररे ही दाल वह फाटक पर लडे मीत्का

के पाम जा पहुँचा ।

शाम को मिलोगे न ? भीस्का ने पूछा ।

‘नहीं ।

क्या क्या बात है ? भक्सीनिया ने रात की दावत दी है क्या ?
द्विगोरी ने माथे पर हाथ फरा और कोई जवाब नहीं दिया ।

६

द्विनटो क नाम पर गाँव के घरों में बची रही फ्रस पर बिखरी भ्रमवादन सूखी पत्तियों का झूरा फाटकों और सीढ़ियों पर बँधी धोक तथा ऐस के पेडा की झालियों की सिङ्कुडी-सूखी पत्तियाँ ।

द्विनटो क बाद ही लोग घास को सुखाने के काम म लग गए । सुबह से ही चरागाह त्योहार के अवसर पर बने औरतों के स्कटों, एप्रनों की कसोदाकारी के घटख रगा और रगीन रुमाजो से सजने लगी । सारा गाँव घास की कटाई ने लिए निकल पडा । घास काटने और हँगा फरनेवाले ऐस सज रहे थे जैसे कोई त्योहार मनान जा रहे हों । धीन से घालदार की भाडियों तक के सार इलाके में इन दिनों जैसे नई जान धा जाती थी । इस वार भेलखोव परिवार ने काम तब आरम्भ किया जब आधा गाँव चरागाह म पहुँच गया ।

‘वैन्तेसी प्रोनो फेयेविच काफ्री देर तक सोते रहते हैं आप ।’ पत्तीने से तर घास काटने वाले भ्रमिवादन करते हुए बोले ।

मेरी गलती नहीं है—टटा बही औरतो ना है । बूढे ने हँसकर वसों की बच्चे बमडे की चाबुक से ठेला ।

पड़ोसी, सलाम थोड़ी देर हो गई आपको है न ? स्ट्रों-टाप लगाए एक कज्जाक बोला । वह सटक न किनारे खडा अपना हँसिया तेज कर रहा था ।

सुम्हारा खयाल है कि घास सूख जाएगी ?

भगर धव भी कटाई शुरू न की तो जरूर सूख जाएगी ।

गाड़ी के पीछे भक्सीनिया बठी थी । घूप से बचने क लिए उसने अपना चेहरा पूरी तरह से ढक रखा था पर भाँसो की घोट से अपने

सामने बैठे प्रिगोरी को एकटक देखे जा रही थी ।

दार्या भी भन्धे से भन्धे कपडे पहने पास ही बठी थी । उसके पैर एक धोरको लटक रहे थे । उसका बच्चा उसकी गोद में झोंघा पडा था और वह अपनी नीली नसों वाली छातियों से उसे दूध पिला रही थी । दूधा गाड़ी की गद्दी पर बठी हथर उधर कर रही थी । खुशी स नाचती उसकी निगाहें अरागाह और सडक पर चलते लोग का सखा जोखा ल रही थी । उसका धूप से सवरा चेहरा जस कह रहा था— मेरे मन में उमंग है धीरे मैं खुश हूँ क्योंकि नीलम का धुसा आसमान खुशी बरसा रहा है क्योंकि मेरी आत्मा भी उसी नीलम-शान्ति से जगमगा रही है । मैं खुश हूँ । मेरे पास भर मन का सब-कुछ है ।

पँत्तेली ने सूती कमीज की आस्तीन मुट्ठी पर मड़ी और टोपी के नीचे स बहते हुए पसीने को पाछा । कमीज उसकी मुकी हुई पीठ पर तनी भी लगी और उस पर जहाँ-तहाँ तम धब्बे नजर आए । मूरज की तिरछी किरणों ने एक भूरा बादल भेदा और चगगाह गाँव यहाँ से वहाँ तक फली दूरी और दोन की रुपहली पहाडियों को अपने धुँपल प्रकाश से नहला दिया ।

दिन उमस अपने साथ लाया । मन्हे-मन्हे बादल झोंघाते-से हवा के पखों पर उडते रहे । सडक पर चलते पँत्तेली क बसो तक को वे रफ्तार में मात न दे सके । बूडे ने चाबुक उठाया और हवा में लहराया । उसकी समझ में न आया कि बला के हट्टु-बाजघों पर घोट करे या न करे । शायद बसो न उमक मन की दुविधा समझ ली और उसी तरह धीरे धीरे चलत रहे । अरागाह में खलिहानों के आस-पास जहाँ पास बट चुकी थी जमीन में पील-हरे टुकड़े ली देते लग । पर जिस जगह की पास बटो न थी वहाँ की रेगमी हरी पास जाल रग की भ्रष्ट मारती हवा में सरसराती रही ।

‘वह रही हमारी टुकड़ी । पँत्तेली ने अपना चाबुक नचाया ।

पके हुए बँलों को प्रिगोरी ने खोल दिया । बूड के कान की बाली धमक रही थी । वह टुकड़ी के अपने निगात को देखने चला ।

हँसिए ल आसो । हाथ धुमाते हुए क्षण भर बाद उसने कहा ।

घास को रौंदता हुआ प्रिगोरी उसके पास पहुँचा। घास पर उसके पाँवों से लहरिया माग बनता चला गया। पैन्तिली ने दूर न घटाघर की ओर मुँह कर कास का चिह्न बनाया। उसकी नोकदार नाक ऐसे चमक रही थी जैसे उसे अभी अभी चमकाया गया हो। उसके फूले हुए गाला पर पसीने की बूँदें बह रही थीं। ऐसे म दाढ़ी में छिपे उज्रन चमकीले दाँत निकाल वह हँसा अपनी गदन दाड़ ओर मोठी ओर घास पर हँसिया चलाने लगा। देखते देखते कटी हुई घास का सातफुटा प्रद्वृत उसक परों के पास जमा हो गया।

प्रिगोरी अघमुँदी भाँखा से अपने पिता का अनुकरण करता रहा और घास हँसिए स नाट-काटकर जमा करता रहा। औरतों क एप्रन उसके सामने इन्द्रधनुष बुनते रहे, पर उसकी भाँखें सिफ कसोदे के काम के एक सफ़द ऐप्रन की खोज करती रहीं। उसने अकसीनिया की ओर देखा और जरा देर बाद अपने पिता के कदम से कदम मिलाते हुए फिर घास काटने लगा।

अकसीनिया उसके दिमाग म बराबर नाचती रही। भाधी भाँखें बन्द कर उसने बलना में अकसीनिया को जूमा और उसस बडे ही प्यार भरे शब्दों में बातें कीं। वह स्वय नहीं जान पाया कि क शब्द उसकी जवान पर आए कहाँ से! फिर वह इन विचारों स उभरा फिर बदस्तूर खालू हो गया एक दो तीन कुछ पिछली यानें हरी हो उठीं—सूखी घाम की नम टाल चरामाह के ऊपर चमकता हुआ चाँद भाठी से कभी-कभी पोखर म गिरती बूँदें एक दो तीन 'वाह-वाह! क्या कहने हैं बड प्यारे क्षण थ वे!

सहसा हा पीछ से उस हसी का ठहाका सुनाई पडा। उसने मुहकर देखा गाठी न नीचे दारया लेटी हुई थी और उसने ऊपर मुकी हुई अकसीनिया उसस कुछ कह रही थी। दारया ने अपने हाथ नचाए और फिर वे दोनों हँस पड़ीं।

पहल उस भाडी तक पहुँचूंगा और फिर अपना हँसिया तज करूँगा— प्रिगोरी ने सोचा।

एकाएक उसका हँसिया किसी कोमल-सी चीख से टकराया। प्रिगोरी

न मुक नर देखा एक जगमी बत्तख का बच्चा घास में इधर-उधर भागता धीरे कीकता नजर आया। साथ ही घोंसले के सुराल के पास एक दूसरा बच्चा हसिए स कटा पठा मिधा। प्रिगोरी ने मरी हुई बत्तख को हथेली पर रखा। अभी कुछ दिनों पहले ही तो शायद यह बच्चे से बाहर आया था। जगह में गरमी अब तक थी।

धीरे धीरे घोंसले पर खून की गुलाबी-सी धूँद थी। माता की गुरिया-सी घोंसले जस सिकुड़ गई थी। न रहे-न रहे गरम पैर अब तक धर धर रहे थे। प्रिगोरी का मन सहसा ही गोला हो उठा। उसने अपनी हथेली पर सघे गँद-से पंखी को दद से देखा।

तुम्हें ऐसा क्या मिल गया प्रिया ? दुनिया अपनी धोड़ियाँ अपने सीने पर लहराती कटी हुई घासवाले क्षत्र के बीच से नाचती आईं। प्रिगोरी ने बच्चे को फेंक दिया। उस हँसिय पर गुस्सा-सा आ गया।

खाना जल्दी-जल्दी खाया गया। खाने में सूअर की चर्बी करजाकों का छाप खाना धीरे मखनिया दही। सारी चीजें धर स धँसे में लाई गई थीं।

खाने के बाद धीरे-धीरे ने घास को हँगी से बराबर करना शुरू किया। कटी हुई घास धूप में सूखने लगी। उससे बची-बची बास घाने लगी।

धर बसने से कोई लाभ नहीं। पंखेली ने खाने के बाद कहा हम बँसों को यहीं धरने का छोड़ देगे धीरे कस ज्यों ही घोंसले सूख जाएगी घास काटकर बराबर कर देंगे।

दोनों समय मिलने लगे कि उठोने काम बाद कर दिया। अन्तिम दोना पातों की घास को हँगी से बराबर कर प्रकसीनिया जुमार का दनिया पकाने के लिए गाड़ी के पास गई। वह दिन भर प्रिगोरी की धीरे नकरत भरी निगाह से ताकती हुई उसका यों मजाक बनाती रही थी जैसे कोई बड़ी घोट भूम न पाती हो धीरे उस बड़े बक के का बदला लती रही हो। इससे उदाम धीरे परेमान हो प्रिगोरी बँसों को पानी पिलाने के लिए दोन की धीरे हाँक ल चला। पिता उस धीरे प्रकसीनिया को सारे दिन

देखता रहा था। सो प्रिगोरी की ओर अग्रिम-दृष्टि से देखत हुए बोला रात के खान के बाद बलों की चिन्ता करना। देखना कि कहीं घास में न चल जायें। मेरी भेड़ की खाल न लो।

दारया न अपना बच्च को गाड़ी के नीचे लिटाया और भाड़ी की सक्ठी बाटने के लिए दूया के साथ चल दी।

घटता हुआ चाँद अरागाह के ऊपर के विस्तृत पाल ऊँचे आसमान पर चढ़ गया था। सपटो के चारो ओर पतियों का लुफान सा उमड़ चला। रात का खाना एक भाटे कपड़े पर लगा दिया गया। जुमार पुमाँ देते बतन में उबलती रही।

अपनी नीचे की कुरती से चम्मच को पाछते हुए दारया ने प्रिगोरी को धाराय दी भायो, खाना खा लो।

पिता बसो भेड़ की खाल कर्षों पर डाल प्रिगोरी अंधेरे से भाग के पास आया।

इतना दिमाग क्यों चढ़ा हुआ है ?' दारया न मुसकराकर पूछा।

पीठ में दद हो रहा है शायद पानी भरसेगा।' प्रिगोरी ने जवाब दिया।

तुम बलों की रखवाती करना नहीं चाहते। दूया हँसी और अपने भाई के पास बैठकर उसे बातों में लगाने की कोशिश करने लगी किन्तु वह असफल रही। पल्लो ने शोरवा पिया और अथपक जुमार दाँती से चवान लगा। अकसीनिया बिना भाँखें ऊपर उठाए जाती रही। दारया के परिहास पर केवल मुसकरा दी किन्तु उस मुसकान में कोई उत्साह नहीं था। उसके गाल मन की परेशानी से लाल हो उठे।

सबसे पहले प्रिगोरी आकर उठा और बलों के पास गया।

देखना बिल किसी दूसरे की घास न रोँदें। पिता ने विल्लाकर कहा। इस बीच जुमार गल में घटक गई और वह बहुत देर तक बेचैनी से खामता रहा।

दूया न अपनी हसी दबाने की चेष्टा की तो उसके गाल फूल गए।

भाग मदिम पड़ गई थी। भाड़ी की सक्ठी के चारो भाग जलती हुई पतियों से गहद की सी भीनी भीनी मरुक भात लगी।

प्राची रात के समय प्रिगोरी धीरी-धीरी खम तक गया और कोई दस बंदम व फासने पर रुक गया। पिता गाड़ी पर खरति भर रहा था। अघबुभी घाग नी राख के बीच स मुनहरे मोर की सी भाँखों वाल अगारे भाँकसे रह।

घादर म लिपटी एक भूरी आकृति गाड़ी स उठी धीर धीरे प्रिगोरी की धोर बढी और दो या तीन क्रदमो की दूरी पर रुक गई। वह अकसीनिया थी। प्रिगोरी का दिल तेजी से घड़कने लगा नाडी की गति तेज हो गई। उसने दारौर पर की भेड़ की खाल व सिर के पीछे भटका और कामता नी घाग से मुलगती नारी को अपन सीने से लगा लिया। अकसीनिया घुटनों व बल बठ गई। वह भाँपती रही और उसने दाँत बिटकिटाते रहे। प्रिगोरी ने एकाएक उस अपने कचे पर या डाल लिया असे भेड़िया मरी हुई भेड़ को अपने कचे पर डालता है। इसक बाद कोट के घिसटते हुए सिरों क कारण लडखडाता हाँफता वह उसे ल भागा।

‘श्रीशका ! श्रीशका ! तुम्हार पापा

सि ! चुप ।

बिलसती हुई अकसीनिया ने भेड़ की ऊन के बीच से साँस लने को सिर निकालते हुए लगभग चौखकर कहा मुझे छोड़ दो मैं अपने घाप चनुगी।

१०

त्रिम औरत व जीवन म प्रम देर स घाता है उसका ध्यार नीला या पास्त व फूल की तरह रतनारा नहीं हाता। वह तो रास्ते ने एक बिनार उगी हुनबेन की भासा की तरह सीमा और शोख होता है।

पास की बटाई के बा अकसीनिया बिलकुल बदम गई माना किसी न उसने चेहरे पर कोई छाप निगान बना दिया हो—मुहर मार दी हो। गाँव की दूसरी औरतें उस देखत ही कृटिलता स मुमकराती और उसक निकल जाने पर सिर हिलाता। कुभारी लडकियाँ उसम ईर्ष्या बरती। पर उसका शम स सास चेहरा भी हमेशा खुशी म सिना रहता। उसकी गदन अभिमान स सदा ही सनी रहती।

जल्ना ही प्रिगोरी मेलखाव और भक्सीनिया के सम्बन्ध की बात चारो ओर फल गई । पहले तो कानाकूमी होती रही । लोगों की पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ । पर एक रात पिछले पहर गाँव के गडरिय न उन दोना को हवा चक्की के पास खोदनी में राई न खेतों में सट दख लिया । बस इसके बाद तो यह भक्सीवाह एस फनी जस ज्वार क किनारे से टकराने वाली सहर ।

बात पन्तेली न काना में भी पडी । एक रविवार को ऐसा हुआ कि वह मोखोव की दूकान पर गया । लोगों की भीड़ ऐसी थी कि वहाँ तिल रखन की जगह न थी । वह अन्दर घुसा तो लोग मुननरात हुए उसके लिए रास्ता करने लगे । वह सीधा कपडे क काउण्टर पर जा पहुँचा । दूकान का मालिक सगेंद प्लातोनोविच मोखोव स्वयं उसके पास आया । पूछा प्राको फ्यविच आजकल कहीं बाहर रहत होक्या ?

काम बहुत है । काम की तमाम परेगानियाँ हैं ।

'क्या ? तुम्हारे बटों-असे लडकों क होते हुए भी परेगानियाँ ?

'लडक नया करेगे ? प्योत्र कम्प क लिए चला गया । मुझे और प्रीदका को हा सारा काम करना पडता है ।

मोखोव ने अपनी दाढ़ी के बडे वालों के बीच अँगुलियाँ फेरी और कनसी से भाड की ओर देखा ।

यह तो है पर तुमन हम सबसे इस सबका डिक्क नहीं किया ।

किस बात का डिक्क नहीं किया ?

'अरे अपने लडक का ब्याह रचान जा रहे हो और किसा का कानोंकान खबर तक नहा !

किस लडक का ?

प्रिगोरी का 'उसकी गादी अभी कहां हुई !

'अभी तो उसका गादी-ब्याह का कोई इरादा नहा ।

किन्तु मैं न सुना है कि तुम स्तीपान अस्ताखाव की भक्सीनिया को बहू बनाकर ला रहे हो ?

तुम भा खूब मजान करते हा प्लातोनोविच ? अरे उसका अपना मद है पन्तेली न कहा ।

'मजाक कसा ? मीने तो सोगा स सुना है ।
काउण्टर पर पडे कपडे को पन्तेली ने समेटा घौर तेजी स मुडकर
लगहाता हुमा दरवाज की घोर सपना । वस की तरह सिर झुकाए घौर
कसकर मुटठी बाँधे सीधा घर की घोर बडा । मस्ताखोव की भोपही के
सामन स निश्चलत समय सरपत की बनी बाड के बाँध स भौंका । नितम्बों
का हिंसाती हुई प्रकसीनिया बनी-ठनी हाथ म खाली बाल्टी लिये धून्ह
हिंसाती घर में घुसती नजर घाई । जवानी सदा म कहा जवादा निखरी
सगी ।

ए रुक ! पन्तेली न पुकारकर कहा घौर दरवाज पर ठठक
गया । प्रकसीनिया रुक गई । दोनों घर के अन्दर गये तो बडे सिर वाली
एक बितकबरी बिल्सी पन्तेली के पाँवों के पास आकर दुलराने लगी ।
उसने अपनी पीठ गोलाई घौर उसे पन्तेलीक जूतों स रगहने लगी ।
पन्तेली ने ऐसी कसकर ठोकर लगाई कि बिल्सी मटके से बँच पर जा
गिरी ।

अब यह प्रकसीनिया की आँखों में आँखें डालत हुए चीखा 'मैं यह सब
क्या मुन रहा हूँ ? अभी तरे मद को आँखों की मोट हुए दम-बीस दिन
भी नहीं गुजरे घौर तू दूसरे मर्दों पर डोरे डालने लगी ? मैं प्रीका
का मून कर दूँगा घौर तू स्तोपान को लिखूँगा । जरा पढ़ने दे बात
उसक कान म । रही कहीं की ! तरो मरम्मत हुई नहीं बायदे से ।
आज के बा' मेर अहाते में पर न रखना सममी ! कमसिन स ट'क
सहाती है । स्तोपान आवेगा तो निपटेगा तुझे

प्रकसीनिया आँखें सिक्काड मब-कुछ मुनती रही । एकाएक अपने स्कट
क घोरो को बगर्मी से उठाकर वह पन्तेली के सामने सीना तानकर खड़ी
हो गई । कौथ स होंठ फुनाती घौर दाँत क्लिटकटाती बोनी 'तुम कौन
हो मेरे समुर ? बडे घाए सींग देने वाल ! जाया घौर अपनी घमघूमड
घोरत को सीख दो ! अपने घाँगन का बूडा म्हाडो ! सगहा
घातान कहीं का ! निबल जा यहाँ से ! मैं तेरी घाँस में नहीं घाने
वासी !

'टहर तो यवभूऊ की बचपी' !

क्या होगा ठहरकर जिन परा धाय हा खर चाहत हा वा चल जाया। 'याद रखा अगर मैं चाहे ता तुम्हारे प्रीणा का हृदियों सहित चबा जाऊँ—उसकी हृदियों निबाडकर रख दू इसकी बधाबन्ही किसी और पर नहीं मुझ पर हागी। क्या हुआ अगर मुझे प्रीणा स प्यार है तो ? तुम मुझे मारा मारा ! तुम मेरे मद को लिखाय ? मद को ही नहीं प्रतामान को लिख दा लेकिन प्रीणना मरा है और मरा रहगा ! वह मर पास है और वह मर पास रहगा !

पन्तली के वर परतानी स कांपन सगे ।

अकसीनियान उसे धपने सीने स कसरकर धक्का निया तो पतली जाकिट में सीता फन्टे में फसे धारस-सा भगा । अपने धपनी काली-काली धाँसा की सपटों स उस जसा दाता और उसक ऊपर गन्ने-से-गन्ने और भद्-से-मद्दे धपनाओं नी बौद्धार की । बूटे की नहिं कांपने सगीं । उसने नीने से धपनी छडी उठाई धपनों की तरह सटखडास हुए पाद्य हटा धपने बूल्हों स धक्का दकर दरवाजा खोला । अकसीनियान काधस हाँपत हुए धक्के दकर उस ऊपेड़ी स बाहर कर निया और चौखकर बोली मैं उसे प्यार नरुँगा । मैं जितना सहा है धब उस सबकी नमी पूरा करुँगे । इसक बाद चाह तुम मुझे जान स मार टालना—वह मेरा है । प्रीणा मेरा है ।”

हौठों-हौ-हौटा बढबडाता हुआ पन्तली धपन धर की धार बडा ।

प्रिगोरी उसे कमर में ही मित गया । मँह से एक दाब् भी कह बिना उसन धपना छडी उठाई और प्रिगोरी की पीठ पर दे मारी । प्रिगोरी दाहराकर पिता की बाँह पर भूख गया ।

“यह क्यों पापा ?” उनने पूछा ।

‘तरी करतूठों के लिए टाइन की घोपाद ।

‘कसी करतूठे ?

धपन पडोसी की धोपट न कर । धपने पिता का धपमान न कर । औरनों क पीछे मन भाग कुत्त नहीं क ! पन्तली ने उसे कमरे में धारों और धसीटडे हुए कहा । प्रिगोरी ने उसके हाथ की छडी छीनन की कोचिश की ।

'तुम मुझे मार नहीं सकते !' त्रिगोरी जोर से चिल्लाया । दाँतों को बीच-बीच उखलाने पन्तली ने छड़ी छीन ली और घुटनों पर रखकर टुकड़े-टुकड़े कर दी ।

मैं सबने सामने तुझे काटे लगाऊँगा—राजस वहीं का ! मैं तेरी घादी गाँव की किसी बेवकूफ सड़की से करूँगा । तुझे बधिया कर दूँगा । पन्तली ने दहाड़कर कहा और उसकी गदन पर कसी हुई मूटठी से धूँसा जमाया ।

गोरगुप्त मुनकर दूँगी मैं भागी हुई आई पन्तेली ! पन्तेली ! जरा सब करो ! ठहरो !

किंतु वृत्त कावू क बाहर था । उसने अपनी पत्नी का भ्रूककर अलग कर दिया मज को कपड़े की सिलाई की मशीन समेत पपट दिया और बिजली की मुद्रा में भागकर अहात में पहुँचा । हायापार्स में त्रिगोरी की कमीज फट गई थी । वह अभी कमीज उतार भी न पाया था कि महान में दरवाजा खुला और चाँची-नूफान की तरह पिता फिर बयोड़ी पर नजर आया ।

'मैं करूँगा इसकी घादी ! डाइन की घीलाए ! उसने त्रिगोरी की पीठ पर घोड़े की तरह सात जमाई । मैं बल ही जाकर दात पक्की करूँगा ! मैं यह देखने के लिए नहा जिऊँगा कि मेरे धटे के नाम पर लोग मेरे मूह पर मेरी खिल्ली उड़ाएँ ।

'पहन मुझे कमीज पहन मेने दा फिर मरो घादी करना । त्रिगोरी बोला ।

मैं करूँगा तेरी गान्नी ! गाँव की पगली से करूँगा तेरी घादी । दरवाजा भराक से बन्द हुआ और दूरा मीठियों से नीच उतर गया ।

मेनाकोय के गाँव के आगे के चरागाह में मोमजाम के पालोंवाला गाइयाँ यहाँ-वहाँ तक फली हुई थी । वहाँ आँचपत्रनक गति से उजली छत्रावाना छाटा-या नगर बस गया था । नगर की सड़कें सीधी

थी । बीच में एक छोटा सा चौक था । चौक में सन्तरी पहरा देता था ।

यहाँ लोग शिक्षण अधिबिर का सा नीरस जीवन बितात । सुबह चौकसी पर तैनात कज्जाकों की टुकड़ियाँ घास चरते हुए घाडा की हाँक कर कम्प में ल जाती । फिर सफाई घोड़ों का खरहरा साज की कसाई और हाजिरी भराई असे कामों का दौर शुरू होता । कम्प का स्टाफ अधिकारी अपना कामान की सारी व्यवस्था देखता और जोर-जोर से चीखता । जवान कज्जाकों का टूनिंग देने वाला सारजेष्ट जोर-जोर से हुक्म देता । वे पहारी पर हमसे का नाटक करते । दुश्मन को चतुरता से घेर लेते । कटार बलान में युवक कज्जाक आपस में प्रतिस्पर्धा करते । पुराने लोग टूनिंग से ज्यादा-से-ज्यादा जान चुराने ।

इस तरह गरमी और वोदका से वहाँ के लोगों के गल भरति रहे कि गमकती हवा बहने लगी । ससलिक कवाब की महक से वातावरण भरने लगा । सफ़ती से घुली मोंपडियो की घुटन उमस और घुर्मा स्टेपी के मदान तक पहुँचने लगा ।

कम्प समाप्त होने में एक सप्ताह रह गया कि अट्रई घर के वन कुरकुरे बिस्नुट जायनेदार पिठाइयाँ और गाँव के दर-क-डेर समाचार लिये दिय सोमोलीन की पत्नी अपने पति से मिलने आई ।

वह तडके ही वहाँ से खाना भी हा गई और कज्जाकों ने घर परिवार के लोगों के लिए उनकी सद्भावनाएँ और सन्देश भी अपने साथ ल गई—केवल स्तीपान अस्ताखोव ने ही अपने परिवार के लिए कोई सन्देश नहीं भेजा । वह पिछली शाम बीमार पड गया था और ठीक होने के लिए उसने वोदका पी ली थी । इसके बाद नश में ऐसा घुत हो गया था कि दुनिया उसे नजर ही न आई थी । दुनिया में ही तो सोमोलीन की पत्नी भी शामिल थी । वह परेड करने नहीं गया और उसका अनु रोष पर डॉक्टर के सहायक ने रक्त निवालन के लिए उसका मान पर एक दर्जन जोंकें लगा दीं । स्तीपान अपनी गाड़ी के पहियेक सहारे बनि यान पहने बठा रहा और मूँह खोल अपने फूले हुए सीन का खून चुसती जोंकों का देखता रहा । जोंकें खून पी-पीकर फूलती गई ।

रेजीमेंट के डॉक्टर का मदसी खड़ा सिगरेट पाता और अपने गीतों

तुम मुझे मार नहीं सकते ! प्रिगोरी ओर से चिल्लाया । दाँतों को भीचनर उसने पन्तली से छड़ी छीन ली और घुटनों पर रखकर टुक-टुक कर दी ।

मैं सबसे सामने तुम्हें कोढ़े लगाऊंगा—राक्षस बड़ी का ! मैं तेरी दादी गाँव की किसी बंदकूफ लडकी से बर्हूँगा । तुम्हें बधिया कर दूँगा । पन्तली ने दहाड़कर कहा और उसकी गदन पर कसी हुई मुटठी से धूँसा जमाया ।

घोरगुल मुनकर बूढ़ी-माँ भागी हुई भाई पन्तली ! पन्तली ! जरा मन्न करो ! ठहरो !

बिन्तु बूढ़ा कावू के बाहर था । उसने अपनी पत्नी को भटककर धरम कर दिया । मज को कपड़े का मिलाई की मनीन समत पनट दिया और विजयो की मुद्रा में भागकर दहाड़ते म पहुँचा । हायापाई म प्रिगोरी की कमीज फट गई थी । वह अभी कमीज उतार भी न पाया था कि मझाक स दरवाजा खुला और भाँधी-सूफान की तरह पिता फिर डयोली पर नजर आया ।

मैं करूँगा इसकी दादी ! डाइन की घोलाद ! उसने प्रिगोरी की पीठ पर धोड़े की तरह लाल जमाई । मैं बल ही जाकर बात पक्का करूँगा ! मैं यह देखने क सिण नहीं जिऊँगा कि मेरे बेटे के नाम पर लोग मेरे मुँह पर मेरी खिस्ली उठाएँ ।

‘पहने तुम्हें कमीज पहन देने दा फिर मेरी दादी करना । प्रिगोरी बोला ।

मैं करूँगा तेरी दादी ! गाँव को पगली म बर्हूँगा तेरी दादी । दरवाजा भडाक से बन्द हुआ और बूढ़ा मीड़ियों से नीच उतर गया ।

मेन्नाकोव के गाँव क घागे क चरागाह म मोमजाम के पालीवालो गाड़ियाँ यहाँ-म-यहाँ तक फसी हुई थी । वहाँ घाघपत्रनक गति स उजली छतावामा छाटा-छा नगर बस गया था । नगर की सड़कें छोपी

थीं। बीच में एक छोटा सा चौक था। चौक में सन्तरी पहरा देता था।

यहाँ लोग गिखण शिविर का सा नीरस जीवन बिताते। सुबह चौकसी पर सैनात कज्जाकों की दुकड़ियाँ घास चरत हुए घोड़ों को हाँक कर कम्प में ल जाती। फिर सफ़ाई घोड़ा का खरहरा साज की नसार् और हाजिरी भराई जैसे नामों का दौर शुरू होता। कम्प का स्टाफ़ अधिकारी अपना कमान की सारी व्यवस्था देखता और जोर-जोर से चीखता। जवान कज्जाकों का ट्रेनिंग देने वाला सारजेण्ट जोर-जोर से हुक्म देता। वे पहाड़ी पर हमल का नाटक करते। दुश्मन का चतुरता से घेर लेते। कटार चलाने में युवक कज्जाक भापस में प्रतिस्पर्धा करते। पुराने लोग ट्रेनिंग से ज्यादा-से-ज्यादा जान चुराते।

इस तरह गरमी और थोड़का से वहाँ के लोगों का गल भरता रहे कि गमकती हवा बहने लगी। ससलिक कबाब की महक से वातावरण भरने लगा। सफ़ती से धुली भोंपड़ियों की धुटन उमस और धुमाँ स्टेपी के मैदान तक पहुँचने लगा।

कम्प समाप्त होने में एक सप्ताह रह गया कि अर्धई घर का वन कुरकुरे बिस्कुट ज़ायकेदार मिठाइयाँ और गायक डर-के-डेर समाचार लिया दिया तोमोलीन की पत्नी अपने पति से मिनने आई।

वह तबने ही वहाँ से खाना भी हो गई और कज्जाकों के घर परिवार के लोग के लिए उनकी सदमावनाएँ और सन्देश भी अपने माय ले गई—कवल स्तीपान अस्ताखोव न ही अपने परिवार के लिए कोई सन्देश नहीं भेजा। वह पिछली शाम बामार पढ गया था और ठीक होने के लिए उसने घादवा पी थी थी। इसके बाद नगे में एसा घुल हो गया था कि दुनिया उसे नजर ही न आई थी। दुनिया में ही तो तोमालोन की पत्नी भी शामिल थी। वह परेड करने नहीं गया और उसका अनु रोध पर डाक्टर के सहायक ने रक्त निकालने के लिए उसके मीन पर एक दर्जन जॉकें लगा दा। स्तीपान अपनी गाड़ी के पहिये सहार बनि यान पहने बठा रहा और मुँह खोल अपने फूले हुए सीने का खून घूसती जॉकों को देखता रहा। जॉकें खून पी-पीकर फूलती गई।

रेजीमेंट का डाक्टर का घदनी खडा सिगरट पीता और अपने दाँतों

६८ घारे बहे दोन रे

की चीन्ही सघों के बीच स घुमा उडाता रहा । बाना स्तीपान कुध तबीयत बेहतर मालूम होती है ?

जोंके मज म खून घूस रही हैं—दिल की धाराम मिल रहा है । इसी बीच तोमोलीन भाया घोर उसने घाँव मारी 'स्तीपान में एक बात कहना चाहता हूँ ।

बहा ।' स्तीपान एक भटके से उठा घोर तोमोलीन को एक घोर ल गया ।

मेरी घोरत मुझसे मिलने आई थी । आज सुबह ही वापस गई है ।

ता ?

गाँव म तुम्हारा घोरत क बड़े खर्चे हैं ।

कस खर्चे ?

कोई प्रच्छे खर्चे नहीं हैं ।

“भाखिर बात क्या है ?

तुम्हारी पत्नी प्रिपोरी मलखोव के साथ खुलकर खस रही है । स्तीपान पीला पड़ गया । उसन भटके से जोंके नोची घोर उह परो स कुचसन मगा । एक एक कर उसने सब जोंके कुचल डाला कमीज के बटन लगाव घोर फिर मानो एकाएक मयमीत होकर मारे बटन खोल डाल । उसके सफद हुए होंठ बराबर काँपते रहे । तोमोलीन न सोचा कि वह कस खा रहा है । घीरे घीरे स्तीपान के चहूरे का रंग सौट भाया घोर हाठ फिर हो गए । उसन अपनी टोपी उतारी घोर उसकी सफद घागी पर आज पीतकर जोर स बाला तुमने मुझे बतला लिया उसन लिए धन्यवाद !”

“मैं तुम्हें सावधान करना चाहता था—सुम बुरा न मानता । तोमोलीन ने हमदर्दी स पाजाम पर हाथ मारे घोर अपनी घोड़े की धार खला गया । कस की घोर स घोरपुल की भावाजें घाइ । मालूम हुआ कि बटार की टूनिंग खतम हो गई । स्तीपान अपनी टोपी की स्याही को कभी निगाहों न एकटक देखता रहा । एक प्रभसुनी दम तोड़ती जोंक उसने जूतों के पास रेंग आई ।

१२

बज्जाकों के कम्प ने दस दिन और रह गए ।

भकसीनिया देर से जीवन म भाई बहार के मज सेती प्यार म धापी रही । पिता की धमकियों की चिन्ता न कर प्रिगोरी रात को उसने पास जा पहुँचता और मोर होने पर ही धर लौटता ।

दो हफ्तों में ही उसकी सारी शक्ति मुक्त गई और वह अपनी शक्त से ज्यादा मशकत करनेवाले धोंड़े की तरह बेदम हो गया । रात को बराबर जागते रहने के कारण उसके गालों की हड्डियाँ उमर घाई और बेहूरा साँदला पड गया । आँखें मडकों में घँस गई फटी फटी सी लगने लगीं । भकसीनिया मूँह उधाड़े ही इधर उधर जाती । उसकी आँखों के नीचे गहरे काल गड़े पड गए । उसक सूजे हुए प्यासे होठों की मुसकान में बेवनी से भरी एक चुनौती सहर्ष लेने लगी ।

उनका यह पागलपन से भरा प्रेम इस तरह डके की घोट पर चला उनक प्यार की यह धाग इस तरह धपकी और सारी आज शम उन्होंने इस तरह थोकर पी ली कि जिसकी निगाह उन पर पडती वह भपन धाप लज्जित हो जाता । धब इन प्रेमियों की धात्मा तक उन्हें धिक्कारती । प्रिगोरी के साधिया ने पहले तो भकसीनिया के विषय म उससे बातें की पर भब वे भी होंठ सिपे रहत और उसकी सगति से बधत । यद्यपि स्त्रियों को भकसीनिया से बेहू ईर्ष्या थी फिर भी वे उसको धिक्कारतीं स्तीपान की बापसी के दिन गिनतीं और भटकल लगाती कि दखें इस घोहधत का भजाम क्या होता है ।

यदि प्रिगोरी ने भपना प्यार दुनिया की निगाहा से दबाया होता यदि भकसीनिया न प्रिगोरी क साथ प्रेम का टार लुक टिपकर बड़ाई होती और गाँव-समाज के आँगों को भाटा न होता तो किसी को उसमे कोई भी खास बात दिखलाई न देती । उस हालत में गाँव म थोड़ी-बहुत चर्चा चलती और फिर मामला दब जाता । पर यहाँ तो बात ही और कुछ थी । दोनो सुल्लमसुल्ला साथ रहते थ और किसी बड़ी भावना स एक-दूसरे से बँधे हुए थे । उनके बीच शणिक लगाव-जसा कुछ भी न था । इसीलिए ही गाँव क लोग इस सम्बन्ध को पाप समझते और

हैरान हो उठत थे। उनका खयाल था कि स्तीपान घायग घोर एक हाथ में ही यह द्वार काट दगा।

अस्तागोव व सोने व कमर व पलंग के ऊपर सफेद-काली सूती रीलों से सजी एक छोरी बंधी हुई थी। रीला पर रात में पविष्या सातीं घोर मकड़ियां उनक सहारे छत तक जाल तानती। एक रात अकसीनिया की नगी टही बाह्य पर लेटे ग्रिगोरी ने रीला की घार देखा। अकसीनिया के खाली हाथ की मेहनत से खुरदरो अगुलियां ग्रिगोरी के बालो के सच्छों से खिड़वाड करने लगी। अगुलियों से गरम दूध की महक आई। ग्रिगोरी न करवट ली घोर अकसीनिया की बगल में अपनी नाक साधी। घोरत के पसीने की भीनी मीठी महक से उसके नयुन भर गए।

पलंग लकड़ी का था। उस पर बार्निश हुई थी घोर उसके पाये दबदाब की लकड़ी के बन थे। दरवाज के पास सोहे का भारी सन्दूक रखा हुआ था। उसमें अकसीनिया के कपड़े और दहेज का सामान था। बाने में रखी थी एक मज्ज जनरल स्कोवोनी का एक तमचित्र दो कुतियां घोर उनके ऊपर गढ़े कागज से ढकी देव-मूर्तियां। धातू की दीवार के सहारे लटके हुए थे चित्र जिन्हें मखिलों ने गन्दा कर रखा था। इनमें से एक चित्र कज्जाकों के एक दल का था। उनके माथों पर बालों के छल्ले लटके रहे थे घोर साने तने हुए थे। उनकी घट्टियों की खैनें धमधम कर रही थीं घोर उहान सतवारें खीच रखी थीं। चित्र में अगन साधिया के साथ स्तीपान भी था। वही एक खूटी पर स्तीपान की वर्धो टगी थी।

तो इस समय चाँद खिड़की से झीका घोर उसने साजेंष्ट के कंधे की दो सफेद पट्टियों पर अपनी अगुलियां रख दीं।

अकसीनिया ने माह भरते घोर ग्रिगोरी की भीहों के बाघ की जगह घोर नाक की नोक सूमी।

‘धोना मेरे प्यारे

क्यों क्या है ?

सिर्फ नौ दिन रह गए हैं

अभी बहुत समय पटा है।

‘घाशा ! भला क्या कहेंगे मैं ?

यह मैं क्या जानूँ ?'

भकसीनिया ने मुह स निकलती आह रोक़ी और प्रिगोरी के रुम बालों पर हाथ फेर फेरकर माँग निकालने लगी ।

स्तीपान मुझे जान से मार डालगा । उसके वाक्य म आघा सवाल या तो आघा विश्वास ।

प्रिगोरी घुप रहा । वह साना चाहता था । बड़ी मुश्किल से उसन अपनी भकती पलके उठाइ तो भकसीनिया की आँखा के निलछर काजल से उसकी आँखें धार हुए ।

मेरा मद भा जाएगा तो तुम मुझे छोड़ दोग ? तुम्हें उससे डर सगता है ?

मुझे उसका क्या डर ? तुम हो उसकी औरत, डर तो तुम्हें होगा ।

'तुम्हारे साथ रहती हू तो मुझे डर नहीं रहता लेकिन जब दिन मे भ्रम रहती हू और अब खयाल आता है तब डर जाती हू ।

अँगड़ाई लकर प्रिगोरी बोला स्तीपान वापस भा जाएगा यह कोई ऐसी बात नहीं । चिन्ता की बात तो यह है कि पापा मेरी शादी की बात सोच रहे हैं ।

वह मुसकरामा और कुछ कहने को हुआ कि उसे लगा भकसीनिया का हाथ सिर के नीचे एकाएक ढीला पडा तकिये म घसा और पल भर बाद फिर बडा हो गया । रु वे हुए गल स बोली, कोई लडकी है उनके दिमाग में ?

इन बारे म कुछ कहा नहीं है अभी तक । मैं कह रहा थी कि वह कोरसूनोव की बेटी नताल्या की बात साच रहे हैं ।

'नताल्या—वह तो लडकी अच्छी है । बहुत खूबसूरत है । तुम उससे शादी कर लो । बल ही मैंने उस गिरजे म दखा था । वडे क्रायदे से कपडे पहने हुए थी ।

'उसकी खूबसूरती की मुझे खरा भी परवाह नहीं । मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हू ।

भकसीनिया ने प्रिगोरी के सिर के नीचे से अपनी बाँह खीच ली और खुदक आँखों स लिडकी की और ताकने लगी । अहाठा पासे से घुनी पीली

हैरान हो उठते थे। उनका खयाल था कि स्तीपान भ्रामणा और एक हाथ में ही यह डोर काट देगा।

भस्ताखोव के सोने के बन्दरे में पत्तन के ऊपर सफेद-काली सूती रीलों से सजी एक छोरी बधी हुई थी। रीलों पर रात में पत्तिलियाँ सीतीं और मकड़ियाँ उनका महारे छत तक षाले तानतीं। एक रात भकसीनिया की नगी टधी बाँहों पर लेटे प्रिगोरी ने रीला की धोर दखा। भकसीनिया के खाला हाथ की मेहनत से खुरदरी भगुनियाँ प्रिगोरी के बाला के लच्छो से खिलवाव करने लगी। भँगुलियों से गरम दूध की महक भाई। प्रिगोरी ने करवट सी और भकसीनिया की बगल में भपनी नाक साधी। औरत के पसीने की भीनी मीठी महक से उसके नधुने भर गए।

पत्तन लकड़ी का था। उस पर धार्निश हुई थी और उसके पाये दबलारु की लकड़ी के बने थे। दरवाज़ के पास सोहे का भारी सन्दूक रखा हुआ था। उसमें भकसीनिया के बपड़े और दहेज़ का सामान था। कोने में रखी थी एक मेज़ अनरल स्कोवोली का एक तैलचित्र दा भुतियाँ और उनके ऊपर गन्ने कागज़ से ढकी देव-भूतियाँ। बाज़ू की दीवार के सहारे सटके हुए थे चित्र जिन्हें मक्खियों ने गन्दा कर रखा था। इनमें से एक चित्र बज्जाकों के एक दल का था। उनके माथों पर बालों के छल्ले सटक रहे थे और सोने तने हुए थे। उनकी घड़ियों की चनें धमधम कर रही थी और उन्होंने तलवारें खीच रखी थी। चित्र में भपन साधिया के माथे स्तीपान भी था। वही एक खूटी पर स्तीपान की बर्दों टगी थी।

सो इस समय चाँद लिहकी से भाँबा और उसमें सार्जेष्ट के बन्दे की दो सफेद पट्टियों पर भपनी भगुनियाँ रन्व दीं।

भकसीनिया ने आह भरी और प्रिगोरी की भाँहों के बीच की जगह धोर नाक की नोक सूमी।

‘प्रोगा मेरे प्यारे

क्यों क्या है ?

सिफ नो दिन रह गए हैं

‘घमी बहुत समय पड़ा है।

‘प्रोगा ! भसा क्या करूंगी मैं ?

“यह मैं क्या जानूँ ?”

भकसीनिया ने मुह स निकलती भाह रोकी और प्रिगोरी क हठे बाखी पर हाथ फेर-फेरकर माँग निकालने लगी ।

‘ स्तीपान मुझे जान स मारें डालगा । उसके बावय म भाधा सवाल था तो भाधा बिश्वास ।

प्रिगोरी धुप रूहा । वह सोना चाहता था । बड़ी मुश्किल से उसने अपनी भकती पलकें उठाई तो भकसीनिया की आँखों क निलखरे बाजल से उसकी आँखें चार हुई ।

मरा मद भा जाएगा तो तुम मुझे छोड़ दोगे ? तुम्हें उससे डर लगता है ?

मुझे उसका क्या डर ? तुम ही उसकी औरत डर तो तुम्हें होगा ।’

‘तुम्हारे साथ रहती हूँ तो मुझे डर नहीं रहता लेकिन जब दिन म भकेले रहती हूँ और जब खयाल आता है तब डर आती हूँ ।’

भंगडाई लकर प्रिगोरी बोला स्तीपान वापस भा जाएगा यह कोई ऐसी बात नहीं । चिन्ता की बात तो यह है कि पापा मेरी शादी की बात सोच रहे हैं ।

वह मुसकराया धीरे कुछ कहने को हुआ कि उसे लगा भकसीनिया का हाथ सिर क नीचे एकाएक डीसापडा तकिये म घँसा और पर मर बाद फिर कडा हा गया । स वे हुए गल से बोली ‘ कोई लडकी है उनक दिमाग म ?

इस बार म कुछ कहा नहीं है अभी तक । माँ कह रही था कि वह बोरगूनोव की बटी नताल्या की बात सोच रहे हैं ।

‘नताल्या—वह तो लडकी अच्छी है । बहुत खूबसूरत है । तुम उससे शादी कर लो । कन ही मैं उस गिरजे मदला था । बड़े कापदे से कपड़े पन्ने हुए थी ।

‘उसकी खूबसूरती को मुझे जरा भी परवाह नहीं । मैं तो तुमस शादा करना चाहता हूँ ।

भकसीनिया ने प्रिगोरी के सिर के नीचे स अपनी बाँह सँचली और खुरक आँखों स खिडकी की ओर लखने लगी । भहावा पाल स धुनी पीती

धुंध से भरा हुआ था। छप्पर की कान्ती पर छाड़ नीच पड रही थी। भीगुर भीय भीय कर रह थे। दोन के निचल हिस्स म तितलोवे भनभना रहे थे। उनकी आवाज सिद्धकी स सुनाई दे रही थी।

प्रीता !

साचा कुछ ?

अकसीनिया ने प्रिगोरी का सूरदरा हाथ अपने सीन घोर ठडे बेजान गालों पर रखकर दबाया और चिल्सा उठी बुरा हो तेरा ! तूने मुम्स प्यार क्यों बढ़ाया ? अब मैं क्या करूंगी प्रीता ! मैं कहीं भी नहीं रही स्तीपान वापस आ रहा है उस क्या जवाब दूंगी मैं ? कौन मदद करेगा मेरी ?

प्रिगोरी घुप रहा। अकसीनिया ने उसकी सुघर नोकदार भाक बन्द झालें और मूक अघरा को दद से भरकर देखा और भावनाओं की बाढ ने सहसा ही उसके धीरज का बाँध तोड दिया। उसने प्रिगोरी का चेहरा उसकी गदन उसके बाजू और उसके सीने के छल्लदार बाक पागलों की तरह बार-बार घूमे। प्रिगोरी को उसका सारा शरीर बरपराता लगा। सिसकते हुए वह बोला—

प्रीता मेरे प्यार मेरे प्राण असो हम यहाँ स भाग चलें। असो सब कुछ छोड़कर चल दें तुम भर मेरे साथ रहो फिर तो म मुझे अपना मद चाहिए म ही और कुछ चाहिए। हम दूर चले जाएंगे बहुत दूर खानों की दुनिया म मैं तुम्हें प्यार करूंगी तुम पर काम दूंगी। मेरे एक चाचा हैं वह परोमोनोव-स्तदानों म श्रीकीदार हैं वह हमारी मदद करेंगे प्रीता असो कुछ तो बोसो।

प्रिगोरी विचारों में डूबा लटा रहा फिर अकस्मात् ही उसने अपनी दहकती हुई परदेसी-सी झालें खोसीं। उन झालों में उस समय जितना उपहास भयका उतनी ही फटकार—

अकसीनिया तुम बुद्ध हो निरी बुद्ध ! तुम बकली चली जाती हो पर एक भी बात मतसब की नहीं करती। मैं अपना काम कैसे छोड सकता हूँ ? अगल साल फौज की नौकरी करनी है मुझे—मैं इस इसाने स बाहर एक कदम नहीं रूंगूगा। यहाँ लम्बा बीडा स्टेपी मदान है साँच

सी जा सकती है—घोर ब्रह्म ? पारभाल गर्मियों में पापा के साथ मैं स्टेशन गया था, मेरी तां जान निकलत निकलते बची । इन्जिन ने घास भान सिर पर उठा लिया । कोयल के घुए स हवा काली पड़ गई । न जाने लोग कम रह लेते हैं वहाँ मगे तो समझ में ही नहीं आता । शायद इससे आती हा गए होंगे ।

प्रियारी न पूका और फिर बाला मैं अपना गाँव नहीं छोड़ूंगा ।'

खिड़की न बाहर की रात में स्थायी और धुल गई । बापल ने चाँद प्रस लिया । पाल से घुला पाना धुँध अहात से गायब हो गई । साथ पल सगाकर उड़ गए । कहना मुश्किल हो गया कि बाइक पार लकड़ियों का गट्टा है या कोई पुरानी मशीन ।

कमरे में भी अंधेरा बढ़ गया । स्तीपान की बर्दी का पट्टियाँ भी बुक गई और प्रिगोरी के लिए दखना कठिन हो गया कि अकसीनिया का कथा किस तरह अग्यराया और फिर कम हावों पर सधा उसका निर तकिये पर रह रहकर बाँधा ।

१३

तोमानोन को पत्नी अब से वापस गई तब से स्तीपान का अहसास स्पष्ट रहने लगा । उसकी नर्वे भावियों पर भूत भाइ साथ पर एन गहरा और कठार बल पड़ा रहने लगा । अब वह अपने साथियों से कम ही बोलता । मामूली-सा बातों पर उनसे उलझ पड़ता साजेंट-मजर तक से दुश्मनी मान न जाता और प्योन मलखोव से उसका फूटी भावों न सुझाता । उसको सबसे छोड़ने वाला स्नेह का मूत्र दीपा पड़ता जाता । वह शेष से मोसर-ही भीतर उबलता रहता । ऐस में वह ठान पर जान छोड़कर नागत हुए घाटे की तरह हो गया और उसकी समता बराबर बतार पर ही आती गई । नताजा यह कि घर सीटने तब सभी उसके शत्रु हो गए ।

उस पर कुछ ऐसी घटनाएँ और घट्टी जिनसे घायली सम्बन्ध और बिगड़े । वे शीव सीटे ता पहन की तरह ही टोलियों में । बाकी में

प्योत्र घोर स्तीपान के घोड़े जुते । क्रिस्तोनिया अपने ही घोड़े पर सवार पीछे-पीछे चला । तोमोलीन ज्वरग्रस्त गाड़ी के घन्दर अपने घोर कोट घोड़े पढा रहा । क्रिमोदोत बोदोव्कोव स सुस्ती के मारे घोड़े न हुके तो प्योत्र ने लगामें सम्हाल ली । स्तीपान गाड़ी की बगल-बगल चला घोर अपने हाथ का चाबुक रास्ते के गोखदणों पर सटकारने लगा । इस बीच पानी बरसने लगा तो वाली मिट्टी कालतार की तरह गाड़ी के पहिया से चिपकने लगी । शरदकाल की तरह का नीला घास मान बादलों के कारण मटमला हो उठा । रात भीगन लगी । कहीं किसी गाँव के पाम-दूर की रोगनी नजर न आई । प्योत्र चाबुक के सहारे घाड़ों को हल्के-हल्के हाँकता रहा । सहसा ही स्तीपान की चोख न भ्रमना-भेदा ।

यह क्या कर रहे हो तुम ? अपने घोड़े को तो मारते नहीं घोर मेरे घोड़े पर चाबुक-पर चाबुक जमाते जा रहे हो ।
माँख खोलकर दखा ! जा खलछा नहीं मैं उस घोड़े पर चाबुक चलाता हूँ ।

दखना मैं कहा तुम्हें न जोत दूँ घोड़े की जगह ! तुम महज इसी लायन होते हैं !

प्योत्र ने रामें रख दीं क्या चाहत हो तुम ?

अपनी हैसियत समझा

‘ मैं कहता हूँ कि जयान बन्द कर ।

‘ क्या बरस रहे हो तुम उस पर ? क्रिस्तोनिया ने स्तीपान के पास अपना घाड़ा लात हुए पूछा ।

स्तीपान ने बाईं अबाव नहा दिया । फिर व घ्राध घट तक घृपबाप खनते रहे । पहिया के नीचे से कीचड उछल उछलकर ऊपर आती रही । मोमजाम के पाल पर बूँदें पटापट पड़ती रहीं । प्योत्र रामें ढीमी छोड़ सिगरेट पाने लगा घोर मन ही मन सोचन लगा कि अब की बार भगडा हुआ तो स्तीपान का वह कौन-कौन-मा गालियाँ देगा ।

रास्त स हटो मैं हानी के नीचे बैठना चाहता हूँ स्तीपान ने
‘ पात्र का घबका दिया घोर गाड़ी पर चढ़ने लगा ।

अकस्मात् ही गाड़ी मटके से तक गई। कीचड़ में फिसलकर घोड़े जमीन पर पर मारने लगे। उनके खुरों से चिनगारियाँ निकलने लगी और वम धरमराने लगे।

प्योत्र धीखकर गाड़ी से नीचे कूद पड़ा।

'क्या बात है?' स्तीपान ने चौंकर पूछा।

प्योत्र बोला, 'जरा रोशनी करो।'

सामन का घोड़ा नधुने फड़फड़ा रहा था और अपने घापसे लड़ रहा था। किसी ने एक भाषिस जलाई। पल भर को नारगा रोशनी हुई और फिर बंधेरा छा गया। प्योत्र ने कापिते हाथों से गिरे हुए घोड़े की रीढ़ की हड्डी टटोली और लगाम खींची।

घोड़ा समी ससि छोड़कर एक घोर को लुढ़का। वम बीच से धरमराया। स्तीपान ने तीलियाँ पर तीलियाँ जलाई। घोड़ा उसका ही गिरा था। घोड़े की झगली एक टाँग गिलहरी के भिटे में घुटने तक बस गई थी।

क्रिस्तोनिया ने साज खाला। आदेश दिया 'प्यात्र के घोड़े को फौरन खोल दी।'

माखिर में बड़ी मुश्किल से स्तीपान के घोड़े को उठाकर सड़ा किया गया। प्योत्र ने उसकी लगाम साधी और क्रिस्तोनिया कीचड़ में घुटनों के बल बैठकर उसकी बबसा से लटकती हुई टाँग टटोलने लगा।

शायद टूट गई है। वह धुनधुनाया।

लेकिन जरा देखा चल सकता है कि नहीं?

प्योत्र ने लगाम खींची। घोड़ा अपनी झगली बाया टाँग जमीन पर रखे बिना दो एक डग कूदा और फिर हिनहिनाने लगा। अपना ओवर कोट ठीक करते हुए तोमोलोन ने पर पटक टाँग टूट गई! एक घोड़ा गया।

स्तीपान अब तक एक शब्द भी नहीं वाला माना किसी ऐसी ही टिप्पणी की प्रतीक्षा में हो। क्रिस्तोनिया को एक तरफ धक्का दते हुए वह प्यात्र पर दूट पड़ा। उसने उसका सिर पर चोट की, किन्तु निगाना चूक गया और बार बन्धे पर पड़ा। दोनों हाथापाई करते हुए

कीचट म जा पडे । स्तीपान व्योत्र के ऊपर सवार हा उसके मिर को घुटने से दबा घूँसे जमाने लगा । क्रिस्तोनिया ने खाचकर उस मलर किया और झूठ गानियाँ दी ।

यह सब भाँतिर क्यों ? खून पूकते हुए व्योत्र चिल्लाया ।

'देख कि तू हाँकता कहाँ है साँप नहीं के ! व्योत्र ने क्रिस्तोनिया को पकड़ स घूटने को जोर सगाया ।

मच्छा तो तुम धब मुझसे लडना चाहते हो । एक हाथ से व्योत्र को गाडी से भिटाते हुए क्रिस्तोनिया चिल्लाया ।

उहनि बोदोव्स्कोव के छोटे पर तगडे घोड़े को व्योत्र क घाट के साथ जोत दिया । क्रिस्तोनिया ने स्तीपान को मपने घोड पर सवार होकर चलन को कहा और खुन व्योत्र क साथ गाडी म बठ गया । घाघी रात होत होत के एक गाँव म पहुँच और जो मोपठी सबसे पहले मिली उसी के दरवाज पर रुक गए । क्रिस्तोनिया ने भापडा के मालिक म रात भर वहाँ ठहरने की इजाजत माँगी ।

इजाजत मिलने पर बोदोव्स्कोव घोडा को घन्ट ले गया । वह प्राँगन के बीच ठोकर खाकर एक मूँघर की माँद म गिर पठा और गालियाँ बकने लगा । घोडे दाड म लामे गए । तोमोलीन सर्गि क मारे दाँत बिटबिटात हुए भापठी म घला गया । व्यात्र और क्रिस्तोनिया गाडी में ही रह गए ।

भोर होते ही के आगे बढ़ने को फिर तयार हुए । स्तीपान भोंपडी से बाहर आया । उसके पीछे पीछे घाई मचकती हुई एक मुकी बमरवाली बुझिया । क्रिस्तोनिया ने घोडों के साज बसते-बसत हमदर्दी स कहा

मारे दादी कैमा कूबड निकस आया है तुम्हारे । सेबिन गिरजे म प्रायना के समय फुकने म तुम्ह तकलीफ नहीं होती होगी । घरती भी तुम आसानी से ही छू सती होगी

मगर मुझे मुकने में आसानी होती है तो तुम्हें कुत मटबाने म मुश्किल न होनी हागी भगवान् ने कुछ-न-कुछ मच्छा सबके लिए रचा है बुझिया मुसकराई । उसक मारे-के-सारे सावुस दाँतों को देखकर क्रिस्तोनिया मधरज म पड़ गया । बोमा कंते मच्छ दाँत है तुम्हारे !

थोड़े-स मुझे नहीं दे दीगी ? कहते को तो मैं जवान हूँ लेकिन दाँत कुल गायब हैं

बटे अपने दाँत तुम्हें द दूगी तो फिर मरे पास क्या रह जाणगा ?

हम तुम्हें बदले म एक घोड़ा दे देने दादी । एक-न एक दिन तुम्हें मरना ही है और वही, दूसरी दुनिया म काइ तुम्हार दाँत तो देखगा नहीं । फिर यह भी है कि साधु-सपासी यादों क सौदागर होते भी नहीं ।'

'बालू रसो क्रिस्तानिया । तोमालीन ने गाड़ी पर सवार होते हुए कहा ।

बुढ़िया स्तीपान क पीछे-पीछे रोड में आई । पूछा 'कौन-सा है ?' काला बाला ।' स्तीपान ने आह भरते हुए कहा ।

बुढ़िया ने अपनी छड़ी जमीन पर रखी और असाधारण पुरुषोचित गति स घाड़े का चूटीली टाँग चलाई । उसने अपनी पतली टेढ़ी अँगुलियों स घाड़े क घुटन की हड्डी टटाली । थोड़े ने दद स अपने कान पीछे किए और पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया ।

'नहीं हड्डी नहीं टूटी है, करबाक । तुम इस छाठ दो मैं ठीक कर दूगी ।'

स्तीपान ने अपना हाथ नचाया और गाँव के पास चला आया ।

'थोड़े को छाडोगे या नहीं ? बुढ़िया न पलक भपकाउ हुए पूछा । छाड़ दूँगा । उसने उत्तर दिया ।

वह करगा तुम्हारा घोड़ा ठीक—लौटोगे तो घाड़े के एक टाँग भा न मिलगी । क्रिस्तानिया ने हँसते हुए कहा ।

१४

दाँत मैं उसके लिए मरी जा रही हूँ मैं सुखती जा रही हूँ । मैं अपने स्केट म परतें नहीं डाल सकती । जब वह मेरे घर के आगे स निकलता है तो मेरे कनजे में आग-सी जलन लगती है । जा करता है कि जमीन पर गिर पड़ूँ और उसके परों क निशानों को चूमूँ । मरी मदद करो क साग उनका विवाह करन जा रहूँ मैं मरी मदद करा, दादी

७८ । धीरे धीरे बोन रे

जो खर्च पड़ेगा मैं उठाऊँगी मैं अपने बदन पर का प्राखिरी कपड़ा तक तुम्हें दे दूँगी । बस जैसे भी हो मेरी मदद कर दो ।
भकसीनिया की कहण-भाषा सुनकर बूढ़ी जादूगरनी झोड़खिा ने मुरियो से भरा चेहरा उठाया और उसकी धार देखकर सिर हिलाया ।
'सड़का किसका है ?

'पैन्तेसी मेनेछोय का ।
वह तो तुक है है न ?
हाँ ।

बूढ़ी ने बिना दाढ़ों का अपना मुँह घुगलाया और बोली 'बड़ी बल बहुत सड़के मेरे पास आना । हम दोन के किनारे चलेंगे और तुम्हारी सड़पन को नदी के पानी में बहा देंगे । अपने साथ एक चुटकी नमक लती आना । पीने पाल से मैं बक भकसीनिया बड़ी सावधानी से फाटक ब बाहर निकली । रात के अधियारे ने उसकी बाली प्राकृति पर और पर्दा डाल दिया । हाँ उसकी सड़िलों की आवाज बरूर होती रही । गाँव में न जाने कहाँ स गाने की आवाज आई ।
मुबह होते ही रात भर की जगी भकसीनिया झोड़खिा की सिड़की पर आ पहुँची । आवाज दी दादी ।
कौन है ?

मैं हूँ भकसीनिया । उठो ।
फिर दोनों गलियाँ पर गलियाँ पार करती नदी के किनारे पहुँची । किसी की गाड़ी के बम पानी में डूबे मिल । पानी के ऊपर की रेत बज्र सी ठडी लगी । बफ्रीली घुस दोन ने उठकर पासमान तक छाई थी ।
झोड़खिा ने अपने हड्डोले हाथ में भकसीनिया का हाथ पकड़ा और उस की तरफ मुँह कर फ्राँस बनायो । बोली 'नमक मुझे दो । उगते हुए मूरब पूरब की मुसद परखिमा की धोर एकटक देखते हुए भकसानिया ने फ्राँस बनाया ।

चुस्नु में लकर एक घूँट पानी पिया ।

भकसीनिया ने पानी पिया तो उसका आवाज की आस्तीनें भीग गद

बुनिया काली मकड़ी की तरह लहरों के बीच टांग पलाकर खड़ी हुई,
फिर पालथी मारकर बठी और फुस-फुस करती हुई बोली

‘समुन्दर से आनेवाली वर्षाओं धारा’ इन्सान का तक्लाफ दे रही
हा दिन उठ चलती है दिन रात तड़कती है मोहब्बत का बुखार
रहता है एक दिन में एक हैवान बसता है पवित्र कास की कसम
पावन निष्कलक माँ मेरी की कसम खुदा के बन्दे का नाम प्रिगोरी
है

य शब्द भवसीनिया के कानों में पड़े ।

प्रोडदिखा ने थोड़ा-सा नमक अपने पाँवों के पाम की गीली रेत
पर छिड़का थोड़ा-सा पाना पर और बाकी भवसीनिया के सीने में छिपा
दिया ।

‘थाड़ा-सा पानी अपने पन्थे पर डाला जल्नी से ।’

भवसीनिया ने ऐसा ही किया । वह बुनिया के विघने गालों की धार
गुस्स से देखन लगी ।

‘बस हा चुका ?’

‘हाँ, बस अब जाया और सा जाया ।’

भवसीनिया साँस मावे घर की धोर दौड़ी । गाएँ महात्ते में निबली
आ रही थीं । उनींदी दारया अपनी गायों का हाँककर गाँव के दोरों के
बाघ ल जा रही थी । सा भवसीनिया झपटती हुई बगल में गुजरी ती
दारया मुसकरा दी । पूछा ‘रात को भाराम से तो सोई पडासिन ?’

बहुत भाराम से आई ।

‘और इतने सबरे-सबरे कहाँ गई थीं ?’

‘गाँव में एक जगह जाना था ।’

प्रातःकाल की शायनाओं के लिए गिरज के घंटे बजने लग । ताँब
की जीभोंवान मूँहों से जो स्वर फूटे वे अलग अलग होकर गूँज गए ।
गाँव के चरवाहे ने सटक के बिनारे अपना चाबुक सटकारा । गाया को
जल्पा से हाँककर भवसीनिया ने बाहर निकाला । फिर छानने के लिए
दूध लेकर बरसाती में गई । गेब्रन से वापस आने के लिए
और दूध को छतनी में डाल दिया । इस बीच वह बरखर विषारों में

छोई रही ।

सड़क की घोर सपहियों की छड़सड़ाहट और घोड़ों की हिनहिनाहट पर के अन्दर आई । अकसीनिया ने बास्ती रख दी और सामने की बिड़की से बाहर भाँककर दखन लगी । बटार की मूठ साधे स्तीपान फाटक से अन्दर घुमता दीखा । बाकी कज्जाक गाँव के चीन की ओर धब । ऐयन को अगुलियों में लपेटती अकसीनिया बँध पर बँठ गई । सोनिया पर परो की घाहट हुई गलियारे म परा की घाहट हुई और फिर घाहट परवाज तक आ गई

स्तीपान दरवाज पर आ म्हा हुमा—वेहग उत्तरा हुमा देखने में अजीब अजीब ।

हूँ यह बोला ।

अकसीनिया अपना मोटा साज्ज बदन लिये उसने सीने स जा लगी ।
'मुझे जीव भर मारो । यह घोमे स्वर म खोली और एक भार को मझी हो गई ।

हूँ ! तो आखिर हुमा क्या ?

दियाऊँगी नहीं मैंन पाप किया है । मुझे जीव भर मारो स्तीपान मुझे जीव भर मारो ।

यह अपना छिर घुनों के बीच गढाकर बठ गई और हाथा स पेट की बधात हुए उसकी भार देखने लगी पर इस बीच उसका वेहुरा डर स दुरी तरह उत्तर गया । आँखें काल गढवों क बीच म स्तीपान की अपलक साकली रही । स्तीपान उसको बगली देकर निकल गया । उसकी मली कमीज म मदनि पतौने का गंध आई । वह टापी पट्टे ही पट्टे पलंग पर लुडक गया । दगभर बाद उमन कंधे मटक और बटार की पंटी एक भार को दिया दी । उसका भूरी मूँछा क सिने गिरे-ना रह । अकसीनिया न अपना छिर नहा घुमाया पर बनखिया म उस दखा और रह रन्वर डर स कापी । स्तीपान ने खाटकी पट्टी पर अपने पाँव रख तो जूतों स धार और मिट्टा अटने लगा । वह छत की धार टकटकी काँप बटार की चमडे की म्यान स उमता रहा ।

नास्ता सवार है ? वह दाता ।

‘नहीं

कुछ खान को ले आया ।

स्तीपान ने थोड़ा सा दूध पिया तो उसकी मूर्छे भीग गई । उसने रोटी माहिस्ता माहिस्ता खाई । दृढ़शत स भरी अकनानिया भट्टी के पास खड़ी अपने पति का देखती रही । वह खाना खाता रहा और उसका वान रह रहकर उठते गिरते रह ।

स्तीपान मज स उठा और उसने अपने सीने पर क्रॉस बनाया । फिर जरा तेज आवाज म बोला आया, मरी जान और जरा सुनाया अपने हक क अपसाने ।

अकनानिया ने सिर भुकाए ही भुकाए मज साफ का ।

वतलायो न कसे तुमन अपने आदमी की राह देखी कस अपने आदमी की इज्जत बचाई ! बोलो न ! स्तीपान ने कहा और साथ ही ऐसे जोर का घूसा अकनानिया के सिर पर मारा कि वह लटखटा गई और दरवाजे के पास जा गिरी । पीठ चौकट स टकराई और वह कराह उठी ।

औरतें ता कमजोर और कामस होती ही हैं पर स्तीपान तो ऐसा था कि उसका मरपूर घूसा अगर किसी हट्ट कट्ट जवान के सिर पर भी पड़ जाता तो उसके भी पैर खलड़ जाते । पर शायद भय क कारण या शायद स्त्रियोचित स्वभाव क कारण अकनानिया कुछ दर ही बहाग रही । इसके बाद होश म आई क्षणभर लेटी सांस चला रहा और फिर उठकर बठ गई ।

इस बीच स्तीपान ने कमरे के बीच खड़े होकर सिगरेट जलाई ता अकनानिया क खड हात का और उसका ध्यान ही नहीं गया । उसने गम्बाकू की चंसी मेज पर पटक दी और अकनानिया न बाहर निकलकर भड से दरवाजा बन्द किया तो वह उसका पाछ दौड़ा ।

अपना खून से तर सिर लिय अकनानिया अपने प्रहात और मलखान परिवार क प्रहात के बीच की आड़ को धार भागी । स्तीपान ने उस आड़ पर जा पकड़ा और अपना काला हाथ उसका सिर पर ऐस मारा जस बाज का पजा किसी पक्षी पर पड़े । स्तीपान की अगुलिमाँ उसका मासो म उलट गई तो उसने दात पकड़कर अकनानिया का शम्ब क अम्बार

पर झोंक दिया। भ्रमनीनिया हर सुबह घर की राख यहाँ उठेल जाती थी।

यदि अपन हाथ पीछे बाँधकर पति अपनी पत्नी को जूतों से रौंदता है तो रौंटे हुआ क्या? एक हाथवाला भ्रमनमई पाटक के पास में गुजरता तो उसने माँककर प्रदर देखा पलक भपकाए धीर मुसकराते हुए दाढ़ी पर हाथ फेरा। बात समझ मन आई। उसने ब्याहता बीबी क साथ ऐसा व्यवहार करने क लिए स्तीपान को जरा भी धोप न दिया। उसका मन चाहा कि देखें स्तीपान मारते-मारते अपनी बीबी की जान निवास नेता है या नहीं? किन्तु उसकी आत्मा ने गवाही नहीं दी। उसके मन ने कहा—थाखिरकार तुम कोई औरत ता हो नहीं।

अगली को स्तीपान को इस समय दूर से देखता तो समझता कि वह बज्जाकी नाच कर रहा है। अपनी बिडकी स प्रिगोरी न स्तीपान का देखा ता पहले तो वह भी यही समझा। पर जब उसने दुबारा धीर स देखा ता घर से निकलकर भागा। प्योत्र उसका पीछे दौड़ा।

प्रिगोरी ने बाट में पार की जस कोई पछी उठ रहा हो। वह पूरी ताकत स स्तीपान पर पीछे से दूट पड़ा। स्तीपान चक्कर खा गया और पीछे धमकर रीछ की तरह प्रिगोरी की तरफ भपटा।

दोनों में खोब भाई जान छोटकर लड़े। वे स्तीपान में ऐस मूँच गए जैसे गिट्टि किसी लाग पर दूटते हैं। स्तीपान क घुँसों में प्रिगोरी कितनी ही बार जमीन पर जा पड़ा। स्तीपान-जस गठीले ब्यक्ति के साथ उसका कोई जोड़ न था। यों तो प्योत्र भी स्तीपान क घुँसा क सामने बस ही रह गया जमे गरपत क पात हुवा के थपेड़ा क सामने झुक जात हैं। पर वह फिर उठकर मजबूती स लड़ा हो गया।

स्तीपान सोचियों को धार भागा। उसको एक धाँस अगारे की भाँति तो दूमरी अघपके दर की भाँति गाल हा रही थी।

इसी समय पुयोग से धाँसे का नाच उधार लेने क लिए बिस्तानिया यहाँ धाया तो उसने धीच बचाव किया।

‘साम करो मगडा!’ उमने अपना हाथ नचात हुए कहा। अलग हो एक-दुमरे स नहा तो मैं अभा जाकर अतामान को खबर करता हूँ।

प्यात्र न मूँह स खून पूका तो एक दाँत हथमी पर धा गिरा। भरपि

हुए गन से बासा 'प्रिगोरी भाप्रो । फिर किसी दिन समझे हम इसको ।

देखना कि चलते कहीं तुम मेर हाथ न भा जाभा ।' स्तीपान न सीटियों पर से घमकी दी ।

दखा जाएगा । देखा जाएगा ।

देखा क्या जाएगा ? मैं तुम्हारी घोंठियाँ निकालकर रख दूंगा ।

समझ-बूझकर कह रह हो या मजाक कर रह हा ?

स्तीपान सीटियों स उतरकर जल्दी से नीचे भाया । प्रिगोरी उसका सामना करने का हाथ छुडानर भागे बना किन्तु क्रिस्तोनिमा न उस फाटक की ओर धक्का दत हुए कहा चलो जरा हिम्मत करो भाग बदन की फिर देखा कि मैं तुम्हारी नसी हालत करता हूँ ।

उस दिन स मेलखोव बघुओं और स्तीपान न बीच दुश्मनी की कड़ी गाँठ पड गई । यह गाँठ प्रिगोरी ने खोली दो साल बाद—प्रशिया में स्तोलीपिन के गहर क पाम ।

१५

'प्यात्र स कहा कि वह घोडा और अपना पाडा जोत ल ।' प्रिगोरी बाहर निकलकर घहात म भाया तो उसने प्यात्र का खतिहान स लगे झड स छोटी गाडा का बाहर निकालत देखा । बोला पापा कट रहे हैं कि तुम घोडा और अपना घोडा जोत ला ।"

बिना उनक क भी मैं यह जानता हूँ । उनस कहो कि अपना काम देखें । प्यात्र ने गाडी में बम फँसाते हुए कहा ।

बल की भाँति पसान स सर-बतर हान पर भी पन्तली चच क बाटन की सरह गम्भीर बना धारखा पी रहा था । दूया प्रिगोरी की हर हरकत की कडी पनी दृष्टि स देखती रही । इसीचिना न इतवार के दिन पहले जान वाने निबुभा-पील रग का शान्त झाड़ झाड़ होंठों के किनारों पर माँ की ममता झनकाते हुए, वृद्ध स कहा प्रोकाफ़ा भब बस करो नाद देवेगा तो समझेगा कि जान कितने दिनों क भूखे हो तुम ।

माने भी नहीं दोगी जान कौसी औरत होतुम !

दूसी समय प्योत्र की गहुँभा रग की सम्झी मुँछें दरवाज पर बमकीं ।
सवारी तैयार है पयारो !

दुःखा को हसी घा गई और उसने आस्तीन से भपना मुँह दक लिया ।
दारुया वाधर्चीलाने स गुजरी और उसने होनवात डूल्हे पर एक निगाह
बाली ।

इसीचिना की बतुर बिधवा मतोजी घाटी बसीसीजा को मध्यस्थ
बनकर जाना था । सा भपना गिर घुमाते नघाते और हमते हुए वही
सबस पहले गानी म बँटी । वह मुनकराह तो उनक हाठों के बीच से
हूटे नाम दाँत बमके ।

बसीसीजा ! दाँत मत निबालो ! पँन्तेली न उस हाँटा इस तरह
तुम सब गूढ गोबर कर दोगी । तुम्हारे दाँत ऐम हैं जैसे कि सारी रात पहुरा
देते रहे हों और अब उनम स एक भी सीध सडा न रह सकता हो !

भरे तो कोई शादी मेरी थोड ही रचेगी !

ठीक है कि तुम्हारी शादी नही रचेगी पर तुम अपने दाँत बन्द ही
रखा क्या दाँत हैं ! रग उनका ऐसा है कि जो दम उस जूडी भा
जाय !

बसीसीजा का क्राध भा गया किन्तु इसी समय प्योत्र फाटक
कोतकर बाहर निकला । बमडे की बमकती लगाम साथ प्रिगोरी उछम
कर सईग की गद्दी पर जा बटा । पन्तेली और इसीचिना पीछे की
तरफ भगस-भगल म दो नवबिवाहितो की तरह बठ गण ।

बाबुन भमाघो ! हाँबा ! प्योत्र बोला ।

प्रिगोरी ने अपने हाठ दबाए और बाबुन सटकारा । थोड विना
भडे भागे बड चल ।

देखा तुम पहिले पर जा पढोगे । दारुया ने चीखकर कहा सेनिन
गादी तबी स मुड गँ और विनार के टीलों को उछनकर पार करती
हुई सडक पर दौदने लगी ।

एक भार का झुक्कर प्रिगोरी न प्यात्र के घड़ते घाडे को बाबुन
मारा । इस बीच पँन्तेली ने अपने हाथों से दाँडो इम तरह साथ ली जस
उस दर हा कि यह ठेक हुआ वहाँ उग उड़ा न स जाय !

घाड़ी को चाबुक लगा । वह प्रिगोरी के कंधे पर झुकते हुए मोटे स्वर में बोला । बलदार मास्तीन से इलीचिना ने भ्रामू पाछे जो हवा के कारण उसकी छाँखो में आ गए थे । वह बार-बार पलकों झपकते हुए प्रिगोरी की नीली साटन की कमीज को देखने लगी । कमीज के गिरे हवा में उड़ रहे थे । सड़क पर चलत कज्जाव एक ओर को हट गए और उनकी ओर आश्चर्य से देखने लगे । महालों से निकलकर कुत्त घोड़ों के पीछे दौड़ने लग और खोर-जार से भूँदने लगे ।

प्रिगोरी ने न चाबुक को ढील दी और न घोड़ो को । दस मिनट के के भन्दर भन्दर गाँव पीछे छूट गया । थोड़ी ही देर में फोरशूनोव का लकड़ी के तल्लों की बाढ़वाला बग्न मकान आ गया । प्रिगोरी ने रास धौंकी और एकाएक लकड़ी की कारीगरी वाले सुन्दर फाटक के सामने थोड़े जा रुक ।

प्रिगोरा थोड़ों के पास रहे गया पर पन्तली लेंगडाता हुआ सीटिया की ओर बढ़ा । उसके पीछे-पीछे इलीचिना और बसोलीजा अपना स्केटों को हवा में मरसराती चली । वृत्त की चाल में तडी आ गई । उस भय था कि बग्घी में बटागा हुआ साहम कहीं खो न जाय । ऊँची डायीडी पर लकड़हान से उसको लकड़ी टाँग में ठोकर नग गई । दस से बढ़वडाते हुए वह उन साफ-सुपरी सीटियों पर पर पटकने लगा ।

वह और इलीचिना लगभग एक साथ ही वावर्चोसाने में धुन । पन्तली को अपनी पत्नी की बगल में खड़ा हाता भच्छा नहीं लगा क्योंकि वह उससे पूरे छे इंच लम्बी थी । वह एक बंदम आग बढ़ गया और सिर से टापी उतारकर उसने बालो पट्टी देवमूर्ति के सम्मुख फ्रांस बनाया ।

भगवान् आपको स्वस्थ रख । वह बोला ।

घायवाद ! भारी भरकम मकान-मालिक ने त्रिपाई से उठत हुए कहा ।

मिरोन प्रिगोरीएविच ! आपके यहाँ कुछ महमान भाय हैं । पन्तली फिर बोला ।

महमानों का हफेगा स्वागत है यहाँ । भारिषा महमानों को बठने

क लिण स्टूल दो ।

मिरोन की सपाट सीनेवाली अघड़ पत्नी न तीन साफ स्टूलों की धूल झाड़ी घोर मेहमानों की घोर किसका दिण । एक स्टूल के सिर पर बटल हुए पंगुली ने पसीने से तर अपनी भौंह रुमास से पोछी ।

हम लोग एक काम से भाये हैं । उमने बिना किसी तरह की भूमिका बांध कहा । अपने स्कर्टों को समटती हुई इलीचिना घोर बैसीलीजा भी स्टूल पर बैठ गई ।

हुकम कीजिए, क्या सवा कर सकता हूँ ? मिरोन मुसकराया ।

तभी प्रिगोरी अदर भाया । उमन धारा घोर दृष्टि वाली घोर कोरघुनाथ पति-पत्नी का अभिवादन किया । मिरोन के बनसेदार मुँह पर खाली दौड़ गई । अब बह समझ इस भीड़भाड़ का कारण । अपनी पत्नी को आदेश दत हुए बाला घोषों को अहाते में करवा लो घोर उनमें भागे सुखी पास डलवा दो ।

हमको एक छाटे-से मसल पर बातें करनी हैं । पत्नेली अपनी पुंघरानों दादी अँटते हुए बाला घोर धवराहट में जानों की बालियाँ मोषने लगा बापकी लडकी कुधारी है और हमारा लडका भी कुधारा है । हम जानना चाहत हैं कि आप हम अपनी लडकी दे सकते हैं या नहीं ? क्या हमारी घोर आपकी रिश्तेदारी की काई बात बन सकती है ?

कोन कह सकता है ? मिरोन ने अपनी गभी खीपड़ी खुजलात हुए कहा मगर इस साल जाटो में उसकी दादी वरन का हमारा कोई विचार नहीं । इधर हमारे पाए काम का जोर है और उधर लडकी भी काई सयानी नहीं है । अभी ब्रूस अटारह साल की है । ठीक है न मारिया ?

ठीक है ।

यहा लो उमकी दादी की उम्र है । यमोलाजा वाली "लडकी दमते-ध्वत सयानी हो जाती है । वह स्टूल पर अभी इस तरफ को होता ता अभी उस तरफ का । अगसाती में जा माद वह घुरा साई

य वह उसके चुम रही थी। भाइ उसने अपनी जानिद म धिपा ली थी। परम्परा क अनुसार जा मध्यस्य लडकी की भाइ चुरा लते थे उनका इन्वार कमी नहीं होता था।

हमारी लडकी के लिए ता लाग वसन्त म हा भाये थे। हमारी लडकी बडी नहीं रहेगी। हम दमालु भगवान् को हृदय मे ध-पवाद दते हैं लडकी काम-श्राज म तिपुण है—नाम चाहे घर का हा चाहे खेत का। कौरूनोव की पत्ना ने उत्तर दिया।

अगर कोई भला भादमी बात लकर भाए ता आपक मुंह स 'ना' कंस निकलेगा? पन्तेली घोरतों के बीच कृश।

ना' कहन का सवाल नहीं है। गृहस्वामी न अपना सिर चुन्ननाया हम उसका विवाह कभी भी कर सकत हैं।

पन्तेली पवरा गया। उसने सोचा कि कहीं ना न हो जाय। बोला, खर यह काम आपका है। जिस गरज हातो है वह जहाँ चाहता है वहाँ पूछताछ करता है। अगर आप अपनी बटी क लिए किसी सौगाद या एस ही किसी बड भादमी का बटा चाहते हैं तो बात घोर है। हम माफा चाहते हैं।

बातघोत टूटने पर भा गई। पन्तेली खीक उठा और उसका चेहरा घुस्न्दर की जड की तरह लाल हो गया। लडकी की माँ को हालत यह हो गम् जो चीम की पट्टेव के अन्दर बडी मुर्गी की होती है। किन्तु ठीक समय पर बसीतीजा वाल पडी। उसने घाव पर मरहम लगाया और अपनी मधुर मीठी बानों स दरार का भर लिया।

अब भाई मामला यह है कि जब कोई ऐसी बात सामने भाए तो उस तप हो जाना चाहिए और उसम भी बच्चों को सुनी या छयाल सधने पहन रखा जाना चाहिए। अगर ननात्या का बात कर ता कहना पडेगा कि चिराग लकर बँडने पर भी ऐसी लडका नहीं मिलगी। काम के लिए तो उसक हाथ-पर चुन्ननाते रहते हैं। वही नोगिमार घोरत साबित होया और बहुत अच्छी बहू! जहाँ तक उसकी दान्य गूरन का मयास है वह ता आप अपनी भावों म हा दग रहे हैं। फिर पन्तेला घोर इसीधिता की घोर घूमस हुए घोली 'जहाँ तक लडक का

मैं कोई बहुत सुखी नहीं रहा और मुझे उससे नफरत है। लेकिन इस पर भी मुझे उससे प्यार है। रात को झोवरकोट छोड़कर और हाथ धिर के नीचे रखकर गाड़ी में बैठकर सोचता रहा कि देखता हूँ कि घर लौटने पर भकसीनिया मेरा स्वागत किस तरह करती है। उसे लगा कि उसके सीने में दिल की जगह कासा भाग है। उसने बदला लेने की हजार युक्तियाँ साधी और उसके नाँव इस तरह भिन्न जस कि उनका बीच बासू भा गई हो। प्योत्र व भगडे ने धाम में भी का काम किया। पर वह घर पहुँचा धकान से बूर। इसीलिए भकसीनिया उस दिन सस्ती छूट गई। पर स्तीपान की वापसी के बाद से भगडे का एक भजीब-सा भदेशा घर की हवा में चक्कर काटने लगा।

भकसीनिया दबे पाँवों चलती और कानाफूसी में बातें करती पर शिगारी ने प्यार की जो भाग जलाई थी उसकी एक छोटी सी चिनगारी उसकी डर से सहमी झाला में सदा ली देती रहती।

स्तीपान भकसीनिया को ध्यान से देखता था उसमें वह चीज दिखलाई तो नहीं देती पर उसका अनुभव अवश्य होता। वह रह रहकर कुड़ता। रात में जब मन्सियों का दल छान की घण्टियाँ पर सो रहता और भकसीनिया डर से काँपती हुई बिस्तर लगाती तो वह अपनी खुरदरी हथेली में उसका मुँह बन्द कर उसे जी मर पीटता। वह शिगारी से उसके सम्बन्धों की बात चलाता और धाम से गढ़ा देनेवाली तफसीलें जानना चाहता। भकसीनिया बड़े बिस्तर पर इधर उधर तडपती और भेड़ की खाल की बास के कारण साँस भी बठिनाई से ही ले पाती। स्तीपान उसके कोमल शरीर को कष्ट देते-लेते थक जाता तो उसके चेहरे पर यह देवन की हाथ फेरता कि वह रो रही है या नहीं। पर उसके गाल बिलकुल शुष्क रहते। हाँ जबड़े जरूर हरकत करते मिलते—भगुलियाँ के नीचे।

बतलायोगी कि नहीं? उसने पूछा।

‘नहीं।’

मैं जान से मार दूँगा।

मार डालो! मार डालो! तुम्हें योगी की नाम मार डालो! यह कोई जिन्दगी नहीं।

स्तीपान उसकी पसीन से तर छातियों का कोमल खाल नोचता ।
 भक्तीनिया काँपकर कराह उठती ।

क्यों तकलीफ़ होती है ? स्तीपान व्यग्न स पूछता ।

हाँ हाती है ।

और तुम क्या सोचती हो मुझे तुम्हारी प्रमत्त-कहानियों सुनकर
 दुःख नहीं हुआ ?

फिर काफ़ी रात होने पर ही वह साता । मात म उसकी मुट्टियाँ
 बँध जातीं । भक्तीनिया कुहनिया के बल उठकर अपने पति के मुन्दर मुख
 का दमती । नींद में विसकुल बदला हुआ मिलता । फिर वह तबिय पर
 दह पड़ता । वह मन-हो मन जान क्या-क्या साचन सगती ।

धव प्रिगारी स उसकी मुलाकात कम ही होती । लेकिन एक
 दिन मनस्मात ही वह उस दोन के किनारे मिल गया । वह बलों का पानी
 पिमान नदी किनारे ल गया था और धव दाल से ऊपर आ रहा था ।
 भक्तीनिया हास स नीचे जा रही थी—टोन का तरफ़ । उसने प्रिगारी को
 देखा तो एसा लगा जैसे कि बाल्टियों की रस्ती उसके हाथों में बफ़र बनी
 जा रही है और खून उसकी कनपटियों म आ आकर उछल रहा है ।

बात में जब उनन इस मुलाकात की याद की तो उस स्वय ही
 विस्वास न हुआ । प्रिगारा न उस मित्र तब देखा जब वह उसकी बग़ल
 स गुबरी । बाल्टियों की लगातार आवाज सुनकर उसन सिर उठाया तो
 उसका भौहें काँपो और वह बबकूफ़ की तरह मुसकरा दिया । भक्तीनिया
 दोन की हरी लहरों और पार के रेतीले टीन को देखती रही । उसका
 मौखों स घपकते हुए आँसू उमड चल ।

‘भक्तीनिया !

भक्तीनिया कुछ कदम आगे बढ़ी और सिर नुकारकर इस तरह खड़ी
 हा गई जस कि किसी ने सिर पर घूमा मार दिया हो । प्रिगारी सगडा
 कर चलत बस पर कोप से आनुक सटकारत हुए बिना मिर घुमाए ही
 बामा राई काटन स्तीपान कब जाएगा ?

“तमार ही समझो ।”

‘उसे विदा कर तुम हमारे मूरजमुखी बाल खेत म आना ॥ बाह

म पहुँच जाऊँगा ।

वाल्कियाँ बजाती भक्सीनिया दोन के बिनारे भाई । नहर के हरे सिरे पर पीली बल की चमक की तरह भाग साँप स चक्कर लगात रहे । सफ़द समुद्री चिड़ियाँ हवा म चक्कर लगाती घौर नदी पर घाकर पक्ष फटफटाती रहा । नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बर सात करती रही । उस पार रेतिल टीले का सफेदी से भागे पुरान देव दाख्यों की भूरी चोटियाँ लौ देती रहीं । पानी भरने म भक्सीनिया की वास्ती हाथ से छूटकर गिरी । स्वट को ऊपर चढाकर वह घुटनों तक पानी में धुस गई । पानी उसकी पिडलियों क चारों घोर चक्कर काटकर उसे घान्ति घौर घनिश्चितता से भाज वह पहली बार हसी थी ।

उसने मुडकर प्रिगोरी की घोर देखा । अभी भी चाबुक हिलाता वह भाराम स ढाल पर चट रहा था । भक्सीनिया की घ्राँख भर भाइ घोर वह घुघसी निगाहों से उसकी स्वस्य टाँगों को निहारती रही । प्रिगोरी का बड़ी मोहरी का पाजामा उनी मौजा म दबा हुआ था घोर उसकी लाल धारियाँ बड़ी मुहानी लग रही थी । बमोज पीठ पर से फट गई थी घोर मूराल म स उनका भरा हुआ दारीर नजर भा रहा था । भक्सीनिया ने देह क इस छोटे-स टुकड़े को निगाहों स बार-बार घूमा । अभी यही दारार बिस तरह उसना अपना घौर कितना प्यारा रहा था ! उसकी मुसकानों से राज हॉट घ्राँघुघों सनहा उठे ।

वहूँगी म साधन क लिए उसने वाल्कियाँ बालू पर रखी ता उसे प्रिगोरी क जूतों के निगान दिखसाई पडे । उनने चारों घोर देखा दूर पाट पर नहाते कुछ लड़कों क प्रसावा कही कोई घौर दील न पडा । भक्सीनिया पालघी मारकर बठ गई घौर अपनी हथेली से उसने प्रिगोरी के वरों क निगानों को ढक लिया । फिर उठकर खडा हुई वहूँगी कन्ध पर सटकाई घौर अपने प्राप पर हगती हुई तेबो स चन थी ।

मन्धमली घंध स डबा गूरज गाँव क ऊपर से गुजर रहा था । दवेत याददा के छोटे-छोटे टुकड़ों क भुण्ड क भागे घान्त घासल नीली बरा गाह थी । सोहे की ठपती छत्रों घूस भरी सूनी सड़कों घोर प्रामों क पीली

घासों वाले झहालों में घाग बरस रही थी ।

भक्तसीनिया घर की सीढ़िया के पास पहुँची तो चौड़े छज्जवाला तिनकों का टोप पहने स्त्रीपान घोड़ों की बटाई-मशीन में जोतता मिला । बोला 'घड़े में घोड़ा पानी डाले ।

भक्तसीनिया ने घड़े में बाल्टी भर पानी डाला और सोह के गरम सिरे से अपनी भगुलियाँ जला लीं ।

'घोड़ी बड़ ल लत उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की ओर देखते हुए कहा ।

जाया मत्तछोद-परिवार में घोड़ी-सी बक ल भाघो' पर नहीं रहने दो ' स्त्रीपान ने जोर से कहा । मादें हरी हो उठीं ।

भक्तसीनिया बेंत का पाटक बन्द करने चली । स्त्रीपान ने भाँसों नीची कर चायुज सम्हाला । पूछा कहीं चली ?

पाटक बन्द करने ।

रहन दे कृतिया कहीं की । मैंत कहा नहीं नि जाने की जरूरत नहीं ।

वह जल्दी-जल्दी लौटी और बहेंगी लटनाने लगी पर उसका हाथ बुरी तरह काँपने लग । बहेंगा नीच फिर पड़ी ।

स्त्रीपान ने मोमजामे का अपना काट घाग की सीट पर डाला और रास सम्हाली पाटक खोल दे !

घाटक खानते समय भक्तसीनिया ने हिम्मत से पूछा 'कब तक सीपान ?'

'शाम तक । मैंने अनाकुन्ना के साथ बटाई करने का फमला किया है । उनका खाना पहुँचा घाना । लोहार के यहाँ काम खत्म कर वह सबों की तरफ भावगा ।

मशीन के पहिये धरमराय और भूरी धूल पर अपने निगान बनाने लगे । भक्तसीनिया झोंपड़ी में गई और रागभर भाँसे पर हाथ रख खड़ी रही । फिर फिर से रुमाल बाँध नदी की तरफ भागी ।

तबिन यदि वह लौट पड़े तो क्या होगा ? उसका मस्तिष्क में सहसा हा विचार काँपा । यह टिठकी उस घाग काई गहरा गडा भा गया हो । एक बार पीछे नजर दीवाई । दूसरे ही क्षण सगमग दीइती

म पहुँच जाऊँगा ।

बाल्टियाँ बजाती बकसीनिया दोन के किनारे धाई । लहर के हरे सिरे पर पीली बल की चमक की तरह भाग साँप स चबकर लगात रहे । सफ़द समुद्री चिड़ियाँ हवा में चक्कर लगाती घोर नदी पर घाकर पक्ष फड़फड़ाती रहा । नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बरसात करती रहीं । उस पार रेतील टील की सफेनी से भागे पुराने दब दाहणों की भूरी चोटियाँ ली देती रहीं । पानी भरने में बकसीनिया की बाल्टी हाथ स छूटकर गिरी । स्कट की ऊपर चढ़ाकर बहु छुटनों तक पानी मे धुस गई । पानी उसनी पिंडलियों क धारों घोर चक्कर घाटकर उसे धीरे धीरे मुदमुदाने लगा । बहु हँस पड़ी । स्तोपान की बापसी के बाद शान्ति घोर अनिश्चितता से भाज बहु पड़सी बार हसी थी ।

उसने मुड़कर गिगोरी की घोर देखा । अभी भी चाबुक हिलाता बहु धाराम स ढान पर बढ रहा था । बकसीनिया की धाँस भर बाइ घोर बहु धुधली निगाहों से उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रहीं । गिगोरी का बडी मोहरी का बाजामा ऊनी मौजा म दबा हुआ था घोर उसकी सास धारियाँ बडी सुहानी भग रही थी । कमीज पीठ पर स फट गई थी घोर मुरास म स उसका भरा हुआ शरीर नजर आ रहा था । बकसीनिया न दह के इस छोटे-स टुकड़े को निगाहों स बार-बार घूमा । अभी यही शरीर किस तरह उसका भपना घोर कितना प्यारा रहा था । उसकी मुसकानों से सज हाट धाँसियों से नहा उठे ।

यहूँगी म साधन क लिए उसने बाटियाँ बानू पर रखी ता उसे गिगोरी क जूतों के निगान दिखसाई पड़े । उसन धारों घोर देखा दूर घाट पर नहाते कुछ लड़कों क भलावा नहीं कोई घोर दास न पदा । बकसीनिया पासची मारकर बठ गई घोर भपनी हयेसीस उगने गिगोरी के परो क निगानों को डक लिया । फिर बटकर लड़ी हुई दहणी कथे पर सटबाई घोर भपने भाप पर हससी हुई तेजी स चल दी ।

मसमली घष स दबा मूरज गाँव क ऊपर स गुडर रहा था । स्वत बादलो क छोटे-छोटे टुकड़ों क भुण्ड क भाग शान्त दौतल नीली चरा गाह थी । सोहे की वपती दलों घूल भये मूनी सडकों घोर फामों के पीसी

पाती बाल झड़ाता म धाग बरस रही थी ।

भरुसीनिया घर की सीढ़ियों के पास पहुँची तो चौड़े छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्तीपान घोड़ों को बटाई-मंगीन में जोड़ता मिला । बोला 'घड़े में थोड़ा पानी डाल दे ।'

भरुसीनिया ने घड़े में वास्टी भर पानी डाला और लाहे के गरम सिर से अपनी भ्रगुलियाँ जला लीं ।

'थोड़ी बक्र ल लत' उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की घोर देखते हुए कहा ।

जामा मलखोव-परिवार म थोड़ो-थी बक्र ल धाप्रो' पर नहीं रहने दो ' स्तीपान ने जोर से कहा । याने हटा हो उठी ।

भरुसीनिया बेंस का फाटक बन्द करने चली । स्तीपान ने घाँस नोधी कर चायुक सम्झाना । पूछा कहां चली ?

'फाटक बन्द करने ।

'रहने दे कुतिया वहीं की' मैंने कहा नहा कि जाने की जरूरत नहीं ।

बहु जल्दी-जल्दी लौटी घोर बहंगा सटवाने लगी पर ठमक हाथ बुरी तरह कपिने लगे । बहगा नीचे गिर पड़ी ।

स्तीपान न मोमजामे का अपना काट धाग की सीट पर डाला और रास सम्झानी फाटक खोल दे !

फाटक खोलने समय भरुसीनिया न हिम्मत से पूछा कब तक लौटाग ?

'शाम तक । मैंने भनाकुना व माथ बटाई करने का क्रमला किया है । जवका खाना पहुँचा घाना । लोहार के यहाँ काम खत्म कर वह छतों की तरफ धायेगा ।

मंगीन व पहिय धरमराय और भूरी धून पर अपना निगान बताने लगे । भरुसीनिया झोंपड़ी में गई और दासभर भाये पर हाथ रखे खड़ी रही । फिर सिर से रुमाल बाँध नदी की तरफ भागी ।

तबिन यदि वह लौट पड़े तो क्या हागा ? उसका मस्तिष्क म सहमा ही विचार बाँधा । वह टिठकी जैसे भाग काई गहरा गढ़ा भा गया हो । एक बार पीछे नजर डीढ़ाई । दूसरे ही क्षण लगभग डीढ़ी

म पहुँच जाऊँगा ।

बाल्टियाँ बजाती भ्रकसानिया दोन के किनार भाई । सहर क हरे सिरे पर पीसी बल की चमक की तरह भाग साँप स चक्कर लगात रहे । सफ़द समुद्री बिडियाँ हवा म चक्कर लगाती और नदी पर भाकर पक्ष पढ़फडाती रहा । नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बर सात करती रही । उस पार रेतील टीले की सपेदी स घागे पुराने देव दाहपा की मूरी चोटियाँ ली देती रहीं । पानी भरने म भ्रकसीनिया की बाल्टी हाथ स छूटकर गिरी । स्कट की ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तक पानी म घुस गई । पानी उसकी पिडलियों के धारों और चक्कर बाटकर उसे धारे धीरे गुदगुदाने लगा । वह हस पठी । स्तीपान की वापसी क बाद शान्ति और अनिश्चितता से भाज वह पहली बार हसी थी ।

उसने मुडकर प्रिगोरी की घोर देखा । भ्रमी भी चाबुक हिलाता वह धाराम से दाल पर चढ रहा था । भ्रकसीनिया की धालें भर भाई और वह धुधली निगाहों स उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही । प्रिगोरी का बडी मोहरी का पाजामा ऊनी मौजा म दबा हुमा था और उसकी साल धारियाँ बडी मुहानी लग रही थीं । बमोज पीठ पर से फट गई थी और मूराल म स उसका भरा हुमा शरीर नजर आ रहा था । भ्रकसीनिया न दह क इस छोटे-स टुकड़े का निगाहों स बार-बार झूमा । बभी यही धारार किस तरह उसका भपना और कितना प्यारा रहा था । उसकी मुसकानों से सज होठ धाँसुयो स नहा उठे ।

यहूगी म साधन क लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखीं ता उसे प्रिगोरी के जूतों के निपान दिखलाई पड़े । उसने धारों और देखा दूर घाट पर नहात बुद्ध सटकों के भलावा कहीं कोई और दास न पडा । भ्रकसीनिया पासची भारकर बठ गई और भपनी हथेली से उमने प्रिगोरी के परो क निगानों को ढक लिया । फिर उठकर सड़ा हुई बहूँगी बन्ने पर सटवाई और भपन भाप पर हँसती हुई ठेडी स पस दी ।

मसमली घँघ स ढका मूरज गाय क ऊपर से गुजर रहा था । बत बादलों क छोटे-छोटे टुकड़ों क मुण्ड क घागे शान्त मौसल नासी परा गाह थी । मोहे की ठपती धनों धूम भरी मूनी सटकों और कामों क पीसी

धर्मो बाले घरातों म भाग बरस रहो थी ।

धर्मोनीया घर की सीड़ियों के पास पहुँची तो चौक छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्त्रीपान थोड़ों को कटाई-भचीन में जातता मिला । बोला, 'घड़े में थोड़ा पानी डाल रे ।'

धर्मोनीया ने घड़े म बाल्टी भर पानी डाला और तोहू के गरम सिरे से अपनी धँगुनियाँ जला ला ।

'योहो बक ल लत उसने धपन पति की पसीने स तर पीठ की धोर दलत हुए कहा ।

जाभा मसखोत्र-परिवार म योहो-नी बक ल भाभी' पर नहीं रहन हो " स्त्रीपान ने जोर स कहा । याने हरो हो उठी ।

धर्मोनीया बँत का फाटक बन्द करने खली । स्त्रीपान न भाँखे नीची कर धाबुन मन्हाला । पूछा कहाँ पत्नी ?

'फाटक बन्द करने ।

रहने दे कृतिया कहीं की । मैंने कहा नहीं कि जान की जकरत नहीं ।' वह जल्दी-जल्दी सीटी धीरे बहेंगी सतकान लगी पर उसक हाथ बुरी तरह बाँधन खले । वहेगा नीचे गिर पड़ी ।

स्त्रीपान ने मोमजामे का धपना काट धाग का सीट पर डाला और उस मन्हाली 'फाटक खाल दे ।

फाटक खानन समय धर्मोनीया न हिम्मत स पूछा अब तक मोटाग ?

'धाम तक । मैंने धनीकुँरा क साथ कटाई करने का कमाना किया है । उसको पाना पहुँचा धाना । मोहार क यहाँ काम खतम कर वह मरों की तरफ भागग ।

भगीन क पहिय चरमराय और भूरी घुल पर धपन निगान बनाने से । धर्मोनीया भँपडा म गद्द धीरे टालनर माथ पर हाथ रख सही रही । फिर गिर स कमाल बाँध नदी की तरफ भागी ।

'लेकिन यदि वह सीट पड तो क्या हुआ ?' उसक मन्थिष्क म सहसा हा बिखार कौपा । वह ठिठकी जब धाग काई गहरा गद्दा धा गया हो । एक बार पीछे नजर दोड़ाई । दूसरे ही क्षण सगनग दोबहा

में पहुँच जाऊँगा ।

वाल्कियों बजायी अकसाजिया दोन के किनारे घाई । तहर के हर सिरे पर पीली बल की धमक की तरह भाग साँप स चक्कर लगात रहे । सफ़द समुद्री बिठियाँ हवा म चक्कर लगाती और नदी पर भाकर पक्ष फड़फड़ाती रहा । नदी की तरह पर छाटी मछलियाँ चाँदी की बर सात करती रही । उस पार रेतील टोले की सफ़ेती से घागे पुराने देव दास्यों की मूरी बोटियाँ ली देती रहीं । पानी भरने य अकसीनिया की वाल्टी ह्याय स छूटकर गिरी । स्कट की ऊपर चढ़ाकर वह छुटनों तक पानी म घुस गई । पानी उसकी पिंडमियों के चारो ओर धक्कर बाटकर उसे घीरे घीरे गुदगुदाने लगा । वह हस पही (स्तोपान की वापसी क बाद वाल्टी ओर अनिश्चितता से भाज वह पहली बार हसी थी ।

उसने मुड़कर प्रिगोरी की ओर देखा । अभी भी चानुक हिजाता वह धाराम से डाल पर बठ रहा था । अकसीनिया की धाँसे भर भाइ और वह बुधली निगाहों स उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही । प्रिगोरी का बही मोहुरी का पाजामा ऊनी मौजा म दबा हुआ था और उसकी सात धारियाँ बड़ी मुद्दानी लग रही थी । बमोज पीठ पर से फट गई थी और मूराख म स उमका भरा हुआ धारीर नजर भा रहा था । अकसीनिया ने दह के इस छोटे-स दुबड़ का निगाहों स बार-बार घूमा । कभी मही धरार किस तरह उसका अपना और कितना प्यारा रहा था । उसकी मुसकानों से सज होठ धाँसुधों ने नहा उठे ।

वहूँगी में साधन क लिए उसन वाल्टियाँ बासू पर रखीं ता उसे प्रिगोरी क जूतों के निदान दिसलाई पडे । उसने चारों ओर देखा दूर घाट पर नहाते कुछ सबकों के भलावा कहीं काई और दोस्त न पडा । अकसीनिया पासकी धारकर बैठ गई और अपनी हृदयेसी से उसने प्रिगोरी के परों क निगाहों को बक सिया । फिर उठकर खड़ा हुई वहूँगी बन्ध पर सटकाई और अपने भाप पर हँसती हुई तेजी से चल दी ।

मसमसो घँघस दबा मूरज गाय क ऊपर ग गुजर रहा था । स्वत बादलों क छोटे-छोटे दुबड़ों के भुण्ड क घागे दान्त शीतल नाली धरा गाह थी । सोहे की तपती छतों धूल भरी मूनी सबकों ओर जामों के पीली

धामो बाले झटतो मे भाग बरस रही थी ।

भकसीनिया घर की सीढ़िया क पास पहुँची तो चौड़े छज्जेवाला तिनकों का टोप पहने स्त्रीपान घोड़ों को बटाई-मशीन में जोतता मिला । बोला ' थड़े में थोडा पानी डाल दे ।

भकसीनिया ने घड़े में बाल्टी भर पानी डाला और लोहे के गरम सिरे से अपनी भगुनियाँ जला ली ।

' थोड़ी ब्रह्म ल सत उसने अपने पति की पसीने से तर पीठ की ओर देखत हुए कहा ।

जाया मेलखोव-परिवार से थोड़ी-सी बर्क से धामो पर नहीं रहने दो ' स्त्रीपान ने जोर से कहा । घादें हुरी हो उठी ।

भकसीनिया बेंत का फाटक बन्द करने चली । स्त्रीपान ने धामो नीची कर चायुक सम्हाला । पूछा कहीं चली ?

फाटक बन्द करने ।

रहने दे कृतिगा कही की ' मैंने कहा नहीं कि जाने की जरूरत नहीं ।

वह जल्दी-जल्दी लौटी और बहेंगी सटवाने लगी पर उसके हाथ बुरी तरह काँपने लगे । वहगा नीचे गिर पड़ी ।

स्त्रीपान ने मोमजाभे का अपना काट धागे की मोट पर डाला और रात सम्हाली ' फाटक खोल दे !

फाटक खोलत समय भकसीनिया न हिम्मत से पूछा कब तक नोटोले ?

धाम तब । मैंने अपनीकुत्ता क साथ बटाई करने का फ़ैसला किया है । उमकी धाना पहुँचा माना । लोहार के यहाँ काम खरम कर वह सता की तरफ आयेगा ।

मगोन क पहिय खरमराये और बुरी धूल पर अपने निगान बनाने लगे । भकसीनिया झोंपड़ी में गई और क्षणभर माथे पर हाथ रखे खड़ी रही । फिर सिर से रुमास बाँध नदी की तरफ भागी ।

लेकिन यदि वह लौट पड़े ता क्या होगा ? उसका मस्तिष्क में सहसा हा विचार कौंधा । वह टिठकी जैसे भाग खोई गहरा गढा भा गया हा । एक बार पीछे नजर दौड़ाई । दूसरे ही क्षण नगमग दीवती

म पहुँच जाऊँगा ।

बाल्टियाँ बजाती धक्कीनिया दोन के किनारे भाई । लहर क हरे सिरे पर पीली बेल की चमक की तरह भाग साँप स धक्कर लगात रहे । सफ़द समुद्री चिड़ियाँ हवा म चक्कर लगाती घीरे नगी पर धक्कर पक्ष फड़फड़ाती रहा । नदी की सतह पर छोटी मछलियाँ चाँदी की बर सात करती रही । उस पार रेतिल टीले की सफेदी से प्रागे पुराने देव दाहनों की भूरी चोटियाँ लौ देती रही । पानी भरने म धक्कीनिया की बाल्टी हाथ से छूटकर गिरी । स्कट को ऊपर चढ़ाकर वह घुटनों तन पानी म घुस गई । पानी उसकी पिंडलियों के चारों ओर धक्कर काटकर उसे घीरे घीरे गुदगुदाने लगा । वह हस पड़ी । स्तीपान की बापसी के बाद पान्ति और अनिश्चितता स धात्र वह पहली बार हँसी थी ।

उसने मुहकर प्रिगोरी की ओर दसा । धभी भी चामुक हिलाता वह भाराम स डाल पर चढ़ रहा था । धक्कीनिया की घ्रांस भर घाद ओर वह घुघली निगाहा स उसकी स्वस्थ टाँगों को निहारती रही । प्रिगोरी का बडी मोहरी का पाजामा उनी मौजा म दबा हुआ था और उसकी सास धारियाँ बडी मुहानी लग रही थीं । बमोज पीठ पर से फट गई थी और मूरास म स उसका भरा हुआ धरीर नजर आ रहा था । धक्कीनिया ने देह के इस छोटे-से टुकड़े का निगाहों स बार-बार घूमा । कभी यही धरीर किस तरह उसका धपना और कितना प्यारा रहा था ! उसकी मुसकानों से गजे होठ घाँसुओं से नहा उठे ।

वहूँगी म साधन क लिए उसने बाल्टियाँ बालू पर रखी तो उसे प्रिगोरी क जूतों के निगान दिखलाई पडे । उसन चारों ओर देखा दूर घाट पर नहाते कुछ लटकों क प्रसाया कही कोई और दीख न पड़ा । धक्कीनिया पालपी मारकर बठ गई और अपनी हथेली स उसने प्रिगोरी के परोँ क निगानों का बँक लिया । फिर वठकर लड़ी हुई दहगी कचे पर लटवाई और धपन घाप पर हँसती हुई तेजी स चल दी ।

मसमली घंघ स दबा मूरज गाँव के ऊपर स गुजर रहा था । स्वत धादलों क छोटे छोटे टुकड़ों क मुण्ड क प्रागे पान्ति पीतल नीली बरा गाह थी । सोह की ठपती धर्तों धूम भटो गूनी लटकों और प्रामों के पीली

“तुम्हें नहीं मालूम ? वह मुझे रोज मारता है । वह मेरा खून चूस रहा है और तुम भी क्या आदमी हो ! मुझे कुत्त की तरह परचाया और फिर किनारा बस लिया तुम सब काँपती भँगुलियों स उसने अपनी ब्लाउज के बटन लगाय और डर गई कि कहीं प्रिगोरी बुरा न मान जाए । उसने उसकी धीरे दृष्टि वाली पर उसकी निगाह दूसरी ओर पाई ।

‘तो तुम इनजाम भरे सिर रखना चाहती हो ! घास के तिनके को दाँतों से चनाते हुए वह धीरे से बोला ।

तो क्या चलती तुम्हारी नहीं है ? वह क्रोध से बिल्लाई ।

✓ जा कृतिया राजी नहीं होती कुत्ता उसको नहीं घेरता ।

भक्सीनिया ने हाथों स अपना मूँह छिपा लिया । इस अपमान से उसका सीने पर जस धँसा पडा ।

प्रिगोरी ने भीड़ों पर बल डाल उसे तिरछी नजर से देखा । उसकी भँगुलियों के बीच एक भामू दलकता रहा । सूरज की एक टूटी धुपली किरण उस झुनाझुन बूँद पर चमकी और उसका निशान को सोख गई ।

प्रिगोरी ने उसकी आँखों स भामू देखे तो वह बेचन हा उठा ।

क्या मेरी बात स तुम्हारे दिल को चोट पहुँची है ? भक्सीनिया चुप हा जायो !’

भक्सीनिया ने अपना मूँह पर स हाथ हटा लिया ।

मैं तुम्हारे सिर पडने यहाँ नहीं आई । डरो मत ।

प्रिगोरी का चेहरा पछतावे स सास हा गया भक्सीनिया, मेरा यह मतलब नहा या’ मेरी बात अपना मन स निकाल दी । उसने एक लम्बी साँस ली ।

उस समय वास्तव स उसने अपना भापस यही कहा हाँ मैं प्रिगोरी क साथ अपने आपको बाँधन नहीं आई । किन्तु जब वह दोन के किनारे दोही आई तो उसका मन स धुपना-सा विचार आया या मैं प्रिगोरी स बातें करूँगी ? उसकी गादी नहीं होने दूँगी । अगर उसकी शादी हो जाएगी तो मैं किसके साथ रहूँगी ? इसी समय उसे स्तीपान का ध्यान हो आया हा उसने अपना सिर भटककर इस दुःखदायी विचार को अपना मन से निकाल फेंका ।

हुई सी नदी किनार चरागाह की घोर चप दी।

बाबे शाक-सरकारी की क्यारियाँ सूरज की झालों से झालें
मिताता मूरजमुखी के फूलों का पोसा सागर प्रासू क पीधों का पीले
रग की भाइ मारता हरा रग शामिल परिवार की घोरतें—
गुलाबी कमीजें पहने पीठ मुकाये घालुओं को कुदाली से सोदती हुई।
भेलेखोव क बगीचे पर पहुँचकर भक्सीनिया ने पहल चारों घोर मजर
दौड़ाई फिर सरपत का फाटक खोला घोर मूरजमुखी के तनों क हरे पसारे
के बीच से भागे बड़ी।

यहाँ उसने सुनहरा पराग मुँह पर मला घोर स्कट को समेट वही
घरती पर बैठ गई।

उमने घाहट सी तो सन्नाटा सायें-सायें करता मिला। पास ही कहीं
कोई मक्खी भनभनाने लगी। इस प्रकार सगभग घाधा घटे तक वह इसी
तरह दुविधा में बठी रही। मन रह रहकर बहता रहा—पता नहीं
वह भायगा कि नहीं? फिर वह जाने के लिए उठी ही थी घोर उसने
रमान तिर पर बाँधा ही था कि फाटक परमराया।
भक्सीनिया।

इधर से।

तो तुम घा गइ! पत्तियों को छेड़ता प्रिगोरी पास घाया घोर
उसकी बगल म बैठ गया। पूछने लगा 'तुम्हारे गाल पर वह क्या
है?

भक्सीनिया ने सुनहला पराग अपनी घास्तीन म पोंछा। घायद
मूरजमुखी क फूलों का पराग है यह?

हाँ तुम्हारी झाल के नीचे भी है।
उनका झालें मिला घोर प्रिगोरी के मूक प्रदन क उत्तर में वह पूर

पूटकर रो पडी।

'भब नहीं सहा जाता प्रीन्का! मैं तो बहीं की नहीं रही।
क्या करता है वह?

उमने अपने बनावड के बदन भटक सा खोल। कुमारियों क
भाति उमरे हुए घदएान उरोज घोटों के निगान स नील हो रए घ

मैंने सोचा है कि भव हम खत्म ही करें

धकभानिया ने करवट बदली। वाक्य के पूरे होने की प्रतीक्षा में उसकी भगुलियाँ खचल हो उठी और नधुन फूल गए। हर घोर बेचनी से उसका मुँह सूखने लगा। उस लगा कि प्रियारी कहेगा भव हम खत्म ही करें स्वीकृत हो। किन्तु प्रियारी ने अपने सूखे होंठ चाटे और बोला हम खत्म ही करें यह मोहन्बत है न ?

धकभानिया खड़ी हो गई और झूमते हुए मूरजमुखी के फूलों का हटाती फाटक की तरफ बढ़ी।

धकभानिया ! प्रियारी ने भर गने से उम आवाज दी। जवाब में फाटक खरमराया।

१७

राई बटनर खनिहानों में पहुँचा भी नहीं थी कि गहूँ पक गया। उनों और ढाल पर सूखी पत्तियाँ पीली पड़ गई और मुरझाकर गोल हो गई। डटलें भी मुरझा गई।

गाँव का हर धादमी अच्छी फसल की आग मारन लगा। बालें भरपूर थीं। दाने बड़े और भारी थे।

इमोबिना से बातें करने के बाद पन्तेमो ने निश्चय किया कि यदि कौरपूनाव-परिवार तयार हो जाए तो भी गाँधी छ अगस्त से पहले नहा हो सकेगी। जवाब लन के लिए यह धभा तक कौरपूनाव के पास गया नहा था। पहल तो फसल काटने का सवाल सामने आया। फिर किसी छुट्टा के दिन को यान धाडे धाई।

मनखोद-परिवार ने गुरुवार से बटाई गुरु का। पन्तली ने गाँधी ठीक की और नाचे का हिस्सा अनाज की खगाई के लिए कहा। प्यात्र और प्रियारी खेतों पर बटाई करने के लिए चले। प्योत्र घोड़े पर सवार हुआ तो प्रियारी उसकी अगल-बगल पैदल चला। प्रियारी का मन जान किन किन भावनाओं से भर उठा और जवड की हड्डी कोपने लगा। प्योत्र जानता था कि इसने मानी मत है कि प्रियारी कोपित है और सटने को संभार है। किन्तु अपनी गेहूँघा मूछों के अदर-ही अदर

तो हमारा प्यार खत्म ? प्रिगोरी ने पूछा और कोहनी के सहार पेट के बल सेटते हुए फूल की पल्लुड़ी घूम दी। इस समय वह यही पल्लुड़ी घुमा रहा था।

हमारा प्यार खत्म क्या मतलब ? क्या मतलब तुम्हारा ? उसकी आँखों में आँसूँ डालते हुए प्रकसीनिया ने पूछा।

प्रिगोरी ने अपनी आँखें उधर से हटा ली।

पकान से चूर सूखी धरती से गद और घुप की गमक आती रही। हवा हरी पत्तियों के बीच सरसराती रही। एक उड़ते हुए बादल ने क्षणभर को सूरज को ढँक लिया। मदान गाँव और प्रकसीनिया के भाव विमोह चेहर पर झुँसे सी छाया फिर आई।

प्रिगोरी ने आह भरी और पीठ के बल लटक कर गम मिट्टी में अपने कंधे गड़ा लिए।

सुनो प्रकसीनिया ! उसने धीरे धीरे कहना शुरू किया यह सब है बड़ी गन्दगी मैं बराबर सोचता रहा हूँ ।

इसी बीच शान-सरकारी की ब्यारियों की तरफ से एक गाड़ी की सट्टर-पट्टर और एक औरत की आवाज सुनाई पड़ी।

प्रकसीनिया को आवाज बिलकुल पास लगी और वह जमीन पर पट पड़ रही। प्रिगोरी ने फिर उठायी और फुसफुसाते हुए बोला रुमाल सिर पर से उतार लो। यह दूर से झलकना और वे लोग हम देख लेंगे।

उसने रुमान खोल लिया। सूरजमुखी के पीछों के बीच मडराती झुनमती हवा प्रकसीनिया की गदन के सुनहरे रोमों में धड़धड़ा करने लगी। गाड़ी की आवाज धीरे धीरे दूर हो गई।

मैं यह बात बराबर सोचता रहा हूँ प्रिगोरी ने पुन कहना प्रारम्भ किया। फिर स्वर में और शक्ति भरकर बोला 'जो हा गया ना हो गया—उस मिटाया नहीं जा सकता। किसी को दोष क्या दिया जाए ? आखिर किसी-न किसी तरह हम लोगों को जिन्दा ता रहना ही है

इसको सोइती हुई प्रकसीनिया उत्सुकता से सुनती रही। उसने प्रिगोरी की ओर झूँट किया तो उसकी गम्भार और सूखी आँखें चमकती दसीं।

मैंने सोचा है कि अब हम खत्म ही करें
 प्रकृमीनिया ने करवट बदली। वाक्य के पूरे हान की प्रतीक्षा में उसकी
 प्रोगुनिया चंचल हो उठी और नयुन फूल गए। डर और वचनी से उसका
 मुह सूखन लगा। उस लगा कि प्रिगारी कहगा अब हम खत्म हो करें
 स्तोपान को। किन्तु प्रिगारी ने प्रपन सूखे होंठ चाटे और बोला हम
 खत्म ही करें यह मोहबत है न ?
 प्रकृमीनिया खड़ी हो गई और झूमत हुए सूरजमुखी के फूलों को
 हठाती फाटक की तरफ बढ़ी।
 प्रकृमीनिया ! प्रिगारी ने भर गल में उम धावाज दी। जवाब
 में फाटक चरमराया।

१७

राई नटकर खनिहानों में पहुँची भी नहीं थी कि गहू पक गया।
 खता और डाल पर सूखी पत्तियाँ पीला पड़ गई और मुरझाकर गोल
 हो गई। ठटलें भा मुरझा गई।

गांव का हर आदमी अच्छी फसल की डाय मारने लगा। बालें भरपूर
 थीं। दाने बड़े और भारी थे।
 इलोचना में बालें बन के बाद पन्तला ने निश्चय किया कि
 यदि कारगूनाव-परिवार तयार हो जाए तो ना गादी छ भगस्त से पहले
 नहीं हो मनेगी। जवाब लन के लिए वह अभी तक कारगूनाव के पाम
 गया नहीं था। पहने ता फसल काटने का सवाल सामने आया। फिर
 बिनी छुट्टी के दिन की बात आठे आई।

पन्तला-परिवार ने गुरुवार से बटाई शुरू की। पन्तली ने गाड़ी
 टोक की और नीचे का हिस्सा भनाज की लगाई के लिए चला। प्यात्र
 और प्रिगारी खेतों पर बटाई करने के लिए चले। प्योत्र घाटे पर मवार
 हुआ था प्रिगारी उसका भगल-बगल पदल चला। प्रिगारी का मन जान
 किन किन भावनाओं से भर उठा और जबड़े की हड्डी काँपने लगा।
 प्यात्र जानता था कि इसने मानी यह है कि प्रिगारी कौचित है और
 सदन को तयार है। किन्तु अपनी गहूमा मूर्खों के पन्तर ही-पन्तर

मुसकरात हुए उसने उस छेडा ।

मगवान् कसम ! उसने खुद मुझे बात बतलाई । वह बोला ।
माना कि उसने खुद ही तुम्हें बतलाया सब-कुछ तो इससे अन्तर
क्या पडता है ? प्रिगोरी ने अपनी मूर्खी का एक बाल खदाते हुए कहा ।
उसने कहा—मैं साहर स लौट रही थी तो मैंने तुम्हारे गूरजमुखी
के मत म धावाजें सुनी ।

प्योत्र खरम करो बकवास ।

बोली हा धावाज सुनी और फिर मैंने घाट स झानकर देखा
प्रिगोरी की पलकें नापी तुम यह बकवास बन्द कराग कि नहीं ।
तुम भी धखीम हो ! मुझे बात तो पूरी करने दो ।
प्योत्र मैं तुम्हें धागाह कर रहा हूँ देखना नहीं हम दोनों म तिर
फुटौवल न हो जाए । प्रिगोरी न धमकी दी ।
प्योत्र ने अपनी सिर उठाया और प्रिगोरी की ओर देखने क लिए
मुझ ।

वह धागे बोली मैंने बाट से झाँका तो वहाँ दोना प्रमियों को
एक-दूसरे की बाँही म कसा देखा ।
कौन दोनो ? मैंने पूछा तो उसने जबाब दिया और कौन ?

धकसीनिया और तुम्हारा भाई ! मैं कहता हूँ कि
प्रिगोरी ने बटाई की मगोन के पीछे पडा हंगा उठाया और अपने
भाई पर दे मारा । रासों पटक प्योत्र अपनी सीट स कूदा और उदसकर
घाटों के सामने धा खडा हुआ ।
सैतान नहीं का ! वह चित्लाया पागल हो गया है ! जरा
देखो तो इसे !

भेड़िये की भाँति दौत निकान प्रिगोरी न हंगा भाई पर धसाया । प्योत्र
घुटनों के बल झुक गया । हेंगा उनक ऊपर स होता हुआ जर्मोन पर
गिरा तो कोई दो इत तक धँस गया ।
प्योत्र ने घोंके हुए घोटों की मगाम पकडी और गालियाँ देते हुए
बोला धवे मूपर ! तूने तो धाज मुझे मार ही डाला हाता !
हाँ ! चाहिये भी धा कि मैं तुम्हें मार डामता ।

तू गधा है ! तेरा दिमाग खराब हा गया है ! है तू अपने बाप का घेदा असली तुक !

प्रिगोरी ने होंगा जमीन से निनाला और कटाई की मशीन क पीछे पीछे चला । प्योत्र ने इगार से उस अपने पास बुलाया ।

इधर था । ला होंगा मुझे दे !

उसने रासों बाएँ हाथ से साधीं और दाएँ स कटों की तरफ से होंगा पकडा । फिर मूठ प्रिगोरी की पीठ पर जमाई । प्रिगोरी कूदकर अपना हट गया ।

चोट जरा मज में की होती प्रिगोरी पर भासों जमाए ही-जमाए प्योत्र बाला । कुछ क्षण बाद दोनो ने सिगरेटें जलाइ एक दूसरे की तरफ देखा और ठठाकर हस पडे ।

क्रिस्तोनिया की पत्नी गाडी पर सवार दूसरी सडक से घर जा रही थी । उसन प्रिगोरी को होंगा फँकते देख लिया था । वह राई के गटठर पर सावधानी स पर साधकर खडी भी हुई किन्तु यह न देख पाई कि घाडिर हुआ क्या क्योंकि उसन और दानों भाइयों के बीच म भा गई थी मलेखोवों की कटाई मशीन और उनके घोडे । सो गाँव की सडक क पास पहुँचते ही उसने एक पडोसी से चिल्लाकर कहा विलभावना दौकर जाओ और पत्तेली तुक स कह धाधा कि तुम्हारे दोनो सडक सारतार-टील ने पाम आपस म होंगे चला रहे है । पहल प्रिगोरी ने प्योत्र की बगल में कटों स वार निमा और फिर प्योत्र न खुन बह चला मडब हो गया ।

पर इस बीच दोनों भाई कटाई करने लग । प्योत्र धके घोडों पर चिल्लाते-चिल्लाते धक गया और प्रिगोरी घूस से नहाए पाँवों को जमा कर कटाई मशीन साक़ करन लगा । घोडे मसिखियों स परेशान होकर दुम हिलाने और अपने काम में मुन्ती दिखलाने लग । खरागाह भर म कटाई जोरों से होने लगी । मशीनों न ब्लेड खटखटाने लग और खरा गाह में जगह-जगह अनाज क धम्बार लगन लग । हाँकनेवालों की नडल उतारती-सी गिलहरियाँ बूहा पर सीटी बजान लगीं ।

'दो धक्कर और फिर सिगरेट पियेंगे । मशीन की सडसड को

भेदता प्योत्र का स्वर उभरा। प्रिगोरी ने सिर हिलाया। वह अपने मित्रे
हॉठो को खोल नहीं पाया। उसने हग को नोकों के पास से पकड़ रखा
या ताकि भारी बघेजों को काटने म सुविधा हा। वह हाँफने लगा। सीना
पसीने से भोगकर लुजली करने लगा। टोप क नीचे से पसीना चेहर पर
वह धाया और झालों म साबुन की तरह लगने लगा। जरा देर बाद
घोड़ों की रोक उहोने कुछ पिया और धुर्मा उढाया।

भरे ! सड़क पर कोई घोडा दीछाता चला धा रहा है ! प्योत्र ने
हयलियो से अपनी झालों पर साया करते हुए कहा।

प्रिगोरी ने देखा और आश्चय स उसकी मोहें तन गइ।
'लगता है पापा हैं।

'पागल हो ! घोडा कहाँ से मिलेगा उहें ? दोनों घोडे तो हमारे
पास हैं यहाँ।

वही हैं भगवान् जानता है कि पापा ही हैं।

प्रनवारोही पास आता गया और धय वह भली भाँति दिखलाई देने
लगा। हाँ पापा ही हैं। प्योत्र बोला।

'पर पर कुछ हा गया है। इस विचार से दोनों ही परेशान हो
उठे।

पन्तेली ने सी गड का दूरी स ही घोड़ों की राम खीची मैं तुम दोनों
को सोदकर जमीन म गाड दुँगा आइन क बच्चो ! सिर के ऊपर थमडे
का धाबुक नचाते हुए वह धीछा।

क्या आफत आई प्यान के ता हाथ-पैर ही पूस गए। डर के
मार धाया मुँहें उसक मह म चली ग।

मगीन की दूखरी तरफ चलो। हम धाबुक ही-धाबुक पडेंगे और
जब तक घात समम म धाएगी तब तक बदन की क्षास उठ जाएगी।
अपने और पिता क बाय मगीन रख प्रिगोरी न कहा।

टप-टपाटप करता भाग फेंकता घोडा अनाज क अम्बार के पास धा
पहुँचा। पन्तली क पाँव घोड की बगलों स सड रहे थे क्योंकि यह नगी
पीठ पर सवार था। उसन अपना धाबुक सटकारा आतान के बच्चो !
तुमन क्या दूफान मचा रगा है यहाँ !

रख तो रहे हो कटाई कर रहे हैं। चाबुक की धोर देखते हुए हाथ फलाकर प्योत्र बोला।

किसन किमकी हंगा चलाकर मारा? आपस म क्या लड गए तुम लोग?

पिता की तरफ पीठ कर प्रिगोरी कुछ फुसफुसाया।

कसा हंगा? कौन लड रहा था? चापू का ऊपर से नीचे देखते हुए प्योत्र बोला।

'भवे वह मुर्गी की बच्ची दीहती हुई आई मेरे पास— तुम्हारे लडको न एक-दूसरे का हगे से घायल कर लिया है। बोलो क्या जवाब है तुम्हारे पास? पन्तेसी ने उत्तजना से सिर हिलाया। फिर रास छोड घोडे से नीचे कूदते हुए बोला मैंने किसी का घोडा भागा और भागा चला था रहा हूँ क्या कहना है तुम्हें?

'तुमस यह सब कहा किसने?

एक औरत ने!

'पापा झूठ कहा है उसन। उसे गाडी म नीद आ गई हागी और उसने कोई सपना रख लिया होगा।'

'इन औरतों से भगवान ही बचाये। पन्तेसी न अपनी दादी को सीपते हुए भाधी चिल्लाहट और भाधी फुसफुसाहट नी आवाज म कहा "वह किनमोव की रही। हे भगवान् मैं उस चुडैल का कोडे सगाऊंगा। वह गुस्स स नाचने लगा।

प्रिगोरी मन ही-मन हँसत हुए जमीन की धोर ताकता रहा। प्योत्र ने पिता पर स निगाहें नहीं हटाई। पिता पसाने स तर अपना माया टोंकता रहा।

पन्तेसी जी भरकर उधला-बूदा और फिर शान्त हो गया। वह कटाई मशीन पर जा बठा। कुछ देर कटाई की फिर घोडे पर सवार हुआ और गाँव को वापस हो लिया पर अपना चाबुक वहीं भूल गया। प्योत्र न उसे उठा लिया और ईश्वर को धन्यवाद दता हुआ अपने भाई से बाता 'वही मुसीबत टली समझो। यह चाबुक नहीं है। भाई! इसने तो हम बेजान कर दिया हाता। गदन घड़ स भलग हो जाती हमारी।

ततारस्की गाँव में कोरसूनोव परिवार सबसे धनी परिवार माना जाता था। उस परिवार में चौदह जोड़ी बल से और ध घोड़े प्रोवाल्स्क फ़ाम की घोड़ियाँ पन्द्रह गायें न जाने कितने दूसरे जानवर और कई सी भेड़ें। मकान सोदागर मोखोव के मकान की तरह ही धानदार था। मकान में छ बड़े कमरे थे। छन सोहे की थी। बाहर की कोठरियों के ऊपर नय खूबसूरत खप्परो की छानियाँ थी। बगीचा और बरगाहा तीन एकड़ जमीन में समझिए। इसमें पयादा एक भादमी को और चाहिए भी क्या।

इसीलिए शादी की बातचीत के लिए पँतलेसी जब उस परिवार में गया तो बेमन से गया। सकोष मन में धलगत से था।

कोरसूनोव को धपना बटो के लिए प्रिगोरी से नहीं अधिक सम्पन्न घर मिल सकता था। पन्तली यह बात जानता था और उस घर था कि बड़ी इन्वार न हो जाए। वह नहीं चाहता था कि रिस्ते के लिए कोरसूनोव के प्राग भोली फलाए, लेकिन इसीबिना तो उस ऐसे साथे जाती थी जस लाहे को जग साती है। और धाखिरकार औरत न बुढबका मुका ही लिया। और मन-ही-मन यह प्रिगोरी इसीबिना और सारी दुनिया को कोसता हुआ कोरसूनोव के पास गया था। पर धव सवाल सामने था कि जानर उनस जवाब माँगा जाए। बस ता सबको इतवार का इन्तजार रहा।

इसी बीच कोरसूनोव की सोहे की रगो हुई छत के नीचे एक गम्भीर कमह उठ लडो हुई थी। मेनेखोव-परिवार के लोगों के विदा होने के बाद नताल्या न धपनी माँ में कह दिया मुझे प्रिगोरी पसन् है मैं किसी दूसरे से शादी नहीं करूंगी।

‘इस बवदूफ न धपना डूल्हा स्वयं सोज लिया है और खोजा है उस बवदूफ को।’ विता ने जवाब दिया एक ही बात भन्धी है उसमें कि वह जिप्सी की तरह कामा है। मरी रानी बिटिया इससे नहीं भन्धा लडका मैं खोज दूंगा तेरे लिए।

‘पापा मुझे किसी दूसरे से शादी नहीं करनी। लडकी का बेहरा समतमा उठा और वह राने लगी धगर तुम यह नहीं चाहते तो

तुम मुझे किसी मठ में भेज दो ।

उस गलियारा मकान का बहुत गोक है । वह भीरता के पीछे भागता फिरता है और उन भीरतों के पीछे भागता फिरता है जिनके पति काम से परदेन चल जाते हैं । उसने पिता ने आखिरी पासा फेंका ।

कोई बात नहीं ।

अगर तुम्हारे लिए कोई बात नहीं तो हम क्या करना है ठीक है ।

नताल्या सबसे बड़ी लडकी थी और अपने पिता की बड़ी दुलारी थी । पिता ने विवाह के सम्बन्ध में उस पर कभी दबाव नहीं डाला था । उसकी शादी के कितने ही प्रस्ताव आए थे । कुछ लोग तो दूर क गाँवों के धनी सनातन कर्जानों के यहाँ से बात लेकर आये थे । किन्तु नताल्या ने किसी को भी पसन्द नहीं किया था और उनकी सारी मेहनत बेकार चली गई थी ।

मिरोन कर्जानकी छातुरी खेती से प्रेम और कठोर परिश्रम के प्रति लगाव के कारण सिगोरी को मन-ही-मन बहुत पसन्द करता था । उसने गाँव के युवकों में सबसे ज्यादा उस अपनी और तब खीचा था जब युद्धदौड़ में उस प्रथम पुरस्कार मिला था किन्तु किसी शरीर को अपनी बटी देना उस कुछ अपमानजनक लगता था । फिर किसी बदनाम को अपना दामाँ बनाना उस जरा और खसता था ।

लडका महन्ती है और मूरत गबल का भी अच्छा है । पत्नी रात में पति के बाला पर हाथ फेरती हुई बाली और अपनी नताल्या मन से उसका हँस गई है

मिरोन ने अपनी पत्नी के ठठे मुखे हुए सीने को और पीठ कर सी और क्रोध से चीखकर कहा 'चली जाओ यहाँ से—भ्याह दो उस जिस बेवक्रुसे चाहो उससे ! भगवान न तुम्हारी मुट्टि हूर ली है । मूरत शकल का अच्छा है ! उसकी गकन कोई फसल है जिसकी कटाई करोगी तुम !

फसल और कटाई ही तो सब-कुछ नहीं होती दुनिया में !

क्या होगा अच्छी मूरत-शकल से ! कुछ हैसियत भी तो जरूरी है । फिर यह मेरे लिए इज्जत से गिरी हुई बात भी है कि मैं अपनी

घटी तुकी म द दू !

वे सोग येहनती है धर्या खाते पीते हैं । उसका पत्नी न धीरे स कहा और उसका शान्त करने के लिए उसकी पीठ के पास खिसककर उसका हाथ महलाने लगी ।

धरी घुड़ल तू परे हटेगी कि नहीं ! मुझे जगह ता द । और तू मुझे थपथपा क्यों रखा है ? क्या मैं बछड़ घाली गाय हूँ कोई ? और नतात्या क मामले म जो तेरा जो चाहे सो कर मन करे तो उसे सकरी पत्रमिया पहननेयामी निमी सडकी स ब्याह द !

तुम्ह अपनी बन्धी का कुछ तो खयाल होना चाहिए । पत्नी ने उसका बानों म कहा । किन्तु मिरोन दीवार की धोर खिसक गया और खरटि भरने लगा जैसे कि नींद आ गई हो ।

धीरे एम म मेलेगोव-मरिवार के सोग जवाब मगिने धाये तो और घूनोव उत्तमन म पड गया । ये सोग प्रात कालिक प्राथनाओं क बाद धाये । इसीबिना के गाही के पामदान पर पर रखत ही लगा कि बग्घी उमट जाणगा किन्तु पन्तनी सीट स ऐम नीचे डूद धाया जैसे कि कोई जवान मुर्गा हा ।

मिरोन ने खिसकी स भौंका और दुगा स्वर म बाला सो वे सोग धा गए । कौन पैतान भाज इह यही ल धाया ?

'धरे मैं तो अभी अभी बावर्षीलान स निबली हूँ अभी ता मैंने अपनी हकट तब नहीं बदली । पत्नी बोली ।

'कोई बात नहीं । तुम जसा भी हा ठोक हो कोई तुम्ह ब्याहन ता धाया नहीं है । तुम्ह भला पूछगा कौन ! घोड़ी

तुम पैदाइगी गेवार हो ! और अब तो बिलकुल सठिया गए हो !

जवान बल कर धीरेत !

'साऊ कमीड ता पहन सो । तुम्हें नाम नहीं धाना ! पत्नी न पनि को डाँटा । दूसरी धोर महमानों ने घहाता पार किया ।

मरी भिगान करो व साग मुझे इसकमीड म भा पहुपान सोग मैं बोरा धाऊ मू ता भी मुझे क मिरान ही समझेंग ।

भगवान आपका स्वस्थ रख ।' दरवाजे की सीढ़ी पर लडखटाते हुए पन्तेला बोला और तुरन्त ही उस अपनी आवाज की तेजी खली । सो यह मामला बराबर करन क लिए दबमूर्ति न सामन खड हाकर उसने दो बार सीने पर क्रॉस बनाया ।

दाशयदयन^१ । बमन स उसकी ओर दन्ते हुए मिरोन न उत्तर दिया ।

'भगवान की कृपा स मौसम अच्छा है ।'

और उन आश्चर्य कि मौसम अच्छा बराबर चल भी रहा है ।

'सोर्गों का उसस खासा बना हागा ।

हाँ सो ता होगा

अच्छा ता मिरोन प्रिगोरीएविच हम लोग यह जानन आये हैं कि आप सोर्गों ने क्या तय किया यह शादी होगी कि नहीं ?'

कृपया अन्दर आइय बटियतो । मारूया न झुककर और अपने प्लटोंवाम सम्बन्ध क सिरे म जमान माडत हुए उनका स्वागत किया ।

इत्ताचिना बठा ता उसका पापनाम का ड्रेस सरमराया । मिरोन प्रिगोरीएविच ने नय मञ्जपोश पर कुहनियाँ टकी और घुप रहा । मेञ्जपोश के कोनों पर पिछले जार और जाराना क चित्र थे । बीच में भी सफ़ टोप लगाए रोबदार राजकुमारियाँ और जार निकालस द्वितीय ।

मिरोन ने शान्ति भग की ।

हाँ तो हमन अपनी लडकी आपन परिवार म देने का फसला बर लिया है । अगर दहज का सोना पट जाता है तो हमारी आपकी रिश्ते दारी पक्की ।

इम बात पर इत्ताचिना ने अपनी भडकीली जाकिट की पूसा हुई आस्तोन से सफ़द गेहूँ की एक बड़ी शबल राटी निकाली और मेञ्ज पर रख दी । किसी अज्ञात कारण स पन्तनी की इच्छा काम का निगान बनाने की हुई किन्तु उसकी गठीनी पर्जों-जसी अगुलियाँ चिर अम्भस्तहाने पर भी आधी दूर तक उठने के बाद एकाएक दूसर रूप में बदल गई ।

धपने स्वामी की इच्छा क विच्छेद सम्बा जाता भगूठा भनस्मात् ही भगुसियों क बीच जा खिसका और हाथ नील भोवरकाट के खुल हिस्म क धन्तर स साल डाट वाली एक बोलत निकाल साया ।

मिरोन के चित्तोदार मंह की धोर देखकर उत्तजना स पलकें भपकाते हुए, पन्तली बोलत क चौड तस को धपनी चौडी कुर-जसी हपनी स ठोंकने सगा और बोला मित्रो अब हम प्रभु का ध्यान करेग पाड़ी-सी बोदका पीयेग और धपन बपचा और दादी की शशों क बारे म बाने करेग ।

घटे भर म ही दोना एक-दूसरे क इतन समीप हो गए कि पन्तली की दाड़ी के तारकोत-स काले धन्ले कोरगुनोव की दाड़ी के साल बालों में घुल भिस गए । पन्तली विवाह की वालें तय करने सगा तो उत्तने मंह स गिरक के खीरे की महक भान सगी । वन भारी भावाव म बोना 'भरे प्यारे सम्बाधयो ! भर सभस प्यार त्यजना ! उसन बहुत ही तेज भावाव में कहा धापकी मांगें इतना बढी हैं कि मैं उन्हें पूरे नही कर सकता । परा सोचिये ता कि धाप किस तरह सूट रहे हैं मुझ—गटर और गोमोस एक, फर का एक बोट दा, दो ऊजा कुमों, तीन रेसम का एक स्माल धार याना मैं ता भिटकर रह जाऊंगा ।

पन्तली न धपना बाहें इस तरह फताह कि उसकी टयूनिर की सोंबन खुल गई । मिरोन तिर भुकाकर बादका और गिरक क खीरों क पानी स तर मडयोग की तरफ दखने सगा । ऊपर फनों की सजावट के साथ तिस दाम् पदन सगा—रूमों दाही परिवार । नीचे की धोर निगाह गई । पढ़ा—महाराजाधिराज सम्राट निबोलस बाकी दाम्नों के ऊपर धामू का धिनरा पडा हुआ था । वह धिन का एक्टव देखने सगा । सम्राट की दाम्न दिगसाई नहीं द रही थी । ऊपर बोदका की खाली बातम रसा हुई थी । पलक भपकाते हुए मिरोन ने बीमता पागाव की बाट दगनी बाहो बिन्नु वह खारे के धिससने बीजों स डँकी हुई थी । धाम् सड़किया स धिरी महारानी न तिनरों का खोरा टोप सगा रसा था । वह उम धपनी धार दगती सगी । मिरोन को इतना धपमान धनुनब हुआ कि उसकी धालों में धामू धा गए । मन-ही मन

बोसा आपका टाकरी स भक्ति बत्तख की तरह बहुत घमड हो रहा है, पर वह दिन मान दीजिए जब आप अपनी लड़कियों की शादियाँ करेंगी। तब मैं ऐसे धूरू गा और आप फड़फड़ाएँगी।

पन्तेली की आवाज उसके कानों में भीरों की गुजार की भाँति पड़ी। उसने शत्रुपूरित धूमिल नेत्र ऊपर उठाए और उसकी बातें सुनने लगा।

आपकी बेटी के बदल और अब हा हम भी उस अपनी बेटी कह सकते हैं—याना अपनी बेटी के बदल 'गेटर गोलो' फरका कोट बगरह दिन के लिए हम अपनी एक गाय बाजार में ल जाकर बच देनी पड़ेगी।'

और इसमें आपका एतराज है ?' मिरोन ने मेज पर मुट्ठी मारत हुए कहा।

यह बात नहीं कि मुझे इसमें एतराज है
मैं कहला हूँ कि क्या आपकी एतराज है ?'

'जरा सुनिए तो '

मैं कहता हूँ कि अगर आपको एतराज है तो शतान से जाए आपका।

मिरोन ने पसीन से तर अपना हाथ नचाया तो मेज पर रखे गिलास नीचे जा पड़े।

यानी, उसी तरह की एक दूसरी गाय लाने के लिए आपको बेटी का सटना पड़ेगा।

सठे मेरी बेटी लकिन आपको फायदे का नजराना ही देना ही होगा नहीं तो मृत शानी नहीं होगा।

झगन की एक गाय बिक जाएगी।' पन्तेली ने सिर हिमाया।

'नजराना तो होना ही चाहिए। लड़की के पास कपड बक्सा-भर हैं।

नकिन अगर वह आपको पसन्द है तो आपको मेरी इच्छत ही करनी ही होगी। यही हम करवाकों की रीति है। इसी तरह पहले होता था और यही हम करेंगे। हम पुराने विचारों के लोग हैं।

मैं तो अपना और स आपकी इच्छत करूँगा ही।

'तो कीजिए इच्छत !

में कर्मोंगा इच्छत ।

धीर छोटी को मेहनत करने दीजिए । हम लोगों ने अपने को खटाया है धीर हम प्रायः रत्न-सहने में किसी से उन्नीस नहीं हैं । ये छोटे भी ऐसा ही करके लिखाए ।

दोना की दाढ़ियाँ प्रापय में बुन उठी । वे एक-दूसरे को घूमने लगे । पैन्तेली एक सूखा टेढ़ा-मेढ़ा खीरा खाने लगा धीर उसकी घाँसो से घुस दुःख के मिले जुले घाँसू यह खत ।

धीरसे एक-दूसरी से सटी अपनी घावाओं की खीख से एक दूसरे के कान फोड़ रही थीं । इसीचिना का चहरा बेरी के समान लाल हो रहा था । मारिया पास-माई जाड़े की नाशपाती की तरह धोड़का से हरी हो रही थी । बोली

दुनिया में कहीं धीर तुम्हें ऐसी लहकी मिलेगी नहीं । नताल्या अपना फुड समझेगी तुम मानेगी धीर कभी चलकर आपका जयाब नहीं देगी ।

सभी ! अपने बाएँ हाथ पर गास रखते धीर उसकी कोहनी को दाएँ हाथ की हथेली से साधते हुए इसीचिना बीच में ही बोली 'भगवान् ही जानता है कि कितनी बार यह यात मीने उस भूभर के मच्चे पिगोरी ने कही है । पिछले इठवार की घाम को यह बाहर जाने को हुमा तो मैं बोली—'जगनी कही का ! तू उसका पीछा कब छोड़ेगा ? मैं इस बुझाप में कब तक अपना मुँह कासा करवाती रहूँगी ? किसी दिन स्तोपान तुम्हारे इस तमान को ऐसी घाय सगाएगा कि बस !

मोस्ता ने दरवाज की सय से घाँदर भरि धीर नीचे की तरफ नताल्या की दो छोटी बहनें आपस में कानापूसी करने लगीं । नताल्या घाय के कमरे में बंठी ब्लाउज की तग घास्तोनस घाँसू पोंछती रहा । यह अपने नये जीवन के प्रमाथ से भयभीत थी । घागे का सय-मुँघ घन जाना था ।

सामने के कमरे में धोड़का की तीखरी बाणस धरम हो गई । तब यह हुमा कि दुःख धीर दुःखिन्त पहली घगस्त की एक-दूसरे से मिलें ।

१६

कोरधूनोव के यहाँ विवाह की तयारियाँ होने लगीं तो घर सहद की महिलाओं के छल की तरह भावाद् हो गया । दुलहिन के लिए नीचे पहनने के कपड़े जल्दी ही सिला लिए गए । नताल्या रोब नाम की बेंकली और अपने भावी पति के लिए परम्परा के अनुसार भेड़ की ऊन के दस्ताने और स्काफ बुनती । उसकी माँ मिलाई की मशीन पर भुकी घघेरा होने तक रस्मिन की मदद करती रहती । मोत्का अपने पिता और नोकरों के साथ-सर्तों से लौटने के बाद न ता हाथ-मुँह धोता और न भारी जूत ही उतारता । वह सीधे नताल्या के पास चला जाता । अपनी महन का देखने में उसे बहुत सुख मिलता ।

‘बुनाई बन रही है ।’ वह स्काफ की ओर देखकर सिर हिलाता ।
‘ता क्या हुआ ?’

‘बुने जाओ बकूफ, बुन जाओ तुम्हारा एहसान मानने के बजाय वह तुम्हारे जबड़े छोड़कर रख देगा !’

‘भाखिर क्यों ?’

‘मैं शिगा को जानती हूँ वह मेरा दोस्त है । वह ऐसा है कि नाट साए और यह भी न बतलाय कि नाटा भाखिर क्या ।’

‘मूठ मत बान । तुम माचते हो कि मैं उस नहीं जानती ।’

‘लकिन मैं तुमसे अधिक जानती हूँ । हम एक साथ स्कूल में पढ़े हैं । मोत्का एक सम्बी ग्राह भरता अपने बट-फटे हाथों को देखता और सिर झुका लेता ।’

नताल्या शोधित हो उठता उमक गल में धाँसू फँसने लगत और वह दुखी होकर गदन नीची कर लेती ।

लेकिन सबसे बुरी बात तो यह है कि उसे किसी से प्यार है । नताल्या ! तुम बूढ़ा हा ! छोड़ दो उस । मैं घोडा कसकर खला जाऊँगा और डन्कार कर भाऊँगा ।

ऐम में औरना ही मोत्का से उसकी जान छुशाता । वह छड़ी से जमीन टोंकता अपनी पीली दाँगी के बासों पर हाथ फेरता बमर में जाता और मोत्का को बगल में घड़ी काचते हुए कहता

तू क्या कर रहा है यहाँ ? ऐं !

बाबा मैं नतास्या से मिलने चला आया था । भीत्वा शमा-याचना क स्वर में कहता ।

मिलने ? मैं कहता हूँ कि निकल यहाँ से ! दया हो ! बाबा अपनी छड़ी उठाता घोर कांपते हुए मुझे परों के सहार मीत्वा भी घोर बढ़ता ।

बाबा श्रीराम न उद्वेग वसन्त दम थे । उसने १८७७ की तुर्की सवाई में भाग लिया था । वह जनरल गुरबो की सेवा में रहा था किन्तु जनरल ने किसी बात पर नाराज होकर उस वापस रजिमेंट में भ्रम किया था । उसे प्लवना तथा रोमिटा के अग्निबाह के उपलक्ष्य में दो शॉस तथा सप्त पात्र पदक' मिला था । पर अब तो यह घपन जीवन के शेष वर्षों को अतीत की स्मृतियों में घपने लड़ने व साथ रहकर व्यतीत कर रहा था । दिमाग उसका बड़ा साफ था । आदमी ऐसा ईमानदार था कि राजन की कोठरी में खसा जाए और एक भीक न लगे । दरवाजे पर कोई धा लड़ा हो ता आवभगत का अन्त नहीं । इन्हीं सब कारणों से गाँव के सभी भोग उसका हृदय में आदर करते थे ।

गर्मियों में वह घर के सामने की मिट्टी की मुँडेर पर सुबह से लेकर साँझ तक निर मुखाए बैठा रहता और अपनी छड़ी का जमीन पर टके रहता । ऐस में धँपली आकृतियाँ और अंधूरे विचार उसके दिमाग में घाने रहते । विस्मृति की परछाइयों के बीच भी गुजर हुए जमान की बातें याद आती रहता । उसकी टोपी का तिरा टूटा रहता जिसके कारण उसकी श्रद्धेयों पर गहरी छाया पड़ी रहती । छड़ी पर मुड़ी अंगुलियों में बासा लन धीमे धीमे बहता रहता । हाथ की नसें सूजी रहती । हर गाम उसका गून ठहा पड़ता जाता । इसका निरायत वह अपनी अहंकारी पीली मताया से करता ।

'मौज ज़ी है पर गरम नहीं है । एक जोड़ा नया घना द बटी !

केबिन आकबल तो तरमी के दिन हैं बाबा ! नतास्या हस्तनी और बाबा की बगम में बैठकर उनके पान कानों का गौर से देखती ।

इससे क्या हुआ बटी ! गरमी के दिन हैं पर मेरा गून तो घरनी

का गहरी परतों की तरह ठंडा है।'

नताल्या बाबा क हाथ की नसों को ध्यान से देखती कि उस अपन बचपन की एक घटना याद हो आती। उन दिनों उनका अष्टातम एक कुर्सी खोला जा रहा था। वह अभी बहुत छोटी थी और बाल्टा भर भरकर मिट्टी ल जाकर उसमें बड़ी-बड़ी गुठियाँ और नुकीली सागोंवाली गाँवें बनाती थी।

पर आज उसी मिट्टी के रंग की मुरियाँ बाबा क चेहर पर देखकर वह डर उठती थी। उसे लगता जस चमकदार साल खून क बजाय बाबा की नसों में गीली मिट्टी बह रही है।

बाबा ! तुम्हें मरने से डर लगता है ? नताल्या पूछती।

बूढ़ा अपनी गदन मोड़ता मानो अपनी बर्दी क कोट क लग कालर को ढोता कर रहा हो। फिर भूरी गलमुखें हिलाता।

मैं मोत का इन्तजार कर रहा हूँ। मोत मेरे लिए बहुत बड़ा मेहमान है। अब मेरा समय आ गया है—अपना जमाना दक्ष चुका, अपन जारों की भरसक सवा कर चुका और बोल्का का नदियाँ ढाल चुका है। यह भुमकराकर उत्तर देता तो सफ़ेद दाँत चमकन लगत और मूखी पलकें परपराने लगतीं।

नताल्या अपने बाबा का हाथ धपपपाती और छोटी से भूमि का गरीबती मुकी कमरवाल बाबा को छोड़कर चल दती। बाबा क फौजा बाट क कॉलर की दानों और की साल पट्टियाँ उसी तरह ली देती रहतीं।

बाबा न जब नताल्या के विवाह का बात सुनी तो वह ऊपर से तो प्रसन्न हुआ किन्तु मन-ही मन अजन्तुष्ट और कोपित हो गया। राज भोजन के समय नताल्या उसे अचड़ी-अचछठी चीजें दती उसका कपड़े धाती, उसका मोठे बुनती और पाजामों और कमीजों की मरम्मत कर देती। इसीलिए उसकी शादा की छबर सुनने क बाद कुछ दिनों तक बाबा उसकी और कठोर दृष्टि से देखता रहा।

मनेस्रोव-परिवार का कज्जाकों में बहुत सम्मान है। प्रोजेक्ती भर गया लेकिन जब तक जिया कज्जाकों की धान निभाता रहा। किन्तु

११० धीरे धीरे होने दे

तू क्या कर रहा है यहाँ ? ऐं !

बाबा मैं नतात्या स मिलने बसा भ्राया था । मीस्वा क्षमा-याचना के स्वर म बहता ।

मिलने ? मैं बहता हूँ बि निकल यहाँ स । दफा हो । बाबा अपनी छठी उठाता और बापते हुए सूसे परो के सहार मीस्वा भी घोर बबुता ।

बाबा घोषका न उग्रहृत्तर वसन्त देखे थे । उसने १८७७ की तुर्की लड़ाई म भाग लिया था । वह जनरल गुरबी की सेवा म रहा था किन्तु जनरल ने किसी बात पर नाराज होकर उसे बापस राजमट म भेज दिया था । उसे प्लवना तथा रोसिट्ट के घमिक्वांड के उपलक्ष्य म दो घोंत तथा सत जाज पदक मिला था । पर घम तो यह घपन जीवन क शेष वर्षों को प्रतीत की स्मृतियों म अपने सटवे क साथ रहकर व्यतीत कर रहा था । दिमाग उसका बड़ा साफ था । धादमी ऐसा ईमानदार था कि बाजल की कोठरी में थला जाए और एक लीक न सगे । दरवाज पर कोई धा सडा हो तो धावभगत का घन्त नहीं । इन्ही सब कारणों से गाँव के सभी लोग उसका हृदय स धादर करते थे ।

गमियों में वह पर के सामने की मिट्टी की मुँडेर पर सुबह से तेवर सौम्य के भुटपुटे तक मिर मुकाए बैठा रहता और अपनी छठी को जमीन पर टेके रहता । ऐसे में घंघली घाकृतियाँ और प्रपूर विचार उसने दिमाग म घाते रहते । विस्मृति की परघाइयो के बीच भी गुजर हुए जमाने की बातें याद आती रहती । उसकी टोपी का सिरा टूटा रहता जिसक कारण उसकी बन्द घाँसा पर गहरी छाया पडी रहती । छड़ी पर मुठी भगुनियों म बाला खून धीमे धीमे बहता रहता । हाथ की नसें सूजी रहती । हर साम उसका सून ठंडा पडता जाता । इसकी शिजायत वह अपनी मुँहबोली पोती नतात्या से करता ।

‘मौज उनी हैं पर गरम नहीं हैं । एक जोडा नया बना द, बेटी । लेकिन आजकल तो गरमी क दिन हैं बाबा । नतात्या हसती और बाबा की बगल में बठकर उसके पाले बानों की गौर से देखती । इसक क्या हुमा बेटी । गरमी के दिन हैं पर मेरा सून तो घरती

की गहरी परतों की तरह ठंडा है।

नताल्या बाबा के हाथ की नसों को ध्यान से देखती कि उसे अपने बचपन की एक घटना याद हो आती। उन दिनों उनका अहात में एक कुर्मा खोला जा रहा था। वह अपनी बहुत छाटी थी और बाल्टा भर भरकर मिट्टी ले जाकर उससे बड़ी-बड़ी गुड़ियाँ और नुकीली सींगवाली गायें बनाती थी।

पर आज उसा मिट्टी का रंग की भूरियाँ बाबा के चेहर पर देखकर वह डर उठती थी। उसे लगता जस घमकदार लाल खून के बजाय बाबा की नसों में गीली मिट्टी बह रही है।

बाबा ! तुम्हें मरने में डर लगता है ? नताल्या पूछती।

बूढ़ा अपनी गदन मोड़ता माना अपनी बर्दी का कोट का तग बालर को ढीला कर रहा हो। फिर भूरी गलमूँछें हिलाता।

' मैं मौत का इन्तजार कर रहा हूँ। मौत मेरे लिए बहुत बड़ा मेहमान है। अब मेरा समय आ गया है—अपना जमाना देख चुका अपने जारों की भरसक सवा कर चुका और बोदका की भदियाँ ढाल चुका हूँ। वह मुमकराकर उत्तर देता तो सफ़ेद दाँत चमकने लगते और सूखी पलकें धरधराने लगती।

नताल्या अपने बाबा का हाथ धपधपाती और छोटी से भूमि की खरोंबती भुकी कमरवाले बाबा को छोड़कर चल गती। बाबा का फौजी काट का कॉनर की दानों घोर की साल पट्टियाँ उसी तरह लो देती रहती।

बाबा ने जब नताल्या के विवाह का बात सुनी था वह ऊपर से तो प्रसन्न हुआ किन्तु मन-ही मन असन्तुष्ट और क्रोधित हो गया। रोड भोजन के समय नताल्या उसे अच्युती से अच्युती चौख दनी उसका नपड़े घोती उसका मोड़ बुनती और पाजामो और कमीजों की मरम्मत कर देती। इसीलिए उसकी गादी की छवर सुनने के बाद कुछ दिना तक बाबा उसकी घोर कठोर दृष्टि से देखता रहा।

मनशाब-परिवार का कज्जाकों में बहुत सम्मान है। प्रोकोकी मर गया लेकिन अब तक जिया कज्जाकों की ध्यान निभाता रहा। किन्तु

उसके डोते डस हैं डता नही ? उसने डिरोन स डूछा ।

‘कोई खास डुर नही । डिरोन ने ड्यग्य से कहा ।

वह सडका ड्रिगोरी कुरसा की इडडत नही डरता । उसी डिन डै डिरडे स लौट रहा डा तो वह डुडे डिसा सेडिन न दुडुा न सलाम ! इन ड्रिना डडे-डूडों का कौन डूछता है

सडका डण्डा है ।” नताल्या की डौ ने कहा ।

डण्डा है डिर डब नताल्या उसे डसन्द करती है तो

शादी की डातडीत ड उसने सगडग कोई डवि नही सी डावडीखाने स डाहर नडकला डडड ड पास दो एक ढाणु डडा एक डिनास डोडका डी डीर नशा डडन सगा तो वहाँ स डडठकर डिर डाहर डला गया । दो डिन तक वह डुडडडड ड्रसन्न-डन नताल्या की देखता रहा । इसके डाद वह डी डाहर से डुलाडड डडा ।

‘नताल्या ! उसने उस डुकारा ‘डेरा नन्ही डोती तो तू डडूत सुण है है न ?

डाडा ! डुडे सुन नही डता । नताल्या ने उत्तर डिया ।

डण्डा डण्डा ! डीणु तरा डल्याण डने ! डगवान तुडे

डिर उसने नताल्या डा डडडका डड डुडे डितने डिन डीना है ! तू डेरी डौन तक डक नही सकती थी ? तेरे डिना डेरा डीना डडिन हो डाएगा ।

डौस्का उनकी डातें सुन रहा डा । डोला डावा डडडी तो तुड सी डड तक ड्रिडोड । तो डया नताल्या सब तक डकी रहेगी ? तुड डी डडीड हो ।

डूडा क्रोड ड सलस हा गया । उसन डौवों के सलड-सलड डरती डर डडी डी डटकी ।

नडकल यहाँ स ! डै डण्डा है नडकल यहाँ स ! कुतिया का डण्डा तुडड डडारा डातें सुनन की कुरसन कहा डा ?

डौस्का हसत हुए डडडते ड डग डलता । डूडा डौस्का डडूत डेर तक उसे कौसता हडुड डैडा रहता । उसके डुटने डडूत डेर तक डडडते रहते ।

नताल्या की दोनों डुडी डडूनें उरडुडता स शादी का इन्तडार

करतीं। इनम मरिगाका बारह बरस की थी ता प्रिया भाठ बरस की।

कोरमूनोष के काम पर काम करनेवाले मजदूर भी बड़ा खुशिया मनाते। वे सोचते कि मानिक के माल पर कई दिनों तक मौजू उठायेंगे।

इनम एक उरुइती सारस का तरह सम्का था। उतका नाम हेत थावा था। नाम खरा बाहर का-सा लगता था। वह छ महीने में एक बार पीने का जशन मनाता था। तनहवाह ता फुक ही डासता था, यही तक कि धपन कपड-लत भी बचकर पी डासता था। सो इधर उसका मन एक जमान स उमग रहा था। पर उमने धपने पाने का यह कायकम नताल्या ५। गादी तक टाल रखा था।

दूसरा दुबला-पतला कुजडाक मिथी था। वह कोरमूनोष-परिवार में हाल ही न धाया था। एक घग्निबाद में थोपट होकर बचारा मजदूरी करन पर मजदूर हो गया था और हत-बावड की सगत म उसे पीने का बसका सग गया था। वह घोडों का बड़ा प्रेमी था। जब वह ठाले होठा तो रोन रोवे धपना तिकोना बेहरा धासुमों स सर कर लेता और मिरोन को सताता मासिक बने विदा हो ता गाडी मुक्त हाकिन दीबिमपा। फिर दखना घोडों की बाल ! मैं प्राग क बाध स हाकर न जाऊंगा बेटो को गाडी और उसका एक बान भी न जलन पाएगा। एक जमाने में तो मरे धपने घाड थे

गादी सेंट पक् के सगत दिन होनी थी। जब तीन हफ्ते रह गए तो एक दिन प्रिगोरी धपनी भावी पत्नी से मिलने गया। यह बठकखान की गाल मेज क पास नताल्या कः सहेनिमो के साथ बठा मूरजमुखी के बीज छोसता रहा और फिर सोनन क लिए उठ रहा हुआ। नताल्या पहुँचाने आई। घोडा मई काठी स मस रोड प सडा था। यहाँ पहुँचने पर नताल्या न धपने सीने क पास धिपाया एक छोटा सा बडन निराना और मात्र स माल हाग हुए, प्यार स उसकी धार देखते हुए उस प्रिगोरी क हाथों म धमा दिया। इस पर उसका भावी पति जा मुपकरामा तो उसके भेठिये जस दाँतों की सपुदी स सडकी

१ शहर से पहले क पालासु दिन। इस काल में ममही इतवार को साकर हर दिन उपनाम करती हैं।

साज्जुब म पढ गई । वह बोना यह क्या है ?

आपको मालूम हा जाएगा मैंने आपके लिए सम्बन्ध की थली पर बदाई की है ।

प्रिगोरी खचल हो उठा । उसन उस अपनी और खीषा और उस घूमना चाहा किन्तु नताल्या न उसके वक्ष पर हाथ रखकर बलपूर्वक उसे हटा दिया स्वयं पीछे की ओर तन गई और भयभीत दृष्टि में घर की लिफ्टनी की ओर देखने लगी ।

घर क लोग देख लेंगे ।

देखन दो ।

मुझे शम लगती है ।

पहले पहल एसा ही होता है । प्रिगोरी ने कहा । प्रिगोरी घोड़े पर सवार होने को हुआ । नताल्या लगाम धामे रही । स्पोरिया बदलते हुए प्रिगोरी ने रक्षा पर पर रखा और बाठी पर धाराम से बठकर घोडा हाते म लाया । सडकी ने फाटक खोला और उसे निहारती रही । वह बाठी पर बायीं ओर की कालमीक-डग स झुका और धायुक नचाता उड़ चला ।

ग्यारह दिन और हैं । नताल्या ने मन-ही मन सोचा सम्बन्धी साँस ली और मुसकरा दी ।

२

गेहूँ के पीछे धरती फोडकर ऊपर आते हैं और बढ़ते हैं । कुछ हफ्तों में ही इतने घने हो जाते हैं कि उनक बीच कौधा उड़ता है तो नजर नहीं आता । पीछे धरती स रस ग्रहण करत रहते हैं कि बालें उग आती हैं । फिर फूल आते ह और बालें मुनहरी घूल से नहा उठती ह । किसान अपने खेतों मे आता है और फल दखकर खुशी मे फूला नहीं समाता । पर फिर छुट्टा जानवर खेतों म आते ह और लहलहाते गेहूँ को रोंकर चने जाते ह । जहाँ-तहाँ अनाज का दम निकस जाता है । किसान कटुता स भर उठता है और निराग हो जाता है ।

यही अवस्था अरसीनिया की थी । उसकी भावनाओं म मुनहर फस

घ्राए हो प कि प्रिगारी ने कच्चो खाल क अपने भारा जूतों से उन्हें रौंद दिया था। प्रिगारी ने उसकी भावनाओं को कलकित कर दिया था उन्हें जलाकर राख कर दिया था और सब कुछ अन्तिम सौम लेकर रह गया था।

मेलसोव परिवार क सूरजमुखी की बयारी स अकसीनिया लोटी तो उसकी आत्मा फाम के उस अहाते की तरह खाली और वोरान हो उठी जिसम अड अखाड और जगली घास उग आती है। वह रास्ते भर रुमाल बढाती रही और आसू उसक गले म आ-आकर अटकन लगे। घर में धुमते ही वह जमीन पर गिर पडी। उसका कलजा दुःख स फटने लगा और उसक दिमाग म मूनेपन का आंधियाँ सर्राटे भरन लगी। किन्तु यह हालत बराबर रही नहीं। मन का भेदनेवाला आक्रोश उतार पर आया और पककर अन्ततम म सो गया।

जानवरों द्वारा रोग हुआ गहूँ फिर उठकर खड़ा हो जाता है घोस और सूरज की किरणों के महार दब हुए डठल फिर सिर उठाते हैं। पहा तो व भारी बोझ स दबे आत्मी की तरह सगत हैं परन्तु फिर गदनें सानकर सीधे हाने हैं। एक बार फिर दिन हो उठना है। हवा नो सहरे आ आकर गस मिलने सगती हैं।

अकसीनिया ने रात को अपने पति को मोह स दुलराया तो उसे सहसा ही प्रिगारी का ध्यान हो आया और उसके अन्तर के गहरे प्यार म नफरत घुल उठी। औरत ने मन-ही-मन नये अषमान की याजना बनाई और नय सिर स लज्जा दोन क मनसूब बांधे। उसने प्रिगारी को नहाल्या से—उस मुखी नहाल्या से—छीनने का निश्चय किया जो न प्रेम का आनन्द जानती थी न दुःख स परिचित थी। वह रात भर अघरे म पलकें कपकाता अपनी योजना पर विचार करती रही। उसकी दायाँ आँसू पर स्तीषान का खूबमूरत चेहरा सधा रहा। अकसीनिया नेटी हुई बराबर सोचती रही किन्तु निश्चय यह बवस एक ही बात का दृढता स कर सकी— मैं प्रिगारी को हरेक स छीन लूगी मैं उसे प्यार म भर दूंगी वह पहने जस मरा अपना था आगे भी देगा अपना हीगा। पर अन्ततम म कहीं कोई टीस उठी और यों बनी रही जस कि गहद की मकली

साज्जुब म पढ गई । यह बोला यह क्या है ?

आपको भासूम हा जाएगा मैंने आपके लिए तम्बाबू की धसी पर बढाई की है ।

त्रिगोरी खचल हो उठा । उसन उसे अपनी ओर खीचा और उस घूमना चाहा किन्तु नताल्या न उसके बल पर हाथ रक्षकर बलपूर्वक उसे हटा दिया स्वयं पीछे की ओर तन गई और मयनीत दृष्टि स घर की खिडकी की ओर देखने लगी ।

घर के लोग देख लेंगे ।

देखने दो ।

मुझे घाम लगती है ।

पहले-पहल एसा ही होता है । त्रिगोरी ने कहा । त्रिगोरी थोड़े पर सवार होने को हुआ । नताल्या सगाम घाम रही । त्योरिया बदसते हुए त्रिगोरी ने रकाब पर पर रखा और बाठी पर भाराम स बैठकर थोडा हाते म लाया । सडकी ने फाटक खोला और उसे निहारती रही । यह बाठी पर बायी ओर की कालमीक ढग स भुका और चाबुक नघाता उठ बला ।

ग्यारह दिन और है । नताल्या ने मन-ही-मन सोचा लम्बी सौस ती और मुसकरा दी ।

२०

गेहूं के पीये धरती फोडकर ऊपर आते हैं और बढ़ते हैं । कुछ हपनों में ही इतने घने हो जाते हैं कि उनक बीच कौया उडता है तो नजर नहीं आता । पीये धरती स रस ग्रहण करत रहते हैं कि बालें जग आती हैं । फिर फूल आते ह और बालें सुनहरी धूल स नहा उठती हैं । किसान अपने खेतों म आता है और फसल देखकर खुशी स फूला नही समाता । पर फिर छुट्टा जानवर खेतों म आत ह और लहलहात गेहूं को रौंदकर चले जाते ह । जहाँ-तहाँ अनाज का दम निकल आता है । किसान कटुता स भर उठता है और निरास हो जाता है ।

यही अवस्था अकसीनिया की थी । उसकी भावनाओं में सुनहर फूल

थाए ही घ कि प्रियारा ने दन्वो खाम व अपन भाप जूतों से उन्हें रौंद दिया था। प्रियारी ने उनकी भावनाओं को बलवित कर दिया था उन्हें जमाकर राख कर दिया था और सब कुछ प्रन्तिम सीस लेकर रह गया था।

मेवखोव-परिवार व मूरजमुषी का बयारी स प्रकसीनिया लोटी ता उसकी घात्मा फाम के उस घहात की तरह खाली और वीराम ही उठा जिसम माह मखाड और जगली घास चग भाती है। वह रास्ते भर कुमाल चवाती रही और धीमू उनक गले म धा-धाकर घटकन लगे। पर में धुमते ही वह जमीन पर गिर पडी। उसका बलजा दु ख व फटन लगा और उनक दिमाग में सूनेपन की प्रापिया सरटि भरन लगी। विन्तु यह हालत बराबर रही नहीं। मन की भेगनवाला प्राक्रोग उतार पर धाया और यककर अन्ततम में मो गया।

जानवरों द्वारा रोग हुआ गहू फिर उठकर खड़ा हो जाता है श्लेस और मूज की किरणों के महार दब हुए डठन फिर सिर उठाते हैं। पहन तो व भारी धोऊ सु दब आदमी की तरह लगते हैं परन्तु फिर मदन तानकर सीधे हाने है। एक बार फिर दिन ही उठता है। हवा की सहूरें धा धाकर गस मिभने लगती है।

मनसानिया ने रात को अपने पति को माह स दुनराया वा उस सहसा ही दिगारा का ध्यान हो धाया और उसके घन्तर व गहर प्यार में नफरत पुम उठी। धोरत ने मन-ही-मन नय प्रपमान की याजना बनाए और मय सिर स लज्जा डान व मनसूब बाये। उसने प्रियारी का नठान्या से—उस सुखी नसात्या से—छीनने का निश्चय किया जा न प्रेम का धानन्ध जानती थी न दु ख स परिचित थी। वह रात भर घंघेर में पण्डे फफानी घपनी माजना पर विषार करती रही। नन्की गयी बाढ़ पर स्तोषान का मूबमूरन बेहरा सपा रहा। घनसीनिया उगे हुए बाबा कोवती रही विन्तु निश्चय यह सबस एक ही वान का हन्ता मुका मक— यै दिगारा की हरेक स छीन लूगी मैं उस प्यार सना हूँ दह लो अस मरा अपना या प्रागे नी मग अपना हागा। ७ ७७७७ में कहीं कोई टीस उठी और यी बनी रही अन्त जि हूँ क ७७७७

काटक बना रहता है ।

श्वि म झकसीनिया अपनी गृहस्त्री की उलझनों में फँसी रहती और उसे और बातों का खयाल ही न था पाता । कभी-कभी प्रिगोरी से उनका सामना होता । उसे देखते ही वह पीली पड़ जाती पर अपने बदन को साधे गव से भागे बढ़ती सारी दम छोड़कर उसकी बाली वीरान घाँसों में घाँसों टालती और जस कि उस चुनौती सी देता । परन्तु उसका शरीर प्रिगोरी के लिए कितना कल्पता यह केवल वही समझती ।

हर मुलाकात के बाद प्रिगोरी की प्यास उसके लिए बढ़ती जाती । वह झकारण ही क्षोभित हो उठता और दून्या तथा अपनी माँ पर गुस्सा उतारता । अपनी बटार उठा पीछे के घहाते में चला जाता और वहाँ जमीन में गड़ी मोटी मोटी टहनियों पर तब तक बार-बार वार करता रहता जब तक कि पमीने से नहा न उठता । इस पर पँतेलो बचना शुरू करता

गतान का बच्चा ! इतनी टहनियाँ काटकर फेंक दी कि दो बाड़े बन जाएँ लकड़ी काटने का ऐसा ही शौक है तो जंगल में चले जाओ हकी धेठा फीबी भर्ती में जाओगे न तब सक्की काटने का मौका मिलेगा मुझे सारी मस्ती दीली पड़ जाएगी !

२१

दो-दो घोड़ों की चार गाड़ियाँ यानी चार जोड़ियाँ वधू की विदा के लिए सजाई गई और वे घाकर मेनेखोव के घहाते में सड़ी हुई ता उरसव समारोहों के बपटो में सजे गाँव के सोगाँन उँहे घेर लिया । प्योत्र के ठाठ सदस निराले थे । उसने काला फ्रॉक-काट तथा नीली धारियों की पतलून पहन रखी थी । उसको बायी भुजा पर दो सफ़द कमाल बंध हुए थे और उसकी गेहुँघा मूँछों के नीचे होंठों पर हमेशा की-सी मुसकान खिल रही थी ।

प्रिगोरी शर्माओ मत ! उसने अपने भाई से कहा जबान मुर्गे की तरह झकड़कर बलो 'मूँह बनाये न रहो !

पतनी सरपत की तरह पतनी-दुबली लकड़दार दारया ने रसभरी

के रंग का लोको स्फट पहन रखा था। उसने पेंसिल से काली की गई अपनी नीहें सिनाही और प्योत्र की काहना मारी।

पापा से कहां चलन का वक्त हा गया। व लाग हमार इन्जार म होंगे।

सब लोग अपनी अपनी जगह बठ जाओ।' पिता न फुसफुस करने के बाद प्योत्र ने कहा 'भेरी गाढी म बठगा दुल्हा और काई अन्य पांच लोग। लोग मूक-कूदकर गाडिया म जा बठे। विअय-गब स लाल इत्तीचिना न फाटर खोला। चारों गाडियाँ एक-दूसरा क पीछ सडक पर घाट।

प्यात्र प्रिगारा का बगल में बठा। उनका सामन बठी दारया ने बसन्तर रुमाल हिलाया। एक गाना छिडा तो घुरियों और बमों की भावाज उमम बाघा डालने लगी। कज्जाक-टापियों की लाल पट्टियों ने नीली-काली पागाकों और फॉक-वाटों ने बाँहों म बघे सफ़द रुमाला न औरतों न रंग दिरगे इद्रमनुपी रुमालों न और उनका पीछ उठते घूत्र के रेशमी बादलों ने हर गाढी क चारों भार क वातावरण में रंग घाल दिया।

प्रिगारी न दूसरे बचेरे भाई अपनीकीई न दुल्हे की जोड़ी लीकी। घोड़ों की दुमों पर मुका हुमा वह ऐसा लगता कि भद गिरा तब गिरा। उसने जातों म कम पसान स तर घाटों को तेजी से दौड़ाया और साटी बजाई। उसका चाबुक चला सटान सटान

सफ़ावट मूँछों वाल बाज जब अपनीकीई न प्रिगारी की घोर दस्तनर भाँस मारी जनाने बेहरे स मुसकरान की काशिंग का सीटी बजाई और चाबुक सटकारा।

हाँकी उरा। प्यात्र चीखा।

प्रिगारी का मामा ईन्त्या भाजोगीन दूसरी जोनी का प्रिगोरी की जोड़ी स घागे निकालने की चेष्टा करत हुए घिस्लामा निकलन दा घाग। प्रिगारी न अपने मामा की पीठ-पाछ बठी हुई दून्या को दस्तते ही समझ कि वह मूगी स खिली हुई है।

नहीं तुम न बाना।

उछनकर सडे हात और कणभेदा सीट बजात हुए अपनीकीई

विल्लाया । उसने घोटों पर क्रोध न धाबुन चलाया । ती घोट धीर तेज हू गय ।

'तुम गिर पडोग । धारया ने अपनी बांहो स उसके पेटेट जूती बाल पैरों को कसरत पकडा । बढो । उनकी बगल म मामा ईल्या विल्लाया । क्रिन्तु उसकी धावाज बगिण्या क पहियो की चरद-मरर म सा गई ।

स्त्री-गुरुया स स्रवाक्षस भरी बाकी दा जाडियाँ भगल-भगल मे चली । घोटों की पीठो पर साल नीली धीर गुलानी मूलें पडी हुई थी । उनकी भयालों धीर माये क बासा म रिवन धीर कागज क पून बघे हुए थे । ऊँची-नीची सडक पर जोडियाँ दौड रही थी घोटों के मह स साबुन के-स भाग निरत रहे थ धीर उनकी गीली पीठो पर पंदने नाच रहे थे धीर हवा म झूम रहे थे ।

धारशूनोव के फाटक पर बारात देखन क लिए बच्चों की भीड जमा थी । उहोंने सडक पर धूस उड़ती देखी तो शोरगुल करत धहात में धा जमे ।

बारात धा रही है ! यह देखो धा गई बारात । उहोंने हेत बाबा की धर लिया । हेत-बाबा धमी धमी धाया धा । विल्लाया—

तुम लोगों ने यहाँ यह भीड क्या लगा रमी है ? भाग जाओ यहाँ स ! शोरगुल स धासमान सिर पर उठा लिया है तुम सबन ! मुझे खुद अपनी धावाज समझ म नहीं धाती । बच्चे हेत बाबा का मजाक उड़ते उसके धास-धास उछलत कूदत रहे । हेत-बाबा ने अपना सिर इस तरह झुका लिया जैसे किसी गहरे कुएँ म निगाह दौडा रहा हा । फिर उसन नपरत स बच्चों की धीर देखते हुए अपनी घड-सी तौंद खुजनानी शुरू कर दी ।

सडकडाती हुई जोडियाँ फाटक पर धा पहुँची । प्योत्र धिगोरी की साथ स सीडियों पर चडा । धूमरे पीछे हो लिए ।

धरसाती धीर बाबर्चीखाने के बीच का दरवाजा कसरत धन्द कर दिया गया धा । प्योत्र ने सडकटाया ।

प्रभु यीगु हम पर दया करो भगवन् ! उसने गाते हुए कहा ।
ऐसा ही हो ! धार के दूसरी धार स धावाज धाई ।

प्योत्र ने तीन बार अपने गल दोहराम धीरे तीन ही बार द्वार खट खटाया । हर बार उस एक ही जवाब मिला ।

क्या हम लोग धन्दर भा सकत हैं ? उसन पुन पूछा ।

शोक स 'भापका स्वागत है !'

द्वार खुल गया । माँ-बाप की धार स नताल्या का घममाता ने प्योत्र का बड़ हो मधुर ढंग स अभिवादन किया । रस्पबेरी का पतिशो-के उसके होठों पर मुस्कान दोड़ गई । दूल्हे ने साथी यह लीजिये । यह है हमारा शुभ-कामना कि आप स्वस्थ रह । उसने प्यात्र को तीख साजा 'कवास' का गिलास दिया । प्योत्र ने अपनी गलमूँछें ठीक की गिलास खासी किया धीरे सधे हुए ढंग स हसत हुए वाला

तो आपने इस तरह मेरा स्वागत किया है । ठहरिय मेरी भी धारी भाएगी धीरे सब आपको इस गिलास का बदला चुकाना ही पड़ेगा ।

इधर नताल्या की घममाता धीरे वर क बड़े भाई क बीच हसी मजाक खलता रहा धीरे इधर समझौते के अनुसार धर-पस क लोगो के लिए तीन-तीन गिलास घोड़का लायी गई ।

विवाह की पौगाक में हा सजी नताल्या अपनी दोनों बहनों के साथ मंड के पास बठी रही । मरिगाका फल हुए हाथ पर एक पिन-सी नचाती रही ता प्रिपा, निगाहा म चुनौती घोल एक चम्मच-सा खलाती रही । प्योत्र को पसीना भा रहा था धीरे वोल्का का कुछ कुछ नसा भी हो खला था । वह भुका धीरे उतने अपने गिलास में पचास कीपेक डाले । लेकिन मरिगाका ने नाचती हुई पिन स मेख खटखटाई धीरे बोली

'कम है ! इतने में हम अपनी बहन आपको नहीं दोगे ।

प्योत्र ने एक बार फिर चाँदी के कुछ सिक्के उस गिलास म डाले ।

"वहीं, हम अपना बहन को नहीं जाने दोगे । नीचे दृष्टि गढावर बैठे नताल्या को कुहनियाकर बहनों ने गुस्स से कहा ।

यह क्या बात है ? हमन तो पूरी स भी ज्यादा कीमत बढ़ा कर दी । प्योत्र ने अपना बचाव किया ।

झगडा खरम करी, सबकियो !' आपने दे मिरोन मुसकराता हुआ मेख की धार बडा । उसके मखन स बिखनाए वाला से पसीने धीरे गोबर

चिल्लाया । उसने घोड़ों पर क्रोध म चाबुक चमाया तो घोड़ घोर तेज ही गय ।

‘तुम गिर पडोग । दार्या ने अपनी बाँहो स उसने पेटेंट जूता वाल पैरों को कसकर पकड़ा । बडा । उनकी बगल म मामा ईश्या चिल्लाया । किन्तु उसकी आवाज बगिचियों क पहियों की चरर-मरर म खो गई ।

स्त्री-पुरुषों स स्रचाश्च भरी बाकी दो जोड़ियाँ अगल-बगल म चला । घोड़ों की पीठों पर लाल नीली और गुलाबी भूमें पडी हुई थी । उनकी अयासो और माये क बासा म खिबन और कागज क फूल बधे हुए थे । ऊँची-नीची सड़क पर जोड़ियाँ दोड़ रही थी घोड़ो के मूँह स साबुन के-स भाग निकल रहे थे और उनकी गीली पीठो पर फंदने नाच रह थे और हवा म भूम रहे थ ।

कोरलूनाथ के फाटक पर बारात दखने क लिए बच्चा की भीड़ जमा थी । उन्होने सड़क पर घूम उठती देखी तो शोरगुल करते अहाते में आ जमे ।

बारात आ रही है ! यह देखो आ गई बारात । उहोन हेत बाबा को घेर लिया । हेत-बाबा अभी अभी आया था । चिल्लाया—

तुम लोगों ने यहाँ यह भीड़ क्यों लगा रखी है ? भाग जाओ यहाँ स ! शोरगुल स आसमान सिर पर उठा लिया है तुम सबन ! मुझे खुद अपनी आवाज समझ म नहीं आती । बच्चे हेत-बाबा का मजाक उडाते उसने आस-पास उछलते-बूदत रहे । हेत-बाबा ने अपना सिर इस तरह मुका लिया जैसे किसी गहरे छुएँ मे निगाह दोहा रहा हो । फिर उसने नफरत स बच्चों की ओर देखते हुए अपनी पड सी तोंद खुजलानी शुरू कर दी ।

सटखडाती हुईं ओड़ियाँ फाटक पर आ पहुँची । प्यात्र प्रिगोरी को साथ ले सीढ़ियों पर चडा । दूमरे पीछे हो लिए ।

बरसाती और बावर्चाखाने के बीच का दरवाजा कसकर बन्द कर लिया गया था । प्योत्र न सटखटाया ।

प्रभु योशु हम पर दया करो भगवन् ! उसने गाते हुए कहा ।
ऐसा ही हो ! द्वार के दूसरे ओर स आवाज आई ।

की मिनी जुली बास आई । उसे अपनी धीर घाता देख बधू-पदा के लोग उठकर खड़े हो गए और उहाने नवागन्तुकी के लिए बठने की जगह कर दी ।

प्यात्र रूमाल का एक सिरा प्रिगोरी के हाथ में थमा एक बच पर बूदा धीर प्रिगोरी को दुलहिन के पास लं थला । वह देव-मूर्तियों के नीचे बठी हुई थी । नताल्या ने कपिते गीले हाथ से रूमाल का दूसरा सिरा पकड़ लिया । प्रिगोरी उसकी बगल में जा बठा ।

मज्ज के चारों ओर दाँतों का चबुर चबुर होने लगी । प्रतिधिया ने उबली हुई मुर्गी के टुकड़े किये और हाथ सिर के बालों से पोछ लिये । अपनीकीई ने मुर्गी के सीन धासा हिस्सा खाना शुरू किया तो पीली चर्बी ठोड़ी से बहती हुई उसकी बगल में जा बठी ।

प्रिगोरी ने ऊबकर पहल अपने धीर नताल्या के रूमाल में बंध हुए चम्मचों की ओर देखा और फिर एक कटोरे में उबलती सेमझयो की ओर । उसे बड़े जोरों की मूख लगी थी और उसके पेट में चूहे कुदने लग थे ।

दार्या खाने में जुट पड़ी । उसकी बगल में बँठा ईत्या घात्रोगीन भेड़ के गाँव के एक टुकड़े में अपने बड़े-बड़े दाँत गठाने और दार्या के व्यवहार पर नाखन हाकर उसे डाँटने लगा ।

महमानो ने बठी दर तक साया और खूब डटकर साया । मदों के पसीन की रास की-मी बास औरतों के पसीने की मीठी गंध में धुल गई । बड़े-बड़े सन्दूकों से निकाल गए सूटों फाव-कोटा और घालों से कपूर की गोमियों और जान किस किस चीज की महक आती रही । कुल मिलाकर यह महक ऐसी भारी और प्रजीव लगी जैसे कि किसी मुड़िया के एक लमाने के शहद के भरतन से उठ रही हो ।

प्रिगोरी ने नताल्या की ओर कनलियों में देखा । उस यह पहली बार लगा कि नताल्या का ऊपरी होंठ पूना हुआ है और निचल होठ पर टोपी के फुलने की तरह लटका हुआ है । उसने देखा कि उसके दाएँ गाल पर हड्डी के नीचे एक भूरा तिल है और तिल पर दो सुनहरे बाल हैं । यह देखकर पता नहीं क्यों उसे क्रोध हो आया । उस एकसीनिया की मुराहीदार गदन और घुपराल घने बालों का ध्यान हो आया । उस समय

उस लगा उसे किमी ने उसकी पीठ पर एक मुटठी काटेदार घास मोंक दी हो। यह परेधान ही उठा और दूसरों का बहुत ही घुरे मन स निहारने लगा। वे मजा ले-लेकर चीखें खा रहे थे मुंह भला रहे थे और अपने होठ बजा रहे थे।

लोग खाना खत्म कर मज पर स उठे तो किसी ने गहू की रोटी की खटास स भरी गंध और फलों क रस स बसी सांस छाहते हुए प्रिगोरी के जूत म मुटठी भर घन्न डाल दिया ताकि उसे नजर न लग और खुआर के स दाने उसके पाँवों म छुभते रह। कमीज का कडा बॉन्डर गदन में गन्ता रहा और शादी की रस्मा में उलझा वह अपने को जी भरकर मौसता रहा।

२२

धारात वापस लौगी तो मलेखोव-परिवार के बड़े-बूढ़ों न स्वागत किया। पंन्तेसी की रुपहले तारोंवासी काली दाढ़ी चमकी और उसने अपने हाथ में देवमूर्ति साधो। बगल म पत्नी खड़ी रही। उसक पतले होंठ जमकर पत्थर बने रहे।

प्रिगोरी और नताल्पा हॉप-नताओं की पत्तियों और गेहूँ के दानों की बीटारों के बीच प्राणीघाँद पाने क लिए घामे बड़े। पंन्तेसी ने उन्हें घसीसा सी उसकी पत्रक से एक घाँसू टपक पड़ा। उसे अपने-आप पर सीम भाद और लगा कि कोई देख लगा तो उसका खासा मजाक बनेगा।

दुसहा और दुसहिन पर मे प्रविष्ट हुए। बोदका सवारी और घूप से सास बहरा लिय दारूया भागी भागी सीड़िया पर घाई और दूमा पर बरस पड़ी 'प्योत्र वहाँ है ?'

मैंने नहा देसा।'

उम पादरी के पास जाना या और यहाँ उसका पता ही नहीं है। बुरा हो उसका !"

प्योत्र गाड़ी में मिला। उसने मात्रा स अधिक बोदका पत्ता सी थी और इस समय वह वही पहा बराह रहा था। दारूया भीत की तरह उस

पर दूट पड़ी किसने कहा था कि इतनी धड़ा तू ! उठ धीर जाकर जल्दी से पादरी को बुलाकर ला !

भाग जा यहाँ स ! मैं तुझे नहीं जानता । इकम तू किस पर घना रही है ? प्योत्र ने उत्तर दिया ।

नन्दी म धधु भर दार्या ने अपनी दाँ अगुलियाँ उसक मुँह म डाली धीर उम चली कराई कि नशा उतरे । फिर उमने कुएँ का एक घड़ा ठडा पानी उसके ऊपर डाला उसका बदन सम्बल स पौछा धीर उस पादरी के पास ले गई ।

एक घटे के अंदर ही हाथ म मोमबत्ती साथ प्रिगोरी गिरजे में नताल्या की बगल म खड़ा नजर आया । उसकी निगाह रह रहकर अपने चारों ओर खड़े लोगो की दीवार पर पड़ने लगी । रह रहकर धार शब्द उसके दिमाग म नाचने लगे—तुम तो गये प्यारे ! पीछे स प्योत्र खाँसा । दूया भीड़ म एक ओर खड़ी उस दिखलाई दी । उसने सोचा कि मैं सबको पहचानता हूँ । उसने वेमुरा कोरस सुना धीर सुने कोलाहल म हूबत पादरी के स्वर । उसका मन विरोधी भावनाओ स भर उठा । उसने पादर विसरिधोन के पीछे-पीछे चलकर पाठ मध की परिक्रमा की । प्योत्र ने उसका फ्रॉक जोट पीछे स खींचा तो वह रुककर मोमबत्ती की लौ की नही-नन्ही जीभों जोदखने धीर निद्राभरे धालस्य पर विजय पान को चेष्टा करने लगा ।

उसने पादर विसरिधोन का स्वर सुना अगुठियाँ बदल लो !

दोन ने आभा का पालन किया अब धीर देर लगगी क्या ?

प्योत्र न उसकी ओर देखा तो प्रिगोरी ने उससे इशारों में पूछा । मुसवान बिसरते हुए प्योत्र के हाठ हिले अब देर नही लगगी । फिर प्रिगोरी न अपनी पत्नी क मम पीने होंठ चूमे । गिरजा बुभनी मोमबत्तियों क धुएँ की गंध से भर उठा । लोग दरवाज की ओर बढ़ने लग ।

मताल्या का लम्बा खुरदरा हाथ पकड़े प्रिगोरी निरसकर बरसाती म आया लो पीछे से किसी ने उसने टोप पर हाथ मारा । पूरब की उष्ण वायु का झोंका आया धीर चिरायते की भाड़ी की गन्ध उसकी नाक म भर गई । मदान की ओर से सभ्या की शीतलता की सहर आई । दोन

न पार बिजली चमकी वर्षा की छाया हुई। गिरजे की सक्रम चहार दीवारी के पार से भाराम नरते घोड़ों की मधुर घटियों की धावाज भीड़ क कोलाहल को चीरती धर आई और जस धामनए सा दन लगी।

२३

दुनहा-दुनहिन चच भी चले गये किन्तु कोरनू-नोव-परिवार ने लोग मनखोव क यहाँ नहीं धाय। पन्तमी यह दखने के लिए कितनी ही बार फाटक पर गया कि वे धा रह हैं कि नहीं किन्तु कंटोली भाडिया स मरी भूरी सडक हर बार सूनी ही मिली। उसने दान की धोर देखा तो जगल गुनहल पीले रग में गोते लगाता लगा। पके हुए नरकुल दोन के किनारों की दलदलो पर झुके-स लग। घुंघलक ने धारद क धारन्धिक किनों की उदासी की चादर बिछा दी—गाँव पर नदी पर खडिया की पहाडियों पर बकइनी घुघ म हूवे जगल पर धोर मदान पर। चौराहे के माह पर किनारे बना कास धाममान की पृष्ठभूमि म भसका।

ऐम में पहियों की घीमी सडसडाहट धोर कुत्तों की भों भों की ध्वनि पन्तमी क कानो म पडी। चौक से होकर दो गाडियाँ सडक पर धाई। पहली बग्घी म धपनी पत्नी के साथ मिरोन धा। उसक सामने बठा धा बाबा धीदना—नई बर्दी पहने तथा पुरस्वार म प्राप्त सत जाज का क्रॉस एव पदक लगाय। हाँक भीतना रहा धा। वह गदी पर बहुत ही दोन डाल दग स बँठा धा। मुँह स आग फँवत घोड़ों को चायुक दिखाने का कष्ट उसे गवारा नहा धा।

पैन्तमी ने फाटक खोल दिया और दानों गाडियाँ धहाते में धा गइ। इलीचिना बरमाती स बाहर धाई। उसको पोगाक का सिरा जमोन पर पिसट रहा धा। धादर स कमर तक झुककर बोली धापने बडी हूपा की। धाश्ये हमारी कुटिया को पवित्र कीजिए।

एक सरक की सिर झुकाकर पन्तमी न धपने हाथ फलाकर मेहमानों का स्वागत किया धपारिये धाप सादर निमन्त्रित हैं।

घोड़ों को खोलने के लिए बहकर वह नवागन्तुकों के पास गया। मिरान ने हाथ से गरोवारी की धूस भाडी। बूडा धीनका गाडी की खेड

रफ्तार के बाद की परेशानी के कारण पीछे रह गया ।

‘आइये कृपया अन्दर आइये ।’ इसीचिना ने साप्रह कहा ।

धन्यवाद अभी आठे हैं ।

‘हम सोग कब से आपकी राह देख रहे हैं मैं अभी कुछ साती हूँ कपड़े साफ करने के लिए । इन दिनों ता इतनी धूल और गद होती है कि साँस लना मुश्किल हो जाता है

हाँ सबकुछ हवा बड़ी खुदक है इसी से तो गर्द और धूल है लेकिन आप परेशान न हों मैं पैन्तेली की पत्नी के सामने आदर से झुककर बूढ़ा प्रोफेसर खलिहान की ओर बढ़ा और घोसाई की रगी हुई भसीन के पीछे जा छिपा ।

उस बूढ़े को आराम से घबेल रहने दो न पैन्तेली ने अपनी पत्नी को सीढियों पर टोना ‘वह कुछ करना चाहता है और तुम तुम्हारा दिमाग वहीं चरने चला गया है क्यों ?

मैं भसा कहीं से जानू इसीचिना ने लज्जा से लाल हो कहा ।

‘यह तो तुम्हें समझ लेना चाहिये । सर कोई बात नहीं महमानों को मेज के किनारे से चलकर बठाओ ! इस तरह प्रिगोरी की मसुराल के सोग बड़े कमरे में लाये गए । यहाँ बड़े भोग बोदका पीकर भाषे महोश मिले । जल्दी ही बर-बधू गिरज से लौट आए । उनके प्रवेश करते ही पैन्तेली ने गिलासों में चादका भरी । उसकी घाँसों में स्नेहाशु घा गए ।

तो मिरोन प्रेगोरीएविच ! आइये जाम उठाएँ अपने अन्धों के लिए । भगवान् बने कि इनका जीवन हमारे जीवन की भाँति ही सुख से भरे । य सदा प्रसन्न और स्वस्थ रहें ।

उन्होंने बाबा प्रोफेसर के लिए एक बड़े गिलास में बोदका ढाली । इसमें से आधी तो वह गटक गया और आधी उसकी बर्दी के बड़े कँतर पर दुनक गई । गिलासों से गिलास टकराये । सोग जमकर पीने लगे । आजार-सा लग गया । कोरशूनोव का दूर का एक रिश्तेदार कोमोवेईदीन मज के सिरे पर बैठा । उसने अपना गिलास उठाया और धिल्लाया ‘यह फड़की है बोदका तो बड़की है !

बोदका तो बड़की है ! मेज पर बड़े हुए अतिथियों ने उसका

साय निया ।

घाह कडवी है ! खचाग्यच भर बावर्चीखाने स भावाज भाई ।

इस पर प्रिगारी न त्वारी चनाकर अपनी पत्नी क पीक हॉठ धूम
भीर रुमर में चारों भार निगाह दीड़ाई । सबक चहरों पर साती दीड गई ।
पौखों भीर मुसबानों न गराब भीर नगे की दुहाई दी । मूह चलने सगे ।
कसीके क कामवाले मजपोश पर सारें टपकने सगी । लोगों क धोरगुल
से छन उडन सगा ।

कोलावेईदीन न बिखर बिपर-से दौनोंवाला अपना मुह खोला
भीर गिलास उठाकर बोला 'बोदका कडवी है ।

'कडवी है ! एक बार फिर सब पीख उठे ।

प्रिगारी ने कोलावेईदीन की धोर घृणा से भरकर देखा ता 'कडवी
है ! बिल्नात समय उसकी लान थीम भनकी ।

धरे तुम दानों एक-दूसरे को चूमो ! प्योन बोदका स भीगी अपनी
मुखें ऐंठते हुए बोला ।

बावर्चीखाने म नशे म चूर दार्या ने गाना गुरु क्रिया बाड़ी स्त्रियों ने
उसका साय निया धोर गाना बडे कमरे में भी घा पहुँचा । स्वर एक-दूसरे
मे मिन गए किन्तु क्रिस्तोनिया का स्वर इस तरह पचम म पहुँचा कि
सिद्धियों क काँच मनन्तान सगे ।

गीत समाप्त हा गया । खाना फिर गुरु हुआ ।

दोस्त्रा यह गिलास इम खुशी धोर मज का घाम के लिए

'यह भेड का गोदन खतो जरा ।

अपना हाथ दूर रखा मेरा मद देख रहा है ।

कडवी है ! कडवी है !

"नही मुझे भेड का गोत नहीं चाहिए । मैं यह मछली चम्बूंगी ।
घाह इसम बहा रस है ।

'पोन्ना प्यार ! घाघो दूसरा गिलास हो जाय'

घाह इससे तुम्हारे निम को ठडक पहुँचनी है

बावर्चीखान में एडियाँ जो सटासटा बर्जी लो जमीन कराहन धोर
हिसने सगी । एडियाँ खटखटा उठीं धोर एक गिलास नीचे गिरकर धूर

घूर हो गया। दूटने की आवाज कोलाहल में विलीन हो गई। प्रिगोरी ने सिर ऊँचा कर बावर्चोखाने पर निगाह डाली। घोरतों चीखों घोर सीटिया की घुन पर नाचती मिली। भारी स भारी कूल्हे हिलते दीख। साधारण कूल्हा एक नजर न धाया क्योंकि सबने पाँच-पाँच छ छ स्वट पहन रखे थे। घोरतों ने रुमाल लहराये कुहनियाँ नचाइ।

घरकार 'मोन' के तेज स्वर हवा में गूँजे। बजाने वाले ने करदाक-नृत्य की लय निकाली। किसी ने खीसकर कहा घेरा घनामो घेरा ! पोठा रास्ता दो ! पसोनेस तर घोरतों को एक घोर हटाते हुए प्योत्र बोला।

प्रिगोरी ने उठकर नतात्या को घ्राँस मारी।

'प्योत्र करदाक' नाच नाचेगा। दखना उस।"

किसके साथ ?

देखती नहीं हो ? तुम्हारी माँ के साथ।

बाएँ हाथ में रुमाल लेकर मारया लुकीनीचता ने अपने हाथ कमर पर रखे। प्योत्र खूबघूरती में काम निकालते हुए उसके पास गया घोर एक घककर फाटकर अपनी जगह पर वापस आ गया। लुकीनीचता ने अपना स्वर्ट मॉ उठाया जैसे कि पानी से भरा कोई गडढा पार करने जा रही हो। उसने पर के भगूठे से बाजे की घुन का साथ दिया घोर वजे मर्दों की भाँति पटके। लोग मगन होकर झूमने घोर वाह-वाह करने लगे। बादक ने कुछ घीमे स्वर निकाल तो प्योत्र उठ खड़ा हुआ। धारम्भ में वह जमीन पर बठा घोर इसी स्थिति में घूम घूमकर नाचन घोर बूटा स लैस परों पर हथिनियों पर हथेलियाँ मारने लगा। उसकी मूँछ का सिरा उसके मँह में जाने लगा। उसने बड़ी तेज गति से कदम निकाल तो आगे के वालों की लट माप पर आ रही पर उसके परो का साथ न दे सकी।

दरवाज पर भीड़ जमा हो गई तो प्रिगोरी को सामने कुछ भी नजर न धाया। उम तो बेवस अतिथियों की चीखों घोर जूतों की एडियों की

खट-खट जलते हुए खोड क तस्नों की कडकडाहट की भाँति सुनाई दी ।

फिर मिरोन नाचा इसीचिना के साथ उसने गम्भीरता से सधे हुए कदम निकाल । पन्तेली उनवा नाच देखने के लिए एक स्टूल पर खड़ा हो गया । इस बीच उसकी सँगही टाँग डगमगाती घोर जीम चटखारे लती रही । टाँगा की बजाय नृत्य कर रहे थे उसने होठ घोर जानों क बुन्दे ।

फिर तो नाच म कुशल नतकों ने भी हिस्ता लिया घोर नाच से पूरी तरह अनजान लोगों ने भी । किन्तु लोग बराबर गोर करते रहे ।

चानू रहो "

घरे तुम छोटे-छाटे नदम रखो ।

इसने कदम हनके पडठे हैं लकिन भारी चूतड मजा गडबडा देते हैं ।

घरे नाचे जाओ ।

हमारी तरफ की जीव हो रही है ।

चानू हो जाओ ।

यक गए हो ? नाचोगे नहीं तो तुम्हें बोटल रीचकर मारुगा ।

बाबा घोँका पर वोँका पूरी तरह नवार हो गई । उसने अपनी बंगलावाल मादमी की हड्डि पीठ बसी घोर उसके कान म मन्द्यर की भाँति मनभनाया ।

आपने किस सन् स नौकरी करना शुरू किया ?

उसका पडासी वृद्ध था घोर एक पुराने शाहबसून के पड की भाँति दोहरा था । बोला, १८३६ म बटे ।

कब ? घोँका न आपन कान उस घोर की किय ।

बहा न तुमम १८५६ में ।

आपका क्या नाम है घोर कौनसे रेजीमंट म रहे आप ?

नाम मकिनम बोगा निरयाव है घोर मैं बाकलानोव न रेजीमेंट म कारपोरल रहा हू ।

क्या आप मेसेखोव-परिवार न हैं ?

क्या ?

मैंने पूछा कि क्या आप मेसेखोव-परिवार म ?

भूर हो गया। दूटने की धावाज कोलाहल में विलीन हो गई। प्रिगोरी ने सिर ऊंचा कर बावर्चीखाने पर निगाह डाली। घोरतें पीछों घोर सीटिया की धुन पर नाचती मिली। भारी-म भारी कूल्हे हिलते दीखे। साधारण कूल्हा एक नजर न धाया, क्योंकि सबने पाँच-पाँच छ छ स्फट पहन रखे थे। घोरतों ने रूमाल सहाराय कुहनियाँ नधाईं।

‘अकारन्प्रिगोन’ के तेज स्वर हवा में गूँजे। बजाने वाले ने नज्जान-नृत्य की लय निकाली। किसी ने पीछकर कहा घरा बनाघो घेरा।

‘घोठा रास्ता दो ! पसीने से तर घोरतों को एक झार हटाते हुए प्यात्र बाला।

प्रिगोरी ने उठकर नतालया का मोल मारी।

‘प्योत्र करझक’ नाच नाचिगा। देखना उस।

‘किसने साथ ?

देखती नहीं हो ? तुम्हारी माँ के साथ।

बाएँ हाथ में रूमाल लेकर भारया लुकीनीचना ने अपने हाथ कमर पर रखे। प्योत्र झूबपूरती में क्रम निकालते हुए उसके पास गया घोर एक चक्कर काटकर अपनी जगह पर वापस आ गया। लुकीनीचना ने अपना स्फट यो उठाया जैसे कि पानी से भरा कोई गडढा पार करने जा रही हो। उसने पर से धगूठे से बाजे की धुन का साथ दिया घोर पजे मदों की भाँति पटने। लोग भगन होकर झूमने घोर वाह-वाह करने लगे।

बादक ने कुछ धीमे स्वर निकाले तो प्योत्र उठ खड़ा हुआ। भारम्भ में वह जमीन पर बठा घोर इसी स्थिति में घम घूमकर नाचने घोर बूटा से लस परों पर हथलिया पर हथलियाँ मारने लगा। उसकी मूँछ का सिरा उसके मँहू में जान लगा। उसने बड़ी तज गति में क्रदम निकाल तो आगे के वालों की लट भाँचे पर आ रही, पर उसके परों का साथ न दे सकी।

दरवाज पर भीड़ जमा हो गई तो प्रिगोरी को सामने कुछ भी नजर न धाया। उसे तो केवल अतिथियों की पीछों घोर जूतों की एडियों की

खट-खट जसते हुए चौक न तस्त्रों की कड़क-डाहट की भाँति सुनाई दी ।

फिर मिरोन नाच इत्तीचिना के साथ उसने गम्भीरता से सधे हुए कदम निकाल । पन्तैली उनका नाच देखने के लिए एक स्टूल पर खड़ा हो गया । इस बीच उसकी लँगड़ी टाँग ढगमगाती और जीभ घटखारे सेती रही । टाँगों की बजाय नृत्य कर रहे थे उसके होंठ और नाभों के बुन्दे ।

फिर तो नाच म कुत्तन नतकों ने भी हिस्सा लिया और नाच से पूरी तरह अनजान लोगों ने भी । किन्तु योग बराबर दोर करते रहे ।

चात्र रही

भरे तुम छोटे-छाटे कदम रखो ।

इसके कदम हलके पड़ते हैं लकिन भारी-भूतक मजा गड़बड़ा देते हैं ।

भरे नाचे जाओ ।

हमारी तरफ की जीठ हो रही है ।

'चात्र हो जाओ ।

यक गए हो ? नाचोगे नहीं तो तुम्हें बातल माघकर मारूंगा ।

बाबा श्रीशंका पर वोशका पूरी तरह खवार हो गई । उसने अपनी बगननाल घादमी की हड्डिही पीठ बना और उसके कान म मच्छर की भाँति मनभनाया ।

घापने किम सन् स नौकरी परना शुरू किया ?

उसका पडासी वृद्ध था और एक पुरान गहबलून के पद की भाँति दोहरा था । बोला, १८३६ म बेटे !

कब ? श्रीशंका ने घवन कान उस और को किये ।

बहा न तुमम १८३६ म ।

घापका क्या नाम है और कौनस रेजीमंट म रहे घाप ?

नाम मनिस्सम बोगा निरयोव है और मैं बाबलानाव न रेजीमेंट म बारपोरल रहा हूँ ।

क्या घाप मेलेखोव-परिवार के हैं ?

क्या ?

'मैंने पूछा कि क्या घाप मेलेखोव-परिवार के हैं ?

हाँ मैं प्रिगोरी का नाना हूँ ।

‘ आपन बाबलानाव क रेजीमट का नाम लिया न ?

बूढ़े ने धुंधलाई भाँसा से प्रोन्का की घोर देखा घोर सिर हिसा दिया । वह आपन बिना दाँतों के जबड़ों स रोटी का टुकड़ा चबाने की कोशिश करता रहा पर व्यर्थ ।

तब तो आप काकशिया-मुँह म भवइय गय होंगे ?

‘मैं बाबलानाव की ही मातहतो में था । मैंने उह काकेशिया की विजय म सहायता दी थी । हमारी रेजीमट म कुछ लाजवाब बरजाक थे । ये रक्षक-सल क सनिकों की तरह सभ्से थे यद्यपि उनकी तरह तनवर न चलते थे । उनके हाथ सभ्से घोर कन्धे चौड़े थे । वे भाजक स करवाकों की तरह न थे । बटा ! ऐसे लाग थे हमारे पास । हमार जनरल मर चुके हैं । वह बड़े भले प्रान्मी थे । उहाने मुझे एक यिस्फी दी थी एक कालीन चुरान पर

घोर मैं गया था तुर्की की सडाई म । जी हाँ म वहाँ गया था । प्रोइका न पदकी से खटखटाते हुए दबे गीने को फुलाकर कहा ।

तइके हमने एक गाँव लिया और दोपहर होते-होत बिगुलवाले ने खतरे की खबर दी । प्रोइका की बात पर कान दिए बिना ही बूढ़ा कहता रहा ।

हम लोग रोमीरड के पास लड़ रहे थे और हमारी बारहवीं दोन कज्जाक रेजीमट उसभ्ती हुई थी जानिसारो स । प्रोइका ने बतलाया ।

बिगुलवाल ने खतरे की खबर दी तो म

हाँ ! प्रोइका गुस्से में हाथ नपाने हुए कहता रहा तुर्की जानिसार अपने जार की सिदमत करते हैं और सिर पर सफेद टाट बाँधते हैं । जी हाँ सिर पर सफेद टाट बाँधते हैं

बिगुलवाले ने खतरे की खबर दी और मैंने अपने साथी से कहा तिमोफीई हमको पीछ हटना पड़ेगा लेकिन इससे पहले हम वह कालीन दीवार से उतार लेंगे ।

मुझे दा जाज पदक मिले था क मन्दर बहादुरी दिल्लाने के कारण । मैंने एक तुर्की मजर की जिन्दा पकड़ लिया । बाबा प्रोइका

रोने धीरे धीरे नदी की रीढ़ पर मुट्ठी नमान लगा।

किन्तु बूढ़ न मुर्गी, टुकड़े कोबरक मुराब में डुबोया धीरे बजान नजर स गन् मेड़पोश की घूरत हुए बुढ़िया धीरे जरा सुनो बटा उस दातान न मुनमे क्या पाप करा लिया ! बूढ़ की निगाहें मेड़पोश की लाहे की सकोरी पर ऐसे जम गद्द, जस कि उनक भाग बोद्धा धीरे शारव से तर मेड़पोश न होकर काकशिधन पहाडों की बक स चमचमातो परतें हों। मैं कभी दूमरे की चीज न लना लेकिन मुझे जा कालीन दीखा तो मैंने सोचा इसकी जीन भन्दी बनेगी।

मैंने वे हिस्सा खद दखे हैं। मैं समुद्रपार के देशों म भी गया हूँ। धीरेका ने अपने पदासी की झालों में झालें डाली, किन्तु धीरेका के गहरे गहड भौहों धीरे दाडीके घने बालों से ढके हुए थे। इसलिए उसने धालाकी से काम लिया। उसने अपनी क्या क परमोत्कृष्ट पर पठोसी का ध्यान अपनी धीरे धाकपित करता था। उसने कहानी का बीच का हिस्सा छोड दिया—बिना किसी सूमिया क।

धीरे कप्तान ने आगा दा 'टुप बनाकर धोडों को कदम धाल स से पलो प्राये धने।

किन्तु बाकलानाय रेजीमेंट क बूढ़ बरजक ने तुरही की आवाज पर धौशनवाने फीजी थाडे की तरह अपना मिर पीछ की धीरे मटका धीरे हाथ मेड़ पर रखते हुए धीमी आवाज में बोला बाकलानाय के जवानो भात हैदार रावो कटारें सीध लो। उसका स्वर एकाएक तेज हुआ। उसकी घुघली धालें धमकने धीरे धाग बरसाने लगीं। बाकलानाय क कीजियो ! वह अपने दन्तविहीन पील जबडे खालकर दहाड़ा हमसा बोली ! धागे बढो !'

धीरे उसने धीरेका की धीरे यौवन-उल्हाह स भरी धातुरीपूण दृष्टि स देखा। दाडी पर धामू रहते रहे।

धीरेका भा उत्तजित हा उठा उसने हन यह धागा दी धीरे अपनी तलवार नचाई। हम धोडे दोहाते धाग बडे धीरे अनिसार इस तरह मुन धाए। उसने अपनी कपती हुई धंजुली स मेड़पोश पर एक धनुस्कीउ बनाया, 'उहेनि हम पर दन्तूके जसाद।

हमन तीन बार उन पर हमला बोला और हर बार उन्होंने हम पीछे हटाया। जब भी हम उनकी तरफ बढ़ते किसी-न किसी जगह से उनकी घुड़सवार टुकड़ी निकल आती। हमारे ट्र प-यमांडर ने हुकुम दिया और हम सौटकर उन पर जा चढ़। उनको हमने रौंद डाला। उन्हें भगा दिया हमने। करवाकों के सामने दुनिया की कौन सी घुड़सवार फौज ठहर सकती है! वे जगहों में भाग गये। मैंने ठीक अपने सामने घोड़ी पर सवार उनका अफसर जास देखा। अफसर दखने-सूतने में अच्छा था। उसकी गलमूँछें काली थीं। उसने घूमकर मेरी तरफ देखा और पिस्तौल तानी। उसने गोली दागी लेकिन वार खाली गया मैं बच गया। मैंने अपने घोड़े को एड लगाई और जाकर उस पनड लिया। मैं तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता पर मुझे इससे भी अच्छी बात सूझी। आखिर वह भी आसान था। मैंने अपना दायाँ हाथ उसकी कमर में डाल जा भटका दिया तो वह नीचे लिखा धला आया। उसने मेरी बांह में दाँत लगा दिए फिर भी मैंने उस खींच ही तो लिया

घोड़का ने विजय भरे डोंग से मुमकराते हुए अपने पड़ोसी की आर देखा पर इस खींच बूढ़ का बड़ा तिकोना सिर उसके सीने पर टुक गया और वह आराम से क्षरति भरन लगा।

१

से कोई प्लागोनोविच मोखोव को अपने खानदान के पुराने इतिहास की खासी जानकारी थी।

पीतर प्रथम के शासनकाल में विस्नुटो और बारुद से भरा एक शाही बजरा दान की सहरों पर लहरता झाड़ोव जा रहा था कि दान के ऊपरी किनारे पर बस खोगानाकी नाम के एक छोटे-से गाँव के बज्जाक सुटर रात में बजरा पर टूट पड़े। उन्होंने सोन हुए पहरदारा को मार डाला विस्नुट और बारुद डूब ली और बजरा का टुकड़ा दिया।

सम्राट डार नयोरानेज नगर में सैनिक भेजे। सैनिकों ने खोगानाकी ब्रस्वें में भाग लगा दी अपराधी बज्जाक को तलवार के घाट उतार दिया और उनमें से खालीस को फाँसी की पानी पर बहती टिकटी पर सटका लिया। टिकटी बागी गाँवों का चेठावनी दन के लिए दोन क बहाव के सहार बहा दी गई।

सैनिकों पर पहल खोगानाकी भौपठियों की भट्टियाँ घुमा उगनती थीं वहीं कोई दत्तक बप वाद बज्जाक और पिछली बरमाने में बचे सौम फिर घाबर आबाद होने लगे। एक बार फिर बस्ता बस गई और उसके खारों घोर सुरक्षा की दावार बढी हो गई। इसी समय डार नु मोखाव नामक एक स्त्री किमान का वहाँ अपना जामून बनाकर भेजा। यह पादू की मूठों सम्पादू धरुमक परपरों तथा बज्जाकों के रोजमर्रा के काम की चीजों का ब्यापार करता। यह घोरी का मास शरीरदता और

बचता । बपु में एक या दो बार वह वारोन्ज जाता । कहता तो यह कि मैं मास भरने जा रहा हूँ पर जाता वाम्त्व में वह जिले की व्यवस्था से अधिकारियों को परिचित कराने और यह बतसान कि फिनहाल सा लोग पान्त है और बज्जाक भाई नया तूफान खडा करने की बात नहीं साच रहे ।

इसी रूसी किसान निकिता मोखोव से मोखोव का व्यापारी बन चला । होते होते इस परिवार ने कज्जाक-क्षेत्र में अपना जड़ें गहरी जमा ली । समय समय पर वारोन्ज के गवर्नरों ने इस परिवार के पूर्वजों को प्रमाण पत्र दिये । प्रमाण पत्रों को परिवार के लोगों ने बड़े आदर से सम्हालकर सुरक्षित रखा । व तो आज तक सुरक्षित मिलते पर हुआ यह कि सर्गेई मोखोव के बाया के जीवनकाल में एक बार भयानक प्राण संगी और उसमें के प्रमाण पत्र भी जलकर राख हो गए । मोखोव ने ताशवाञ्ची में पढ़कर अपना भविष्य पहले तो दिगाइ लिया था पर यह कुछ सम्मत् रहा था कि प्राण ने सभी कुछ चीपट कर दिया । उसका पिता सबके से पीड़ित था । एक दिन वह भी मृत्यु की गोद में जा पडा । उसके बाद मोखोव ने नय सिरे से अपना भविष्य सवारा । प्रारम्भ उसने सूअर के बालों और चिड़ियों के परो की खरीद से किया । पहले पाँच बपु उगने इस जिल के कज्जाकों को ठगते और एक एक कोपेक के लिए उनकी नुगामद करते हुए बड़े दुख से काटे । फिर एक दिन एकाएक वह बिसाती सयोजन से सर्गेई प्लातोनोविच बन गया । उसने कपड़े की एक छोटी-सी दूकान खोल ली और एक अच्छे विनिप्त पादरी की लडकी से विवाह कर लिया । विवाह में उसे ढर सारा दहेज मिला और उसने बजाज का काम कर लिया । सर्गेई प्लातोनोविच की दूकान बड़े अच्छे समय पर खुली । इन दिनों अधिकारों के आदेश पर दोन के बजर और रेतोमे बाए किनारा से कज्जाक का आकर दाएँ किनारे के गाँवों में बस रहे थे । और इधर तीस मीस के दायरे में मोखोव की दूकान के असावा कोई ऐसी दूसरी दूकान न थी । लोग भी आखिर दूर क्यों जाते जबकि पाम ही आचयन वस्तुओं से भरी सर्गेई मोखोव की दूकान मिस जाती । सर्गेई ने अपने व्यापार को पूरे आकार के प्रकारदिधोन बाज की भाँति

सूब फलाया घोर सीध-साठ ग्राम्य जीवन की अरुणत की हर चीज रखा। वह खेतोवासी क यत्र भी बचने लगा। अतुर घोर बुद्धिमान अगोद ने ध्यापार ससूब पसा कमाया घोर तीन साल क अन्दर ही अन्दर उसन अनाज की ऊपर उठाने का यत्र भी लगा लिया। फिर अपनी पहली पत्नी की मृत्यु क दो बप बाठ उसने भाप स अतनवाली घाटे की बचकी भी बनवानी गुन कर दा।

उसन साठारस्को घोर आस-पास क सारे गाँवों को अपनी काली मुट्टी म जकट लिया। कोई ऐसा घर न बचा जो अगोद मोखोव का बजदार न हो। नारगी पट्टी की एक हरी पर्वो पर सिखा होता— बोभाई का यह मगोन अमुक को बज पर दी गई। दूसरी पर्वो पर सिखा मिनता — गादी का यह जोडा अमुक की बटी की शादी के समय उधार लिया गया। बम तो इसी तरह मोखोव बडा। नौ आदमी मिल मे सात दूनाम में घोर चार घर म नोकर प। सब मिठाकर बीम अ्यक्तियों की रोटियाँ मोखोव का मर्जी पर निमर थीं। पहली पत्नी से उसक दो बच्चे प बटी लीजा घोर बटा अ्वादीमोर। बटा बटी स दो साल छोटा था आतसी घोर कठमाला का रोगी। उसकी दूमरा पत्नी अन्ना अमी निस्स-तान थी। उसने चोतौम बप की उअ तक शागी न की थी। फल यह हुमा कि उसक मातृ-स्नेह का रका हुमा समस्त प्रवाह तथा चिद चिदापन बच्चों पर बरस उठा। उसक अघोर स्वभाव का बच्चों पर बुरा प्रभाव पया। पिता न उनकी घोर विशेष अ्यान नहीं दिया। वह उनकी इतनी ही क्षीत्र खबर रखना जितनी कि अपने कोचवान या बावर्ची की। उनका सारा समय अार-ध्यापार में ही जाता। नतीजा यह हुमा कि बच्चे अनुशासनहीन हो गए। उसकी बुद्धिमान पत्नी न बातर्का क अस्तित्प में पनपनवाल रहस्यों में अंजन का अतन नी नहीं किया। उस पर क काम-काज न ही फुरसत न मिलनी। भाई-बहन बिसकुल भिन्न स्वभाव के निबल। अरित्र नी दोनों का इतना अलग जस कि एक का दूमर स कोई सम्बध हा न हो। अ्वादीमोर चिदचिदा आतमी निगाहों में आलाक घोर बडों की तरह गम्भीर। सोजा नोकरानी घोर बावर्चिन क साथ रहती। बावर्चिन बदबनन थी घोर ह्जारों घाट का पानी पी चुकी

थी। सो लीजा ने जिन्दगी का यह पिनोना पहलू खरा जल्नी ही देख लिया। इन धीरतों न उसम अवांछित कौतूहल नगा दिया। वह अपने मन की हो रही धीर साज के सहारे पनपती किंगोरायस्था म ही ऐसी दोख धीर मनषली हो गई अस कि सच्चे प्यार का जगली फूल हो।

सास-पर-सास धीर-धीर गुजरते गए। सयाने झूठ हुए। बच्चे बड़े हुए।

एक दिन शाम को सेगेंड प्लातोनाविच ने अपनी बेटी पर नजर डाली तो चौंके उठा। बेटी लीजा ने अभी अभी हाईस्कूल छोड़ा था। देखने में दुबली पतली धीर सुन्दर थी। पिता के हाथ का पाय का प्यासा कांप गया। मन-ही मन बोला सड़की अपनी मां का भवतार है विलगुल। बिनकुम उमी की तरह! जोर से कह उठा लीजा खरा अपना सिर एक तरफ को ला माड! इसके पहले उसकी दृष्टि इस सत्य की धीर कभी न गई थी।

दुबसा धीमार सा पीला आदीमीर मोखोव इस समय पाँचवो बसा म था। वह अहाते से गुजर रहा था। गर्मी की छुट्टिया म उसकी बहन भी घर आई थी धीर वह भी। सो सदा की भाँति ही मिल को देखने धीर गद-धूल से नहाये सोर्गे से हसी-मजाक करने वह मिल म जा पहुँचा था। बरजाक घाड़का की फुसफुमाहट कानों म पड रही थी—

घाग मालिक चरी सडका बनेगा वह गव से फूल रहा था। गाडिया धीर गोबर के ढरों के धीष से होकर सावधानी से अपना माग बनाता आदीमीर फाटव पर पहुँचा। उसे ध्यान घामा कि मैंन अभी विजली का प्लॉट नहीं देखा। वह वापस हो लिया।

तेल के साथ टक के पाम मगीन के कमरे के द्वार पर तोल करन वाला मजदूर तिमोकीई तथा उसका सहायक दाविद नगे पाँवों से गीली मिटटी गूँथ रहे थे। उन्होंने अपने अपने पाजामे उलटकर घुटनों तक चढा रहे थे।

अहा! मालिक! तिमोकीई ने हसते हुए उसका अभिवादन किया।
 आस्तविच! क्या हो रहा है?

‘गारा तयार नर रह है। दाविद ने बड़ी मुश्किल स पाँवों को सनी गोबर की तरह बू नरती मिट्टी से खींचत हुए मुसकराकर कहा थापक पिताजी रुबल बहुत गिनते हैं। इस काम के लिए औरत नहीं रख सकत। मक्खीचूस है।’

बनादीमार का धेहरा तमतमा उठा। सदा मुसकरान वाल दाविद उसके नफरत म भरे स्वर और उसके धिनौन दाँतों के प्रति वह मन हा-मन असन्तोष से भर उठा— मक्खीचूस से क्या मतलब तुम्हारा ?

‘वह बहुत नीच है। दाविद ने मुसकराते हुए कहा अगर रुबल मिलें तो वह अपना खाना तक छाड़ दें।’

अनुमोदन म मभी लाग हस दिए। बनादीमीर को अपमान और भी तीखा लगा। उसने दाविद की ओर क्रोध स देखा।

‘तो तुम अपने काम स खुश नहीं हो ?’

इस दलदल में झाड़े और घास भी गारा तयार काबिय तब घासकी सग मालूम हो जाएगा। कौन ऐसा बेकसूफ होगा जा खग होगा ? थापके पिता अगर यह काम करें ता उनका कुछ भला ही हा। घोड़ी-सी बादी गायद पच जाए। दाविद न उत्तर दिया। उसने गारे क धेरे म जोर-जोर स पैर पटके और मुसकरा दिया।

बनादीमीर न मन ही मन मुहतोड जवाब देने की सोधी। ठीक है। वह पीमे स्वर में बोला ‘पापा स कह दूंगा कि तुम अपने काम स खुश नहीं हो।’

कनखियों स उसने उसकी घोर देखा और अपने वाक्य स उसके मुख पर घाय भाव को देखकर चौक उठा। दाविद की मुसकान से दुख था। वह मुसकराते रहन का प्रयत्न कर रहा था। दूसरों के भी मुख मलिन हो उठे। शहर के तीनों छुपचाप मिट्टी रींते रह। नीचड़ स सने पाँवों से दृष्टि हटाकर दाविद ने मनोती भरे स्वर म कहा ‘मैं तो हँसी कर रहा था, बोलोदया !’

तुम्हारी बात मैं पापा से कह दूंगा। अपना पिता और अपना अपमान के कारण उमड़े हुए अश्रुओं को सहेज बनादीमीर वहाँ से चल दिया।

बासोदमा ! ब्लादीमीर सर्गोयविष ! उसने जाते ही बातर हो दाविद न उस पुकारा और अपने मिट्टी के छोटा स घन पाँवों क ऊपर पाशामा उलटते हुए घेरे से बाहर निकला ।

ब्लादीमीर ठिठका । दाविद हाँकते हुए दौड़कर उसक पास आया । अपने पिताजी से न कहना । मैं बेवकूफ हूँ । मुझे माफ कर देना । कसम भगवान् की मैंने बिना सोचे विचारे यों ही कह दिया था—सुम्हें पिड़ाने के लिए ।

मच्छा मैं नहीं कहूँगा । माथ पर बल डालकर ब्लादीमीर बासा और फाटक की तरफ चल दिया ।

पर यह सब कहने का तुम्हारा मतलब क्या था ? न कीचड़ न इट फेंका न छाटा पड़े ।

सुमर कही का ! ब्लादीमीर ने क्रोधित हो सोचा 'उलटकर जवान देता है ! पापा से कहें या नहीं ? उसने मुठकर पाछ जा देखा तो दाविद के चहरे पर फिर वही मुसकान पाई । उसने निश्चय कर लिया कि मैं कहूँगा ।

ब्लादीमीर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ा । बरसाती और बरामते म जगली अपूर की सत्ता की घनी पत्तियाँ धरसराती रही और रग हुए नीले बारजों स झूलती रही । उसने पिता क निजी कमर का दरवाजा था खटखटाया । सेर्गेइ प्लातोनीविष चमड़े की ठही कोष पर बठा 'रूस स्तोयें बगास्तबा यानी 'रूसी बमब' पत्रिका के छून अंक क पाने पसंद रहा था । उसके पाँवों के पास कागड फाड़ने का हड्डी का एक पीला पाकू पड़ा हुआ था ।

पिता बोला 'बहो क्या बात है ?

ब्लादीमीर ने अपने कंधे जरा झुकाये और धमोश की क्रोज ठीक की ।

मिल स जब मैं सौट रहा था ब्लादीमीर ने बने ही कहना प्रारम्भ किया किन्तु अभी उस दाविद की मुसकान याद ही आई । टसर की वास्कट न निपटे अपने पिता के स्तूसकाय पट की ओर देखते हुए दृष्टता से उसने कहा

मजदूर दाविद कह रहा था
सेगेंद प्लातोनोविच ने अपने बटे की पूरी कहानी ध्यान से सुनी और
बोला ' मैं उम निकान दूंगा । तुम जाओ । फिर कराहते हुए बागड
नाटन का धाकू उठाने को भुका ।

शाम को बुद्धिवादी वग के लोग सेगेंद मोखोव क घर जमा होत ।
इनम एक होता मास्को तकनीकी स्कूल का विद्यार्थी बोयारिदिन एक
मकान म रहनेवाली प्रप्यापिका मार्फा । मार्फा का पटीकोट हमेगा नजर आता
रहता और उम्र का उम पर कोई असर नजर न आता । इनके पलाया
हाता मनकी प्रविवाहित पोस्टमास्टर । उसके बदन स मुहर क चपड और
सस्ते इयों की महक हमेशा आती रहती । कभी कभी घोड़े पर सवार हो
लेफ्टिनेंट नययुवक यन्गानी लिस्वनिम्की अपने पिता की जमींदारी मे वहाँ
आ जाता । य लोग बरामदे म बठकर चाय पीत ब्यय का बादविवाद
करते और जब बाजबीतों में कुछ दम न रहता तब कोई-न-कोई उठकर
मेडबान क बाजबीमती जडाऊ ग्रामोफोन पर देकाट रख दता ।

बड़े पब-समाराहों के घबसर पर कभी-कभी सेगेंद प्लातोनोविच
वैस जग जीत लेता । वह प्रतिपियों को आमंत्रित करता और कीमती
घराबों मद्यमी के काले घड़ों तथा चाड़े क मांसके बबाबों से उन्हें धका
देता । यों वह कजूती से रहता । बस एक ही चीज ऐसी थी जिसमें वह
अपने ऊपर काबू नहीं रख पाता था और वह थी पुस्तकों की खरीद । उसे
अभ्ययन का चाय था और उमका मस्तिष्क ऐसा था जिसमें सब पडा
मिक्ता पहुँचकर बराबर हो जाता था ।

उसका मामीदार मूरे बालों और नुकीली दाढ़ीवाना येमेत्यान
कॉन्स्टानिनोविच भूत स ही मोखोव के महा आता । उसने कभी एक
मन्यासिनी से पादी की थी । पन्द्रह बप के विवाहित जीवनवास म उसके
घाठ बच्चे हुए ये और वह प्राय घर पर ही रहता था । उसने क्रीमो
रेजीमेंट के बमक की कैसियस से अपनी जिन्गी शुरू की थी और रफर
की बापनूनी और गुगामद मे भरी वृद्धदार जिन्दगी पर तब चली
आई थी । यह पर क अन्दर रहता तो बच्चे परों क पत्रों के बस पतले

घोर घ्रापस में फुसफुसाकर बातें करते । हर दिन सुबह हाथ-मुँह धोकर वे ताबूत-जसी सम्बी चौड़ी दीवार घड़ी के नीचे साइन बनाकर खड़े हो जाते और माँ उनसे पीछे खड़ी हाती । ज्यों हा सोने के कमरे से खाँसी की आवाज़ आती व हमारे पिता' और ऐसी ही दूसरी प्रायनाएँ करने लगत ।

इन प्रायनाओं के खत्म होते होते येमेल्यान अपने पहनकर बाहर आता और अपनी छोटी छोटी भाँखें सिनोइते हुए माँसल हाथ या भाग करता जैसे कि खुँ किसी गिरज का पादरी हो । इन पर एक-एक कर अपने भाग बढ़ते और हाथ चूमते । फिर वह अपनी पत्नी का गाल चूमता और तुलसात हुए पूछता पोल्या चाय तैयार है ?

हाँ तैयार है येमेल्यान कॉन्स्तैतिनोविच ।

ता एकाध प्याला तेज चाय पिलाओ ज़रा ।

वह दूकान का हिस्सा कितना लिखता और अपने बन्कों वाले खूब सूरत घसरों में लिखे नाम जमा से पन्ने क-पन्ने भर देता ।

बिना ज़हरत क बमानी वाला अइमा नाक पर चढ़ाता और स्टाक एक्सचेंज समाचार पढ़ता । अपने मातहतों के साथ भीठा व्यवहार करता ।

ईवान पेत्रोविच ज़रा आपको तीरीदा की छोट तो दिखसा दीजिये कष्ट कीजिये

उसकी पत्नी उसे येमेल्यान कॉन्स्तैतिनोविच कहती अपने उसे पापा कहते और दूकान पर काम करने वाले सरकार'

खर सा गाँव के दो पादरियो की संगेद प्लातोनीविच से बिलकुल मही पटती । उनके नाम थे पादर बिसारियन और फ़ादर पानक्राती । उनका उमरसे बहुत दिनों का भगडा चला आ रहा था । वस उन दोनों की घ्रापस में भी कोई खास नहीं पटती थी । फ़ादर पानक्राती सड़ाना तथा पढ्यत्रकारी था । वह अपने पढ़ोसियों के लिए मुसीबतें पदा करने में बड़ा चतुर था । फ़ादर बिसारियन स्वभाव से मिसनसार था । वह अपने घर की मालकिन उकड़नी महिला के साथ रहता और एकान्त पसन्द करता था । पादर पानक्राती के लिए उसके हृदय में रती भर भी

स्थान नहीं था क्योंकि पानक्राती म बड़ा भ्रह्कार था । उसकी बातों में परेव होता था ।

मध्यापक बालान्दा के प्रतिरिक्त सबक ही घर के मकान थे । मोखोव का नीला पुता हुभा मकान चौक में था । सामने खोव क बीबा-बीब उसकी दूकान थी । दरवाजों म चीश जड थे और साइनबोर्डों के रंग लड चुके थे । दूकान से लग सम्बे गैड क नीचे तहखाना था । इससे सी गड प्राग थी गिरजे के हात की हट की चहारदीवारी । गिरजा खुद अपनी मेह रावदार छत के कारण पक हरे प्याज-सा लगता था । गिरज के पीछे थी स्कूल की सफ़्तों से पुती दीवारें और दो सुन्दर मकान । एक था नीले पेंट से रंगी बाढीबाना फादर पानक्राती का घर दूसरा था फादर बिषा रियन का भूरा-सा मकान । इसका बारजा बीडा था । भूरा रंग इसलिए कराया गया था कि मकान सबसे भलग भमके । उसके बाद था एक दो मजिला मकान फिर डाकखाना फिर लपरैला की छानियों और सोहे की छतोंवाले बरजाको के मकान और सबसे भन्त में मिल का डलवा हिस्सा । मिल की छत क जग-लग टोन के मुठे दूर से ही नजर घात ।

गाँव में रहनेवाले अपनी खिडकियों की दोहरी चटखनियों भन्दर से घडाए सारी दुनिया से कटे रहते । कहीं घाने-जाने की बात भलग है नहीं ता घाम हाते ही लोग दरवाज भन्दर से भन्द कर सेते और जजीरें खोलकर कुत्तों की हावों में छोड देते । फिर शान्ति भग करती सिफ चौकीदार की भारी घावाज ।

२

एक दिन भगस्त के भन्तिम सप्ताह में भीत्का कोरनूवोव की बीजा माम्बोवा नदी के किनार भकस्मात ही मिल गई । वह पार से भाव खबर भपर भाया था और अपनी नाव को बाँध ही रहा था कि एक रंगी-चोंगी नाव उस पार को चीरकर घाती खिसाई दी । इस हल्की नाव को विद्यार्थी बोमारिडिकन छे रहा था । उसने सफ़ाचट सिर पर पसीना भमक रहा था और उसके मापे की नसें तनी हुई थीं ।

पहन वो नाव में बैठी सीजा का भीत्का पहचान नहीं सकी क्योंकि

ले पलो मीत्का धकेले तुम कुछ न कर पाओगे

'नहीं तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। मिछई ने सम्झी साँस भरी।

सारी तयारी पूरी करने के बाद वह पिछवाड़े के कमरे में गया। वहाँ बाबा प्रीशका नाक पर साँव की कमानियों का धन्मा चढ़ाए खिड़की के पास बठा बाइबिल पढ़ता मिसा।

बीसट पर झुककर मीत्का बोला बाबा।

बूढ ने धाँसे ऊपर की क्यों ?

'पहला मुर्गा बाँग दे कि तुम मुझे जगा देना।

'इतने तडक कहाँ जाओगे ?

मछली पकड़न।

मछलियों का गिवार बाबा की कमजोरी थी किन्तु उसने मीत्का का धीर डग से विरोध करने का निश्चय किया।

'तुम्हारे पापा कह रहे थे कि पटसन की कुटाई बस होनी है। खराब करने को समय नहीं है।

मीत्का दरवाजा स हटा धीर उसने पतरा बदला ठीक कोई बात नहीं। मैं तो तुम्हारे लिए मछलियाँ मारने की सोच रहा था पर जब पटसन फुटनी है तो मैं नहीं आऊंगा।

सुन तो जाता कहाँ है ? बूढा धौंका धीर उसने अपना धन्मा उतारा।

मैं तुम्हारे पापा से कह दूँगा। तुम चले जाना। बस बुध है। मेरा एक टुकड़ा मछली स काम बन जाएगा। सो मैं तुम्हें जगा दूँगा आधो न अब दाँत क्या निकाल रह हा ?

भाधी रात होने पर एक हाथ से अपना धारीदार पाजामे को ऊपर उठाए धीर दूसरे से छठी पकड़े बूढा काँपती हुई उजली परछाई की भाँति सीढियों से नीचे उतरा हाता पारकर खलिहान में जा पहुँचा धीर मीत्का को जगाने लगा। नीरका कम्वल पर साँ रहा था। प्रीशका ने उसको छठी चुमोयी किन्तु मीत्का नहीं जगा। उसने फिर छठी चुमोई धीर धीरे से बाता मीत्का मीत्का धो मीत्का।

किन्तु मीत्का जगा नहीं। उसने केवल लम्बी साँस ली धीर अपनी टाँगें सिकोड ली। धीरका धधीर हो उठा धीर छठी को उसके पेट में

जुझोने लगा। मोल्का न जागकर प्रकस्मात् ही छुड़ो का सिरा पकड़ लिया।

बिलकुल धाढे दबकर सोता है। बूझा मुनमुनापा।

टुप भी रहो वावा चकार बड़बड़ाओ नहीं। निदासे स्वर में अपने जूते टटोलते हुए मोल्का बोला। वह हात सज्जुपचाप निजलकर थोक की ओर बना। चौकीदार दूकान की सीढ़ियों पर सोता मिला। उसने अपने कौत्तर की भट की आल नाक तक खींच रखी थी। मोल्का मोखावक मकान पर पहुँचा मछली पकड़ने की वसी एक जगह रखी और कुत्ते के दर स बरमाती म गया। यहाँ उसने लोहे की ठडी कुडी बजाई। दरवाजा बिलकुल लगा था। उसने बरामत्तक जगले का उछलकर पार किया और वह खिडकी के बाहरी पल्लक पास जा पहुँचा। खिडकी आधी बन्द थी। धीरे स नरी दरार स लीजाक नीद म डूब वदन की गरमाहट की गमक घाई और धाय ही धबीव डग की भीनी भानी इन की मुग्ध।

एलिजाबता सगेयेवना।

मोल्का को लगा कि मैंने बहुत जोर से आवाज दी है। वह प्रतीक्षा करने लगा पर कोई घाट्ट न हुई। उसन सोचा—यह कोई दूसरी खिडकी तो नहीं है! कहीं मोखाव यहाँ मो रहा हा तो वह मोली से उडा देगा।

एलिजाबता सगेयेवना मछला पकड़ने चल रही हो ?

यदि वह गुलठ खिडकी पर होता तो इसम शक नहीं कि इस समय कोई दूसरी हो मछली पकड़ा जाती।

उठ रही हो कि नहीं ? उसने क्रीव म कहा और दरार म स घन्दर भिका।

कोन है ? हल्के धीम स्वर ने आश्चर्य भेगा।

मैं हूँ कोरानोव। मछला पकड़ने चल रही हो ?

ओह ! बस अभी घाई।

घन्दर से हिसने-डनने की आवाज घाई। उसकी निदासी वाली में पुनीना महकता लगा। मोल्का ने दसा कोई सज्जुद थोड़ कमरे में इपर उपर सरसरा रहो है। साने क कमरे की गंध उसके नपुनों म भरो।

ल चलो मीत्का' अकेले तम कुछ न कर पाओगे

'नहीं तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। मिल्ई ने लम्बी साँस भरी।

सारी तयारी पूरी करने के बाद वह पिछवाड़े के कमरे में गया। वहाँ बाबा ग्रीष्मका नाक पर ताँबे की कमानियों का चरमा चढ़ाए लिटकी के पास बैठा 'बाइबिल' पढ़ता मिला।

घीसट पर झुककर मीत्का बोला बाबा !

बूढ़े ने घाँसें ऊपर की क्यों ?

'पहला मुर्गा बाँग दे कि तुम मुझे जगा देना।

'इतने तबक कहाँ जाओगे ?

मछली पकड़ने।

मछलियों का गि़वार बाबा की कमजोरी थी किन्तु उसने मीत्का का और ढग से विरोध करने का निश्चय किया।

'तुम्हारे पापा कह रहे थे कि पटसन की छुटाई बल होनी है। खराब करने को समय नहीं है।

मीत्का दरवाज़ स हटा और उसने पत्रा बदला ठीक कोई बात नहीं। मैं तो तुम्हारे लिए मछलियाँ लाने की सोच रहा था पर जब पटसन फुटनी है तो मैं नहीं जाऊँगा।

सुन तो जाता कहाँ है ? बूढ़ा घोंका और उसने अपना चश्मा उतारा।

मैं तुम्हारे पापा से कहूँ दूँगा। तुम चले जाना। बस बुध है। मरा एक टुकड़ा मछली से काम चल जाएगा। तो मैं तुम्हें जगा दूँगा जाओ न अब दाँत नया निकाल रहे हो ?

अधी रात होने पर एक हाथ से अपना धारीदार पाजामे का ऊपर उठाए और दूसरे से छड़ी पकड़े बूढ़ा काँपती हुई उजली परछाई की भाँति सीन्धियों से नीचे उतरा हाता पारकर सलिहान में जा पहुँचा और मीत्का को जगाने लगा। मीत्का कम्बल पर सो रहा था। ग्रीष्मका ने उसको छड़ी छुमोपी किन्तु मीत्का नहीं जगा। उसने फिर छड़ी चुभोई और धीरे से बोला मीत्का मीत्का धो मीत्का !

किन्तु मीत्का जगा नहीं। उसने बेचल लम्बी साँस भी और अपनी टाँगें सिकोड़ ली। घोंका अधीर हो उठा और छड़ी को उसके पेट में

चुभोन लगा। मात्का ने जागकर धरस्मात ही छड़ी का सिरा पकड़ लिया।

बिलकुल घाटे बचकर सोता है ! बूझा बुतभुनाया।

धुप भी रही बाबा बंकार बहबडाभो नहीं। मिंदासे स्वरमें धपन जूते टटोलत हुए भीत्का बीला। वह हास से चुपचाप निकलकर चौक की ओर बढ़ा। धौकीदार दूकान की सीढियों पर सोता मिला। उसने अपने कानर की भेड़ की लाल नाक तक खींच रखी थी। भीत्का मोखोव क मकान पर पहुँचा मछली पकड़ने की वसी एक जगह रली और कुर्तों के दर से धरमाती म गया। यहाँ उसने सोहे को ठडी कूडी बजाई। दरवाजा बिलकुल लगा पा। उसने बरामदे क जगले को उधलकर पार किया और वह खिडकी के बाहरी पन्ल क पास जा पहुँचा। खिडकी घाघो बन्द थी। धौधरे स भरी दरार स लीजा क नीद म डूब बदन की गरमाहट की गमक धाई और साय ही धजीव डग की भोनी भानी इत्र की सुगंध ;
एलिजावेता सगैयेवना !

भीत्का को लगा कि मैंने बहुत जोर मे आवाज दी है। वह प्रतीक्षा करने लगा पर कोई ध्राहट न हुई। उसने सोचा—यह कोई दूसरी खिडकी तो नहीं है। वही मोखाव यहाँ सो रहा हा तो वह गोली स उडा देगा।

‘एलिजावेता सगैयेवना मछली पकड़ने चल रही हो ?’

यदि वह गलत खिडकी पर होता तो इसमें शक नहा कि इस समय कोई दूसरी ही मछली पकड़ी जाती।

उठ रहो हो कि नहीं ? उसने क्रोध म कहा धीर दरार म से धन्दर भाना।

कीन है ? हल्के धीमे स्वर ने अधकार भेदा।

मैं हूँ कीरतूनीव। मछली पकड़ने चल रही हो ?

सोह ! बस धभी धाई।

धन्दर से हिनने-डसनकी आवाज धाई। उसकी निंदागी भागी में पुनीता महकता लगा। मात्का ने देखा कोई सप्रद भीज कमरे म धधर उधर सरसरा रही है। साने क कमरे की गंध उगक मधुनों ध धरी।

उसने मन ही मन सोचा— इस ठंडक में मछली मारने से तो कहा अच्छा होता कि इसके माय आराम से सो जाता। थोड़ी ही देर में चेहरे पर सफ़राम्मात बाँधे लीजा मुसकराती हुई खिडकी पर आई।

'इधर ही से आ रही हूँ। अपना हाथ दो। उसका हाथ पकड़ कर एलिजाबेता ने उसकी आँखों में आँखें डाली।

मुझे बहुत देर तो नहीं लगी न ?

कोई बात नहीं हम लोग वक्त से पहुँच जायेंगे।

वे दोनों दोन के किनारे की ओर बड़े। लीजा ने नींद से सूजी अपनी आँखें गुलाबी हूँसे स मलीं। रात में नदी में पानी बड़ आया था और शाम को जो नाव किनारे के पास बँधी छोड़ दी गई थी वह कुछ दूर पर सहरोँ के ऊपर सहरा रही थी।

लीजा ने दूरी का अन्दाजा लगाया आह भरी और बोनी 'मुझे जूते उतारने पड़ेंगे।

मैं गोद में उठा लूँगा तुम्हें। भीरका ने सुझाव दिया।

'नहीं मैं जूते उतारे सती हूँ।

'तुम्हें गाद में से सेना ब्यादा आसान होगा।

नहीं नहीं इसकी जरूरत नहीं। लीजा ने परेगानी से कहा।

आगे तक किये बिना भीरका ने उसकी टाँगों को अपने बाएँ हाथ से आसानी से साध लिया और पानी में घुस गया। लीजा ने अनिच्छा से उसकी मजबूत गदन कसकर पकड़ ली और चुपचाप मुसकराती रही।

आग मीत्का गाँव की भीरतों के कपड़े घोने के पाट से ठोकर खाकर लड़खड़ा गया और इस तरह एक घुम्बन बुन उठा। लीजा ने गहरी साँस ली और अपने होठ उसने सल्ल हाठों पर जमा दिए। इस तरह वह नाव से दो कदम दूर ठिठक रहा। ठंडा पानी उसके जूतों के पास चक्कर लगाने लगा तो उसका पाँव ठंडक अनुभव करने लगे।

उसने नाव खोलकर दबेली बूदकर उसमें जा बठा और सड़े सड़े नाव चलाने लगा। पानी पिछले हिस्से के नीचे कस-कस करने और आँसू बहाने लगा। नौका धीमे धीमे नदी पार करन लगी। पँदे में पड़ी बसियाँ रह रहकर उधलने और आवाज करने लगीं। तुम मुझे ले कहाँ जा रहे

हो ? सीजा ने पीछे की ओर एक निगाह डालत हुए पूछा ।

उस पार ।

उस देर बाद नाव का नीचे का हिस्सा कनडा से टकराया । बिना पूछे ही उसने लटकी का गोद में उठाया और हाथन भाड़िया की मार बड़ा । एतिजायता न भीरका का दाँत से काटा उसका चेहरा नोचा एकाध बार हल्की धींखे मारीं और फिर जब उस अपने सारी ताकत खरम मगी तब वह ग पही पर भाँलों में धाँसू नहीं भाये ।

जब व लौटे तब लगभग नौ का समय था । शाममान में गुलाबी पीली घुघ छा रही थी । जहरो का भ्रमभारत हुआ के भ्रमोरे नदी पर नाव रहे थे । नाव सहरोँ पर नहराईं ता ठहा फेत सीजा के चेहरे भीहो और बालों पर जा उछता । उसने अपने मयभीत नेप बन्द कर लिये और नदी में भा गिरे फूम को बेचनी से एँठने लगी । भीरका नाव खेता रहा पर उसने उससे धाँखें नहीं मिलाइ । एक बाप और एक प्रीम मछली उसका पाँवों के पास पही रही । उनका मुँह मोत से खुले रहे ।

भीरका के चेहरे पर जितनी अपराध की-सी भावना की छाप रही, उतनी ही सत्ताप की ओर उतनी ही चिन्ता की ।

मैं तुम्हें समझोतीव के घाट पर ले चलूँगा । वहाँ से तुम्हारा घर पास पड़ेगा । नाव को मोड़ते हुए भीरका ने कहा ।

'ठीक है ।' सीजा ने धीरे से जवाब दिया ।

किनारे के धूल से नहाए सरपत के बाढ़ हुआ की गर्मी से हाँफ रहे थे और हुआ को जत हुए चिरायते की बूम भर रहे थे । मूरजमुली के फूलों की भारी गहर टोपियों पर गौरवों ने कहीं-कहीं पाके मार दी थीं । वे बूम गए थे और उनके बीच जहाँ-तहाँ बिसडे पडे थे । नई लगी हरी पास से भरे बरागाह भरकती हो रहे थे । पोहों के बड़े-बड़े दुलती भाइ रहे थे । गम दगिणी हुआ उनके गल में बधी घटियों की गूँब से भरी हँसी अपने साथ उड़ाए फिर रही थी ।

ऐसे में सीजा नाव से उतरने लगी तो भीरका ने एक मछली उसका ओर बड़ाई और बोला यह रहा तुम्हारे हिस्से का गिकार ।

उसने आश्चर्य में भरनी भीहँ उठाइ किन्तु मछली ले ली— 'मच्छ',

तो मैं बनी ।

नयुनों म फँसी एक पतली टहनी म भूतती हुई मछनी को साथे वह उदास मन स मुझ । उसकी सारी हँसी-खुशा हवा हा गई थी हायन की झट्टियों में धुट गई थी ।

सीजा !

अपने मापे पर गुस्सा और ताज्जुब के पडे बल साथे वह मुठी । पास घाई तो मीत्वा अपनी परेगानी पर आप खीक उठा ।

हमस सापरवाही हो गई तुम्हारे स्कट म पीछे एक दाग पड गया है दाग है छोटा-सा

लाजा क तन-बदन म प्राग लग गयो । दणभर चुप रहन क बाद मीत्वा फिर बोला पीछे क रास्ते से जाओ ।

चाहे जिधर स होकर जाऊँ चीक के बीच से तो गुजरना ही पड़ेगा मैं तो अपना काला स्कट पहनकर भाना चाहता थी । उसने दुखमरे स्वर म कहा और दूँ और नफरत से भरी निगाहों से मीत्वा की प्रार देखा ।

तो ठहरो मैं इस पत्ती से थोडा हरा कर दूँ । मीत्वा नसहज भाव से कहा था किन्तु उसे आश्चय हुआ इस बीच सीजा की घाँसे छसछला घाई थी ।

५

गर्मी क मन्द पवन की सरसराहट की तरह सारे गाँव म खबर फल गई सेगेंड प्लातोनोविच की बटी के साथ मीत्वा कारखानाव सारी रात घायब रहा है । औरतें मुबह अपने डार पहुँचाने जाती स कुर्मी की जगत क पास खडी होती और नदी के किनारे पाट पर कपडे धोती तो बस यही खर्बा करतीं ।

तम्हें ता पता ही है कि सडकी की माँ तो है नहीं ।

उसके वाप को काम स साँस नहीं मिनती और सीतेली माँ को उसकी खोज-खबर की जरूरत ही क्या !

“शौकीदार कह रहा था कि उसने घायी रात को एक आदमी को

घासिर वाला लिटकी खटखटात हुए दसा । पहल ता उत्तन साचा कि
बाई मँघ लगा रहा है । बचारा दोहा दोहा घाया तो दसा कि सानने
खडा है भीत्सा ।'

भगवान ही जान कि भाजनल की लढकियाँ क्या करन पर उतारू
है !'

' भीत्सा ने मरे निकिता स कहा है कि वह उमस शादी कर मेगा ।

पहल जानर मुँह घा घाय नहीं !

सुना है कि भीत्सा न उधरदस्तो की थी ।

किसी न कहा और तुमन यकीन कर लिया '

प्रप्रवाह के पन्ध सग । वह प्म सडक स उत्त मडक और उस मडक
स इन सडक पहुँची । होते होत सडकी क नाम पर इस तरह कालिख
पुस गई जम बाला कोलतार साफ़-सफ़द फाटक पर पुत जाता है ।

हाउ हाउ बाम माखोव के भी वानों तक पहुँची । वह ता जस रौन
उठा । दा दिन तक न वह दूकान पर नखर भाया और न मिल म । इस
बीष नीच रहन बाल नीवरों का भी निगाहों के धाग वह मिक्र खान के
समय पढा ।

तीसरे दिन उत्तन अपनी दासकी (छुना गादी) में चिनकबरा भूरा
स्टैमियन पुतवाया और जिला-केन्द्र गया । रास्त म जा भी
करत्राक मिसा उसका नटते-नटत अभिवादन किया । दासकी क पाछे थी
मुनहरी बानिदा स चमचमाती हुई गाडी जिसम दो बाल पाडे जुठ प ।
येमेल्यान नाम का कोधवान हमगा पाप्प घूमना रहता था और यह पाप्प
उसकी सफ़्ट पडती दाडी क साथ हमगा-हमगा को जुड़ गया था । सा
उसने रेगमो रासों खीची और थोड बड बल । काचवान क पाछे
एनिबावेता बठी थी । वह एकदम पीती पढी हुई थी । उसने घुटनों पर
एक हल्का-सा मूटकस रखा हुआ था और उसकी मुसकान म उदासी थी ।
दरवाजे पर दस्ताना हिलाकर उसने अपने भाई ब्लादीमीर तथा अपनी
सौतेली माँ का अभिवादन किया ।

अकस्मात ही दूकान स पन्तली सगडाता हुआ निकला । उसने सवारी
देसी ता वह टिटका और हाउ क जमादार निकिता स पूछ बटा—

छोटी मालकिन कहाँ जा रही हैं ?

मास्का स्फूत म पन्ने ।

अगले दिन एक ऐसी घटना हुई जो नदी के किनारे कुम्भो के पास दोरो की चराई के समय एक भरसक चर्चा का प्रमुख विषय बनी रही । दिन ढलने से थोड़ा पहल (घरवाह पंगुर्घों का चराकर मदान से लीटे कि) मोस्का सेगेंद प्लातानोविच से मिलने उसका घर गया । शाम को वह इसलिए गया कि साग नहीं मिलें । और वह जबल मस-मुसाकात के लिए नहीं गया बल्कि वह गया मोखाव की पुत्री लीजा से अपनी शादी की बात पक्की करने ।

वह लीजा से शायद ही मिला था । आखिरी मुसाकात के समय उनका बीच की बातचीत कुछ यो खली थी—

लीजा तुम मुझसे शादी करोगी ?

बेवकूफ हो तुम !

मैं तुम्हारी चिन्ता करूँगा तुम्हें प्यार करूँगा । हमार यहाँ नाम करने को नौकर हैं । तुम लिबकी पर बठना और अपनी कितायें पढ़ना ।

तुम्हारी अबल खराब है !

मोस्का को बुरा लगा । उसने आगे और कुछ नहीं कहा । उस दिन शाम को वह जल्दी ही घर लौट आया और सुबह होते-न-होते अपने पिता को आश्चर्य म डालते हुए उसने घोपणा की 'पापा मेरी शादी कर दो ।

बेभवली की बातें नहीं करते । मिरोन ने उत्तर दिया ।

सब पापा मैं हूँसी नहीं कर रहा ।

ऐसी अल्दी क्या है ? उस पगसी मार्का के पीछे दीवाने हो गए हो क्या ?

'अध्यर्षों को सेगेंद प्लातोनीविच के पास भेज दो ।

मिरोन प्रगोरीयेविच न मोचीगीरी के अपन धौजारों को एक और रखा और मरम्मत के लिए चाये साज को एक और । हूँसी का ठहाका सगात हुए बोला आज कुछ प्यादा डाल आए हो बेटा !

किंगु मी ६ के दिन म प्राग यी । वह मरती बात पर झड़ा रहा ।

घरे गये, सेगेंड प्लातीनोविच की एक लाख रुबल से कहीं ज्यादा की हैमियत है। वह ता है क्यापारी और तू क्या है ? निकन जा यहाँ से नहीं तो मैं इस पट्ट से तेरी खमड़ी उधेड झालूगा।

हमारे पास बलों की बारह जोड़ियाँ है और इतनी सारी उमीन है। फिर वह देहाती मुझिक है और हम बज्जाक हैं।

हवा हो यहाँ से ! मिरोन ने सहनी से कहा।

मीत्का को घपने से सहानुभूति रखने वाला कबल एक मनुष्य मिला। वह था उसका बाबा। वूड न मीत्का के पक्ष में मिरोन का लाना चाहता।

'मिरोन ! बूडा ग्रीदका बोला 'तुम राडी क्यों नहा हा जाठ ? जब सडके ने ठान ही भी है तो

'पापा तुम बच्चे हो। भगवान कसम निरे बच्चे हो ! मीत्का तो बदनूफ है, लेकिन तुम '

'बकवास बन्द करो !' ग्रीदका ने उमीन पर छड़ी पटकत हुए कहा 'क्या हम उसका हैसियत के लायक नहीं ? वह तो भमण्ड से तिर घानकर धलगा कि उसको लडकी का सम्बन्ध एक बज्जाक से ही रहा है। वह तो हमारा बात मानेगा और खगो-खगी मानेगा। इधर के गाँव गबड के इलाकों में कौन नहीं जानता हमको ? हम सतिहर मजदूर नहीं जमींदार हैं। मिरोन आधो उसक पास और कहो कि वह घपनी मिल हमको दहेज में दे दे।

मिरोन फिर घागबबूसा हो उठा और उठकर घहाते में चला गया। इसलिये मीत्का ने सायकाल तक प्रतीक्षा करने के बाद फिर खुद मीत्का के पास जाने का निश्चय किया। वह जानता था कि मेरे पिता का हठ एम्न-बूडा की भाँति हड है—उसे मुकाया तो जा सकता है किन्तु ठाँड़ा नहीं आ सकता। उसमें मायापन्थी करना श्यम है।

मीत्का के सामने घाम दरवाज तक तो वह सीटा बजाता गया पर फिर उसको हिम्मत जवाब देने लगी। वह पहल तो हिचका परन्तु फिर हाथा पार कर बगम के द्वार पर गया। सीटियों पर उतने कसफगर कड फडात ऐभनवामी नौरानी से पूछा 'मातिक घर पर है ?

थाय पी रहे हैं ठहरो ।

मीस्का बठकर इन्तजार करने लगा । उसने एक सिगरेट जसाई फँकी और बचे हुए टुकड़े को जमीन पर पटक पैंरों से कुचस दिया । जल्दी ही अपनी बास्केट के ऊपर से रोटी का चूरा झाड़ता मोखोव बाहर आया । मीस्का को देखते ही उसके माथे पर बस पड़ गए किन्तु बोला धन्दर भागो ।

मीस्का मोखोव के ठडे निजी कमरे में घुसा । कमरे से बिताबों और तम्बाकू की महक-सी आ रही थी । मीस्का ने अनुभव किया कि जो हिम्मत सँजोए मैं यहाँ तक आया था वह तो खयोशी पर ही खत्म हो गई है । मोखोव अपनी मेज के पास गया और एडिया के बल घूमा कहो ! अपनी प्रँगुलिया से वह पीठ पीछे के मेज के किनारे को खरौंचने लगा ।

मैं यह जानने के लिए आया हूँ कि मोखोव की कटार से पानी आँखों में आँखें डालते ही मीस्का भय से काँप गया क्या आप एसिजाबेता की शादी मुकम्मल कर सकेंगे ? दुख गुस्त और डर के कारण उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें इस तरह झलक आईं जैसे अकाल के अमाने में मोस की बूँदें झलकती हैं ।

मोखाव की बायीं भों काँपी और ऊपर का होंठ मसूड़ों से भी ऊपर उठ आया । उसने अपनी गदन प्राग निकाली और पूरा शरीर प्राग की ओर झुकाया ।

क्या ? क्या कहा ? बदमाश कहीं ना ! निकल यहाँ से ! मैं तुम्हें घसीटकर अतामान के पास ले आऊँगा सूअर का बच्चा !

मोखोव के चिल्लान की आवाज सुन मीस्का की हिम्मत जाग उठी ।

इसे अपना न समझिए ! मैं तो सिर्फ अपनी गसती सुधारना चाहता था ।

क्रोध से लाल आँखें नचाकर मोखोव ने लोहे की भारी राखदानी मीस्का के पाँवों में फँक मारी । वह उछलकर उसके ही घुटने पर आ लगी । उसने पत्थर बनकर वह दब सहा और सींक से दाँत पीसते हुए

चीखकर बाला, जैसी तुम्हारी इच्छा संगई प्लातानोविच जसी तुम्हारी इच्छा। लकिन मेरा मतलब ता यह था कि अब कौन शादी करेगा उसके साथ? मैंने सोचा था कि मैं उस इस बदनामी से बचा लू। लकिन अब किसी का बाटा रोटी पुत्ता भी तो नहीं छूता।

भीगे हुए श्माल से हाठ दबाए मोखाव मात्का के पाद्य पीछे चला। उसने सदर-दरवाजा का राम्ता बन्द कर दिया तो भीत्का हात को धोर दोडा। यहाँ मालिक को यमेल्यान नामक कोचवान को बेवस इगित करना पडा। भीत्का फाटक का कधी घटखनी से जूम्य ही था कि खलिहान के कोने से जजीर मुक्त चार कुत्त उमरे धोर किसी घजनबी को देखत ही हाता पारकर उस पर दूट पडे। संगई प्लातानोविच य कुत्त नीरनी नोवगोरद के मल से लाया था। एक साल में ही घुंघराल काल बालों वाल पिल्ले पूरे कुद के हो गए थे। पहल उन्होंने हात से गुजरनेवाली धोरता के स्नट खींचे फिर उन्हें घसीटकर जमीन पर घसीटा धोर परों से दाँत गहाए। फिर उन्होंने फादर पानकाली के बछेड धोर घन्योपकिन के दो मूषर मार डाल तो मालिक ने उन्हें जजीर से जनढकर रखना शुरू किया। अब वे बेवस रात ना छोड जात। दिन में छाड जाते भवल एक बार—बसन्त में—जोडा रखन के लिए। सा भीत्का को पीछे मुडकर दमने का भी ममय नहीं मिला कि सबसे धागेवाला कुत्ता उसक कर्षों पर चढ़ गया धोर उमने उसको जाकिट में दाँत गहा दिए। चारों ने मिलकर उसक कपड चीर-चीर कर दिए धोर कई स्थानों पर काट लाया। भीत्का ने अपनी टाँगों को बचान का प्रयत्न करत हुए उन्हें हाथों से धकता। उसने देखा कि पाइप से चिनगारियाँ उडात हुए यमेल्यान ने रसोई में घुसकर घन्दर से निवाड बन्द कर लिए।

संगई प्लातानोविच कु न पाइप से पीठ सटाए सीनिया पर मुटिठयाँ भीच सटा रहा। भीत्का ने जस-तस दरवाजा खोला धोर खून से लपप घपनी टाँगों से चिपटे कुत्तों को बाहर खींच लाया। एक को ता गदन पकड़कर उमने मरोड़ दी धोर दूसर को उपर में निकसते हुए करवालों ने थडी कटिनाई से मारकर भगाया।

मेलेखोव परिवार में ननाल्या कामरे से खप गई। वैसे तो उसका पिता धनी था और समय यहाँ नौकर चाकर भी थे किन्तु उसने अपने बच्चों को काम करता सिखलाया था। परिश्रमी नताल्या ने अपने पति के माता पिता के हृदय जीत लिये। इलोपिना अपने बड़े लड़क की परती दार्या को मन-हो-मन नापसन्द करती थी इसलिए उमन ननाल्या को पहल दिन से ही अपनाया।

तो जा जाकर सो जा यह ! इतनी सुबह-सुबह क्यों उठ गई ? बावर्चोखाने में इधर उधर करते हुए वह स्नेह से कहती जा जाकर सो जा फिर मत कर सारा काम हो जाएगा। और नताल्या फिर सोने के कमरे में सीट आराम करने लगती।

यों पेंतेनी परेसू कामों में बहुत बठोर था किन्तु वह भी अपनी पत्नी से कहता मुनो जी नताल्या को मत जगामो। वह बस ही बहुत मेहनत करती है। घात्र उस घोदका के साथ खेत जातने जाना है। उसकी जगह दार्या को हाँकी न। वह बड़ी ही काहिल है सुरी है। जहरा पोतती है भौंहे रगती है कुविया बही की।

इस घर में उसका पहला सान है थोडा आराम कर ले नताल्या। बुदिया घ्राह भरती और अपनी मनाककत से मगी जवानी की यात्र करती।

मिगोरी धीरे धीरे नई जिन्दगी का घादी हो जाता। पर दो-तीन सप्ताह में उसे बहुत दुख और भय का अनुभव हुआ। उस सगा कि घकसीनिया की मोहब्बत का जलम अभी भरा नहीं। एक बीटा है जो कहीं रह गया है और रह रहकर टीसता है।

घादी के पास में उसने जिस भावना को यों ही भटक दिया था उसकी जड़ें खामी गहरी थीं। उसने सोचा था कि वह भूल जाएगा पर पाव भरावर रिस्तता रहा। घादी के पहले भी तो साप-साप मोसाई करते समय प्योत्र ने उससे पूछा था घोदका भय भकसीनिया का क्या होगा ?

क्यों क्या होगा उसका ?

उस छोड़ दोगे ? दिल नहीं दुखगा मुंहारा ?

मैं छाड़ दूंगा तो उस काइ दूसरा मिल जाएगा। प्रिगोरी मुसकरा दिया था।

खर तुम जानो तुम्हारा काम जान। पर शान्ति के बाद नताल्या की जिन्दगी बरबाद न करना। प्यात्र ने अपनी मछ का सिरा चबात हुए कहा।

एक-न एक दिन प्यार पुराना पढता है एक-न-एक दिन बदन का गरमी उतार पर घाती है। प्रिगोरी न हलक दग स जवाब लिया।

किन्तु हुआ ऐसा नहीं। वह यौवन क कामुक प्रेम की अग्नि में दहकता। और वहा भाग उतनी हा तबो स अपनी परना में जगाना चाहता पर परना म उय मिलनी कबस उदासीनता और व्याकुल आत्मसमपण। पारोरिक आनन्दों स नताल्या सकुचाती। यह सकीष और प्रबकचाहट उस अपनी आलसी और बजान-सी माँ स मिनी थी। पर एम भवसरा पर प्रिगोरी की अकसोनिया की तबो और खून क उबाप की याद घाती तो वह भाह भरता और कहना नताल्या तुम्हारे पिता न तुम्हें बफ स गरा हागा तुम्हारा भाषा बदन हमसा बफ बना रहता है।

और जब उसकी भेंट अकसोनिया ने होता तो अकसोनिया की आँखें गहरा उल्लो और उसके शब्द नदी क नाव क कीषड की तरह बिपक जात। वह मुसकराती

हनी प्रीका नई बीवा स कसा निम रही है ?

मख म। प्रिगोरी उत्तर में मिर हिनाता और अकसोनिया की मोह भरो चित्रवन स जल्ने-म जल्ने बचकर निकलना चाहता।

प्रत्यगत स्नीपान न अपनी परनी स समझीता कर लिया। अब वह होना कम हो जाना। एक दिन शाम का वह पर म अनात्र घासा रहा था कि बीजा अकसोनिया आघा दोनों मिलकर कोई गाना गाएँ।

भगडे क बाद ऐम घाघह का यह पहना भवसर था।

वहीं नूमा-मिट्टी मिल गह क अम्बार स पीठ सटाकर दानों बठ गए। स्नापान न एक क्रीबो गीत आरम्भ किया तो अपने गल का पुरा आर मग अकसोनिया न उसका साथ दिया।

दोनों ने खूब गाया । ऐसे ही वे अपने विवाहित जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में गाते थे । इस समय सन्धि के रंग बिग्न बादल के साथे में वे खेतों से घर लौटते । स्तीपान बाड़ी के बोझ के ऊपर जमा खान देखता । गीत पुराना लम्बा और उतना ही उदासी से भरा और वीगन होता जितनी कि स्तेपी मदान के प्रार पार जाने वाली वह सड़क । प्रकसीनिया अपने पति के उभरे हुए सीने से तिर टिकाकर स्वर मिसाती । छोटे घरभराती हुई गाड़ी खींचते । गाड़ी के बम नीचे ऊपर होते । दूर गाँव के झूठ गात मुनत ।

‘बड़ी अच्छी भाषाज पाई है स्तीपान की इस बोधी ने सचमुच बहुत अच्छा गाती है ।

‘और स्तीपान का भाषाज के भी क्या कहने हैं ! ऐसी साफ है जैसे घटी

और फिर दोनों अपनी मोपडिया के पास की कपचो मुँडेर के पास बैठकर झुबड़ घुरज को देखते तो सड़क-पार के लोग उस गीत विशेष की चर्चा करते कि वह कहाँ का है और किन लोग के कठो में बसता है ।

जो इस समय त्रिगोरी के बानों में उसी भास्ताखोव-दम्पति की भाषाजें पढ़ेची । उसने अपना प्रोसाते हुए बगल के खलिहान में प्रकसीनिया को देखा तो वह उस पहले की भाँति ही प्रसन्न और खुश मगी । पहले की तरह ही अपने प्रति विश्वास भी उसमें दीखा । ही सकता है कि यह बात समय न ही पर त्रिगोरी को ऐसा लगा ।

स्तीपान की मेलखोव-परिवार से दोनबास न थी । वह पर में काम करते हुए जब-तब अपने पथ हिलाता और प्रकसीनिया से छेड़छाड़ करता । जयाय में प्रकसीनिया मुसकरा देती और उसकी काला धाँसे पमक उठती । उसका हरा स्फट त्रिगोरी की धाँसे के सामने बराबर रहता । कोई अज्ञात शक्ति उसकी गर्दन का बार-बार घुमाती रहती और उसका मिर अपने घाप ही स्तीपान के भाँगन के हाते की ओर घूम जाता । पेन्तेसो के साम काम करती हुई नवाल्या उसकी निगाह रह रहकर पकड़ती रही और उसकी अपनी निगाह में ईर्ष्या धुलती रही । उसने पंर के चक्कर के पारों और पाड़ों को हाँकते हुए अपने भाई प्योत्र को भी

नहीं देखा । भाई उसे देख हाठों ही होठों में मुसकराता और मह बनाता रहा ।

घरती परवर क रालरो क बोझ के नीचे दबी कराहती रही । प्रिगोरी क बान झनझनाते रहे । ऐसे में उसने अपने खयालों को पकड़ने की चेष्टा की पर वह जान भी न पाया कि वे उसकी चेतना के बाहर ही गए ।

पाम-दूर के पत्तों से घासाई क साय-साय तरह-तरह की धावाओं धाता रही—घोड़े हाननेवाना की चीखें चाबुकों की सडसडाहट और घोसाई क दृमो की गडगगाहट । गाँव में फसल बट चुकी थी और सब

बहु सितम्बर की उष्णता से प्राण सींच रहा था । दोन के किनारे वह यों फँसा हुआ था जैसे किसी साँप ने सडक क किनार कुइली मार ली हो । सरपत की बाड़ेवाल हर पाम और हर कचड़ाक परिवार में खिदगी चल रही थी—रात-गात अपने ढग से दूसरो से मलग-यलग । बूढ़ प्रोन्वा की सर्दी

लग गई थी और उसक दाँतों में दर्द था । सज्जा मगदन तक हूवा मोखोब मगल में रोसा दाँत पीसता अपनी दाढी नोचता । स्तीपान क मन में प्रिगोरी के प्रति घृणा बढ़ती जाती और वह नीचे म रखाई में अपनी साहे

जसी प्रगुलियाँ गढाता । नता-या दौड़कर रोड में जाती, कड़ों पर गिर पडती और अपने टुटे हुए सुख पर धामू बहाती । क्रिस्तोनिया की धारमा उस रह रहकर कचोटती क्योंकि पर का मछड़ा मतलब निक गया था और

रकम धाराब में उठ गई थी । प्रिगोरी की प्यास बढ़ती जाती और उसके मन का दर्द रह रहकर कवटें बदलता । जब धक्कीनिया अपने पति से दुमराती तो उसके प्रति अपने मन की घृणा का समास न पाता और

प्रान्तिमों की बाढ धा जाती । दाविद की मिस से जवान मिल गया था । वह रातों रात नेव के साय गाड़ीवानों क राठ में बठा रहता । नेव की मखें घोष से असने लगती ।

ऐसान-सा करता

‘पुराने जमाने में तो बड़े दिन तक मदान में भेड़ें चराई जाती थीं । काममीकी का जमाना था वह

बाई बीच में साना

मतामान की गन्त भेड़िये की सी होती जा रही है—ऐसी मोटी

हो गई है कि मुहली नहीं है

सूअर की तरह खाता है

क्यों बाबा जाहा मगा रहे हो ? कौन सी भड की खास घोड रखी है ?

‘अब तो जिप्सी को अपना कोट बच देना चाहिए’

तुमने उस जिप्सी की कहानी सुनी है जिसने सारी रात स्तेपी में फाट दी और जिसके पास अपने को ढकने को मध्यमी पकड़ने में जान के सिवा और कुछ न रहा । और जब ठडक अन्तर्द्विया में घुसने नहीं तो उसकी नींद टूटी और आल के एक फन्द में भगुली डालकर वह अपनी माँ से बाला माँ हवा का ठडा भोंका यहाँ से आता है मैं तो समझा कि यों भी गलना है

डर है कि बफ अल्दी ही ऐसी हो जाएगी कि लोग किसल किसअकर गिरेंग

अच्छा हा कि बलो के खुरो में नालें जडवा दा

मैं उस अरफ के बेंत काटता रहा हूँ बडे अच्छे बेंत हैं ।

‘पतसून के भाग के बटन बन्द करो यदि कही पाला मार गया तो बीबी घर से बाहर निकाल देगी’

भावदेविष यह क्या सुनाई पड रहा है कि तुम कोई मामूली बल लरीद रहे हो !

मैंने तो तय किया कि नहा सुगा । अब बाल उस औरत परागा पर है । कहने लगी— न लो मैं विषवा हूँ जिसने प्राणी घर में हों उतनी पहल-महल रहती है । मैंने जवाब दिया— हो सकता है कि बेल घर में रहे तो तुम्हारे एकाध बाल-बच्चा और हो जाए ।

लोगों ने ठहाके लगाये ।

दाविद तुम रुको ! जल्दी ही इनकी गदनें घड स अलग हो जाएगी । एक कान्ति इनके लिए काफी नहीं हुई । एक बार फिर स १६ ५ आने दो हम अपना सारा हिसाब कितान कर लेंगे । हाँ हम अपना सारा हिसाब कितान कर लेंगे । वह अपनी घुटीली भगुली से घमनाला और कन्धों पर पडा कोट ठीक करता ।

इस तरह गाँव क दिन-पर दिन और रात-पर रातें बातती जातीं । मन्झाहों-पर-मन्झाह गुजरते जाते । महीनों-पर-महीने रँगन निकल जाते । हवा पहाडा पर हहराकर बुरे मौसम की चेतावनी देती और फिर धरदू क मरकती-नीनम स घमाघम करती । दान अपनी गति स बहनी रहनी—सागर का ध्यान उस अपने म भी न आता ।

४

अनुराज क अन्त म एक दिन इतवार को फ़ोत बोदोम्कोव गाडी पर सवार होकर काम म जिन क गाँव में गया । वह अपने साथ मोटी बसकों क चार जोड सता गया और उसने उन्हें बाजार में बच दिया । उसने अपनी पत्नी के लिए थोड़ी-सी सूती छीट खरीदी और घरको सौटने के लिए गाडी हॉकने ही वाला था कि एक अपरिचित व्यक्ति उसके पास आया । व्यक्ति उस इलाक़ का नहा था ।

दोषप्रदान । 'अपन काले टाप क छत्रे पर अगुलियाँ रख धमि वादन कर वह फ़ोत म बोला ।

दात्रप्रदान । फ़ोत न प्रान्मूचक दृष्टि स देखा ।

आप कहीं क हैं ?

'इपर क ही एक गाँव का हू ।

किस गाँव के हैं ?

तातारस्की का ।

अपरिचित व्यक्ति न जब स चींग का अपना मिगरेट उस निकाला और प्रान्त को एक मिगरेट दी । पूछा क्या आपका गाँव बड़ा है ?

अ-यवा । मिगरेट नहा पिऊगा । अभी अभी पो है हमारा गाँव ? हाँ हमारा गाँव काफी बड़ा है । कोई खान सो घर है ।

गिरजा है वहाँ ?

जो हाँ है ।

बाई मोहार भी है ?

की सप्टाई !

फदात म सहसा ही गरमी घा गई । उसने कनखियो म स्त्री की घोर दखा । हमार अधिकारी बहुत घुरे हैं । मैं अब नोकरो करने गया ता मैंने अपने बल बचकर तो एक घोडा सरोदा घोर वह उन्होने नापास कर दिया ।

नापास कर लिया ? स्तॉकमैन न बनावटी घररज से कहा ।

सीध सीधे ना-पास कर दिया । बोल कि टाँगें ठीक नहीं । मैंने उन्हें बहुत समझाया हर तरह समझाया । मैंने कहा— यह बडा ही कीमती स्टतिमन है । बस कदम जरा अपने ढग स रखता है । लेकिन नहीं उन्हें पास नहीं करना था । और घोडा उहाने पास नहीं किया । मैं ता बरबाद हो गया समझिए ।

बातचीत काफी मज म चलने लगी । फदोत गाडी स नीचे कूद गया घोर गाँव क जीवन के बार म खुलकर बातें करने लगा । उसने धतामान को धी भरकर कासा कि उसने घरागाह का बँटवारा सही नहीं किया । उसने पोलड के शासन की प्रशंसा की । वहाँ उसने रडीमट ने पढाव डाला था । स्तॉकमैन बराबर सिगरेट पीता घोर मुसकराता रहा । निन्तु इस बीच उसने माथे के बल्लो म काफी हलके हलके हरकत हुई जस व मन क लिए हुए विचारो क हाँक हँक रहे हो ।

वे शाम से पहुँचे ही गाँव पहुँच गए । फदोत की राय से स्तॉकमैन विधवा लुनदना क पास गया घोर उसक दो कमरे किराए पर से लिए ।

कौन घाया है तुम्हारे साथ ? फदोत पडोसिन के मकान क घाग से गुजरा ता पडोसिन ने पूछा ।

एक एजट है ।

एजिन है ?

तुम सब घरल की जड हो घोर कुछ नहीं । मैंने कहा कि वह एक एजट है । मगीनें बेवता है । कोई देखने मुनने म मज का हो तो वह मगीन मुफ्त दे देता है पर मारुवा चाची तुम्हार जसी से तो वह रकम पहले लेता है घोर मगीन बाब में देता है ।

भी भड़क जाए ।

काल्मीक और तातार सबसे पहल घाय हैं स्तनी म इसतिए उनका मजाक जरा मन्हनकर बनाया जाचो । फदोत ने बात जरा जमाकर कहा ।

इधर मिम्ब्री स्टॉरमन ऐंचा-तानी घाँसों और गज भर की जवान वाला लुकड़का क यहाँ जाकर रहा ता रात क बीतत-न-बीतते उस नकर गाँव की घोरतों की जवान कतरना की तरह चलन लगी ।

'पद्मामिन नई सुबर सुनीतुमन ?

कया इया ?

'वह काल्मीक फोन एक विन्शा का ल भाया है गाँव म ।

मबमुच ?"

मगवान दख रहा है वह विन्शी काया टोप लगाता है और उसका नाम है फोपन या "तोरुल या लेमा हो कुज

'पुसिम का घादमी ता नग है ?

नहीं घावकारी महकम का घादमा है ।

'यह सब झूठ है लोग कहत हैं कि यह पादरी पान्काठा क बट की तरह कितारें बचना है

'पागका, मर बच्चे दौडकर जा लुकका क यहाँ घोर उससे घोर से पूछ पा कि कौन है वह घात्मा ?

दौडकर जा वग' दौडकर जा

अगन गिन स्थाकमन गाँव क घतामान स मिनने गया । पयाग मानिरम्बोय को घनामान हुए यह तामरा साम था । उनन नवागन्तुक क बान पारपय को बार-बार उसट पुसटकर रमा घोर अपने बचक को दे लिया । उनन भी उसे बार-बार उसट-पुसटकर देगा । उगने घापस में हट्टी मिसाद घोर कभी क मार्जेट-नेजर इस समय क घतामान ने हाथ हिनाकर घमिक्न स्वर म बग घाप रह सकत हैं ।

नवागन्तुक न झुडकर विदा ली घोर कमरे स बाहर घा गया । फिर एक मजाक तक उसने मुदेइका क घर के बाहर कहीं ड्राम ही नही रगा । बस घन्टर म कुहाड़ीकी छटाछट मुनाई देती रही । वह बाहर क

वायर्चीखाने म धपनी वकशाप तयार करने म लगा रहा । स्त्रिया को उसके प्रति कौतूहल नहीं रहा । बस केवल बच्च ही सवारदीवारी से उषक उषककर उस नवागन्तुक को दिन भर देखते रहे ।

५

‘पवित्र कुमारी व प्रायना निवस’ से तीन दिन पहले प्रिगोरी धपनी परनी के साथ मदान म जमीन जोतने के लिए गया । पन्तली भस्वस्थ था । उनको विदा करने के लिए आंगन म सडा हुआ तो धपनी छडी पर बोझ डालकर भुवा घोर दर्द से कराह उठा । बोला दूसरी तरफ की दोनों पट्टियाँ पहने जोत बना ।

ठीक है घोर सरपत के बिनारे वाली पट्टी भी जोती जाएगी न ? प्रिगोरी न मर्राई आघाज मे बहा । उसे मछली पकटते समय सही लग गई था घोर उसने गल म रुमाल बाँध रखा था ।

‘उस पट्टी को शोहार म बाद जोत लेना । इतना ही कुछ कम नहीं है । कोई पन्हा एबड है । जाने-बीने का काफी हो जाएगा । क्यादा सासच न करा ।

प्योन घायेगा हाथ बटान ?

वह दार्या के साथ मिल जा रहा है । लोगों की भीड लगने के पहले पल मिस ठीक हो जानी चाहिए ।

इसीचिना न ताज बन्द नतास्या की जकेट की जेब में डालते हुए कहा बेल की हँवाई क लिए चाहो ता दूया को साथ ले लो ।

‘दो आदमी काफी हैं ।

तो ठीक है बटी—प्रमु यीधु तुम्हारी सहायता करें ।

धपनी पन्तली कमर का भीगे कपडों के गटठर क बोझ से मुकाए कपडे घोने क लिए दूया दोन की घोर चल दी । पास स निकसी तो उसने नताल्या को पुकारकर कहा ‘लाम जगम म सोनी का साग बहुत है । थोड़ा-सा सती घाना ।

घण्टा घब सू तो आ बातूनी बही की । दूया की धार छडी उठाते हुए पन्तली बोला ।

तीन जोड़ी बत उलट हुए हल की हाते से बाहर निकाल लाए। लोग रवाना हुए। राह में शिगोरी को खाँसी खाती रही और रह रहकर गदन में बधा अपना झमाल बह ठीक करता रहा। उसकी बगल में खाती रही नतालया। उसकी पीठ पर पडा खान की चीजों का थला जब-तब हरकत करता रहा।

मदान एक भ्रमाकूल शान्ति से जन्टा हुआ था। बजर उमान से धागे उलवा पगड़ी की दूसरी तरफ़ जमीन हलों से जोती जा रही था। झाइवर सीटा बजा रहे थे किन्तु इधर सीटी सटकर बिनारे सिफ़ बिरामत के नील भूर छाट पीये थे। तिनपतिया घाम जहाँ-तहाँ से भडोने काट-छाट दा थो। ऊपर बाँध की तरह चमकता हुआ शीमल भावाग था। भावाग में मक्की के रंग बिरंगे जान के उड़ते हुए तान-वान थे।

सेठ जोतने वालों को राह पर छोड़ प्योत्र और दारया ने मिल जान की तयारी की। प्यात्र ने गेहूँ पछोरा। दारया उस वारों में भर कर गाड़ी तक लाई। पन्तली ने घोडा पर साज बसा।

“धमी देर लगेगी ?

“नही धारहा। प्योत्र ने जवाब दिया। दिन में धाकर उहाँने देसा कि हाते में गाइया की मोड लग रही है और तराजुघा के चारा और लोग बसा है। प्योत्र ने राम दारया का धमाई और गाडा से नीचे कूद पडा। मेरी पारी देर में धायगी ? उसने नेब नामक तीन करनेवाल से पूछा।

तुम उधर जाओ।

धमी किसका काम चल रहा है ?

नम्बर घड़नीस का है।

प्योत्र अपने बोरे मान के लिए मुडाही धा कि उसने पीछे किमी को गानियाँ देत मुता—एक मोटी भरी धावाज जिस मुत्त की तरह नूँनी।

पहले तो पाडा बचकर सोता रहता है फिर अपनी पारा से पहले ही धपना काम चाहता है। निकल यहाँ से थोथोस' वहीं का। नहीं तो एक दुँगा धमी कमतर।

१ उकरनिर्दा का एक नाम—इया और बननन में म्ता।

प्योत्र ने पोढ़े की नाल याकोव का स्वर पहचाना और धूरी बात सुनने ली। दबा। तौल ने कमरे से चीख की एक धावाज घाई। फिर धाया घंस का धमना। घुंसा लाककर मारा गया था। एक दाढ़ी वाला वूदा उक्रइनी सडखडाता हूभा त्रवाजि क बाहर धाया।

मुझे मारा क्यों ? अपने गान पर हाथ रखे हुए वह चिल्लाया। मैं तेरी गदन ऐंठकर रख दूंगा।

मिकीफोर को दुहाई है ! उक्रइनी चिल्लाया।

पोढ़े की नाल याकाव शरीर से भारी भरकम, जानदार तोपघी था। उसको यह उपनाम इसलिए मिला था कि एक घाटे ने एक बार उमक गाल पर खान मार दी थी और उसकी सात का निगान उमक गाल पर दन गया था। सो वह अपनी बांह खडाता तौल के कमरे से दौडकर बाहर धाया। गुलाबी कमीज पहने एक सन्धे उक्रइनी ने पोछे से बड़ी जार म उस पर थोट की। किन्तु याकोव लडखडाया नहीं।

भाइयो ! य मोग बरजाको पर वार कर रहे हैं। वह चीखा।

उस समय जो भी बरजाक और उक्रइनी मिन म थे वे सभी बड़ी सख्या म भागे धले धाये। मिस के खाम फाटक के पास भिडन्त शुरू हो गया। एक-दूसरे से गु पनेवासो के दबाव से फाटक चरमरा उठा। प्योत्र ने अपनी धोरा पटक दिया और इस हंगाम की धोर बदा। गाश पर सडी दार्या ने देखा कि दूसरो का एक धोर दबनता वह भीड क मन्दर घंमता धला जा रहा है। वह यह दख कराह उठो कि वह मिल की दीवार से टकराकर गिर गया और लोगो क पाँवी-खले धा गया।

मीरवा कोरदूनोव मगोनरूम से निकलकर मागता हुआ धाया। सोहे का एक डडा उसने हाथ म नाव रहा था। जिस उक्रइनी ने याकोव पर पीछे से वार किया था वह भीड म बाहर निकला। उमवी एक फटी गुलाबी बांह पीछे इस तरह फरफटाती रही जैसे किसी पक्षी का टूटा हुआ पल हा। वह बक्याँ-बक्याँ तर्जी से सबस पास की गाडी क पास गया और उसम से एक डडा यों निबाल लाया जैसे कि वह दियासलाई की कोई सीक हा। सारा हाता भारी भरई धावाजो से भर उठा। चरमराहट—घुँसों पर घुँसे—वार पर वार—घाहें—कराहें ! तीनों शामिस-बधु भागते हुए

वहाँ घा पहुँचे । जमीन पर पड़ा खाली लगाम में एक हाथ वाल भलवसई की टाँग फस गई और वह दरवाज़ पर भरसा पड़ा । वह उछलकर खड़ा हुआ और अपनी हाथविहीन घास्तीन का घपन सीने में मटाए गाड़ी के घुरे का लाँच गया । उसका मार्च मार्टिन का पाज़ामा मोड़ों से बाहर निकल आया । वह उस मार्चों में डालने को मुका किन्तु मिन का हाहल्ला अपनी सभी सीमाएँ पार कर गया । मार्टिन तनरर सीधा हुआ और अपनी भाव्या के पीछे भागा ।

दारया गाड़ी पर खड़ी हाँपती और अपने हाथ मंगती मारा दृश्य देखता रही । उसका चारों ओर की ओरतेँ हा-हा खाने लगीं । घोड़ों ने पराना से अपने बान खड़े कर लिए और बान गाड़ियाँ से उट गए । हॉठों को चबाता पीसा पड़ा मोछाव बगल से निकला । उसकी बास्केट से टैका इभा उमरा वेट गेंद की तरह फूलता पिचकता गीखा । दारया ने देखा कि फटी बमोज़ बान उकड़नी ने मोरका की बड़े में नीचे गिराया कि मुजाविहीन भलवसई की मोह मुष्टिका पन्ते ही वह भी नटखटा गया । मारका नोरमनाव न माखीव की टाँग पर लोहे का टडा जमाया । मोछाव ने हाथ फला दिए और बकड़े की तरह रेंगता हुआ तौल के धड में पहुँचा कि लागा के परा के नीचे घा पड़ा । दारया हँसठ-हसठ लोट पीट हो गयी । उसकी नौहों की रगाई की काली पपटी हँसी से फट गई । किन्तु प्योम पर नजर पडत ही उसकी मुद्रा एकदम बदल गई । वह जस तस भीठ खीरता निकला और एक गाड़ी के नीचे पडकर खून धुकने लगा । शरया घोरती हुई उसका पास भागी । गाँव से निहाइयाँ ल-सकर बरजाक देमउ-देवते आ गए उनमें में एक ता सोह का छुरा से घाया । तौल के गड के दरवाज़ पर एक मौजवान उकड़नी पडा नजर आया । उसका सिर फूट गया था और खून की नदी-सी बह चली थी । खून से बिमटे घाल उसका बेहरे पर आ गए थे । लगा कि वह हम धानन्दमय जोवा से बिदा सरहा है ।

मेहों की तरह घेरा बाँपकर उछड़नी धीरे धीरे दूसरे दह की तरफ बढ़ । यों ता वहाँ हम ममम ऐसा खूनखरावा होता कि क्या कहिए । किन्तु सहमा ही एक बूड़ उकड़नी की एक तरकीब सून्ठ गई । उसका भरटकर

प्योत्र ने 'घोड़े की नाल याकोव का स्वर पहचाना और पूरी बात सुनने के लिए रुका। तीन के कमरे से चीख की एक आवाज आई। फिर आया घुँस का धमका। घुँसा सावकर भागा गया था। एक दाढ़ी वाला बूढ़ा उकड़नी सड़खटाता हुआ दरवाजे के बाहर आया।

मुझे मारा क्या? अपने गाल पर हाथ रक्खे हुए वह चिल्लाया। मैं तेरी गदन एँठकर रख दूँगा।

पिकीफोर की दुहाई है! उकड़नी चिल्लाया।

घोड़े की नाल' याकाव 'गरीर से भारी भरकम जानदार सापची था। उसको यह उपनाम इसलिए मिला था कि एक घोड़े ने एक बार उसका गाल पर लात मार दी थी और उसकी लात का निशान उसका गाल पर बन गया था। सो वह अपनी बाँहें चढ़ाता तीन के कमरे से दौड़कर बाहर आया। गुमाबी कमोज़ पहले एक सप्पे उकड़नी ने पीछे से बड़ी जोर से उस पर चोट की। किन्तु याकोव सड़खटाया नहीं।

भाइयो! मैं लोग बरजाको पर वार कर रहे हैं। वह चीखा।

उस समय जो भी बरजाक और उकड़नी मिल मधे थे सभी बड़ी सभ्यता से भाग चल आये। मिल के साथ फाटक के पास भिड़न्त शुरू हो गया। एक दूसरे से गुंथनेवासी के दबाव में फाटक चरमरा उठा। प्योत्र ने अपना बोट घटक दिया और इस हंगाम की ओर बढ़ा। गाड़ी पर खड़ी दारया ने देखा कि दूसरों को एक ओर धकेलता वह भीड़ के अंदर घुसता जाता जा रहा है। वह यह देखकर उठी कि वह मिल की दीवार से टकराकर गिर गया और लोगो के पाँवा-तले आ गया।

भीरक कोरगूनोव मशीनरूम से निकलकर भागता हुआ आया। लोह का एक बड़ा उसका हाथ में नाच रहा था। जिस उकड़नी ने याकोव पर पीछे से वार किया था वह भीड़ में बाहर निकला। उसकी एक फटी गुलाबी बाँह पीछे इस तरह फरफराना रही जैसे किसी पक्षी का झूटा हुआ पंख है। वह बकियाँ-बेकियाँ तलाश से सबसे पाम की गाड़ी के पाम गया और उसमें से एक बड़ा यों निवान लाया जैसे कि वह नियासलाई का कोई मीक है। सारा हाता भारी भरकंद आवाजों से भर उठा। चरमराहट—घुँसों पर घुँसे—वार पर वार—घाहें—कराहें! तीनों शामिल-बापु भागते हुए

घड़ी भा पहुँचे । जमीन पर पड़ी खाली लगाम म एब हाथ यान भलबसई की टांग फस गई और वह दरवाजे पर महरा पड़ा । वह उछलकर खड़ा हुआ और अपनी हाथविहान घास्तीन का भपन सीने स सटाए गाड़ी के धुर का लीप गया । उसक भाई मार्टिन का पाजामा मोजो से बाहर निकल आया । वह उस मोजो म डालन को भुजा किंतु मिल का हीहल्सा भपनी सभी सीमाए पार कर गया । मार्टिन तनवर सीधा हुआ और अपने भाण्या क पीछे मागा ।

दारया गाड़ी पर लड़ी हाँफनी और अपने हाथ मलती मारा हथिय देखती रही । उसक चारों ओर की घोरतें हा हा खाने लगी । घोड़ों न परंगनी स अपने कान खड़े कर लिए और बल गाड़ियो म सट गए । हॉठों को बचाता पीना पड़ा मोसाव बगल से निकला । उसकी वास्तु से डका हुआ उमरा पट गेद की तरह फूलता पिचकता खीला । दारया ने देखा कि फटी कमीठ घाल उरइनी ने भीस्का को डटे से नीच गिराया कि मुजाविहीन भसवमई की जोट मुष्टिका पहत ही वह भी सटखटा गया । भीस्का कोरगूनाद न मोसोव की टांग पर सोहे का डहा जमाया । मोसाव ने हाथ फसा दिए और नेकडे की तरह रेंगता हुआ तौल के पाह म पहुँचा कि लोगा क परों क नीच आ पड़ा । दारया हसत-हसत सोट पीट हो गयी । उसकी भीहों की रगाई की काली पपटो हसी म फट गई । किन्तु प्योन पर नजर पहत ही उसकी मुद्रा एकदम बन्न गई । वह जस-तस भीड़ बीरता निरना और एक गाड़ी क नीचे पडकर मून पूकने लगी । दारया चीखती हुई उसक पाम भागी । गाँव स निहाण्या ल-लकर करवाक देमते खते आ गए उनम से एक ता सोह का सुग ल आया । तीन के पाह क दरवाजे पर एक नौबवान उरइनी पहा नजर आया । टम्का फिर फूट गया था और खन की नगे-नी बह पली थी । मून स विमर बन उगके धररे पर आ गए प । मगा कि वह इन घानन्मक जावन न दिग ल रहा है ।

भेहों की तरह घरा बाँपकर उरइना धार धार दुन क क क यद । यों ता यहाँ इय मयय ऐसा मूनसुग्वा हुआ कि क क क । क क सहसा हा एक बूढ़ उरइनी को एक तरकद दू न । क क क

भट्टी से एक जलती लकड़ी निकाली और उस लकड़ पिस हुए अनाज क दोन की ओर दौडा। एक हजार पूड' स भी अधिक घाटा पा वही।

अम मैं आग लगा दूगा। चटखती खुवाटी फूम की छान की तरफ बढ़ाते हुए वह चीखा।

कज्जाक भय स बाँप गए और रुक गए। पुरवा न तेज भौंके आ रह थे। शेर से उठता घुम्रा उकड़नियो व दल की ओर जा रहा था। ऐस म अगर उस मूखे छप्पर म एक चिनगारी भी पहुँच जाती तो सारा गाँव जमकर राख हा जाता।

कज्जाक भुनभुन करने लगे। उनम से कुछ मिल की ओर लौटने लगे। वह उकड़नी उस जलती लकड़ी को अपने सिर व ऊपर घुमाता दहकती चिनगारियाँ बरसाता चिल्लाया 'जला दूगा जलाकर रख दूंगा नहीं तो हात व बाहर निकल जाओ !

घोड़े की नास याबाब भगड़े की जड़ सबसे पहल हाता छोटकर भागा। हमरे कज्जाको ने उसके पीछे कठार बाँध दी। उकड़नियों ने अपने घोड़े जोते जल्दा-जल्दी अपने घोड़े गाड़ियों पर लाद और पागलों की तरह घोड़े को मारते अमड की रासों नचाते हाते से बाहर निकले और गाँव म दूर चल गय।

हाते व बीच खड हो अपनी घाँसे फडकाते और गाल पुलाते हुए भुजाबिहीन अलकसई चिल्लाया कज्जाको ! घोड़े पर सवार हो जाओ !

दुश्मनो का पीछा करो ! आवाज वा उत्तर मिला।

मीत्का कोरदूनोव हाते से बाहर निकलन को समझता ही कि मिल व चारो ओर गड कज्जाको की भीड म कुछ गडवडी घुर हा गई। ठीक उसी समय काला टोप रागाए एक अपरिचित आदमी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता उनके पास आया। आग-तुक ने अपना हाथ उठाया और चीख कर कहा 'रको !

कोन हा तुम ? याकोन ने चीखत हुए पूछा ।
तुम कहाँ से फट पड ? दूसरे ने सवाल किया ।
'रुको देहातिया !

उल्लू का पट्टा ! तू किस जता रहा है दहाती ?
जाहिल मुजिब है । दा ता इसको एक खान भर की याकोव ।
'मूअर कही का !
'ठीक है निकाल लो इसका भाँखें !

शागन्तुज मुसकराया । डर उम छू भी नहा गया । उसने अपना टाप
उतारा घोर बहे सहज भाव से अपनी भौंहें पीछा । उसको मुसकराहट
मात्र से भोगा का गुम्मा ठहा पडन लगा ।

बात क्या है ? उसने तीन क गड क किनारे पड खून की घोर
अपने टोप से इशारा करत हुए पूछा ।

हम खोखोलों का मार भगा रहे थे । बुजाविहीन भयकसेई ने
जाति से उत्तर दिया ।

लकिन क्यों ?

वे पारी के मामल में बर्झमानी करना चाहते थे । एक ब्रह्म भाग
बढ़त हुए घोर हाथ के एक भटने से नाक से बहते हुए खून का दक्का
पीछते हुए याकोव ने कहा ।

'हमन पाधा मरम्मत कर दो उनकी भव नुछ दिन के याद रखेंगे
हम "

अखिरत यही है कि हमने उनका पाधा नहीं किया

'हम डर गए कि वह कहाँ भाग न लगा द

'वह तो भाग जम्हर लगा दता

'ये खाखोल बड़े ही बददिमाग होते हैं अकाल्ता घोडरोव ने
कहा ।

शागन्तुज ने घाडगाव की दिगा में अपना टोप हिलाया और पूछा
घोर धान कीन है ?

घाडरोव ने घृणा में पूरा घोर उडत हुए पूर का देखत हुए उत्तर
दिया मैं बग्डाक हूँ और तुम तुम जिप्सी हा क्यों ?

मैं और आप दोनों ही रुसी हैं।

'भूठ बालन हो ! आपको ने विचारपूवक कहा।

ससिया स ही कज्जान पदा हुए हैं। यह आप जानते हैं ? नवा गन्तुन न कहा।

घोर मैं कहता है कि कज्जान कज्जानों स पदा हुए हैं।

वहुत दिन हुए कि नवागन्तुन न समझाया जमींदारी क यहाँ ने उनक भूदास भाग आप और दान के विचार आ बस। बाद में उन्ही को कज्जान क नाम स पुनारा जाने लगा।

अपना रास्ता नापा म्यो ! अलकसेई ने अपना क्रोध पाते हुए कहा।

मूमर हमको किसान बतलाता है ! यह है कौन ?

नया धामा है ऐंची-आनी नुकेइका क यहाँ रहता है। दूसरे न कहा।

किन्तु उन्न-नियों से बदनामने का क्षण घीठ चुका था। आपस म सदाई क ऊपर उबलने कज्जान अपने अपने घर चल गय।

उस रात गाँव स कोई आठ बस्ट दूर अपनी मोटी भेड की खाल छोड़ हुए प्रिगोरी न नताल्या स कहा वान जो भी हा पर तुम अभीव घोरत हो। तुम उस चीज की तरह हो जा किसी को न ता गरमी ही पहुँचाता है घोर न ठडक ही दता है। नताल्या नाराज मत होना लकिन मैं तुम्हें प्यार नहीं करता। इस बारे म मैं कुछ नहीं कहना चाहता था लेकिन मुझे कहना पड रहा है। साफ बात है कि ऐस हमारी गाड़ी चलेगी नहीं। मुझे तुम्हारे ऊपर रहम आता है। इधर हम एक-दूसरे क कुछ पास आने लगे लकिन सब पूछोता तुम्हारे लिए मेरे दिल म कोई मोहम्बत पदा नहीं हुई। मेरा लिल बीरान है—रात क इम बीराने की तरह।

नताल्या न पहुँच के बाहर रहनेवाले सितारा स भरे आसमान को देखा अपन ऊपर उडत हुए छायावान अथभलामल बादलों की घोर देखा घोर थुप हो रही। नीलम पुल नाम एकांत म कहीं दूर पर देर से सौट सारसा ने एक-दूसरे का यो आवाज ही जस कि चाँदी की घटियाँ बज रही हों। सूखी घास से उदासी स भरी बेजान बास आई। पहाड़ी

पर किसी किसान क भलाय की भाग ने ली थी ।
 प्रिगारी तटक ही उठ पडा । उसकी भड की खास पर वक्र की तीन
 इच मोटी परत जम गई थी । सभी सभी गिरी नवारी बफ क नीलम स
 मैदान मडा हुषा था । जहाँ प्रिगारी सटा था वहीं किसी खरगोण के
 परों के निशान धमक रहे थे । लगा कि खरगोण बफ में रास्ता भटक
 गया था ।

६

उक्रइनियों क गाँव निचल यावलोनीवकी स गुरू होकर पिचहत्तर
 यस्ट की दूरी तक यानी मिलेरोवो तक फल हुए थे । वपों स भगर कोई
 कज्जाक मिलेरोवोकी सडक पर जात समय खोखोलों क सामन पड जाता
 तो वह स्वय सडक स ट्ट जाता धन्यया उस सडक स हटा दिया
 जाता । इसलिए कज्जाक जब भी रेलवे स्टेगन जात पूरा दल बना
 कर जात । तब खाखोलों स मैदान में सामना होन या गाली-गत्ती
 का डर न रहता ।

ऐ, खाखोल ! हम रास्ता दे ! मूभर कहीं का ! चाहते हा कि
 कज्जाकों की जमीन पर रहो-महो घोर हम निकलने का भा रास्ता न
 दा !

जिन उक्रइनियों की दोन पर धम पारामोनोवो क एलीवेटर तक
 धपना धनाज साना पडता था उनकी घोर भी कोई भगुली उठान सकता
 था । बबाल मगडे हो जाते क्योंकि व खोखोल प घोर इसीलिए कज्जाका
 की उनसे सहना पडता था ।

सकड़ों वप पूव किसी व्यक्ति न बडी सावधानी स कज्जाक परती
 में राष्ट्रीय फूट का बीज बो दिया था घोर वह बीज धाज इस तरह फून
 फल रहा था । जब भी कोई उक्रइन या रूस म वहाँ धाता खून खराबा
 होता घोर जमीन पर धून की नगी वह धसती ।

मिन क भगड़े के कोई दो हपते धाज जिता-धुमिस धधिकारी घोर
 एक इन्स्पक्टर गाँव म धाय । सबसे पहल पूछनाध स्टॉकमन स हुई ।
 प्रतिष्ठित कज्जाक पराने का मुञ्ज इन्स्पक्टर उसम बोला यहाँ धाने से

पहले तुम कहाँ रहते थे ?

रोस्तोव में ।

१९०७ में तुम्हें जस किसलिए हुई थी ?

गदबदी में हिस्सा लेने का कारण ।

हूँ ! तब तुम कहाँ काम करते थे ?

रेलवे मकानाप में ।

किस पद पर ?

मिस्त्री की हैसियत से ।

'तुम यहूदी तो नहीं हो ? या यहूदी हो और धर्म बदल लिया है ?

नहीं मेरी सम्झना में

मुझे तुम्हारी सम्झना से कुछ नहीं लेना देना ! तुम्हें देना निकाले की सजा दी गई थी ?

जी हाँ दी गई थी ।

अधिकारी ने अपना हाथ उठाया और होंठ बनाए ।

मैं तुम्हें राय देता हूँ कि तुम यह जिला खाली कर दो । और धीमे स्वर में बोला मैं तुम्हें यहाँ से निवासकर ही मानूँगा ।

क्यों ?

मिल पर जब भगवा हुआ था तो तुमने कज्जाकों से क्या कहा था ?

जी ।

'ठीक है जा सकते हो ।

अधिकारी जब भी प्राते वे मोखोव का मकान की अपना हेड-क्वाटर बना लेते । तो स्तॉकमन बाहर निकलकर मोखोव का बरामदे में आ गया । उसने कंधे झटक और रगे हुए दोहरे दरवाजों पर पलटकर एक नजर बासी ।

धीरे धीरे सर्दियाँ आ गईं । थोड़े दिन बाद बर्फ पियलने लगी और पशु फिर से चरागाहों में जाने लग । हफ्त भर तक धरती की सर्दियाँ हुरता

दिलगी पवन बहता रहा। चरागाह में इधर उधर हरियाली हाने लगी।
सन माइकन दिवस तक तो बक्र विघला इसक बाद फिर पाला पडा धीरे
बक्र बरसन लगी। दान क पामक बगोचों में दाटों की बक्र पर सगोचों
क परों क निगान नजर भान लग। मठकें मूनी हो यइ।

प्रय कण्ठे की घाग का घुर्मा भासमान म नीचे ही सटकता रहता।
काले कौब सडक क किनार क राख क डरोंक धारा धार मडरात रहत।

एस में गांव क लोगों की एक नभा म तय करन क लिए हुई कि
पना माहियों का कौन-कौन धीरे कहीं स बाटपा। मभा क निर्धा
रित समय म बन्त पहने हा भठों की खालें तथा घोबरकोट पहने हुए
बरडाक ग्राम प्रगासन भवन की सीटियों पर जा जमा हुए, पर ठण्ड एमी
तब धी विवग हा उहें भवन में घन्दर जाना पडा। मज क पाछे
घतामान तथा उसका कलक धीरे बगल म गांव क आदरणीय बडे-बूडों
न स्पान ग्रहण किया। उनस छोट बरडाकों का एक घलग दम बन गया।
इनमें रग विरगी दानियों वाल लाग भी रहे धीरे बिना दाड़ियों वाल
साग भी। व अपन बाटों क कौलरों के घन्दर मुंह छिपाए भापस में धीम
घाम कुछ फुमफुम करन लग। कलक अपन घनीट घणरो स कागज क
बाद कागज भरना गया। घतामान तिर उचकाकर कुछ दखता रहा।
ठिठुरन स भर कमर म लोग भापस में दाटें सा करत रहे पर बहुत रोक
घाम क साय-साय धीरे धारे।

मूला पास तो इस साल

“टीक है। चरागाह की पास तो अच्छी है, लकिन मदान में तो हर
सरक तिनपतिया हुई है।

बुडगों जगल की कटाई का क्या हाल है? गान्ठ रहो नाई

‘हाँ मैंने कहा कि एक बन्वा धीरे हो गया तो उसके लिए मु ह
वाना घाप साना हागा मुझे।

घान्न रहिय कृपया गात रहिये

ममा की कायबाती प्रारम्भ हुई। अपनी दाडी सहमान हुए घतामान
ने परिवारों क नाम म-सबर उनकी बाट में घात जगल के भाग गिनान
घुन किये

घास बृहस्पतिवार का जगल भी कटाई नहीं रख सकते। इवानतो मोलीन घसामान से भी तेज स्वर म बोला। उसने घपन निनछरे खास कान रगडे धीर तोपखाने की टोपी स मढा अपना सिर टढा किया।

क्यो नहा रख सकते ?

अब तोपची घपने कान रगड रगडकर खत्म कर दगा क्या ? किसी ने जोर से कहा ठीक है हम बलों क कान भगा देंगे इसवे इन कानो की जगह !

बृहस्पतिवार की भाधा गाँव तो सूखी घास खाने चला जाएगा। यह भी क्या बात रही

यह काम इतवार क दिन किया जा सकता है।

बुद्धुर्गो !

हो गया !

ईश्वर उसका भला करे !

बात का मजाक बनने लगा। हर धीर स धावाओं धाने लगी।

बृह मातवेई कागुलीन जीर्ण मड पर भुका धीर उसन घपनी रास के रग की चिकनी छडी न ठोमोलीन की धीर इगारा किया।

घास इन्तजार करेगी है न ! यह बात तो सब लोग मिसकर लय करेंगे। तुम बेवदूफ हो बिसकुल समझे न।

तुम्हारे पास तो दिमाग ही नहीं है खर भुजाविहीन घसनसई घोला। इस बुड कागुलीन से जमीन की एक टुकडी को लेकर उसका छ. साल से भगडा चल रहा था। अब भी हर घसन्त म वह उस वूट को मारता था हानाँकि जमीन वह बिस्ता भरघी।

खामोश मूँघर कहीं का !

अफसोस है कि तुम बहुत दूर बँठे हो मुझसे नहीं तो तुम्हारी नाक तोड़कर रख दता !” अन्नसेई ने घमकी दी।

?

बखर कले बाघो !

बाघ्या !

'अगर इनका निमाग यों ठिकाने न आए ता इहे कूनर न रखकर इनक निमाग ठठे कर दा !'

अतामान ने मेज पर जोर का घुसा मारा अगर एक मिनट तक यही शान्ति न हुई तो मैं चौकीदार का अन्दर बुला लूगा । शान्ति हाने पर वह फिर बाला जगत की कलाई बृहस्पतिवार का तडक घुम् हागी ।

'बया कहन हूँ !' 'भगवान खर करे ! ब्यायपूए भावाजे मुनाई परीं ।

हाँ एव बात घोर । अिता अतामान ने मुझे सूचना दी है " अतामान न अपना स्वर ऊँचा किया अगल इतवार का जवान लोग बिना अतामान न अपना म अपना सन आयेंग । उहे दादहर क बाद वही पहुँच जाता है ।

पन्ती प्राजापतिविव अपना सगरी टाँग का मारम की तरह साथे दरवाज क सबस पास की खिडका क सहारे खडा था । उनकी बगल में खिडकी क दाये पर बस मिरोन प्रिगारियेविव अपनी घाँवें मटकाता हुआ होंठों-की-होंठा मुमकरा रहा था । उनकी जगत में सब करजाक मडक एक-दुमरे की धार प्राय मारकर मुमकरात । उनक दल क बीच अपने गेज सिर पर अतामान राजामर का टारो लगाए अवेविव मनीमोन खडा था । उसका चहरा उम्र क अजाना अद भीमोन-मटोल तथा अन्वियों क सब की तरह सात नजर धा रहा था ।

अवेविव अतामान की साइप्रगड नना में नोकरों करपुका का घोर गायीमर का नाम नवर गीब लौग था । वह गाय क उन इने गिने लोगों में स था जिहे कि अतामान की रजिमेंट क पहन-पहन भरता किया गया था । नोकरा क जमाने में उसक साथ काई एमी अजीब पटना पटा थी कि जब स लौटा था तभी स दरवार की अचना मवायों घोर पात्मरग की अतनी बहादुरियों की अजरज मरी बहानियाँ मुनाता रहता था । पहन ता साथ उसका बाठ पर विवास करत घोर अममन स मुह कमाण सारी दास्तान का मुनवे रहत य किन्तु बाद क उहे पता अत था कि अवेविव भूग है घोर इमस बडा भूटा गीब क अभी पहा

नहीं हुआ। बस अब तो वे उस पर दिस खोलकर हँसते थे। किन्तु उस साज कहाँ! वह उसी तरह बकता रहता था। जब उम्र बढ़ने लगी तो वह अपने झूठक पकड़ जाने पर गरम होने लगा और अपनी सहायता के लिए मुट्टियाँ का प्रयोग करने लगा। अगर थोतागल सिफ हँसत रहते और कुछ नहीं कहते तो वह अपनी दास्तान बढ़ाता धसा जाता और बड़ा रस मता।

जहाँ तक उसकी खेतीयादी की बात है वह बड़ा ही ग्यावहारिक और महनती बज्जाक था। हर काम अबल स और कभी-कभी चाताकी से करता था। लकिन जब सरकारी नौकरी की बात चलती तो नोग हाप फँसाकर बठ जाते और हँसते-हसते मोट-मोट होने लगत।

तो इस समय अबदेविष कमर क बीष लडा अपनी एडियों पर नाचता रहा। बज्जाकों की भीष पर नजर डालकर उसन भारी विचार भर स्वर म कहा। जहाँ तक नौकरी की बात है अब बज्जाको की पहले-जसी बातें नहीं रही। बज्जाक ठिगने हो गए और किसी मज की दवा नहीं रह गए। लेकिन वह तिरस्कार से मुसकराया 'मैने एक बार बज्जाकों की ठठरियाँ देखी थी। घाह! बज्जाक तो उन दिनों थे।

'अबदेविष वे ठठरियाँ कहाँ से खोद लाए थे तुम? बिकने जुपड़ धनीकुदका न अपने पडोसी को कुहनियाकर कहा।

अबदेविष पवित्र-पव इतना पास है अब तो झूठ बोलने स बाज घाघो। पँन्तेसी ने अपनी नाक घवानर कहा। उसे अबदेविष की गप्प हँकने की आदत पसन्द न थी।

मरे भाई झूठ बोलने की मुझे आदत ही नहीं। अबदेविष ने फठोरता से उत्तर दिया और धनीकुदका की ओर आश्चय से देखा। उस इस तरह बपरूपी छूट रही थी जैसे कि उसे खूबी आ रही हो। मैने वे ठठरियाँ अपने साने का मजान बनाते समय देखी थीं। हम नीव खोद रहे थे कि हम एक बज्जा मिली। लगता है कि यहीं बोन के निचम किनारे पर गिरजे की बछल म बज्जागाह थी कभी।

अच्छा ता कैसी थीं वे ठठरियाँ? जाने की तयारी करते हुए

पन्तेसा ने पूछा ।

बाहें इतनी लम्बी थी ' उसने अपने दोनों हाथ फलाय और सिर इतना बड़ा था अितना कि कडाहा ।

अच्छा ही कि लडकी को तुम सष्ट पीटसबग की वह घटना सुनाओ जब तुमन एक ठाकू पकडा था ।' सिडकी क दासे स उठते हुए मिरोन बोला ।

उसमें सुनाने की कोई बात ही नहीं । अक्वदेविच अक्वस्मात ही विनम्र हा उठा ।

अक्वदेविच सुनाओ वही कहानी सुनाओ ।

तो भाई बात यह हुई अक्वदेविच ने अपना गला साफ़ किया और अपनी पसलून की जेब स तम्बाकू की थली निकाली । एक छुटकी तम्बाकू हथेली पर रख प्रसन्न नेत्रों स अपने श्रोताओं को घोर देखा और बोला जेल स एक घोर भाग निकला । पुलिसवालों न उस हर जगह तलाश लेकिन क्या खयाल है तुम्हारा उनक हाथ आया यह ? नहीं आया । वे भला क्या खाकर पकड पाते उस ! अफसर हार मानकर बठ गए ।

ता एक रात को रसन दत के अधिकारी ने मुझे बुलाया 'साहोमहल में जाओ । घालीजाह बहादुर तुमसे कुछ बातें करना चाहते हैं । मैं अन्दर चला गया और एटे शान सटा रहा, लेकिन उन्होंने भरे कंधे पपपपामे घोर बोले सुनो ईवान अक्वदेविच हमारी हुकूमत का सबसे बडा बदमाश भाग गया है । तुम्हें मिर के वन खडा होना पड़े तो भी कुछ नहीं तुम उन खोज निकालो, घोर जब तक यह काम पूरा न कर तो मुझे अपना मुंह न दिखलाओ ! 'जो हुकूम सरकार का ! मैं बोला । फिर मैंने जार की घुडसाल से तीन घोड़े छाटि और उन्हें लेकर चल गिया । उमने सिगरेट जलाई अपने श्रोताओं के मुने हुए चेहरों पर एक निगाह डाली और घुएँ का बादल उडाते हुए बोला गाटी पर चडे चडे सारा जिन बीत गया सारी रात बीत गई तीसरे दिन मुझे वह बदमाश मास्को क पास मिला । मैंने उसे अपनी गाडी में सादा घोर पतीटकर पीटसबग ले आया । मैं पहुँचा आघी रात की । कीचड मिट्टी स लपपप

सीधा झालीजाह बहादुर के महल म पहुँचा । क्या काठ-ट क्या प्रिस
सबने मुझे रोका लकिन मैं बढता ही गया । तो मैंने पाटक पर धाप
दी झालीजाह क्या मैं आ सकता हूँ ? कौन ? 'मैं हूँ ! मैं बोला
ईवान अवदेविच सेनीलीन । कमरे म हलचल मच गई । मैंने डार
बहादुर की भाषाच सुनी 'मारिया पयोद्रोवना मारिया पयोद्रावना जल्दी
उठो और समोवार तयार करा इवान अवदेविच आ गए हैं ।

भीड़ क पीछ से कज्जाकी की हसी के ठहाके गूँज । बलक खोए
पयुषो के बार म एक हुषम पडल-पढ़ते बीच म रुक गया और अतामान
बसख की तरह अपनी गदन भाग बढ़ाकर हँसा स लोट पाट हाती भीड़
की ओर क्रोध से देखने लगा ।

अवदेविच के चेहरे पर बादल छा गए । वह हसते हुए लोगो की ओर
खोपी खोपी नजर से देखने लगा ।

सुनो तो ! वह बोसा ।

हा ! हा ! हा !

ओह ! यह तो हसाते-हसाते मार डालगा भाज ।

समोवार तयार करो अवदेविच आ गए हैं !

सोग फिर हस-हँसकर उसटे हान सग ।

भीड़ छँटने लगी । प्रगासन-पूह क बाहर स्तीपान अस्ताखोव और
हवाचकी का मालिक लम्बा चौड़ा लम्बी-पतली टांगा वाला कज्जाक
बदन म गर्मी साने के लिए बफ पर धापस म भुसती लड़ते दीध ।

बाकी कज्जाक वहाँ जमा होकर सलाहें देने सग—

द मारो उठाकर इसकी ।

कर दो जरा इसका दिमाग ठिकान !

बड़ होशियार बनने हो वहाँ से मत पकडो ! बूडा काधुलिन
गौरैया की तरह फुदकते हुए पीछा और जोग म अपनी नौसी पढी माक
की मोक पर अटकी चमकती हुई ओस की बूँद की धार उसका ध्यान ही
नही गया ।

८

समा से लौटते ही पन्तली अपना कमर में गया। इधर कुछ दिनों से इसीबिना का स्वास्थ्य खराब चल रहा था। उसके सूज घेहरे पर पकान और दूध मलक रहा था। वह परा के एक माटे गद्द पर तकिय के सहारे लटो हुई थी। पन्तली के पैरा की माहट मुनकर उसने अपना सिर घुमाया ता उसके नेत्र पति की दानी पर ठहर गए और उसके नयुने फूल गए। किन्तु बूट के चदर से नवल पाले तथा भेठ की खाल की बाठ भाई। माज कोई गम्भीर बात हा गइ लगती है उसने सोचा और सन्तोष से बुनाई की अपनी सलाइयाँ एक ओर रख दीं।

'तो सबडा-कटाई का क्या रहा ?

'बृहस्पतिवार का गुरू होगी। पन्तली ने अपनी दानी सहमाते हुए कहा, बृहस्पतिवार को मुबह आठ के पास में रख बडे सडूक पर बठते हुए वह वाला 'क्या तबीयत कुछ अच्छी है ?

बसी ही है। एक एक जोड म दू है।

मैंने कहा था पानी में न जाना। तुम जानती थी कि शरद में पानी में जायागो तो क्या होगा—धक्कूक हा निरी ! पन्तली ने काध से जमान पर अपने बेंत से घरे बनाते हुए कहा डर सारी ओरते हैं घर में कोई भी पटसन भिगा दतो भाठ में जाए तुम्हारी पटसन।

'पटसन को बरबाद ता कर नहीं सकती थी मैं घर में कोई ओरत थी नहीं श्रीगा की बीबी उमर माय हल जानने गई थी प्यात्र और दारया भी बही गये थे

नतास्या का क्या हाम है ? पन्तली ने चिस्तर पर मुकते हुए एकाएक पूछा।

इसीबिना के जबाब में परगानी मलकी—

मेरी समझ में नहीं आता कि किया क्या जाए। अभी उम दिन फिर रो रही थी। मैं हात में पट्टेकी तो मनिहान का दरवाजा खोले मुता पछा मिला। मैं घन्टर गई ता जुमार रखने की जगह नताया की लडा देखा। मैंने उमम पूछा क्या बात है ? बोली कि सिर में दद है। सपनी बात का पत्रा मुझे नहीं बल पाता।"

हो सकता है कि उसक पैर भारी हों

मेरी समझ से यह बात नहीं है। या तो किसी ने उस पर बुरी निगाह डाली है या फिर प्रीशका व कारण

वह फिर उस धीरे व साथ तो नहीं पड़ गया ?

राम राम यह क्या ! वह रहे हो तुम ? भयस कातर हो इलीधना चिल्लाई स्तीपान जो है ? तुम उसे निरा बुद्ध समझते हो क्या ! नहीं मैंने ऐसा कुछ नहीं सुना ।

पँन्तेली अपनी पत्नी व पास घोड़ी देर और बैठा फिर बाहर चला गया । प्रिगोरी अपने कमर म बँठा मछली के गिनार की कटियों को पैना करते मिला । नताल्या उन पर सूअर की खर्चो लगाती और एन एक कटिया को सावधानी से सपेटकर भलग भलग रखती रही । बगल से लम्बाकर जाते समय पँन्तेली ने उस प्रानमूषक दृष्टि से देखा । उसके पीले गालों पर शरद् ऋतु की पतियों की-सी सारी दोड़ गई । वह इस एक महीने में बहुत दुबली हो गई दोखी । साथ ही भाँसों म गया दुख डूबता उतराता नजर आया । धूआ दरवाज पर ठिठका । यह प्रीशका लौडिया को मार बाल रहा है ! बँच पर भुकी नताल्या को देखते ही उसके मन में विचार उठा ।

गिनार रख इन कटियो को ! घातान उठा से मुझे ! सहसा ही क्रोध से तमककर बूडा चीख उठा । प्रिगोरी ने आश्चर्य से अपने पिता की धोर देखा ।

पापा बस दो कटियाँ और तज करनी हैं ।

मैं कहता हूँ कि गिनार रख दे इसे । लकड़ी की कटाई की तयारी कर । हलज बिलकुल बेफार पड़ी हैं और तू बठा कटिया पर धार रख रहा है ! पन्तलाने कुछ शान्त होते हुए कहा और जाते-जाते दरवाज पर कुछ रुका । उसने कुछ और कहना चाहा लेकिन वह रुका नहीं और चला गया । बाहर जाकर उसने अपना रहा-सहा क्रोध व्योत्र पर उतारा । प्रिगोरी ने कोट खूटी से खीषा कि हात से पिता की आवाज उसके कानों म पड़ी—

मालसी की गाँठ ! तू न जानवरों को पानी नहीं पिसाया अभी तक ? और बाड के पास की टाल को कौन खड़ता रहा है ? मैंने कहा था न कि

कोई छुएगा नहीं उसका ? अच्छी-स अच्छी सूखी घास ढारों को धमी खिता दोगे ता बसत म उन्हें क्या खिताभोग—मरा सिर ?

बहस्पतिवार का मोर म दो घंटे पहले इन्तोजिना उठ बठी और दारया की भावाज दने संगी । उठ बठ । घाग जलाने का समय हा गया ।

दारया समोज पहने स्टाक की और दीठी । दियासलाई से घाग जलाई ।

तयार हा जाओ चलने के लिए । व्योत्र न सिगरेट जनाते हुए साँसा और धपनी परनी को कोहनियाया ।

मैं कहती हू कि लोग नताल्या का क्या नहा जगात ? क्या मैं अपने को बीव स लो कर ल ? दारया ने अब भी धीरानीदी म कहा ।

जाओ और तुम न उम जगा दो । प्यास न उस सनाह दी । किंतु सलाह बकार थी क्योंकि नताल्या पहले ही जाग गई थी और झटपट न्नाउब पहन घाग के लिए इधन लाने को चल दी थी । उसे देख जठानी ने हुनम खलाया 'घोड़ी-सी खलियाँ सभी घाना उधर स ।

दारया दूया से कह दो कि जाकर बादा पानी ल भाए—मुनती हो ? इन्तोजिना न बावर्षीखाने म कठिनाई से इधर-स-उधर जात हुए भरिये हुए गले म कहा ।

बावर्षीगान स घोड़ों के साजों और मानव-शरारा की महक आती रही थी । दारया फल्टबूट पहने इधर-स-उधर स्पस्त घूम रही थी । उमकी गुलाबी समोज म उसकी छाटी छोटी छातियाँ रहु रहुकर हिल रही थी । मवाहिक जीवन क कारण उमके बदन में कही किसी तरह का डीसापन न घाया था । सरपत की टही की तरह मम्बी बनजो और कामम दारया देखने म बिलकुल सइकी भावूम हाती थी । वह तशी से अपने कंधे मुनात हुए खतता और अपने प्रति की बाग चित्नाहट पर मुसकराती । मुसकराती तो उमके दाँतों की उजली पाँवें तिल उठती ।

'तुम्हें रातों रात कुछ बढियाँ न घानी चाहिए थीं कट्टी म सूख गई होती अब तक । गाम ने डाँटा ।

मैं भूल गई थी अब क्या करूँ ? दारया ने जवाब दिया ।

खाना तयार हाने स पहल ही तडका हो गया । खीर म फूंक मार मारकर पत्तेली जल्दी-जल्दी नाश्ता करने लगा । प्रिगोरी बिमो चिन्ता में हुआ धीरे धीरे खाना रहा । प्यात्र दूग्या को चिढाने में रस लेन लगा था । उसके दाँवा म हद था और उसन मुँह बाँध रखा था ।

सडक पर लोग अपनी अपनी स्लेज गाडियाँ भगाये चले जा रहे थे । भार क घाकाग क नीच लोग बलों की स्लजों का दोन की तरफ ले जा रहे थे । ऐम म प्रिगोरी और प्योत्र अपनी स्लजो को जोतन के लिए बाहर भाये । आते समय प्रिगोरी ने पत्नी मे भेंट म मिला मुलायम रुमास अपनी गदन मे बाँध लिया । उसने तिर क ऊपर मे बाँव-बाँव करता एक बाँवा गुजरा । उसकी ओर देख प्योत्र बोला ठड से बचने दक्षिण जा रहा है ।

एक छोटे-से गुलाबी घासल क पीछे चाँ का टुकडा यो धमका जम कि कोई भोली धम-उझ सडकी हलके हलक मुसकरा रही हो । चिमनियों से घुर्मा उठा और पकड म न घानेवाले मुनहरे ढलते चाँ की ओर बढ़ा ।

मेलेखोव के मकान के सामन का दोन का हिस्सा पूरो तरह जमा म था । बिनार की बफ कडी थी । कामी पट्टान की तरफ बफ की दरार चौड़ी थी और धमकी-मो दतो थी ।

पत्तली लडकों म पीछे घाने का कहकर बूढ़ बला का लकर पहले ही चल गया । नदी क पाम के ढाल पर प्योत्र और प्रिगोरी को अपनीकुशक नजर भाया । उसकी नाटी बीमार पत्नी न रासे साथ रखी थी और वह खुद बलों की मगल म चल रहा था । प्योत्र न उम घावाड दी क्या पछोसी तुम्हारी पत्नी ता तुम्हारे साथ नहीं जा रही न ?

धनोकुशका मुमकराया और उन दो भाइया स बातचीत करने को मुडा ।

नहीं वह मेरे साथ जायगी ! बदन म जरा गर्मी बनी रहेगी । उसने उत्तर दिया ।

ऐसी दुबली-पथमी तो है उससे भला क्या गर्मी मिलेगी !

‘बात सच है घोर देखो कितनी जई विलाता हूँ मैं इस तबिन यह है कि माटी हाकर ही नहीं दती ।

‘हम लाग एक ही ठुक्की म लकडा नाटेंगे क्या ?’ पिगारी ने स्लज से कूदकर नीचे घात हुए नहा ।

अगर तुम सिगरेट पिलायोग तो मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा ।

तुम हमेंगा स ठग रहे हा अनीकुका ।

दुनिया की सबसे प्यारी चीजें या तो मांगी जाती हैं या चुराई जाती हैं अनीकुका न अपने उनाने शहरे पर मुसबान लात हुए कहा ।

तीनों साथ-साथ चल दिए । जंगल में पाले घोर बवारा घांसी की गोट टेंकी हुई थी । अनीकुका अपने सिर के ऊपर की छालों पर चाबुक सटकारता भाग चल रहा था । इससे नुकीली बर्फ़ें व फूल रह रहकर उसकी पत्नी के ऊपर बरस रहे थे ।

मा घतान की भाँति ! अपना यह खिलवाड बन्द कर ! पत्नी ने बक्र म्हाडत हुए चित्लानर कहा ।

दसकी बक्र में लोट द द एक ! प्योन न राय दी और बलो का रपनार सब करने व लिए चाबुक घुमाया ।

सड़क व माड पर उन्हें गाँव की तरफ़ बन ले जाता स्तीपान अस्ताखोव मिला । उसके खमबे के जूत बफ़ पर धरमरा रहे थे और उसकी धुंधलात बाल सफ़ेद अगूरी व गुच्छे की तरह उसकी फ़र की टापा व बाहर सटक रहे थे ।

घरे स्तापान सड़क भ्रून गए ? उम दसते ही अनीकुका चित्लाया ।

नाग हो मडक भूलने बाल का ! हम ठा घूम रहे थे कि एक बटे पेड स स्लज टकराई घोर जोत बीच स दा हो गई । इसलिये मुझे बापस जाना पड रहा है । स्तीपान न बोसा । प्योन के पास स निरसत ही एनाएक उसकी भयानक भाँति सिक्कूठ गई ।

‘स्लज पीछे छोड भाए हा ?’ अनीकुका न पीछे मुडकर पूछा ।

स्तीपान ने अपना हाथ हिलाया चाबुक मडकाई घोर पिगारी की भार क्रूर दृष्टि में दया । उन तीनों व कुछ दूर भाग बढ़ने पर सड़क व

घोर जोर से पढ़ सकता था। उसने किताब के चिबटहे पृष्ठों पर तिरस्कारपूर्ण दृष्टि डाली।

इसमें इतनी धिक्नाहट है कि इसकी सषड्ययाँ बनाई जा सकती हैं।' उसने परशानी से कहा।

क्रिस्तानिया ठहाका मारकर हँसा। दारिद खुलकर मुसकराया। किन्तु स्टाँकमन घोड़ी देर चुप रहा और हसी मझाक खतम होने पर बोला 'मीगा पढो इस। दिलचस्प किताब है यह। हममें कज्जाकों के बारे में ही सब-कुछ लिखा है।

मेज पर सिर झुकाकर कागडोई न बधी कठिनाई से पढा दोन कज्जाकों का सम्बिन्ध इतिहास। फिर उरमुक्ता भरे ढग से उसने चारों ओर देखा।

पत्ते। कातल्पारोव बाधा।

तीन दिन तक शाम को कडी मेहनत कर उहाने घतीत क उमुक्त जीवन के विषय में और पूगाधोय स्तेन्का राजीन और कोद्रानी बुलावीन के विषय में खाना समझा। अंत में वे प्राधुनिक बाल पर धाय। अगात सेखक ने कज्जाकों की दयनीय अवस्था पर खानत बरसाई थी। अधि कारियो वतमान प्रशासी और जार की सरकार का मझाक बनाया था और खानाशाही के किराये के टटदू धननेवाले कज्जाक सम्प्रदाय को बहुत बुरा भला कहा था। नतीजा यह कि मुनत मुनत लोग जागम धान और प्रापस में झगडने लगे। ऐसे में दरवाज पर बँठा स्टाँकमन मुसकराता और धाराम से पाइप पीता।

ठीक बात है। बिलकुल सही लिखा है। क्रिस्तोनिया कह बठता।

'कज्जाक ऐसी फूहड जिन्दगी बसर करने लगे इसमें भला हमारा क्या कसूर? कोशबोई हैरानी से हाथ फँसाता।

सन्वे दुबल पतले इजीनियर कोतल्पारोव की हड्डी हड्डी में कज्जाकी परम्परा भिदी हुई थी। इसलिए यह उत्तजित हो उठता और कज्जाकों का पक्ष लेता तो उसकी उभरी हुई भस्मिँ जलने लगती।

क्रिस्तोनिया तुम तो देहाती किसान हो—मुजिक। तुममें तो कज्जाक खून ऐसा है जस धास्टी में एक बूँद। तुम्हारी माँ का विवाह योरोनेज

के एक मुजिब म हुआ था ।

तुम बेवम्फ हा बवकूफ ! क्रिस्तोनिया गरम हाकर जबाब देना ।

'शामांग हा व मुजिब !

क्या मुजिब भा तुम्हागे तरह ही धादमी नहीं हात ?

मुजिब क वस्त्र म हानी है चर्वा और घनी भाडियों का पूरा घोर बस !

माई मर जब मैं पोल्सबुग म काम करने गया तो मैंने किनी ही चाहे था । क्रिस्तोनिया वाला तो उसके स्वर में शक्ति लहजा उजागर हा उठा एक बार एना हुआ कि राजमहल के अन्दर घोर बाहर हमारा पहरा था । हम घोड़ों पर सवार होकर दीवारा क पारा घोर चक्कर लगात—ये उधर तो ये उधर । जब हम एक-दूसरे म मिलते तो पूछत सब धमन है कहा कोई गडबडी तो नहीं है ? घोर फिर हम धागे बढ जाते । हम नागा का रचना घोर बाने करना मना था । हम सागा का मूर्त-शक्ति दखकर रखा जाता था । जब हम दरवाजे पर तनान किया जाना ता देखत-मुतने म एक-स लाग छोट जात । यहा बजह है कि एक बार माई का मेरी दादी रगनी पडी । पहरे पर मरा ड्यूटी एक एम बरजाक के मग थी तिमनी दादी का रग कुम्भन धोड़े का-ना था । उन्ने रडीमट-की रेडीमट गोज डाली लेकिन उसकी मूर्त-शक्ति का-ना दूसरा नहीं मिला । इसलिए बमाडर न मुझे ही माई क पास भजा कि जाकर मैं अपनी दादी रगवा सू । मा दादी रंगवान क बाग गीग में मैं जा अपनी गजन दया ता मेरा तिल टूट गया जब किनी ने जमत बडाह पर रम लिया मुझे ।

लेकिन क्रिस्तोनिया इन मयमें इन मवास का क्या सम्बन्ध ? कानत्याराज बीच म टपना ।

'हम उन लोगा क धार म यलाघा । तुम्हारा दादा की शपथान जात नाड म । उससे हम क्या सना-स्ता !

हाँ ता मैं अपनी कह रहा था कि एग बार मुक्त बाहर पहरा देना पडा । इन लाग पाडे पर सवार थ मैं घोर भग मायी कि कुछ विद्यार्थी बाने स दोडे धाय । पाटे इतन थ व त्रिजनी मक्तियी । हम

देखते ही वे चिल्लाये वाह ! और देखते देखते उहोंन हम घारो घोर से घेर लिया । बाले कञ्जाको ! तुम किसलिए घुडसवारी कर रहे हो ? मैं बाला हम पहरा द रह हैं सगाम छोड़ दा । और मैंने तलवार पर हाथ रखा । एक बोला कञ्जाक मुझ पर शक मत करो । मैं खुद कामेन्स्वामा जिले का हूँ और मैं विद्यालयविन्ध या विश्वविद्यालय या उसे जा चाहा तुम कहो उमम पढता हूँ । हम आगे बढ़े कि उनम स एक ने दस रुबन का नोट निकाला और घोला मेरे स्वगवासी पिता के स्वास्थ्य के लिए पो लेना । और अपनी जब स उसन एक चित्र निवाला देखो यह मेरे पिता हैं तमवीर मारगार के लिए रख लो । हाँ तो हमन चित्र ले लिया हम मना नहीं कर सक । फिर वे चल गये । इसी समय कुछ धार्मियो को साथ नियो एक अधिवारी पीछे क दरवाज से दौडता आया । क्या हुआ ? यह बोला । मैंन उसे बतलाया कि कुछ विद्यार्थी आये थ और हमसे बातें करते रह थे । आना क अनुसार हम उह तनवार के घाट उतारने को बडे कि व चल लिए तो हम आगे बढ़ दिए । ब्यूनी खतम कर जब हम नौटे तो हमन कारपोरल को दस रुबल के नोट की कमाई की बात बजाई तसवीर लिखाई और कहा कि हम इस बूटे के स्वास्थ्य के लिए पीना चाहत हैं । शाम का कारपोरल वोडका खरीद लाया । दो दिन मौज म बीत । तब हम मालूम हुआ कि उस दागले विद्यार्थी न हम जमनी के सबसे बडे विद्रोही का चित्र दे दिया था । मैंने उसे अपन विस्तर के ऊपर सटका दिया । बूटे की दाढ़ी भूरी थी । अन्ना भला आत्मी लगता था । पर दू प-कमाडर न एक दिन उसे देख लिया । बोना यह तसवीर तुम कहाँ स आये ? कमीने कही न । मैंन उसको बतला लिया । वह गरजने लगा जानत हो यह कौन है ? यह उनका अतामान काल मैं उसका नाम भूस गया । क्या था मला ?

कार्ल मार्क्स ? स्तॉर्गमन न मुसकराते हुए पूछा ।

'हाँ-हाँ ! कार्ल मार्क्स ! विन्जोनिया न प्रसन्न होन हुए कहा भले आत्मी ने हम मुसीबत म डाल दिया । खार का बटा घलेकठेयई और उमको पढानेवाले गारद के कमरे मे अक्सर घाते थे । यो भी देख

सेत तो जान पर भा बननी । मोचा ता क्या होता तब ?

और तुम मुझका के गुण गात नही थकत । कमी बन्मागी की उन्होंने तुम्हारे साथ । कानल्याराव दुपका ।

'लेकिन हमने ता दमों खिलों की पी डानी थी हमने उस दाढी वाल शाल क नाम पर पी था पर हम पी ता गए हा प ।

'वह है भी इस साथक कि उरक स्वास्म्य क लिए पी जाए । अपने सिगरेट-का डर म खुलत हुए स्नाकमन मुमकगया ।

क्या कौन-नो मलाई की उमने ? कोतल्याराव ने सवाल किया ।

फिर किमी तिन बनलाऊगा भात्र तो दर हो रही है । स्ताक मन ने अपनी प्रगुलिया स सिगरेट-हो-डर साधा और डूनर सिर का डूमरे हाथ से ठाककर बची सिगरेट का टुकड़ा निकालकर बाहर फेंक दिया ।

बाफी लम्बी छानवान और दन्-वरख के बाँ दस कज्जाकों का दल स्ताकमन की बकगप म हर तिन धान-जाने लगा । उस दल की जान या स्ताकमन और उत्तक सामन या एक उद्देश्य और उस केवन वह समन्ता था । वह भानी मीपी-मानी मा-मताओं और विचार धाराया से इन लागे क निमाग्रा की या कुरदता जम बोड़ बाडा लकड़ी को काटता है । वह उन नागा क मनों म बतमान प्रणाली के प्रति विरोध एक घुणा बूँ-बूँ कर धीरे-धार भरता । भारत में उस भवि-वास-रूपी ठेके इन्पात म लोहा सना पडा पर वह धरवाया नहीं । वह भवि-वास भी ठो सत्य हो सनता था ।

१०

दोन के बाएँ किनारे के रेतील डामू टीन पर ऊपरी दान का एक सबसे प्राचीन जिला ब्येसन्काया पडता था । पहले इसका नाम चिगोनाकी था पर प्योत्र प्रथम क राज्यकाल में यह नष्ट कर दिया गया था और इसका नाम ब्येसन्काया रत दिया गया था । बारोनेड से घात्रोब जाने वाल जलनाग का यह पहल एक महत्वपूर्ण स्थान था ।

ब्येसन्काया क टीक गामन दोन तातार-कमान की तरह मुझी है

घोर एकदम टाण हाथ को जाकर बाजका के छोटे-मे गाँव म पास फिर गान से सीधी हो जाती है। वह अपना हरा-नीला पानी परिषमी दिनारे की लड्डिया की लफ़्द पहाडिया की तलहटी म ल जाता है घोर दामी घोर के घन गाँवा तथा बायीं झार के जहाँ-तहाँ बसे जिलो को पार करती धाजोव क नीले सागर मे जा मिनती है।

उस्त-न्योपरस्कारा म इसमे मिलती है महायक नदी खोपर घोर उस्त मेदेवेदित्स्कारा म मेवदित्स्कारा। इसके बाएँ यह जल मे भरपूर लहराती पनी जाती है।

व्येशेनस्कारा पीली बान के टीला पर बसा है। गाँव सूना-सूना-सा लगता है। बाग-बगीचियाँ नाम को भी नहीं हैं। चौक मे एक पुराना गिरजा है। जाने कितने वर्षों पहल बसा था ! भूरा पड गया है।

चौक से नदी के समानान्तर छ सड़कें घसी गई हैं। जिस स्थान पर दोन बाजका की घोर माड लेती है वहाँ बिनागो के झुरमुट के बीच एक झील बनती है। यह झील इतनी चौडी है जितनी बि गरमी के दिनी म दोन रहती है। व्येशेनस्कारा के दूर के सिर से एक डाल उस झील तक आता है। यहाँ जरा छोटे चौक म मुनहर तेज बाँटोवासे पोर्षों के बीच एक दूसरा गिरजा है। उसकी छत घोर गुम्बदो का रंग हरा है जैसे बि झील के पार के बिनारो की हरियाली से होड लगी हो।

दिसम्बर म एक रविवार को जिले के सारे गाँवा के लगभग पन्द्रह सौ नवयुवक कज्जाका की भीड पुरान गिरजे क बाहर के चौक म जमा हुई। प्राथना समाप्त हुई। महादुर दिम्बलाई देन वाले सम्बी सनिक सेवा के फौजी ठमगो से सत्रे प्रौड कज्जाक सीनियर सार्जेंट न हुकम दिया घोर नवयुवक तुरन् ही दो सम्बी पक्तिओं म विभक्त हाकर घटेंगन खडे हो गए। बक्त का लिबास डाटे नये फौजा घफसर का बरान-कोट पहने घतामान घन्दर धाया। उसकी एडियाँ भनकना रही थी घोर उसके पाँख फौजी सिपाही था।

पास खडे सिगोरी मेलेखोव के नाना म भीला कोरूनोव की घावाड घाई 'बूट बुरी तरह काट रहे हैं

'मेव जाघा घतामान बना दिए जाघोगे

‘हम जल्दी ही अन्दर चलेंगे न ?’

जस कि इसी बात के समयन म एक या दो कदम पीछे हटकर मीनियर साजेंट न अपनी एडियाँ उचकाइ और उँचे स्वर म बोसा राइट टन ‘फ़ार्वर्ड मार्च !’

पकितियाँ चौड पाटन से गुजरी तो परा की भावाइ से गुम्बद बजन नगा ।

प्रिगोरी न पादरी द्वारा पढी गई राज्यभक्ति की शपथ की ओर बिलकुल ध्यान नही दिया । मील्का कोरगुनोव के नम जूते नाट रहे थे और दृष्ट मे उमका चेहना बिगडा जा रहा था । प्रिगोरी की ऊँची उठी हुई बाँह मुझ पड गई । उसक दिनाग म धुल-मिल विचारा की लड़ी-की-लड़ी चक्कर बाटन लगा । जब उमन अनकानक भयरा क स्पग म गीली कास की रूसा की रजत-मूर्ति का घुम्बन लिया तो उमे अकसीनिया और अपनी पत्नी का ध्यान हा घाया । उसकी छाँता न भाग बिजसी की तरह नौध गया एक दुस्य—जगल’ पडा के भूर तन उजली वफ से मढी डालियाँ अकसीनिया की आँसुओं से भरा बजरारी घाँवें और धौलों पर एक रमाल ।

पूजा के बाद माच कराकर उनको फिर चौक म लाकर पकितियो म बाँट दिया । नाक छिन्नकरर और लोथों की नजर बचाने हुए अँगुलियाँ अपने धावरका के अस्तर स पाछन हुए साजेंट ने कहा

घर आप साधारण जवान नहीं बल्कि कश्चाक बन गए हैं । आपन शपथ भी है । आपको समझना चाहिए कि इसका क्या अर्थ है और आपके कर्तव्य क्या हैं । आप कश्चाक बनने की स्थिति तक आ गए हैं । घर आपका अपने सम्मान की रक्षा करनी है अपने माता-पिता की आज्ञाधा का पालन करना है और ऐस ही दूसरे कर्तव्य निभान हैं । कभी आप लजब थ । उस समय आपने तरह-तरह क शपथ ली । लेकिन अब आपका भविष्य की अपनी सेवा के विषय म सोचना है । एक साल के अन्दर ही अन्दर आपका मेला न बुला लिया जाएगा

अब साजेंट न फिर उनाफ माप की हाथ अडना और छरगोग के पर क अपने दस्ताना का सम्मानन हुए आपण मनाज्त किया

धीर अब आपके माता पिता को आपकी पौजी नौकरी के लिए बहूरी माज-मामान की चिन्ता करनी चाहिए। आपको एक पौजी घोड़ा चाहिए और ऐसी ही दूनरी चीजें और अब आप घर जाएँ भगवान् आपकी सहायता करे !

त्रिगोरी और भीत्का ने अपने गाँव के सारे साथियों को साथ लिया और वे गाँव की ओर बढ़ चले।

वे लोग दोन के किनारे-किनारे चलने लगे। मकानों से उठनेवाला धुआँ बाजका गाँव पर उहराता रहा। भीत्का लँगड़ा-लंगड़ाकर दूसरा के पीछे आता रहा। उसने एक लकड़ी का महाराज बना शुरू कर दिया था। लकड़ी उसने एक बाड़ से तोड़ ली थी।

जूने उतार लो एक साथी न सलाह दी।

जूने उतार दूगा तो पर ठठ से ठिठुर जाएगा भीत्का ने सकुचने हुए जवाब दिया।

‘मौजा तो रहगा परो म !’

इस पर भीत्का बर्फ पर बैठ गया और बूट उतारने लगा। इससे बाद अपने मौजे से सस परों पर काफी जोर डाल-डालकर वह आगे बढ़ा। माटी बुनाई के मौजे के निगान बर्फ पर बनने लगे।

किस सबक से धरेंगे हम लोग ? भारी भरकम बड़े गिर वाले घनकमई बेगन्याक न पूछा।

दोन के किनारे के रास्त में त्रिगोरी ने सबकी ओर से कहा। फिर एक-दूसरे से बात करते हसत-हसाले वे आगे-ही आगे बढ़ते गए। बाजका और प्रोमकोवस्की के बीच दोन पार करते एक भेड़िया पर सबसे पहले निगाह भीत्का की पड़ी। बोला

‘सबको बहू देखो भेड़िया’

कउड़ाक-नवमुवको ने सीखना चिन्लाना शुरू किया तो भेड़िया दौड़ा। फिर एक किनारे होकर खड़ा हो गया—उस पार के किनारे के पास ही।

‘पकड़ लो इमे !’

‘जी हाँ !’

मीत्का भेडिया तुम्हें देख रहा है कि तुम किस तरह चतन हो !
कसी मोटी गदन है उसकी !

‘तो वह चल भी दिया !’

भूरी गबल कुछ देर तक यों खड़ी रही जने कि ग्रेनाइट पत्थर की बनी हा । फिर भेडिय ने तेज़ी से एक उछान मारी और किनारे के मरपलों में ग्रायव हा गयो ।

उनक गाँव पहुँचने-पहुँचने दोनों समय मिल गए । प्रिगोरी ने बफ पार कर अपने घर का रास्ता पकड़ा । हात में एक खाली स्लेज खड़ी देवी बाइ के पाम कटी हुई भाडियों का डेर दखा और गौरयों की चहचहाहट मुनी । मानस-नाच मिली । कोयल का करवा चमका और घनचला का खास क्रिस्म की बू नाक में भाई ।

बह सीटिया पर पहुँचा और खिडकी से भाँका । सटकत हुए लम्प में कमरे में धुधला प्रनाग फल रहा था । खिडकी की छोड़ पीठ किए प्योत्र प्रकाश में चढ़ा था । दरवाजे पर रखी भाडू से अपने सूता की बफ भाइ प्रिगोरी भाप से भरे बावर्चीखान में घुसा ।

हाँ तो मैं लौट आया ।

बड़ी जल्दी भाप । बफ से ठिठुर गए होंगे ? प्योत्र ने चिन्ता में भर स्वर में कहा ।

पन्तली भुक्ता निर हायों से साथे धुटना पर बुहनियाँ टेक बठा था । दारया चर्खे पर मून कान रखी थी । नताल्या प्रिगोरी की छोड़ पीठ किये मड़ के पाम खड़ी थी और उमवे भाने पर घूमी नहीं । बावर्चीखाने पर मग्गरी-नी नजर डालकर प्रिगोरी ने प्योत्र पर अपनी प्राँवें स्थिर कर दी । अपने भाई के उत्तेजित छोड़ परेगान चहरे को देखने में उमवी समझ में आ गया कि नहीं कुछ दान में काला है ।

‘गपय त मी ?’ प्यात्र ने पूछा ।

हाँ ।

प्रिगोरी ने अपने बपड़े धीरे-धीरे उतारे और उन समस्त सम्भावनाया पर विचार कर गया जिनके कारण उसक घर में भाने पर लाग इतन घबड़ा-घबड़ा रहे । इनीचिना सान के कमरे में

निशली । उमके चेहरे से नाराजगी टपक रही थी ।

इस सबकी जड़ म नताल्या है । बच पर घपन पिता की वगत म बठले हुए त्रिगोरी न सोचा ।

‘इमका खाना ला दो । माँ ने त्रिगोरी की ओर इशारा कर दारमा से कहा । कतार्ई को बीच मे छाड दारमा स्टोथ के पास गयी । बावर्चीखान म पूरी तरह सगाना था । कवल बकरी धीर उसक हाल म वदा हुए बच्चा की माँसा की आवाज सुनाई पड रही थी ।

त्रिगोरी न शोरमे की चुस्की ली धीर नताल्या की ओर लेखा पर उमका चेहरा नजर नही घाया । बह उसकी धीर बाहू बर बठी थी धीर उसका सिर बुनाई की सलाइयो पर भुका टुघा था । पन्तेली को सबसे पहलं वह चुप्पी खती धीर वह झूठ-मूठ ही खसिन हुए वाला नताल्या घपने मये जाने की कह रही है ।

त्रिगोरी ने रोटी के कुछ टुकडा का जोडकर गद बनाई धीर कुछ नही कहा ।

पर बात क्या है ? पिता न पूछा । उसका निचला होर काँप रहा था । यह उसने क्रोध के भटकने का पहला लक्षण था ।

मैं क्या जानूँ ? त्रिगोरी न उठकर नाँस बनात हुए कहा ।

‘लेकिन मैं जानता हूँ । उसके पिता ने तेज होत हुए कहा ।

मरे चिल्लाओ तो नही । इसीचिना बीच मे बोनी ।

हाँ चिल्लाने की क्या जरूरत है ? व्याप खिडकी से उठा धीर कमरे क बीच म आकर बोना कई यह सो उस पर है । अगर यहाँ रहना चाहती है सो रहे धीर नही चाहती ता ईश्वर उस पर दया करे !

मैं यह बतलाने नहीं जा रहा कि गवती नताल्या की है या नही । बस तो पति का छोड देना बेइच्छती की बात है धीर पाप है पर मैं इने इन्जाम नही देता । यह उमका कसूर नही है बल्कि कसूर इस सूघर क बचक का है ! पन्तेली ने स्टोथ के पास बठकर तापत त्रिगोरी की तरफ घगुला त्रिगोरी ।

मैंन किसका क्या कर दिया ? त्रिगोरी ने पूछा ।

तू नहीं जानता बदमाश कहीं का ! तुम्हे नहीं मासूम ?
नहीं मैं नहीं जानता ।

पन्तैली बेंच में उछल पड़ा तो बेंच उलट गई और मीथी प्रिगोरी की ओर गिर गई । नताल्या ब हाथ में मौज नीच गिर गए और सागाइया भनभनाकर दूर जा गिरी । उस आवाज व कारण बिल्ली का बच्चा स्टाव के पाम में उछलकर सामन आया और ऊन के गाल से खलने लगा ।

बूढ़े न घीम घीमे विचारपूर्वक बहना प्रारम्भ किया मुझे तुमसे यह बहना है कि अगर तुम नताल्या के साथ नहीं रहना चाहते तो महीं से निकल जाओ और चल जाओ जहाँ तुम्हारा भाग समाप्त वहाँ । वस मुझे यही तुमसे कटना है । चल जाओ जहाँ तुम्हारा सींग मभाए वहाँ । उमन शान्त स्वर में दोहराया और बेंच मीथी की ।

दूध्या बिस्तरे पर बठा सहमी नज़रा से डबन-उधर देखती रही ।

जा कुछ मैं कह रहा हूँ पापा गुस्से में नहीं कह रहा । प्रिगोरी का स्वर खोपला हो उठा यह गादी मैं अपनी मर्जी से नहीं की यह शान्ती पकरी की तुमने । जहाँ तब नताल्या का सवाल है मैं उस नहीं रोक्ता । अगर वह अपने बाप व महीं जाना चाहती है ता जाए ।

तू खुद क्या नहीं चला जाता यहाँ न ?

मैं चला जाऊँगा ।

जा जा जहनुम में जा ।

जा रहा हूँ, जा रहा हूँ खोखा नहीं । प्रिगोरी ने खाट पर पड़े अपने छोटे फर्कट का नेने व लिए हाथ बढ़ाया । उमने नयुन फूल रूँ पे । वह भा पिता की तरह ही प्रीथ से उबल रहा था । वही तुम और बरखावो का मिना-जुला खून उमने नगा में भा वह रहा था । उम समन उन दानों की गल्लों एक-दूसरे में एसी मिल रही था कि बस !

नहीं जा रहा है तू ? प्रिगोरी की बाह पकड़नीचिना बानी । किन्तु उम वनपूर्वक घबरा कर उमने उसम फर की अपनी टोपी लीन ली ।

जान दो हम । पापी मूँधर यही का ! जाने दो भाड में भावा

निकली। उमके चेहर से नाराजगी टपक रही थी।

इस सबकी जड़ में नताल्या है। बच पर अपने पिता की वयन में बठते हुए प्रिगारी न सोचा।

इसका खाना ला दा। माँ ने प्रिगारी की ओर इगारा कर दाख्या से कहा। कताई को बीच में छाठ दाख्या स्टाव में पास गयी। बावचीलान में पूरी तरह सघाटा था। बचल बकरी और उतक हाल में पदा हुए बच्चा की साँसा की भावाज सुनाई पड रही थी।

प्रिगारी न शोरबे की चुस्की ली और नताल्या की ओर देखा पर उसका चेहरा नखर नहीं भावा। वह उसकी ओर बाजू कर बठी थी और उसका सिर बुनाई की सलाइया पर मुका हुआ था। पन्तेली को सबसे पहले वह चुप्पी खली और वह सूठ-सूठ ही खासत हुए वाला नताल्या अपने मने जाने को कह रही है।

प्रिगारी ने रोटी के कुछ टुकडो को जोडकर गदबनाई और कुछ नहीं कहा।

पर बात क्या है? पिता ने पूछा। उसका निचला होठ कांप रहा था। यह उसके क्रोध के भडकन का पहला सक्षण था।

मैं क्या जानू? प्रिगारी ने उठकर नाँस बनाठ हुए कहा।

सेकिन मैं जानता हूँ। उसने पिता ने सख होन हुए कहा।

भरे चिल्लाओ तो नहीं। इलीचिना बीच में बोली।

हाँ चिल्लाने की क्या जरूरत है? प्यात्र शिडकी से उठा और कमर न बीच में धाकर बोला भई यह तो उस पर है। अगर यहाँ रहना चाहती है तो रहे और नहीं चाहती तो ईशवर उस पर दया कर।

मैं यह बतलाने नहीं जा रहा कि गनती नताल्या की है या नहीं।

बस तो पति को छोड देना बेज-जती की बात है और पाप है पर मैं इसे इल्जाम नहीं देता। यह उसका क्रमूर नहीं है बल्कि क्रमूर इस क्रमूर के बचक का है। पन्तेनी न स्टाव के पास बठकर तापत प्रिगारी की तरफ धगुली दिखाई।

मैंने किसका क्या कर दिया? प्रिगारी ने पूछा।

तू नहीं जानता बदमाश कहीं का ' तुझे नहा मासूम ?

'नहीं मैं नहीं जानता ।

पन्तली बेंच में उछल पड़ा तो बेंच उलट गइ और सीधी प्रिगोरी की ओर गिर गई । नताल्या के हाथ में मौजूद नीच गिर गए और सलाइयाँ झनझनाकर दूर जा गिरी । उस आवाज के कारण बिल्ली का बच्चा स्ट्राव के पास में उछलकर सामने घाया और ऊन के गाल में सेतने लगा ।

बूने ने धीमे-धीमे विचारपूर्वक कहना आरम्भ किया मुझे तुमसे यह कहना है कि अगर तुम नताल्या के साथ नहा रहना चाहते तो यहाँ से निकल जाओ और चल जाओ जहाँ तुम्हारा साग ममाय वहाँ । वस मुझे यही तुमसे कहना है । चले जाओ जहाँ तुम्हारा साग समाए वहाँ । उमने गान्त स्वर में दाहराया और बेंच सीधा की ।

दूया बिस्तर पर बठी सहमी नजर से उधर उधर देखती रही ।

जो कुछ मैं कह रहा हूँ पापा गुस्म में नहीं कह रहा । प्रिगोरी का स्वर खोखला हो उठा यह गादी मैं अपनी मर्जी से नहीं की यह धानी पक्की की तुमन । जहाँ तब नताल्या का मखान है मैं उस नहीं रोजता । अगर वह अपने बाप के यहाँ जाना चाहती है तो जाए ।

'तू खुद क्यों नहा चला जाता यहाँ त ?

मैं चला जाऊंगा ।

जा जा जहनुम में जा ।

बा रहा हूँ जा रहा हूँ चीखा ननी । प्रिगोरी ने खान पर पड़े अपने छोटे परकाए का लेन के लिए हाथ बढ़ाया । उसका तयून फूल रहे थे । वह भी पिता की तरह ही त्राप में उबल रहा था । वहाँ तुक और बरबाका का मिला-जुला खून उसका नसों में भी बह रहा था । उस समय उन दोनों को गालों एक-दूसरे से ऐसी मिल रहा था कि दस ।

'कहाँ जा रहा है तू ? प्रिगोरी की दाढ़ पकान्नीचिना बानी । किन्तु उसे बनपूका घबरा कर उमन उमन कर का अपना टापी छीन सी ।

'जान दो डम । पाती सुपर कनी ना । जान दा माँ में भौंका

हमे ! जा निकस जा महाँ म ! जा निबन्त ! दरवाजे को सपाट झालत हुए बूढ़ा दहाडा ।

प्रिगोरी भागता हुआ सीढियां पर आया । आखिरी आवाज उसने कानों में नताल्या ने रोने की धाई ।

रात ही गई थी । गाँव में चारों घोर पाना-ही-मासा था । बाने धाममान में काली बर्फ गिर रही थी । दोन की बर्फ तोपों के दगन जैसे ढग से चटक रही थी । ऐसे में प्रिगोरी हाँफता हुआ दरवाजा स धाहर निकल गया । गाँव के दूसरे छोर पर कुछ एक साथ भूँकत रहे धीरे पाने की धुरी धुन्ध में बीच दूर के चिराग टिमटिमाने रहे ।

बिना कुछ साध-नमसे वह सड़क पर बढ़ता गया । घस्ताखोव के घर की गिड़कियाँ भबेरे में हीने की नाति जगमगा रही थी ।

श्रीका ! नताल्या की दुखी पुकार उसे पीछे में मुनायी दी ।

नग्न में जा तू ! प्रिगोरी ने दौन भाँचे धीरे अपने काम तज कर दिये ।

'नौन धामो श्रीका लौन धामो !

वह गदगदिया वं तरह लटकताते हुए पहली गली में मुड़ा धीरे उस नताल्या की पीछे आखिरी बार मुनाई दी श्रीका मेरे प्यारे श्रीका !

उमन तज स चौक पार किया धीरे चौराह पर खबर माधन लगा कि रात आखिर वहाँ वित्तई जाण । उसने मीगा बोजवाई के यहाँ जाने का निश्चय किया । मीगा अपनी माँ धीरे बहन के साथ पहाडी के दाया धीरे वं छपरैल घर में रहता था । प्रिगोरी ने उनक हाने में प्रवेश कर छाटी गिड़की पर धाप दी ।

'बौन है ?

मीगा है ?

हाँ है । नबिन तुम बौन हा ?

'मैं हूँ प्रिगोरी मेलखोव ।

मीगा का अभी-अभी नौन धाई थी । सख मर में ही वह जाग उठा धीरे उमन आकर दरवाजा खाना ।

मीना तुम ?

'हाँ मैं।

रान म एना क्या कान आ पडा ?

अन्तर चना पीछे बतलाऊगा।

दयात्री म अगिारी ने मीना का हाथ पकड़कर घीम स कहा मैं तुम्हारे यहाँ रात काटना चाहता हूँ। घरवाना म मरा भगडा हा गया है। मर लिए जगह हा जाएगी तुम्हारे यहाँ ? कहीं भी पड रहेगा।

'कहीं भी सा रहता मगर मामला क्या है ?

फिर बतलाऊगा यहाँ अरबाजा कहीं है ? मुझे नबर नहीं आ रहा।

एक बेंच पर अगिारी का बिनर सगा लिया गया। विचारों म हूबे ही-हूबे उमन अमन मिर क चारो ओर नड की जाल लपट नी ताकि मीना की माँ का फुनफुसाहट कम सुनाइए। वह विस्मय में सोचन सगा— घर पर क्या आ रहा हागा मचा ? नताल्या अमन मक अनी जायगी मा नहीं ? जा ना हा अिनगी न एक क्या माड ले लिया है। अब मैं जाऊँ कहीं ? अत्या ही उन उवाव भी मिल गया मैं कन अकसीनिया को बुलाऊँगा और उनके नाय अवान चना आजगा यहाँ स दूर बहन दूर

अनजान अतचाहू नाचत हुए अेपी-अगत गाँव अिले उमका अाशियों के अाग म मुअरले सग। और नाचनी हुई अगाहिया के धार लम्बी भूरी मडक क उम पार थी नीलम रे अासमानों की दुनिया। यह दुनिया उन अरले पाम बुला रही थी। यह था अकसीनिया के प्यार का परीक्षण। इन परीक्षण म वहाग क वाग वगाग था गने थी—अमन मन क पूरे विनोड के साथ। अमम उमका जादू और बग गया था।

अविष्य की चिन्ता स उमकी नीट उड गई। फिर अथमुच मो जाने मे पहल बग अराबर गोबडा रहा कि अाशिर उम परेगानी क्या है ? अाँपानीनी की अवरुधा म उनक विचार अमनी गति म एक अायरे स अमन रह अतत गइ कि उम महगा ही अकता-मा सगा अस कि धार क साथ बहती हुई नाथ किमी रनीम अिनारे म जा टकराई हो। वह

जूक पडा उस रोडे से । सोचने लगा कि ऐसा क्या है जो मेरे घाटे घाता है ।

मुबह उठल ही उस सना की नौकरी की याद आई । यह था उसक रास्त का रोडा । भक्सीनिया को लेकर वह वा कसे सकता था ? बसन्त म गिण्ण शिविर लगना था और धरद म जाना था सना की नौकरी पर ।

पाडा सा नास्ता करने के बाद उमने मीणाको गनियारे म चुनाया ।

'मीणा सुनो तुम जरा भस्ताखोव क यहाँ घने जाओ घने जाओगे ? उमने पूछा भक्सीनिया से कहना कि भ्रात्र नाम की जक भेरेरा हो जाए ता वह मुझम भिसने पवन चक्की पर छा जाए ।

लकिन स्तीपान की बात माची है तुमने ? मीणा गडबडाया ।

उस काँ काम बतना देना' कहना कि मैं इस नाम से भापा हूँ ।

'भक्खा घला जाऊगा ।

भक्सीनिया म कहना कि जहर घाए ।

शाम को घिगोरी पवन चक्की क पास जा बठा । उसने एक सिगरेट जसा ली और उस भपनी कमाज क कफस डक लिया । पवन चक्की स भागे मर्द की डठला पर हवा महरा रही थी । एक जगह मोमजाम का एक टुकडा फडफडा रहा था । वह ऐसा लगा जस कि कोई बडी चिडिया उडने म भसमय हो और फडफडा रही हो । भक्सीनिया नहीं आई । पश्चिम म सोने का सूरज डूब गया और पूरव मे ताडी हवा बहने लगी । सरपते म भटकत ची को अधर न डक लिया । पवन चक्की क ऊर के नीला घाटिया बाल भ्राकाण म घोर भेरेरा छा गया । गाँव स काम के छात्मे के भन्तिम सनेन मिल । किन्तु भक्सीनिया नहीं आई ।

एक-एक कर उसने तीन सिगरेट पी डाली भन्तिम सिगरेट का बचा टुकडा कुचला बफ म गहा दिया और चिन्ता और रीक स भरकर धारा धार देखने लगा । बही कुछ दिखलाई नहीं दिया । बड उठा गाया हवा और मीणा की लिडकिया स धामत्रिल करते प्रकाश की धार बड़ा । यह हात म पहुँचने वाला था कि भचानक ही भक्सीनिया म टवरा गया ।

माफ़ है कि वह भागी बनी आ रही था। वह हाँफ़ रही थी और उनके नाज़ ठंडा घर न सर्दी की हवा की या गावद मदान की लाजा धाम की बाम आ रही थी।

मैं इन्तज़ार करने-करत मक़ गया। फिर मैंने माचा कि गावद तुम नती आभागी।

‘स्नापान म पीछा छुडान में इतना तेज़ लग ग़ा।

‘गनाह हा तुम तुम्हारी इन्तज़ार म मैं तो जमकर बड़ हा गया हूँ।

मैं गरम हूँ मैं तुम्हारे वन म गर्मी नर दूंगा। उमन ज़ी अमरुत बाना अचना का उतारा और जममे प्रिगोरा का चारों धार म डक़ दिया जम लनाएँ किनो माहबलूत क पड को चारा धार मे डक़ लें।

‘क्यों बुलाया है तुमन मुझे? यह बोनी।

‘ठहरो अचना बाह अनाग आभा कही किनी न दव लिया ना?’

‘तुम अना घरबाला म उठ ना नहीं पडे?’

मैं उनम अनाग हा गया हूँ। रात मैंने भागा क यहाँ बिनाई। अब मैं दर-दर मटकन बाना बुना हूँ।

अब क्या करोग तुम?

अकभीनिया न अचन हाथा की पकड़ टोली कर दी और कौत हुए अचना कोट साचकर गक़ दिया।

‘अमा उम वा पर चने घोरा—हमारा यनी सडक़ क कीचोंवाच मडा हाता अछडा नती।

वे सडक़ म दूर घाय और बड़ भाडकर प्रिगोरा मरपन की पहार दावारी क महार मुककर मडा हुआ।

तुम्हें नासून है कि ननाल्या अचन मक़ गई या नती? उनन पूछा।

मुझे नहा मानूम। जहाँ तक मरा अथाल है वह अचना जाना। यहाँ अना कस रानी?

उठ म बड़ हुआ अकभीनिया का हाथ प्रिगोरी अचन कोट की

१६८ धीरे बहे धोन रे

भास्तीन तक ने गया घोर उसकी पतली कलाई को सहनाते हुए पूछन
सगा घोर हम नोगा का भव क्या होगा ?

मैं क्या जानूँ प्यारे ! जो भी तुम ठीक समझो बताओ ।
‘तुम स्तीपान को छोड़ सकती हो ?

बिना मँह स उप किये छोड़ सकती हूँ । तुम चाहो तो घाज ही
शाम को छोड़ दूँ ।

ठीक है तो हम कोई-न-कोई काम मिल ही जाएगा घोर कही
न-कही हम जैसे-उस रह ही चेंगे ।

श्रीशका तुम्हारे साथ सब-कुछ सह सकती हूँ मैं । तुम पास रहो
फिर तो कोई मुझे बल पोढो की तरह ही क्या न जात दे तो भी कोई
बात नहीं ।

दानो एक-दूसरे से सटे खड़े रहे एक-दूसरे को अपन सन का ताप देते
रहे । प्रिगारी हिलना नहीं चाहता था । यह हवा की घोर मँह किये खडा
था । उसने नयुने पडक रहे थे और धाँखें बन्द थी । उसकी यगल में
मँह छिपाये भक्तीनिया चिर-परिचित पसीने की उत्तजन गच से अपनी
साँसें सींच रही थी । उसक बेहया प्यासे होडा के कम्पन पर भानन्द की
एक मुमकान बिरक रही थी ।

कल मैं मोखोव स जाकर मिलूंगा । यह चाहे तो मुझे किसी काम
पर सगा सकता है । प्रिगोरी ने भक्तीनिया की कलाई एक दूसरी जगह
से भीबते हुए कहा । पिछली जगह उसकी भँगुनिया क कारण पसीने
से नरम हो गई थी । भक्तीनिया न कुछ भीनी न उसने अपना सिर
ऊपर उठाया । उसके चेहरे की मुसकान बन्द हवा की तरह हवा हो
गई । चिन्ता और नम उसकी फली हुई धाँखा में यों समाने सग जैसे
कि यह कोई सहमा हुआ पशु हो । इससे कहूँ या न कहूँ ? अपने गभ
का ध्यान भाते ही उसन सोचा । फिर उसने वह डालने का निश्चय
किया । किन्तु मुरन्त ही डर स सहमकर उस भयानक विचार को ही
उसने दिमाग से बाहर निकाल दिया । उसकी नारी प्रकृति ने उसे चेतावनी
दी प्रिगोरी को घतलाने का यह सही वक्त नहीं । हाँ सकता
है कि घतला देने पर वह तुमसे सदा-सदा क लिए भगत हो जाए ।

क्या तू पकरी तरह जानती है कि तर कनक व नीचे उद्यपन व ता
बच्चा प्रिगारी का ही है ? तू कह सकती है कि यह स्तीपान का नहीं
है ? इसलिए इन दोन का टाल द उनन धनी धात्मा का घोन्ना
द लिया और प्रिगारी स इन विषय म कुछ नहीं कहा ।

कनकपी क्या छू रही है ? ठठ लग रही है ? प्रिगारी न धना
काट उसक चारा धार लपटत हुए कहा ।

घोटा-घोटा । अच्चा अब मैं जाऊगी धीका । स्तीपान को अब
पर पर पहुँचा ही समझो और मैं उम वहाँ न मिता तो
कहाँ गया है वह ?

धनीकई न यहाँ ताग खसन ।

वे एव-दूमरे म विग हुए । धकमीनिया को हागों की नग म पूर कर
देने वाली गय प्रिगारी व हाग पर भाइ । वह गय धी जाडे की हवा
की या गायन समन्त की पहनी वर्पा म भीगा मूची धान की ।

धननीनिया एव सकरी गनी म लगनग भाता हुई-नी मुठी । एव
कुरें न पान जहाँ जानवरोन गरद की कीचट की मय लिया था उमका
पाँव बज व एक ठोके पर फिमत गया और यह लठलठा गइ । नाय ही
उसके पट म ऐसा द उठा कि उनन बाड का सहारा स लिया । पाठी
दर बाट द बन् हा गया सकिन उसक पट न धदर का जीवित प्राणी
बार-बार गुस म उद्यन उद्यन पडता रहा ।

११

प्रिगारा धगने तिन सुवह माखाव स मिलन गया । माखाव धना
धनी दूरान स मीग था और धान क कमर म धत्योकिन क माप बडा
प्राणामी मन्दि क रग का तब चाय पी रहा था । प्रिगारी न बडे बनरे
में धननी टाती रखी और धन्तर पहुँचा ।

सगैँ प्नातानोविच । मुन् धास कुछ बावें करना है ।

धोह पन्तनी मनखाव क बटे हा मुम का ? कही क्या
बात है ?

मैं यह पूछत धाया ह कि क्या धाप मुन्के काइ नीकरी द

सबत है ?

इसी समय दरवाजा चरमराया और ल्वाका बर्नी पहने एक युवक लेफ्टिनेंट ब्रान्जर शक्तिष्ट हुआ। प्रिगारी ने पहचाना कि यह ध्यक्ति लिस्त नित्स्की है और इसे ही तो पिछली गर्मियों में मील्का कोरफूनोव ने धुड़ दौड़ में हराया था। नोबाव न अधिकारी थी और कुर्सी बर्बाई और प्रिगोरी की धार मुड़कर कहा 'क्या तुम्हारा बाप अब ऐसा दुनियादार हो गया कि अपने बेटे को किसी दूसरे को नौकरी करवाएगा ?' उसने पूछा।

अब मैं पापा के साथ नहीं रहता।

अलग हो गए ?

जी हाँ।

खैर मैं तो तुम्हें बड़ी खशी से रख लेता। मुझे मालूम है कि तुम्हारा परिवार बहुत मेहनती है। लेकिन फिनलैंड मेरे यहाँ तुम्हारे साथ कौई नाम नहीं है।

क्या बात है ? लिस्तनित्स्की न अपनी कुर्सी बज न पास झींचते हुए पूछा।

मह सड़ना काम की तरांग में है।

तुम घोडा की दखभाल कर सकते हो ? जोडी हाँक सकते हो ?

अधिकारी ने अपनी चाय हिलात हुए पूछा।

कर सकता हूँ। मैंने अपने घर के छे घोडों की दखभाल की है।

मुझे फोववान की जरूरत है। क्या लोग तुम ?

कुछ बयान नहीं चाहता।

तब फिर हमारे इलाक पर आकर बन पिनाजी से मिल सा।

पर मालूम है ? यागोनोण में है यहाँ न कोई घाठ बस्ट दूर।

जी हाँ मैं जानता हूँ।

बस तो बल मुबह भा जाना बात हो जाएगी।

प्रिगोरी दरवाज तक गया। हत्या पुमान ही वह हिचकिचाया और बोला श्रीमान्, मैं आपसे अलग में एक बात कहना चाहता हूँ।

लिस्तनित्स्की प्रिगोरी के पीछे-पीछे अधियारे गलियारे में आया।

कमरे के दरवाजों के बेनिसी काँच से छनकर हलका-हलका गुलाबी प्रकाश वहाँ आया रहा।

क्या क्या बात है ? अधिकारी ने पूछा।

'मैं अचेतानही हूँ प्रिगोरी का चेहरा लाल हो उठा मेरे माथ एक झीरत भी है चाय उमके लिए भी आप कोई काम निकाल सकेंगे ?

मुम्हारी बीबी है ? लिस्तनित्स्वी ने मुसकराकर भौंह ऊपर उठाते हुए पूछा।

किमी धोर की बीबी है।

ओह यह बात है। खर हम उसे नौकरी का खाना बनाने पर रखेंगे। लेकिन उमका भादमी कहीं है ?

यही गाँव में।

यानी तुमन दूसरे की झीरत उठा ली है ?

वह अपनी मर्जी से मेरे पास आई है।

'मोहबत के मामले हैं। खर वन आधा अब तुम जा सकत हो।

पगत दिन लगभग घाँट बजे सुबह प्रिगोरी यागोदोनोए पहुँच गया। घर के चारों ओर डटों की एक दीवार थी। दीवार पर पल्लस्तन था। बाहरी कमर हान मर में जहाँ-तहाँ बने हुए थे। एक हिम्मा टाइल की छतों का था। उम पर रंग-बिरंगे टाइला में १६१० लिखा हुआ था। नौकरा के कमरे थे। एक नहाने का कमरा था। अस्तबन थे। एक मुर्गो-यातन विभाग था। पशुओं के लिए एक गड था। नम्बा अतिहान का और एक गाड़ीघर था।

यह बड़ा और पुराना मकान एक बगीचे में था। उसके पीछे चिनारा की भूरी दीवार थी और चरागाहों बेंत थे। उनकी चाटिया पर जहाँ-तहाँ बीबा के घोंसले झूल रहे थे।

प्रिगोरी ने हात में पर रखा कि क्रोमिया के प्रिगोरी कुत्तों ने उमका स्वागत किया। सबसे पहले एक बूढ़ी मोंगरी कुतिया ने उसे घाबर सूँघा घोर गदन भुजाए उमके पीछे-पीछे चल दी। नौकरों के

२०२ धीरे बहे बोन रे

क्वार्टरो म एक कम-उम्र दाग-दगील घहरे वाली नौकरानी से रसोइया सडता मिला । दहलीज पर तम्बाहु के धुएँ ने बीच एक बूढा सिर झुकाए बठा दीखा । नौकरानी प्रिगोरी नो मकान क अन्दर स गई । गनियारे से कुत्तों और बिना कमाए चमड़े की नू आई । एक मेज पर दुताली बन्दूक का खोल तथा गिकार खेलने का झालरदार हरा रेसमी बला पडा नजर आया ।

भाप छोटे मालिक से मिलिय । नौकरानी न बगल ने दरवाज से बिल्लाकर कहा ।

प्रिगोरी ने बीचड से सन अपने बूतो की धार चिन्ता से दखा और अदर कम रखा । सिडकी के पास पलग पर लिस्तनिस्की मटा हुआ था । अधिकारी ने एक सिगरेट गोन की अपनी सफद कमीज के कॉलर के बदन लगाये और बाला तुम ठीक वक्त से आये । इको पिताजी अभी एक मिनट मे आ जाते है ।

प्रिगोरी दरवाज के सहारे खडा हो गया । इसी समय पीछे के कमरो से किसी ने आने की आहट मिली और एक भारी आवाज कानो म पड़ी ।

येवोनी ! सो रहे हो क्या ?

आइये न ! लिस्तनिस्की ने उत्तर दिया ।

काले कानेसियाई फस्ट-बूट पहने एक बूढा कमरे मे आया । प्रिगोरी ने उसे कनखी से दखा । उसकी सुन्दर तुकीली नाक और मूछा के लेंठे हुए सफ्त सिरों से वह तुरन्त ही प्रभावित हो उठा । बूढे लिस्तनिस्की का रुद लम्बा कंधे चौड़े और बदन दुबला-पतला । लवाद के नीच उसने ऊट के बाला का एक लम्बा ग्युनिक-कोट पहन रखा था ।

पापा ! यह रहा कोचवान जिसके बारे म मैं आपसे कहा था !

किसका सडका है ?

मेलखोव का ।

निम मेलखोव का ?

पन्तेली मेलखोव का

प्राचीनी स मेरी जान-महबान थी। सना म वह मर साय रह
 घुषा है। मैं पत्तली का भा जानता हू। लंगड़े हैं वह हैं न ?

जी हूँर ! शिगोरी न बहा। उस मन-ही-मन हसी-तुकी-गुठ क
 बीर सनानी जनरन लिस्तनिल्की की कहानियाँ या घा गई। य उसे
 उसके पापा न मुनाई थीं।

'तुम्ह नौकरी की क्या जरूरत था पत्नी ? बूढ़ ने प्रश्न किया।

मैं भव पिता के पास नहीं रहता हूँर !

'कैसे बज्जाक हा तुम कि नौकरी कराग ? भलग करते समय
 तुम्हार पिता न तुम्हें कुछ नहीं दिया ?

'नहीं हूँर !

'यह दूसरी बात है। तुम अपनी पत्नी के लिए भी काम चाहते
 हा ?

छोटे मालिक का पलग जोर स चरमराया। शिगोरी न उधर दक्षा।
 अधिकारी ने धाँस मारी।

जी हाँ हूँर !

मैं कोई हूँर-बूँर नहीं। तुम्हारे इन सारे हूँरों म मुझे कोई
 पसन्द नहीं। तुम्ह आठ खत महीना मिलगा यानी तुम दोनो को !
 तुम्हारी बीबी नौकरा घोर कान करने वाले लोगों के लिए खाना
 पकाएगी क्या ठीक है न ?

'जी ठीक है।

कल सुबह से या जाधा। तुम्हारा बकरा बही होगा जो पिछले
 काबवान का या।

कम गिकार कसा रहा ? लिस्तनिल्की ने पर बातों पर रखत
 हुए पिता से पूछा।

हमन एक सोमड़ी घमयाची के नाल म दम्बी घोर जगन तक उसका
 पीछा किया। पर वह सोमटी बूबी थी घी हमारें मुत्ता का उसन खूब
 धराया।

बज्जरु का पर क्या घब भी लगता है ?

'पर म मोष था गई मामूम हाता है घच्छा मवोनी पत्नी करो

नास्ता ठडा हो रहा है ।

बूटा प्रिगोरी की धार मुडा धीर बोसा प्रच्छा जाओ प्रव क्त
पाठ बज भा जाना ।

प्रिगोरी बाहर भाया । खनिहान की दूसरी ओर बर्फसे माली जमीन पर शिकारी कुत्ते घुप खा रहे थे । प्रिगोरी को दल बूढी बुतिया फिर पास भाकर उसे सूधने लगी । फिर उसी तरह तिर मुकाये मुकाये कुछ दूर तक पीछे-पीछे भाई धीर लौट गई ।

१२

उस दिन सुबह भकसीनिया ने खाना जल्दी ही बना डाला । उसने भाग मुकाई तशरियाँ धोईं और लिडकी के बाहर हाते म नजर दौडाई । मेलखोव के हाते से सटी अपनी पहारणीवारी के पास रखे सकड़ी के गट्टर के सहारे स्तीपान खडा दीवा । भधजली सिगरेट उसके होठो के तिर पर सधी हुई थी । शब्द का बायाँ हिस्सा गिर पडा था और वह बस रहा था कि इसकी भरम्मत कहाँ-कहाँ से होनी चाहिए ।

भकसीनिया सोकर उठी तो उसके दोना गानो पर गुलाब खिल हुए थे और भाँला मे थी जवानी की भमक । स्तीपान की दृष्टि स यह परिवतन छिपा न रहा । नास्ता करते समय वह पूछ ही जा बठा क्यों भाज क्या बात है ?

'क्या बात है ? भकसीनिया न बात दोहरा दी और जमका बहरा तमतमा उठा ।

तुम्हारा मुह तो ऐसा भमक रहा है जैसे कि तुमने तेल की मालिग की है ।

भाग की गर्मी का भसर है धीर कुछ नहीं । भकसीनिया ने कहा धीर मुझकर घुपने से लिडकी के बाहर की ओर देवा कि मीगा कोरोवोई की बहन तो नहीं भा रही ?

मेकिन जब नइकी भाई तब दोपहर कभी की दल चुकी थी । इतजार से ऊबकर भकसीनिया न उससे पूछा माचूस्का तुम्हें मुझम कुछ काम है ?

'ख़रा बाहर भाघा । लडकी न उत्तर दिया ।

सफ़ेनी ने पुन स्टोव के ऊपर रख हुए गीठ व टुकड़े के सामने खड़ा हा स्तोपान अपने बाल सवारन लगा । धक्सीनिया ने बेचनी स इसकी भोग देखा । पूछा 'तुम बाहर तो नहीं जा रहे ?'

उमन तुरन्त ही नाई उत्तर नहा दिया । पहल पात्रामे की जब म कथा रमा ताग की गहूँ उठाई भगोठी की जानी पर से सिगरेट पाइप लिया और तब बोला 'मैं घाठी दर क लिए धनीकुइका व घर जा रहा हूँ ।

'तुम घर पर रहन ही कब हो ? रोज ही ता रात रातभर ताग के पल पीटते हो ।

ठीक है यह बात तुमन पहल भी कहा है

तुम पोटम खसने फिर जा रहे हो क्या ?

'छोटा भी धनसीनिया ! देखा वह लडकी तुम्हारी इन्तज़ार म खही है ।

धक्सीनिया बाहर भाई । दागा स भरे गुसाबी बहरवासा माशूत्का न मुमकरात हुए उमका स्वागत किया ।

धीनका वापिस भा गया है ।

'तो फिर ?

उसने कहलाया है कि धंधेरा हान ही तुम हमारे घर भा जाना ।

मडकी का हाथ पकड़कर यह उस बाहरी दरवाज़ की तरफ़ से गई ।

धीरे-धीरे बोलो ! उमन और कोई बात नहीं तुमस ?

उमन कहा है कि धनना मामान बांधकर साथ लनी घाना ।

उत्साह से जनती कांपनी और इगमगान हुई धनसीनिया मुडी और उसने बावर्चोस्थान पर एक नज़र डाली ।

हे मेरे भगवान् कब क्या करू इतनी जल्दी ? प्रच्छा एको उमम कहना कि जितनी जल्दी हो मरेगी मैं भा जाऊंगी' नकिन वह मुझे मिसगा कहा ?

'तुम हमारे घर भापागी ।

धरे नहीं ।

ठीक है तो मैं उससे कह दूंगी वह बाहर तुम्हारा इन्तज़ार करेगा।

जब भकसीनिया घब्रर पहुँची तो स्तीपान कोट पहन रहा था। क्या वह रही थी? उसने सिगरेट के दो कगो के बीच धुमाँ छोड़ते हुए पूछा।

कौन?

भरे वही कोशेवोई की सड़की प्रोह! वह मुझसे भपन लिए एक स्कट कटवाना चाहती थी। सिगरेट की राख झाड़ते हुए स्तीपान दरवाज़ की ओर गया और बाहर निकलत हुए वह बोला मेरा इन्तज़ार मत करना।

भकसीनिया दौड़कर पाले से मड़ी खिडकी के पास गई और वच के सामने घुटनो क बल बठ गई। दरवाज़ पर पड़ी बर्फ स्तीपान के पाँवो के नीचे चरमरायी। हवा स उसकी सिगरेट की एक चिनगारी उठकर खिडकी पर घा पड़ी। बफ पिघलने स खिडकी के काँच म बने गोले से भकसीनिया ने उसकी पर की टोपी तथा उसक भरे हुए गासा को एक नज़र देखा।

उसने काँपते हाथो से एक बड़े बक्स म से भपने दहेज़ का सारा सामान निकाला और जकेटे स्कट तथा रुमान एक शाल म लपेटे। चारो ओर निगाह दौडाने और हाँपते हुए वह भन्तिम बार धायर्चोखाने म गई और बत्ती बुझाकर सीढ़िया की ओर दौडी। इस बीच मेलेखोव परिवार का कोई ब्यक्ति जानबरो का हिमाय ठीक-ठाक करने के लिए बाहर निकला। भकसीनिया ने पगो की आहूट क एकदम खरम हो जान तक राह देखी फिर उसने दरवाज़ म खज़ीर चढ़ाई और दोन की ओर भागी। उसके बाला की कुछ लट्टे रुमाल स बाहर निकल भाइ और उसके गाना पर सहराने लगी। वह अपनी गठरी को बसकर पकड़े छोटी-छोटी गलियो स होती हुई कोशयोई क घर की ओर बडी तो उसकी ताब्रत जवाब दे बली और पर मन-मन भर न हो उठे मानो सीस के हों। प्रिगोरी पाटक पर उसकी प्रनीक्षा कर रहा था। उसने पुलिन्दा स लिया और चुपचाप भागे-भाग मदान की ओर बढ़ बना।

ससिहान क बाद भकसीनिया न चाल घीमी की घोर प्रिगारी की
बाहू पकड़कर बोली उरा ठहरो ।

क्या क्या है ? घाज़ रात चाँद दर से निकलेगा इसलिए हम
जल्नी-जल्दी निकल चलना चाहिए ।

रुको घोस्का ! पीछा स दुहरी हो वह छिन्न गई ।

बात क्या है ? प्रिगारी उसकी घोर मुझा ।

मर पट म कुछ हो गया है । मैं बहुत बोझ भादकर साई हूँ ।

उमन अपन मूख हाठ चाटे घोर हाथों स पसलियाँ पाम ली । इस प्रकार
राण भर बढी रही भुकी पीछा म तबपी घोर फिर बाला को क्काल
के नीच क चन पड़ी ।

तुमन मुझ मन्न ता पूछा ही नहीं कि मैं तुम्हें स कहाँ जा रहा
हूँ । हा मनता है कि पाम की चट्टान पर ले जानर तुम्हें धवेत्त दूँ ।
अधकार म प्रिगारी न मुसकरापर नहा ।

धब मर लिए कोई अन्तर नहीं पड़ता । लौट तो मैं सक्तो नहीं ।

उमक स्वर म उगामी स भरी एक मुसकान घुल गई ।

उस दिन मदा की हो भाँति स्त्रीपान प्रायो रात बीते घर लौटा ।
वह पहन अस्तवन्न म गया इपर-उपर छितरी पास उठाकर नाँ म
हाली घोड़े की रम्सी हटाकर एक घोर रखी घोर फिर घर म
बुसा । नही इपर-उपर गाम काटन गई होगी । जजीर कालत समय
उसन मोचा । बावर्चीखाने म घुमकर उसन किबाड कसकर बन्न किप
घोर दियागलाई जलाई । उम दिन उसे जीत की खुशी थी इसलिए वह
गान्ता भी था घोर निगासा भी । उसन सम्प जलापा ता बावर्चीखान
की गडबडी लप चोक उठा । कारण उसकी समझ म नही प्राया ।
कुछ अचर्र करता क मान क कमरे में गया । कामा-सा लला बबम
जम्हाई मता मिसा । जमीन पर एक पुरानी जकट पड़ी दनी । यह जकेट
भकसीनिया हडबडी म भून गई थी । स्त्रीपान न अपन ऊपर की भडकी
काम भटक म उतारी घोर मग्न साने क लिए बावर्चीखान की घोर
भरटा । उमन मान क कमरे म घारा घोर धाँगे फाड-फाडकर दना । मन्न

म बात उसकी समझ में आ गई। उसने संप्य पटका दीवार पर टेंगी कटार फटक स छापी और उसकी मूठ की धगुलियो में इतना जकड़ा कि उसकी धगुलियो की नसें फूल गईं। अब कटार की नोक से उसने धकसीनिया की नीली-पीली जकेट उठाई और उस ऊपर उछाला। वह नीचे गिरी तो एक हाथ में उसने उसका दो टुकड़े कर दिए।

वह दूर और क्रोध से भेड़िय की तरह जगली हो उठा। घाबे में न रहा और जकेट के टुकड़ा को बार-बार ऊपर उछालता तार-तार करता रहा। कटार का तेज लोहा हवा में सीटियाँ बजाना लगा।

फिर कटार उसने एक कोने में फेंक दी बावर्चीलाने में गया और मेड़ का सहारा बंध गया। उसका सिर झुक गया। वह काँपती नोहे-जैसी धगुलियाँ मेड़ का गढ़े सिने पर देर तक फेरता रहा।

१३

एक मुसीबत अपने साथ हजार मुसीबतें लेकर आती है।

जिस दिन त्रिगोरी घर से निकला उसके भगले दिन दोपहर में हेत बाबा की सापरवाही से मिरोन कोरनूनोव के वशानुगत साइ ने उसकी सबसे अच्छी घोड़ी की गर्दन में सींग धुसेड दिया। हेत-बाबा भय से पीला पड़ गया। वह काँपता हुआ भागा भागा बावर्चीलाने में आया।

भाफ्त है मालिक! साँड ने इसे मौत ले जाए दुष्ट साँड ने

‘क्यों क्या कर दिया साँड ने?’ मिरोन ने धवराहट से भरे स्वर में पूछा।

घोड़ी मार डाली। उसकी गदन में सींग धुसेड

मिरोन जैसे बंटा था वैसे ही उठकर हाते में भागा आया। कुएँ के पास सीला पाँच साल के साल साँड को डंड से मार रहा था। साँड का सिर झुका हुआ था उसकी गदन का सटका हुआ माँग बर्फ पर पिसट रहा था और बर्फ का अपने लुरे से रौंदते हुए वह अपनी पूँछ के चारों ओर बर्फ का बूरा उड़ा रहा था। मार का सामने झुकने का बजाय वह तेजी से डकारा और अपने पिछले पाँच इस तरह पटकने लगा जैसे कि हमने की धमकी कर रहा हो। सीला उसकी नाक और भ्रुन

बगल झटके-पकड़के जमाता रहा। बिखेई उसकी पेटी पकड़कर उसे साई के घागे से पीछे घसीटने लगा पर वह गानियाँ बकता रहा और अपने बचाव की उमने कोई चिन्ता न की।

"मीत्का पीछे रहो जरा भगवान् न कर अगर वहा उमने तुम्हारे पेट में साग लगा दिए ना भालिक कहिय न इससे कि पीछे हटे।"

मिरान भागा भागा कुए पर गया। घोड़ी चहारदीवारी के पास गलन डाले निडाल खड़ी थी। उसका सारा बदन काँप रहा था। तेज साँस से उठती गिरती बगल का हिस्सा पमीने से तर था और सीन पर से खून की धार बालू थी। उसकी गलन में भाव इतना बढ़ा हुआ था कि आदमी का हाथ उसमें आसानी से चला जाए। टेंदुआ साफ दिखाई दे रहा था। मिरान ने उसके भाये व बालो क सहारे उसका सिर ऊँचा किया। घोड़ी ने अपनी घाँसे भालिक की घोर उठाई माना कि भूक स्वर में पूछ रही हो भय क्या होगा? मिरान ने चीखकर कहा 'दौडा घोर किमी से गहबलत की छाल सान को नहो। जल्नी करो।'

हेत-बाया भागा भागा छाल लाने गया और मीत्का अपने पिता के पास आया। उनकी एक आँक साई पर जमी हुई थी। साई इकारता हुआ पूरे आँगन में चक्कर काट रहा था।

घोड़ी के भाये व बाल पकड़ लो। पिता ने आदेश दिया कोई आँमी दौडकर ताण साधो। जल्नी करो जल्नी, नहो तो जान उखाडे जाएंगे।

घोड़ी के ऊपर के होंठ के चारा भार तागा बाँधा गया ताकि उसे दू न हो। बूडा घीस्का हफिता हुआ भागा आया। एक रगीन बटोरे में धोक सहनून घोर फल का जलसक साया गया।

बूडा भर्राये गले से बाला उसे ठंडा करो। बहुत गरम है। मिरान फेरी बात सुनते हा ?

पिता तुम घन्तर जाओ। तुम्हें यहाँ सही लग जाणगी।

मैं कहता हूँ कि यह दवा ठंडी करने तुम घोडा की जान मने पर

म आस उसकी समझ म धा गई । उसने लैम्प पटका दीवार पर टगी कटार झटके से खीची और उमकी मूठ को घगुलियो म इतना जकड़ा कि उसकी घगुलिया की नसें फूट गई । धब कटार को नोक स उसने घकसीनिया की नीली-पीली जैकेट उठाई और उस ऊपर उछाया । वह नीच गिरी तो एक हाथ म उसने उसमें दो टुकड़े कर दिए ।

वह दद धीर क्रोध से भेड़िय की तरह जगती हो उठा । धाये म न रहा और जकेट के टुकड़ो को बार-बार ऊपर उछासता ताग-तार करता रहा । कटार का तेज सोहा हवा म सीटिमाँ बजाना रहा ।

फिर कटार उसने एक कोने म फेंक दा बावर्चीलाने म गया और मेर के सहारे बँठ गया । उसका सिर झुक गया । वह काँपती लोहे-अँसी घगुलियाँ मेर के गदे सिरे पर देर तक फेरता रहा ।

१३

एक मुसीबत घपने साथ हजार मुसीबतें लेकर आती है ।

जिस दिन गिगोरी घर से निकला उसके घगम दिन दोपहर म हेत बाबा की सापरवाहा स मिरोन कोट्यूनोव के बगानुगत साड ने उसकी सबसे घच्छी घोड़ी की गर्दन म सीग घुसेड दिया । हेत-बाबा भय से पीला पड गया । वह काँपता हुमा भागा भागा बावर्चीलाने म आया ।

'भाफत है मालिक ! साँड ने इसे मौत ने जाए दुप्ट साँड ने

क्यों क्या कर दिया साँड ने ? मिरोन ने घबराहट से भरे स्वर में पूछा ।

घोड़ी मार डाली । उसका गन्न मे सीग घुसेड'

मिरोन जैसे बठा था वैसे ही उठकर हाते में भागा आया । घुएँ क पास मौत्का पाँच साल के साल साँड को डडे स मार रहा था । साँड का सिर झुका हुमा था उसकी गर्दन का सटका हुमा मौसकफ पर घिसट रहा था और बफ को घपने गुरा से रौंदते हुए वह घपनी पूँछ के चारो घोर बफ का घुरा उडा रहा था । मार क सामने झुकने के बजाय वह तेडी से डकारा और घपने पिछने पाँच इस तरह पटवने लगा जैसे कि हमले की तयारी कर रहा हो । मौत्का उसकी नाक और घगस

बगल डडे-पग-डडे जमाता रहा। मिछई उसकी पटी पकड़कर उस साई के घाने स पीछे घसीटने लगा पर वह गानियाँ बकता रहा और घपन बचाव को उमन कोई चिन्ता न की।

'भीत्ता पीछ रहा जरा 'भगवान् न कर अगर कहा उमन तुम्हारे पट म माग लगा लिए ता मानिक कनिय न इसमे कि पीछे हटे।

मिरान भागा भागा हुए पर गया। घाही चहारदीवारा क पाम गन डाले निडाल खड़ी थी। उसका मारा बदन काँप रहा था। तेज साँस से उठती गिरती बगल का हिस्सा पमीन म तर था और सीने पर से खून की घाट चालू थी। उमकी गन म घाय इतना बड़ा हुआ था कि घातमी का हाथ उसम आमानी म चला जाए। टेंप्रा माप सिवाई दे रहा था। मिरोन न उमके मापे क घाना क महार उमका मिर ठेका किया। घोड़ी ने घपनी घाँसे मानिक की भार उठाने माना कि मूक स्वर म पूछ रही हो भव क्या होगा? मिरोन न चौंकर कहा 'दौडो और किसी से गहबलून की छाल मान का कहा। जल्ती करो।

हेत-बाना भागा भागा छान छान गया और भीत्ता घपन पिना के पाम घाया। उमकी एक घाँस साई पर जमी हुई थी। साई डकारना हुआ पूरे घाँस म चक्कर बाट रहा था।

'घोड़ी के माप क बाल पकड मो। पिता न भादेग दिया कोई घातमी दौडकर तागा लाया। जल्ता करा जल्दी नहीं तो बाल उलाहे जाएंगे।

घोड़ा के ऊपर क होठ क घारा घार तागा बाँधा गया ठाकि उमे दमे न हो। बूडा घींका हाँकता हुआ भागा घाया। एक रगान कटारे मे भोक गहबलून और फल का जसमेक सामा गया।

बूडा भरवि गले म बाना 'उम ठहा करो। बहून गरम है। मिरोन मेरी बान मुनत हो ?

'पगा तुम घनर जाओ। तुम्हें यहाँ मर्ने लग जाएगी।

मैं कहना है कि यह दबा ठही करो 'तुम घाटा की जान मने पर

उनाम् हो क्या ?

घाय घोमा गया । ठिठुरी हुई अगुलिया स मिरान ने रफू की मूढ़ मे कच्चा घागा पिरोया और उससे बिनागे को माफ-मुघरे बग स सिया । अब वह घर लौटने को मुडा ही था कि उसकी पत्नी पवराई हुई भागी भाई । अपने पति को एकांठ म बुलाकर उसने कहा नताल्या भाई है मिरोन हे मेरे भगवान् ।

अब क्या हुआ ? मिरोन ने पूछा । उसका चहुरा पोसा पडन सगा ।

पिगारी ने मुसोबत लड़ी की है । वह घर छोडकर चला गया है । लुकीनीचना ने अपनी याह ऐसे फलाइ जैसे कि कोई कौवा उडने को तयार हो रहा हो । फिर उसने अपने स्वट पर हाथ पटक और फुट कर रा पड़ी ।

मागे गाँव के सामने इजबत धूल म मिला दी । हे भगवान्, कसा दुख लिया है । भाह ।

मिरान ने ल्या कि जाड़े का छोटा कोट पहने और घाल छोड नताल्या चाक्चीखान म लड़ी है । उसकी घाला की कोरो म भासू घटवे हुए हैं और उसके गाल तमतभाये हुए है ।

तुम यहाँ क्या कर रही हो ? कमरे म झपटकर घाते हुए उसका पिता गरजा भाभा न माग-नीटा है क्या ? तुम एक दूसरे के साथ निभा नही सकते ?

'वह घर छोडकर चला गया है । अपने पिता के सामने घुटनों के बल बडना हुई नताल्या बोली पापा मेरी जिनदगी बरबाद हो गई गुने बापम भा जाने दो' पिगारी उसी मोरत के साथ भाग गया है उमा मुझे छो- लिया है । पापा में मिट्टी म मिल गई हैं । अपने पिता की भूरी दाढा की धार दिनपूवक देखत हुए वह सिसकिया भरन लगी ।

देखा पांढा दखा

'मैं यहाँ नही रह सकती । यहाँ अब मेरे लिए कुछ नही रहा । मुझे यहाँ रहन ना । अपनी याहा म सिर छिपाय घुटना के बल चलकर वह पास घाँ और उसने अपना सिर पिता की बाबुघो

पर टिका दिया । तेमे मरुमान तिर म मरक गया और सीधे काल बाल पील काना पर आ रह । एम भवमर पर आंमू मई की वर्षा की शीछारा की भाँति हात हैं । माँ न नताल्या का घट्टा अपने स्वट म छिपा लिया और उस धीरज बधाने क लिए ममताभरी इधर-उधर की बातें करने लगी । किन्तु मिरोन की त्रोध आ गया । वह सीढिया की आर दौडा ।

दा स्लजें तयार करो । वह चीखा ।

सीढिया पर एक मुर्गा अपनी मुर्गी क पीछे पत्पटाहट करत हुए दौड रहा था । वह मिरान की चीख म भयभीत हो गया और पय कफडाता कीकता खलियान की आर भागा ।

दो स्लजा म घोडे जोतो । मिरोन चीखता और सीढियो क जगत की इस तरह वाग-वार भोवरें लगाना रहा कि हाते-हाते वह बिलकुल बजार हो गया । वह बावर्चीखान म केवल नव लौटा जब कि हत-बाबा घुडसाल म घाडे निकाल जातन लगा ।

मीत्का और हेत-बाबा नताल्या की सारी चीख-बस्त लान क लिए भेनखोव-परिवार के लिए रवाना हुए । गफनत म हेत-बाबा न सडक पर चलते हुए एक छोटे मूँधर को उठाकर लाका दिया । मन-ही-मन सोचकर था इच्छा कि हा सकता है कि मालिक भव घोडी का सम्मा भूम जायें । उमन मगाम शीली कर दी । फिर मोचा— बूडा पाजी है कभी नहीं भूलगा यह बात । भव उमन घोडे क शरीर क मयमे कामय हिम्मे पर चायुक जमाया ।

१४

यवानी लिम्ननित्की अनामान-नाइफगाड रजामट म लेपिण्ट था । भपभगों की हरदिल रेम में एक वाग टोकर खाकर वह गिर पडा और उसका बायाँ हाथ टूट गया । अस्पताल म घाने क बाद उमने पर जान को ए मप्ताह की पुट्टी ली और अपने पिता के पास घना आया ।

बड अनरम यागादनाण में अरन रहता था । अगारह मौ अम्मा म यह गवारी पर मवार बारया क जगना म गुडर रहा था कि उताकी

पत्नी की मृत्यु हो गयी। क्रान्तिवारियों ने कच्चाक जनरल का निगाना बनाया लेकिन निगाना छूकने से वह तो बच गया उसकी पत्नी तथा कोचवान काम भा गए। उस समय यवानी क्वल दो बप का था। इन घटना के तुरन्त बाद जनरल भवकांग ग्रहण कर यागोदनोए म था बसा धीरे उसने मरानाव प्रयोग की म्म हज़ार एकड की जागीर छोड़ दी। यह जागीर १८१२ के मुद्द म पराक्रम दिखाने पर उसके परबावा को गी गई थी। सो यागोदनोए म ध्यान पर वह क्तर साधना का जीवन ध्यवीत करने लगा।

उम्र हात ही उसने अपना पुत्र यवानी का कडेट कोर म भेज दिया और स्वयं खेतीबाड़ी म लग गया। उसने दाही भस्तबलो से भच्छी से भच्छी नमन क घोड़ खरीद और उनवे और नामी प्रावाल्स्का भस्तबलों की मयघोष्ठ घाडिमा के खून क मेल स एक नई नस्ल तयार की। वह अपनी और किराये का जमीन पर पशुपालन करता अपना उगाता गरद और गिगिर म गिकारी कुत्ता को साथ लेकर गिकार करना और कनी-कमी कमरा अन्दर म बन्द कर हफ्तों गराव क नम म पूर रहता। उस पेट की तकलीफ थी और ठोस या भारी खाना खाने के लिए डॉक्टर ने विलकुल मना कर रखा था। वह अपना भोजन दाँतों से खाना उसका रस चूमता और कुचता हुआ हिस्सा तख्तरी म छूक लेता। यह तख्तरी उसका निजी नौकर बेनयामिन हाथ म साथे रहता।

बनयामिन काने मोटे बाला वाला एक किसान था। मोटा लडा जवान था पर निमाय की कोई नील नहीं डीनी थी। उसे यहाँ नौकरी करत छ बप ही गय थ। पहले तो अब जनरल कुचला हुआ खाना तख्तरी म छूकता ता उमम देखा न जाता पर बाद मे उसे घालन हो गई।

जागीर क अन्य निवासा थ बावचिन सूकेरिया भस्तबल का पुराना नौकर गाका तथा गडरिया तिखोन। धुरू स ही नूकरिया न घकमीनिया की स्टोव के पास पटकन नहीं गया।— मालिक गरमी म भमग से सोना की काम पर मगावेंगे तब तुम पकाना घमी तो है ही

काफी ह इतना कुछ करने के लिए। प्रेमोनिमा को हफ्त में तीन दिन घर के पग बोन असह्य मुगिया को चुगा डालने तथा मुर्गी पालन विभाग को साफ रखने का काम सौंपा गया। प्रियारी अपना अधिकांश समय शास्त्रा के साथ लड्डा के बने घन्तबन में गुजारता। बुढ़दा मफद धाना का एक पिढ था पर हर भादमी उसे प्यार से 'गाका' ही कहकर पुकारता था। गापद बूढ़ लिम्ननित्स्की भी उसे इसी नाम से पुकारता था। वह पिछले थोस वषों में उसकी मवा करता आ रहा था। गापद बूढ़ा उसका नाम-कुननाम भूल गया था। अपने यौवन-काल में गाका कोचवान था पर बुढ़ाया धान के साथ उसकी नजर कमजोर पडने लगी तो उसे घन्तबन की देख-रेख का काम सौंप दिया गया। मफ्र वाला से मडी उसकी मोटी नाक उसकी जवानों के दिना में किमी न एक मुक्क से चपटी कर दी थी। अब उसका मुख पर मदव बच्चों की-सी मुसकान रहती। वह ममार को निष्कपट नेत्रों से देखता। गाका को बादका पीन का शौक था। जब वह नश में मस्त होता तो हात में ऐसे घूमता कि जिस मानिक बस यही हो। पर पटकते हुए वह बूढ़ लिम्ननित्स्की के शयन-कक्ष के नीचे मडा होता और जोर से चित्वावर कहता 'मिकोलाई लक्सएविच ! मिकालाई लक्सएविच ! यदि बूढ़ा लिम्ननित्स्की अपना कमरे में हाना तो सिढकी पर आ जाता। गरजना, अब बन्माण बही के ! पी धाया है न !

गाका अपने पाजामे को भन्के म ऊपर उठाता धावें मारता तथा मुसकराता। उसकी मुसकान उमने पूरे चहर पर चिरन्ती रहती।

मिकालाई लक्सएविच मेर मानिक मैं धारको खूब जानता हूँ। वह अपनी पतनी गन्दी घगुनिया में जमे घमकाता।

आ माआ धाराम से नगाउतर जाएगा। मानिक गान्ध भाव से कहता।

भाप गाका की पटपा नहा द सकत ! पहारणावारी की रेलिंग के पास जान हुए गाका हमना 'मिकोलाई लक्सएविच ! भाप बरी ही तरह हैं। भाप और मैं—हम दोना एक-दूसरे को इस तरह

जानत-समझते हैं उस मद्धनी पानी को जानती समझती है। आप धीरे में हम लाग रईस हैं रईस ! रियासत की लम्बाई-चौड़ाई बतलान के लिए बह अपने हाथ फलाया। हमको सब जानते हैं सब जिनने भी दोन के इलाके में रहते हैं वे सब हम शाशका की भावाञ्ज मे प्रधानक ही दद धुल उठना में धीरे आप मेरे हुजूर हम सबके भले है। हमारा सब कुछ मला है। बस इतनी-सी बात है कि हम दोनों की नाक मरान हैं।

ऐसा क्यों है ? उसका मालिक हँसते-हमते लोट-पोट हो जाता।

बादका की वजह से ! पाका भाव मारत धीरे हँडों की घाटत हुए हकलकर कहता निकोलाई लक्सेएबिच पीना बन्द कीजिये नहीं तो हम बरबा हो जाएंगे आप धीरे में हम जिनो ही जमीन कायदा जरा-जरा बेचकर पी डालेंगे।

‘आपको धीरे नगा उतारने के लिए पी सा। बद्ध लिस्तनिरस्की बीस कोपेक का एक सिक्का फेंका। शाशका उसे लोकता अपनी टांगी में छिपाता धीरे बिल्लावा।

मद्धा जनरल दास्विदानिया !

घोडो को पानी पिताया ? उसका मालिक मुनकराकर पूछता धीरे जवाब की मन्मता पहल से ही कर लता।

बाहिल कमीना सूभर का बच्चा ! गुम्से से शाशका का बदन कापने लगता भावाञ्ज फटन लगती पाका घोडा को पानी पेना भूल गया क्या ? मैं कहता हूँ कि मेरी जान निकल रही हो तो भी मैं अपने घोडों के लिए शीककर एक वास्ती पानी म पाने की नीयत रखता हूँ धीरे सू सोघता है कि

बूडा बमततब भारोगे स काधित हाता गालिया देना धीरे पूंसे गिराता भाग जाता। बाद म सब-कुछ भाफ कर दिया जाता—बादका पीना भी धीरे मालिक के माथ ऊनजसून डग से कातें करना भी।

घस्तबल की नौकरी से उस हुटानवाला काइ न था। जाड़े हा या गर्मी वह घस्तबल की एक खाली काठरी में ही सोता। वह घपन घाप में सर्दिस भी था और घाडा-डावटन भी। बसन्त में मदान और घात्रियों से वह घाडा बं निए पास और जड़ी-बूटियाँ खोद-खाकर लाता। उसने घस्तबल की दीवारो पर घाडा बं रागा बं इलाज के लिये सूखी जड़ी बूटियाँ के गुच्छे-के-गुच्छे लटका रखे थे।

जाड़े हा या गर्मी घाडवा के सोन की कोठरी में मकड़ी के जाले की भाँति एक सुन्दर मधुर गंध की सनसनाहट का अनुभव होता रहता था। सूखी घास को इतना अधिक दबा लिया गया था कि वह तल्ल की तरह बड़ा हो गई थी। उसके ऊपर घोड़े का श्रोहार ढँका रहता और घोड़े के पसीने की गंध से भरा उसका शोट उसकी चारपाई पर गढ़े बिछौने का काम देता। भरवार और चीज-बस्त का नाम पर बूड़े के पास या एक काट और एक भइ की खाल और बम।

तिखान नाम का मोटा-जगडा दिमाग से बुद्धू बज्जाव लूकरिया के साथ रहता और बय ही गाँवा तथा लूकरिया से ईर्ष्या करता। माह में एक घार धून की बिकटी बभीड़ का बदन पकड़ वह उस एकान्त में ले जाता और कहता 'बुद्धू, मरी औरत पर घपना हऊ न जमा।

यह तो गाँवा भयंप्रण दृष्टि से घाँस मारता।

तुम उससे दूर ही दूर रहो निम्नान भाग्रह करता।

केचक बं दागावाले घहरे मुझे बहुत पसन्द हैं कोई ऐसी औरत मिल जाए तो मुझे बौदका की जरूरत नहीं घहर पर जितन दण्ड हा औरत यन् को उतना ही पसन्द करती है।

घपनी मफ़दी का ता निहाज कर। फिर तुम तो डाक्टर भी हा तुम घाडा की देखभाल करते हा सभी राज समझते हो।

मैं सभी तरह की डाक्टरों पर सक्ता हूँ गाँवा कहता।

दूर रहो बावा बड़ी बुरी बात है

बेटे घाजबन में ही लूकरिया को हामिल करूंगा मैं। तुम तो मनाम कहो घब उस। मैं उम तुमसे उदावर रहेगा।

बभवर रहना मैंने तुम्हें उसका माय दम लिया तो जान निबाल

लूंगा। तिस्रोण भाह भरकर रहता धीर अपनी जब न तबि क कुछ सिक्क निकालता।

धीर यह कम महीनो चलता जाता। होते-होत यागोदनाए का जीवन घटनाविहीन धीर बेजान होता गया। यागोदनाए सभी चालू सडकों से दूर एक घाटी में था धीर गर्द के चारम्भ हाते ही घास-घास क सभी गाँवा से उसका सम्बन्ध टूट जाता था। जाद की रातों में भेड़ियों के झुंड-झुंड जंगल की माँसे से निकलकर आ जाते धीर गुर्ग-गुराँकर घोड़ों को डराते। तिस्रोण मालिक की दुनाली बंदूक लेकर भेड़ियों को डराने के लिए चरागाह में जाता धीर सूकेरिया सहमकर सोचती कि बन्दूक घब दगा कि तब दगी। ऐसे मौका पर गया तिस्रोण एक लूब भूरत बहादुर जवान के रूप में उसकी कल्पना में घाता फिर जब नौकरी के ब्याटर का दरवाजा भडाक में होता धीर तिस्रोण घाता तो क पसंग पर जगह कर देती धीर अपने बफ में ठिठुर माथी का बडी ममता से दुसारी।

गर्मी के दिनों में यागोदनाए में मजदूर काफी रात गए तब काम करते धीर तब तब बहल-बहल बनी रहती। मालिक ने कुछ सौ एकड़ जमीन पर तरह-तरह की फसलें बोई धीर उसके लिए मजदूर नौकर रके। यवनी जब-तब घर घाता तो बगीचे धीर चरागाह में इधर-उधर उबताया सा घूमता। वह सुबह से ही भोज के फिनारे मछली पकड़ने की बसी लेकर बठ जाता। यवानी मकाल कद का छोडे सीनेबाला जवान था। वह बाल बरबाक डग के रकता धीर बाला की एक बट माथे की दायी धीर सटकती रहती। उसका फौजी बोट उस बहुत ही फवता।

जागीर पर शिगारी के पहल दस दिन तो प्रायः छोटे मालिक के साथ बीत। एक दिन बतयामिन मुसकराता हुआ नौकरों के ब्याटर में घाया धीर बाला शिगारी तुम्हे छोटे मालिक बुला रह हैं।

शिगोरी येबोनी के कमरे में गया धीर मदा की तरह दरवाजा पर बडा हा रहा। मालिक ने कुर्सी पर बैठने को इगित किया तो शिगोरी कुर्सी के निरे पर बठ गया।

‘हमारे घोड़े कैसे सगे ? तिस्रनिस्का न पूछा।

सब अच्छे हैं। भूरा वाला तो और भी गानदार है।'

उसका खूब सिखाया लबिन दीठाना नहा।

यही मुझम बाबा गानका न कहा है।

घाँवें भिक्वाइत हुए भानिक ने कहा तुमका मई म गिखण-गिबिर
जाना है न ?

'जी हाँ।

मैं अनामान म कहूँ दूगा। तुम्हें नही जाना पड़ेगा।'

महरबानी हूँदूर।

छागनर कृष्णी छाई रही। अपनी बर्दी व बदन मोलवर यवोनी न
अपनी धोरता-जमी गोरी छाती खुजलाई।

तुम्हें र नहीं लगता कि अकमीनिया का म उस तुमसे छीन से
जाएगा ? उमन पूछा।

उमन अकमीनिया का छोड़ दिया है अब वह उसकी बात पूछगा
नही।

तुम्हें कम मालूम ?

बन ही मेरे गाँव का एक अकमीनिया मिला था। उमन मुझे बतनाया
कि स्त्रीमान इन दिना दृढकर पीता है। कहता है—मुझे अकमीनिया की
जम्मत नही मैं कोई और खादा गरम औरत खोज लूँगा।

अकमीनिया खूबमूरत औरत है। निस्तनिस्की न जग मुमकरा
कर कहा।

'हाँ बुगो गही है। प्रिगारी न कहा और उससे चहर पर चिन्ता
न बान्न छा गए।

यवाना की छुट्टी व कुछ ही दिन रह गए। हम बीच यवानी का
अधिराग समय प्रिगारी के कमरे में ही बाता। अकमीनिया अपन कमरे
की बिलकुल माफ रखती। यह गद म मन्नी दावागों पर मपत्ती करती
गिटकी चौकट रगटकर माफ करती और फना को टूटी इट म रगटनी।
अपना छोटा गानदार दग स मिला कोट कन्धे पर डाले अधिराग उससे
कमरे म एक समय घाना जबकि प्रिगारी घोरो व काम में फँसा होता।
पहन तो व बावर्चांगाने म जाना और मिनट-दा मिनट सूबेरिया से हूमी

मजाक करता और फिर घाग कमर में चला जाता। एक दिन वह स्टूल पर बैठ गया और मुनकराते हुए बेहयाई से एकटक भक्तीनिया की देखता रहा। औरत परधान हो उठी और बुनाई की सलाइयाँ उसकी अँगुलियों के बीच काँपने लगी।

कहा भक्तीनिया मज में तो हो ? अपनी सिगरेट का धुमाँ छाड़ते हुए वह बोला। सारा कमरा नीचे धुएँ से भरा उठा।

“बहुत मज में हूँ। धन्यवाद। भक्तीनिया ने अपनी आँखें उठाई तो येवोनी की पनी इष्टि का भाव समझने ही लाल हो गई। उसने येवोनी के प्रश्न के उत्तर उलट-साधे दिये उसकी निगाह से बचन की कोशिश की और कमर से बाहर जा सकने का मौका ढूँढ़ने लगी।

‘जाऊँ और बत्ती की झुगा डाल छाऊँ जरा।

थोड़ी देर और बठी। बत्तखें इन्तजार कर सकती हैं। वह मुनकराना और धुइसवारी के कसे हुए बिरत्रिस से लैस पर हिलात हुए उसके विगत जीवन के विषय में सवाल पर सवाल करने लगा। उसकी कनामन आँखा में उसकी कामना लहरें लता रहीं।

प्रिगोरी के कमर में आते ही येवोनी की आँखों की घाग राख हो गई। उसने उसे एक सिगरेट दी और तुरन्त ही बाहर चला गया।

क्या वह होता था ? प्रिगोरी ने भक्तीनिया की धार देख बिना हाँ पृच्छा।

वह मुझ क्या मासूम ? प्रीजी अपनी की नजर की माद कर भक्तीनिया बरवत हँसी वह अन्दर आया और प्रीशका इस तरह से बैठ गया। उसने उसे बठकर खिलाया कि येवोनी किस तरह कबे भुकाए बठा था— और सब तक बठा रहा जब तक कि मैं नग नहीं था गई।

तुमने उसे अन्दर बुलाया ? प्रिगोरी ने श्राव से अपनी आँखें सिबोरी भव भाय तो तुम उसे बाहर निकाल देना यहाँ से मुझे उस निगाहे का क्या अरुस्त ? नहीं ता मैं उस सीकियो से नीब लोका दूँगा।

भक्तीनिया ने मुनकराते हुए प्रिगोरी की धार देखा। वह निश्चय

न कर सकी कि प्रिगोरी गम्भीर हाँकर यह बात कह रहा है या मजाक कर रहा है।

१५

सैंत व चौथ सप्ताह म जाड़ा समाप्त हाचना। पानी की धार दान के किनारा पर गोट सगान लगी ऊपर की बफ भूरी पठकर स्पज की तरह फूल गई। एक दिन नाम का पहाड़िया म ममर ध्वनि घाई। पुरानी नहावन के अनुगार तो पाला पठना चाहिए था किन्तु वास्तव म यह बफ के पिघलने की पूर्व-सूचना थी। मुबह की हवा म हल्क पाल की सनसनाहट रही पर दापट्टर होन-होन बीच-बीच म जहाँ-उहाँ बऊ गल गई और माच धारा धार गमकने लगा।

मीरोन कोरूनोव जुताइ की तयारियाँ धाराम से करता रहा। दिन लम्ब हा घले। भव वह भट म बठा हेंगियो व दति तेज करता मा गाडी व पहिया की मरम्मत करता। सैंत पव व चौथ सप्ताह मे वृद्ध प्रीका व्रत रखता। गिरज स लौटने म वह ठड व मार नीला पठ जाता और अपनी पनोहू सूकीनीचना स गिकायत करता वह पादरी उवा डालता है। किसी काम का धाम्भी नहीं है। एतना मुस्त है जितना कि घडे साँकर म जान वाला कोई गाडीवान।

घाप अपनी व्रत यत्रणा-सप्ताह म रखते तो ज्यादा ठीक रहता। उन दिन इतनी ठड नहीं पडती।

'नतान्या को बुतामा। प्रीका कहता वह मेरे लिए गरम मौज बुन देगी।

नतान्या का भव भी यह विवास बना रहा कि एक-न-एक दिन प्रिगोरी उम किर स अपनीयगा और उमर अपनीयगा। उसका हृय प्रिगोरी व लिए कल्पना। यदि कोई इसके विपरीत कहता तो वह उसकी बात पर कान नहीं दनी। दुबभरी रातें वह करवटें बन्न-बन्नकर बिता दनी। राम उम साए जाती। भना उम ऐसी उम्मीक वहाँ थी और कना ऐसा उमन मिया था कि यह नरक मुगल काइ म पाज और बड़ी और वह भय म कानर हो कृपघाप

उसके परिणाम की प्रतीक्षा करने लगी। अपने कमरे के दरवाजे के सामने उसकी अवस्था एसी रहती जसी जंगल के वीराने में पड़ी धायल टिटहरी की। बात यह हुई कि मक लौटने के बाद से ही उसका भाई भीत्का उसे पाप की नज़र से देखने लगा। एक दिन उसे बरसाती में पाकर उससे साफ-साफ पूछने लगा क्या तू अभी तक प्रीशका के पीछे दीवानी है ?

“इससे तुम्हें क्या मतलब ?

मैं तुम्हें तेरे दुख से छुड़ाना चाहता हूँ।

भीत्का के मन का भाव समझ नताल्या डर गई। भीत्का का बिलिन्मा-जसी हरी भ्राँखें चमकी धीर बरसाती का घुंघरी रोगनी में भ्राँखों की कोरों जैसे तेल से चिकना उठीं। बिनाह बन्द कर भागी भागी नताल्या बाबा के कमरे में गई धीर वहाँ खड़ी होकर अपने लिन की घड़नें मुनवी रही। अगले दिन हाते में भीत्का उसका पाम धाया। वह पशुओं के सामने हरी घास डाल रहा था। घास की हरी डठलें उसके खड़े बालों धीर फर की टोपी पर लटक रही थी।

इस तरह अपनी देह गना नहीं नताल्या

मैं पापा से कह दूंगी। अपने बचान के लिए हाथ उठाते हुए वह चिल्लाई।

तू बेवकूफ है !

धलग रह मुझसे अलग रह। जानवर नहीं का ।

आखिर तू चिस्सा क्यों रखी है ?

‘तुम चले जाओ यहाँ से भीत्का ! मैं अपना पापा के पास जाकर सब-कुछ कह दूंगी। तुम इस तरह मेरी तरफ देखते किस हो ! नाज्जुब है कि धरती पट नहीं जाती और तुम उसमें समा नहीं जाते।

धरती मुझे नहीं निगलती तुम देखती तो हो ! भीत्का ने अपनी बात के समझने में पर पटके धीर नताल्या की धार बढ़ा।

मेरे पास न आना भीत्का मैं बहे देती हूँ तुमसे

धर, इस समय न सही रात को धाऊँगा। भगवान् कसम मैं धाऊँगा।

नताल्या भय से काँपती हुई हाते में बाहर खली गयी। उस दिन

रात को उसन सन्तूक पर अपनी बिस्तर लगाया और अपनी छोटी बहन को अपने पास मुना लिया। सारी रात करवें बन्दती रही। उसकी जलती हुई घाँवें अचकार भेदन का प्रयत्न करती रहीं हल्की-से-हल्की ग्राहट पर उसका नान खड़े होते रह। वह मन-ही-मन सावती रही कि कोई मरे पाम आया कि मैंने चिल्लाकर सारे घर को जगाया। पर पान्ति भग हाती रही या तां बगल के कमरे में साय ग्रीका के खराना में या कभी-कभी उसकी बहन की गुर्दाहट से।

नताल्या के अन्तर की पीडा का अनुमान बबल स्त्रियाँ ही लगा सकती हैं। बदना ऐसी कि धीरज बघाय न बँधे। उस पर दद का यह सार तिन-ओ तिन चलता तो भी एक बात थी। यह सिलसिला हर घाय-तिन की बात हो गई।

अपनी गान्ती की बोगिंग में जो बालिख भीला ने अपने मुह पर पात ली थी वह अभी तक धुन नहीं मकी थी। इस कारण उसका स्वभाव में उगसी का भाव चिढ़चिड़ाहट ली धुन गई थी। हर तिन गाम का घर से चला जाता तो मुबह से पहले तो गाय ही कभी नौटता। वह गाँव की ऐसी धीरता का पीछे रहता जा अपने पतिपों के फौजी ड्यूटिया पर चले जाने का बाद या अस्तात्राव के यहाँ जुमा खेतते समय अपनी तबीयतें बन्दना चाहती। पिता से उसका अन्वहार छिना नहीं रहा। लकिन फिलहान उमन चुप्पी ही साथ रखी।

ईस्तर से जरा पहले पन्तली प्राकोफिएविच ने नताल्या का मोखोव की दुकान के पाम में गुजरते देखा तो आवाज देकर बोला नताल्या मुझे जरा !

नताल्या रुक गई। अपने समुद्र के चहरे का देखते ही उमका हृष्य चीत्कार करने लगा। प्रिगोरी की माँ ताबा हो गई।

तुम ता कभी मिलने जुलने भी नहीं जानीं। तुमने ऐसा त्याग दिया है हम बूडा को ऐसा भी क्या ! जरा उमने घाँवें बचाकर इन तरह बोना जम कि नताल्या को ठेस उमने ही पहुँचाई हो।

तुम्हारे माम तुम्हें बहुत पाम बगती है क्या हात-पात है तुम्हारे ?

नताल्या सम्हनी। बोली धन्यवाद फिर एक क्षण हिचकिचाई। उस बापू कहकर सम्बोधित करना चाहती थी पर बोनी पन्तली प्राकोफिगविच। थर पर बड़ा काम रहता है।

हमारा धीरका उफ। बूठे ने दुख स सिर हिपाया उस बदमाग ने हमारी बडी नाक कटाई है। फिर यह वि हम सब कसे धाराम से जी रहे थ।

धोह पापा। नताल्या की धावाज फसने लगी किस्मत मे ऐसा लिखा था धोर क्या कहा जाए।

नताल्या की घाँखो मे धामू देखकर पन्तली भ्यग्र हो उठा। नताल्या ने होंठ भीचे और धामू पीने की कोशिश की।

पन्तली बाला भ्रष्टा बेटी विदा। उस सुपर के बच्चे के लिए दुख न करो। वह तेरी भगुली के नाखून क बराबर भी नहीं हा सकता कभी। शायद कभी लौ भी आवे। मैं उससे मिलना चाहता हूँ। दो-दो बाने करना चाहता ह उससे।

नताल्या सिर मुकाये धाग बड गई। पन्तली अपनी टाँगें इन तरह धमर-उधर करता रहा अस वि भाग जाना चाहता हो। नुक्कड़ पर पहुँचने ही नताल्या न पीछे मुड़कर देखा। बूडा लँगडा-लँगडाकर खोक पार करता नजर धाया। धारिर का साग बोक हाप की छडी पर सपता दीला।

१६

वसन्त क दिन प्राय तो स्टॉकमन के यहाँ की बठकें कम हो चली। गाँव क लोग अपने खेतों की समारियों मे लग गए। बस कवन द्जिन मन ईवान मनबिसएविष धोर नेब घात धोर मिल स अपने साथ दाविद का स घाते।

ईस्टर क पहले क बहुस्पतिवार के दिन वे लोग वरुगाँव मे धाम को जरा जल्दी ही भा गए। स्टॉकमन अपनी बच पर बठा पन्थान कोपेक के चाँदी क सिक्क की बनी एक धगूठी को साफ करता मिला। धस्ताचल का धोर प्रस्थान करते मूम की रनिमयाँ हमरे मे पीनी

गुलाबी गज मरी रोगनी उठेन रही थी। इजिनमन न सदासी उठा ली और उसमें बिलवाड करन लगा।

मुझे कन मानिक व पाम पिस्न के बारे म पूछनाछ करने क लिए जाना पडा। वह बाता उमे मिलरोवी से जाना पडेगा। यहाँ उसकी मरम्मत हा नहा सकती। उसम इतना लम्बा कक हो गया है। ईवान धनक्मिणविच न अपनी प्रगुलियाँ दिखलाइ।

मिलरोवा म कारखाना है कोई? रती मे चाँदी क पणों की बौछार करते हुए स्नोकमन न पूछा।

वहाँ स्नील-फाउण्ट्री है। पारसात कुछ दिनों मुझे वहाँ रहना पडा था।

बहुत मजदूर हैं वहाँ?

चाई चार सौ के पास-पाम हैं।

घोर कमी हालत म हैं वे? स्नोकमन न जान-बूझकर पूछा।

खात-मान लाग हैं। उनम सकोई भी प्रोलेतारियन यानी सबहारा बग का नहीं है। रूढा है सब।

गेमा क्या है? स्नोकमन के पाम बठे नव न पूछा।

क्याकि व बहुत मज म हैं। सबके धपन घर हैं औरतें हैं हर तरह का घागम है। उनमें प्राधे स ज्यादा बासनिम्न हैं। रकम काटत हैं। रुद मानिक उपदंग दता है और मब एव-डूनर का बूमत रहने हैं और पान का मत उनक घटनों पर इतना जमा हुआ है कि हगिया स भी नहा मराचा जा सकता।

ईवान धनक्मिणविच यह बासनिम्न किच कहत हैं? दाविद न पूछा।

'बापतिस्न' बापतिम्न वह होता है जो ईवर की पूजा धपन ढग स करता है। नवा धपना सम्प्रदाय हाता है।

हर बेवफ़ा धपन ढग ग ही सा मतबता है। नव न कहा।

गर ता में सगोई पनातानाविच के पान गया। ईवान धनक्मिणविच न अपनी कथा धारम्भ की 'उसक पाम धर्यागिकित या इन्फिा मुभमे बाहर रकन का कहा गया। मैं बाहर ही घठ गया और दरबाजे

स उनकी बातचीत सुनता रहा। भाखाब ने कहा कि जमनी स लडाई बहुत जल्दी छिड़ेगी। मैंने एक किताब म पढा है। इस पर धर्यापिबिन बोला जमनी धीर हस ने बीच लडाई हो नही सपनी क्याकि जमनी को हमारे धनाज की खररत है। इसी समय मुके एक तीसर धान्मी की भाषात्र सुनाई दी। पीछे भाखूम हुमा कि यह बुद्ध लिस्तनिस्तकी का बेटा है। सना म धपसर है। यह बोला जमनी धीर हस ने बीच धगूरा क बगानों को लेकर लडाई होगी। लेकिन इससे हमारा कोई सम्बन्ध नही। धासिप दाविदोबिच 'सुम्हारी क्या गय है?' इवान ने स्टॉकमन की ओर मुदते हुए पूछा।

मैं भविष्यवाणी करने म कुशल नही। धपन फल हुए हाथ म घधी भंगूठी की धार स्थिर दृष्टि से देखते हुए स्टॉकमन बोला।

एक बार लडाई धगर शुरू हो गई ता हमको भी उसम फसना ही पड़ेगा। हम धाहें या नही धाहें बाल पकड़कर धमीट लिया जाएगा हमको।' नेव बोला।

बात ऐसी है भाई। इजिनमन ने हाथ स सडासा लत हुए स्टॉकमन गम्भीरता स बोला जस कि मामके का पूरी तरह समझा सना चाहता हो। नव बेंच पर धाराम स जम गया धीर दाविद ने होठ गोनिया गए तो उमके दांत दिखलाई देने लग।

स्टॉकमन ने ससन म पर साफ-साफ धतसाया कि पूजाधानी राज्य बाजारो धीर उपनिवशो क लिए किस तरह सधप चला रह है। जब यह धपनी बात समाप्त कर चुका ता ईवान धलेकिमएबिच न घृणा से पूछा 'हाँ! लेकिन हमारा सधान इसमें कहीं उठता है?'

दूसरा का एग-धाराम के नशे म खूर दखकर तुम्ह भी ढाह होन लगगी। स्टॉकमन मुसकराया।

'बन्वा की-सी बातें न करो। नव न ध्यग्य किया कहावत है न—मालिक सडते हैं तो किसानो क सिर के बाल हिलत हैं।

धीर त्रिस्तत्रिस्का भाखाब स मिलन क्या घाया घा? 'गायद उसकी बेटी के मिलनिले में! दाविद न विषय बदला।

'वह कोरधूनोष का दोकरा बहाँ धमी का पहुँच चुका है नेव

बीच म घोला ।

ईवान प्रलक्सिणविच मुन रह हा ? वह अफयर भला वहाँ क्या मडराता है ? दाविद ने दोहगाया ।

ईवान प्रलक्सिणविच यों चौका जमे कि किसी न एक चाबुक जमा लिया हो । परे हाँ क्या कह रह थ तुम ?

यानी तुम मो रहे हो । परे हम लिस्तनित्स्की क बारे म बातें कर रहे थ ।

वह तो स्टेशन जा रहा था । हाँ घोर भी एक नई बात । मकान के बाहर निकलत में उसको दखा जानत हो किसको ? परे प्रिगोरी मेलसाव को । वह हाथ म चाबुक निय बाहर लडा था । मेंन पूछा तुम यहाँ कमे प्रिगोरी ? बोला मैसफिर्नो लिस्तनित्स्की का मिलेरावो स्टेशन म जा रहा ह ।

वह लिस्तनित्स्की का काचवान है । दाविद न बतलाया ।

रईस की रोटियाँ तोड रहा है ।'

नव तुम जजीर स बडे एक एसे कुत्ते की तरह हा जा किसी पर भी भाव सकता है ।'

देर हा रही थी अत सबसे पहल ईवान प्रलक्सिणविच वहाँ म उठकर चला । फिर दूमर लाग भी उठे । स्टॉकमन अपन अतिथिया को द्वार तक पहुँचाने गया । इसके बाद वक्ताप म तामा लगा घर म चना गया ।

ईस्टर-इगवार के पहल की रात को काले-काले बाल्य आसमान में फिर धाग घोर पानी बरसने लगा । पूरे गाँव पर अंधेरा छा गया । तडन दान की बक चटखने लगी । फिर बोर्ड चार बस् की बक फनी घोर नपी सी धाग म यह पनी । इग बीच गिरज क हात म जहाँ-नहाँ गडे हा गण मो वहाँ तमाम नडक जमा हा गण । गिरज क खुते दरवाज स प्रायना क स्वर उमडन रहे घोर गिडगिया से पव की दीवानी क प्रकाश एतता रहा । हान म अंधेरे में नडन नडगियों म धरमाली बग्ग घोर उहू भूमने रह । घापम म गली-गली कहानियाँ भी कहन रह ।

गिरजे क धाडें के निवाम म तमाम बिल क गाँवा क लोग जमा

सं उनकी बातचीत सुनता रहा। मोखाव ने कहा कि जमनी स लडाई बहुत जन्दी छिडगी। मैं एक किनाब म पड़ा है। हम पर धत्योपिकिन बोसा जमनी और रुम के बीच लडाई हो नही सकती क्याकि जमनी को हमारे घनाज की जरूरत है। इसी समय मुझे एक तीमरे घान्मी की घावाज सुनाई दी। पीछे मासूम हुमा कि वह बूढ़ लिस्तनिस्तकी का बेटा है। सना म घफसर है। वह बोला जमनी और रुम के बीच घगूरा क घगानो को सेफर लडाई होगी। लेकिन इससे हमारा कोर सम्बध नही। घासिप दाविदोविच ! तुम्हारी क्या राय है ? इवान ने स्टॉकमन की घोर मुडते हुए पूछा।

'मैं मविष्यवाणी करने म कुशल नही। घपन फल हुण हाय म सघी घगूठी की घार स्त्वर दृष्टि से देखते हुण स्टॉकमन बाना।

एक बार लडाई घगर शुरू हा गई तो हमको भी उसमे फंसना ही पडेगा। हम चाहे या नही चाहे बाल पकडकर घसीट लिया जाएगा हमको। नेव बोला।

'बात ऐसी है भाई ! इजितमन क हाय स गदासी सेते हुए स्टॉकमन गम्भीरता से बोसा जसे कि मामले का पूरी तरह सभभर सना चाहता ही। नव बेंच पर घाराम से जम गया और दाविद के हाठ गीनिमा गए ता उसक दान दिखलाई देने सग।

स्टॉकमन ने संसन म पर साफ-साफ बतलाया कि पूजावादी राग्य बाजारो और उपनिवेशो के लिए किस तरह मघप घसा रहे हैं। जब वह घपनी बात समाप्त कर चुका तो इवान घलेक्सिणविच ने पूछा म पूछा ही ! लेकिन हमारा सवाल इसम कहीं उठता है ?

दूसरो को ऐन-घाराम क नसे म घूर देखकर तुम्हे भी डाह होन लगेगी। स्टॉकमन मुसकराया।

बम्घा की-मी घातें न करो। नेव न भ्यग्य किया कहावत है न--- मासिक लडते हैं तो किसानो क तिर के बाल हिलत हैं।

'घोर लिस्तनिस्तकी भोखोव स मिलन क्या घाया घा ? गामद उसकी बटी के मिलसिले म ! दाविद न वियय बन्ला।

'वह कोरगूनोव का छोकरा बही कमी का पदूच घुरा है नव

धीरे म बोला ।

ईवान फ्लेक्सिणविच मुन रह हा ? 'वह झफ़्फ़र भना वहाँ क्या मठराता है ? दाविद न दोहराया ।

इवान फ्लेक्सिणविच यों चौका जैसे कि किसी न एक चाबुक जमा लिया हा घरे ही क्या कह रह घ तुम ?

'यानी तुम मा रहे हो । घरे हम निम्ननित्की क बारे म बातें कर रहे थे ।

'वह तो स्टेशन जा रहा था । हाँ धीरे भी एक नई बात । मकान के बाहर निकलन मैं उनका दया' जानन हा किसको ? घरे प्रिगारी भेनखाव का । वह हाथ में चाबुक लिय बाहर गया था । मैं पूछा 'तुम यहाँ कम प्रिगारी ? बोला मैं सफ़िनेट निम्ननित्की को निगरावा स्टेशन ले जा रहा हू ।

वह निम्ननित्की का चाचवान है । दाविद न बनलाया ।

रूम की राटियाँ ताड़ रहा है ।'

नव तुम ज़रीर म बँधे एक एम कुत्ते का तरह हा जा किमा पर भी भाव सकता है ।

देर हा रूखा थी घत सबसे पहले ईवान फ्लेक्सिणविच वहाँ से उठकर चला । फिर दूसर साग भी उठे । स्टेशन म अपन धनियियों को द्वार तक पहुँचान गया । इमने वाट बकगॉप म ठाना लगा घर म चला गया ।

ईस्टर-दुनवार के पहल की रात को कान-बाने बाने धाममान में फिर घाण धीरे पानी बरसने लगा । पूर गीब पर धँधेग छा गया । ठंडक रात की बर्फ बटखन मगी । फिर कीद घाट बरस का बट्ट छली धीरे नली नी पाग में बर पनी । इन बीच गिग्रे व हात में जगै-जगै गड हा गाए सा बर्त तनाम नटक जमा हा ग । गिग्रे क मुन गवादे स प्रायना क म्बर उमदन क धीरे गिरदियों स पद की गवाग का प्रकाश छनना रहा । हात म धँधे में नटक नटकियों स छान्छान कन्ठ धीरे उन्हें घूमने छ । घाम में गर्मी-गन्ना कहानियाँ ना बरस ह ।

गिग्रे क घाड़ने क निवास म तनाम दिन क लंदों क ल... ह

रह । मकान घोर नमर की घुटन स चूर सोग बेंच तो बेंच फग पर भी सोते रहे ।

कुछ लोग टूटी-फूटी सीढ़ियो पर बठे घुर्मा उडाते घोर मौसम घोर जाड़े की फमला की बातें करते रहे ।

‘तुम मख लाग खतों म कव जुदोग ?

खयाद है कि जल्दी ही काम शुरू होगा

ठीक ही है तुम्हारे नेता के पास-पास की जमीन बलुही है

हाँ कुछ तो है नाने के इस पार की जमीन खार से भरी है दलदली है

मत्र तो जमीन को खूब पानी मिल जाएगा ।

पिछने माल हमन जुनाई की तो जमीन कठी थी ।

दून्या तुम नहीं हा ? इस बीच ऊँचे स्वर म किसी ने घावाज दी ।

गिरजे के हात के फाटक म मोटी घावाज गुंजी भूमने क लिए बडी धन्धी जगह चुनी है सुनने हो निक्कन जाओ यहाँ म क्या मूभी है सुम लागों का भी !

‘तुम्हे कोई भूमने का नहीं मिलता ना जाओ हमारे हाते की कुतिया का भूम जाओ ! अंधेरा भेस्त हुए एव लडका बोला ।

कुतिया को भूम जाऊ ? अभी सयक देता हूँ मैं तुम्हें’

इसके माप ही लडके भागे घोर स्क्ने फडफडाने हुए सडकियाँ भी भाग बला ।

पानी टप-टप कर छत से बूना रहा । फिर कोई बाला प्रोखोर स एड इन मना चाहता हूँ बीस स्वस दे रहा हूँ । राबी ही नहीं हाता

एसे में भारी रात के समय छोटे की नगी पीठ पर सवार मीला बारगूनोव गिरजे म आया । उसने घाडा बाँधा अपनी पेटो ठीक की घोर गिरजे क हात म घुमा । बरसाती म उसने टोपी उतारी थडा स सिर मुकाया घोर घोरतों की घबियाता बदी की घोर बदा । बायी घोर करशाकों की भीड थी । दायी घोर घोरतें जमा था । मीला न आगे की

यहाँ से नदी को पार करना ठीक होगा ?' प्रिगोरी न लगामों को धुमाते हुए उससे पूछा ।

घाज सुबह तो लोगो ने नदी पार की है ।

पानी गहरा है ?

नहीं मगर इतना ता है कि स्लेज में उछल आए ।

सगामो को सम्झान चाबुक ल तयार हो प्रिगोरी ने घोड़ा को हाँक दिया । हिनहिनाते घोड़े बेमन में धागे बड़े । प्रिगोरी ने अपनी चाबुक सटकारा और अपनी गद्दी पर खड़ा हो गया ।

दायी ओर की घोड़ी ने सिर हिलाया और घबानक ही जोत का झटका दिया । प्रिगोरी ने अपनी पाँवों की ओर देखा । पानी स्लेज के घागे के हिस्से में नाच रहा था । पहले तो पानी घोड़ों के पाँवों तक रहा पर फिर प्रकस्मात् ही छाती तक आ गया । प्रिगोरी ने चेष्टा की कि घोड़े वापस मुड़ जाएँ किन्तु सगाम की परवाह न कर घोड़ा ने तरता शुरू कर दिया । तेज बहाव के कारण स्लेज का पिछला भाग घूम गया और घोड़ा के सिर पानी से ऊपर उठ आए । पानी उनकी पीठों पर बहने लगा । स्लेज हिलने-डलने और उन्हें बुरी तरह पीछे घसीटने लगी ।

धरे ! रे ! दायी तरफ से ! किनारे पर दौड़ अपनी फर की टोपी को हवा में सहलाते हुए उकड़नी चिल्लाया ।

प्रिगोरी धागे में न रहा । घोड़ा को बराबर सलकारता वह बरबस धागे-ही धागे हाँकता रहा । स्लेज के पीछे भँवरों के भाग उमड़ते रहे । स्लेज के बम सट्टे के एक टूटे पुल से जा टकराये और स्लेज देखते-देखते उलट गई । प्रिगोरी कराहता हुआ सिर के बल पानी में जा गिरा किन्तु सगाम उमकी पकड़ में ही रही । स्लेज की बगल में उलटता पलटता वह परो से घिसटता रहा । सहसा ही एक बम उसके हाथ में आ गया । उसने लगाम छोड़ दी और हाथ के ऊपर हाथ रख झटका दे स्लेज के घागे के हिस्से की ओर जा निकला । वह सोहे की मूठ को पकड़ने ही वाला था कि धारा में झूमने हुए एक घोड़े ने उससे धुत्नों में पिछली टाँग मार दी । दद में उठप प्रिगोरी ने हाथ फेंके और जोत पकड़ ली । उसका सारा बदन ठरक कारण बुरी तरह काँपने लगा ।

काली सूनी सड़का पर चलत चलते घोड़े बेदम हो गए। मुबह के पाले स जमी कड़ा सड़क पर चलते-बढ़ते वह एक गाँव म पहुँचा। गाँव उत्तके भाग स चार बस्ट दूर था। वह एक चौराहे पर रुक गया। घोड़ो के पसीना स भाप उठ रही थी। पीछे स्लज स बना चमकीला रास्ता दमक रहा था। वह स्लज स उतर एक घोड़े की नगी पीठ पर जा चढ़ा घौर दूसर घोड़े की लगाम हाथ मे पकड़ उसन यात्रा आरम्भ की। बड़ पाम के त्तवार को मुबह यागादनाए घा पहुँचा।

बूढ़ लिस्तनित्स्की ने उसकी गाथा बड़े ध्यान से सुनी घौर घोड़ों को देखने बना। उनके बठे बाजुमा को शोधित दृष्टि म देखता हुआ धारका घाहो स इधर-उधर घूमता रहा। फिर बूढ़े ने पूछा कसे हैं घोड़े? जम्बरत स ख्यादा मेहनत पड़ गई है इन पर है न?

नही घाड़ी की छाती पर पट्ट की रगड़ म घाय हा गया है लेकिन यह कोई ऐसी बात नहीं है। गाँका ने घोषो को बिना रोके जवाब दिया।

जाघा घौर घाहा आराम करा। लिस्तनित्स्की ने प्रिगोरी को हाथ म इगित कर कहा। प्रिगोरी घपने कमरे म चला गया किन्तु आराम उसे कबल रात मर ही मिला। अगले दिन मुबह बेनयामित घाया घौर उस बुलाकर बाना प्रिगोरी मालिक ने तुम्हे फौरन बुलाया है।

अनरल घणसे पहने बड़े कमरे म इधर-उधर घूम रहा था। प्रिगोरी के दो बार खामन पर उसने उसकी घौर देखा।

क्या बात है?

हुजूर न मुझे याद किया है।

घाया हाँ! जाघो स्टलियन घौर मेरे घोड़े पर बाठी कत दा। लूरेरिया स कहना कि वह कुत्तो को खाना बिनाय। कुत्त गिकार पर जा रहे हैं।

प्रिगोरी मुझ कि मालिक ने चिल्लाकर कहा घौर सुनते हो तुम मर साथ चल रहे हा

मकसीनिया ने प्रिगोरी की जेब म एक केक डूँबी घौर गुत्से से

मान हाइर बानी 'नीत स जाग रू' माना हा मान तरु की छुट्टी नहीं दता मन-मन न्कार ता ने ला शींग ।

घाणों पर मानी कउन क वाद गिरा न उन्हें माय निदा और बाह के पास भाकर हुनों क लिए शींग बरदा । नीत न-डे का ज-दिन पन चनई की बन-बुद्धा ब-ग न-काय बड विल्लनिल्ला बाहर माना । काह क कन नै एक छाया कनई हा पनाम्क न्नी पीर न्क ग्हा था । चावुन उनकी दाँगों न पाछ नी मार एक मँ का ठरुड न-दा हुमा था ।

इव शिगेगी न नाविक को नवा कउन क लिए घाई की मान थाकी ता उड यह ग्कर मानचन हुमा कि नाविक दश मानानी न उडनकर घाई न नवार हा ग्दा । 'भर पाछ साय-नाय रहना । अतरत न मन्दिन माना दत र्क ग्दानों म सत हाप में राते मन्हालों ।

शिगी न्चिदन पर मवार हुमा । स्टविदन क छिल्ल सुते नै मान नहीं था । बरु क-कड़ों पर पाँव पठत हा वह छिन्न पठता था और छिन पाँवों क बन बड जाता था । प- बूग अन न कनर न्कार मान थाई पर मान न जना हुमा था । घाई नडे का खतरत भा बत ग् । म्निदन अ-तुव मान पर जार ठानता न नोडता नवार का बनवा स दवता और उनक हुनों में दाँत ग्दान की कागिण करता । दान न ऊनर पहुँचत हा तिल्लनिल्ला न घाई की दुनकी जान ठब कर दा । गिरात कुत शिगाय क पीछे चलत रह । वृडी माना मुत्तिदा भनना हुपन म्निदन की पूछ न राडता हुई दौठा । मोठ न मान छिन पाँवों पर बठकर उन ठक पहुँचना चाह पर मुत्तिदा पाछ हटकर लण्ट गई । शिगाय न न्चकर दवा ता उनन बूगे औरत का ठरुड उनकी मार था ।

घाई घटे क मन्त-मन्त उन्होने मन्नी नवित पा सी और व मानगा-गा दरे तरु पहुँच गन । तिल्लनिल्ली अडिनों में हाता हुमा दरे क किनारे-किनार बडा । शिगाय मन्त निग न सावधानी न बचत घाणी में ठरता । बार-बार उमन ऊनर की मार दवा ता एतद वृषों क कुज क बाव न उड खडों पर सहा तिल्लनिल्ली साऊ नडर-

घावा । उसके पीछे-पीछे शिकारी कुत्ते भागत दीये । शिकारी ने अपने दस्तान उतारकर सिगरेट पीन की सोची और कागज के लिए जब म हाथ डाला ।

उल्टी टोले की दूसरी छार से पिस्तौल की गोली-सी घावाज घाई 'इसका पीछा करो ।'

शिकारी ने तिर उठकर देखा कि हाथ में धाबुक उठाए लिस्सनित्स्की थोड़ा दौड़ा रहा है ।

इसका पीछा करो ।

शरीर को धरती से सटाए एक गन्ना लाल भड़िया तेजी से दौड़ कर दर्रे को पार करता लिखलाई लिया । एक नाला कूदकर पार करते ही वह ठिठका तेजी से मुड़ा और उसकी निगाह कुत्ता पर पड़ी । कुत्ते भेड़िये का पीछा करते करते दर्रे के सिरे तक पहुँचे और धाबे की नाल के आकार में फल गए ताकि वह जंगल में भाग न जाए ।

भेड़िया ने बिजली की-सी तेजी से छत्रांग मारी एक छोटे टीन पर पहुँचा और जंगल की ओर बढ़ा । बुढ़ी कुतिया उसका आड़े आई । दूसरा शिकारी कुत्ता पीछे रहा । भेड़िया दाएँ-बाएँ के लिए हिलचिलिया पर शिकारी दर्रे के बाहर पहुँचते-पहुँचते उसकी छाँवों में भ्रमण हो गया । उस देखने का वह एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ा । इस बीच भेड़िया मदान में काफी आगे निकल गया और पाम के एक दूसरे दर्रे की ओर बढ़ा । वहाँ से शिकारी ने शिकारी कुत्ता को नीची आँकिया के पीछे भागने और बूढ़े लिस्सनित्स्की को अपने घोड़े को तेजी से उसी ओर बढ़ात देखा । भेड़िया के दर्रे पर पहुँचते ही कुत्ते फिर उसको पकड़ने में लग गए । एक ता शिकार के तिर तक जा पहुँचा ।

पीछा करो । चीख फिर शिकारी के कानों में पड़ी ।

शिकारी ने आगे की स्थिति जाननी चाही और अपने घोड़े को एक सगाई । उसकी छाँवों में पानी टपकन लगा और हवा की सीटी से उसके कान बहरे हो गए । एकाएक वह शिकार की उत्तजना से भर उठा । गदन पर भुक वह घोड़े को हवा की रफ्तार से से उठा । दर्रे तक पहुँचते-पहुँचते कुत्ते भी छाँवों में भ्रमण हो गए और भेड़िया भी ।

जरा देर में लिस्तनित्स्की उसके पास था पहुँचा। घोड़े से ही तेज आवाज में चिल्लाया 'किधर गय ?'

मरा खयाल है दरें में।

तुम उह बायी तरफ से घेरो। पीछा करो।

वृद्ध ने घोड़े के बाजू में पाँव गढ़ाये और दायी ओर बढ़ गया। प्रिगोरी एक खाई में पड़ गया। वह चावुक नचाता और चिल्लाता घोड़े को ठेक बस्त तक दौड़ा ले गया। घोड़े के खुरो के नीचे स कीचड़ उछली और छोटे उसके मुह पर पड़े। लम्बा दर्रा दायी ओर मुड़कर तीन हिस्सा में बट जाता था। प्रिगोरी को पहली शाखा पार करते ही मदान के पास भेडिय का पीछा करती हुई कुत्तों की कानी पाँत लिखलाई दी। भेडिये को ग्राहवसूत एल्डर वृक्षों के सघन कुजों में भरे दरें के मध्य भाग में कुत्ता न खदेड़ दिया था और अब वह घाटी के सूखे भाँडियो और बाँटा स भरे भाग की ओर भाग रहा था।

प्रिगोरी न रवाना में बड़े हा कमीज की आस्तीन से अपने आँसू पाछे और भेडिये और कुत्तों को देखन लगा। बायी ओर दृष्टि पड़न ही उसने स्वयं को अपने गाँव के पासवाले मदान में पाया। पास ही जमीन का बड़ा टुकड़ा था जिस उसने नताल्या क साथ घर में ऋतु में जाना था। विचारों में निमग्न जान-बूझकर उसने अपना घोड़ा उस टुकड़े में डाल दिया। जब तक जानवर न डला पर लड़खड़ाते हुए वह हिस्सा पार किया तब तक उसके गिकार का सारा मजा जम राख हो गया। अब उसने पसीन स लथपथ घोड़ा गान्ति से आगे बढ़ाया और देखा कि लिस्तनित्स्की कनी नजर आता है या नहीं।

कुछ दूर आगे उम जोताई करने वाला के खानी छप्पर दिखलाई दिए। कुछ आगे बसा के तीन जोड़े गल को ताजा मखम्मो जमीन पर घसीटने लगे।

हो न हो कोई भरे ही गाँव का है। यह जमीन है किसकी ? कनीकुत्ता की ता नहीं है ? इन के पीछे-पीछे चलन हुए व्यक्ति को पहचानने के लिए प्रिगोरी ने नजर अमाई।

उसने देखा कि हल की छोड़ दो कज्जाक भेडिय की पाम के दरें से

भगाने न लिए दौड़े। एक बज्जाब लाल पट्टीदार टापी पहने ठोड़ी पर पट्टा बांध लोहे का डंडा नचाता बोला। भकस्मात् ही भेड़िया एक गड्ढे में बठ गया। सबसे आगे का गिकारी कुत्ता भपटा और आगे के पाँवा के फिसल जाने से गिर पड़ा। पीछे की बूढ़ी कुतिया ने रुकन का प्रयत्न किया। उसकी पिछली टाँगें जुते खेत की मटा को सरोचते हुए घिसटी। वह समय से रुक न सकी और गिकार शुरू गया। पशु ने अपना सिर जार से झुका और कुतिया ने उस आगे दौड़ाया। फिर कुत्ते के भुड़ ने भेड़िये की घेर लिया और उस जुते खेत में कुछ गज तक बीच से गए। अपने मालिक से आधा मिनट पहले प्रिगोरी घोड़ से नीचे उतरा और गिकारी चाकू साथ घुटनों के बल बठ गया।

मारो साककर गल पर। साहे क डडेवाला बज्जाब बोला। इस आवाज को प्रिगोरी भली भाँति जानता था। वह आदमी दौड़कर आधा और हाँफते-हाँफते प्रिगोरी की बगल में आ सेटा। इस बीच गिकारी कुत्ता ने भेड़िये के पेट में दाँत गड़ा दिए ता बज्जाब ने कुत्ते को भसल किया और भेड़िये के दोनों भगले पर एक हाथ से जकड़ लिए। प्रिगोरी ने जानवर के रोपों के बीच हाथ शलकर टटोला और टँटुए पर सूरी चला दी।

कुत्ता की ! कुत्ते की ! भगाया ! अपने घोड़े की पीठ पर से उतरते हुए बूढ़ी निस्तानित्की ने चिस्ताकर कहा।

प्रिगोरी ने बड़ी मुश्किल से कुत्ते को हटाया और मालिक की ओर देखा। पास ही स्तीपान भस्ताखोव खड़ा था। उसके चेहरे पर बड़े विचित्र भाव थे। वह लोहे क डंडे को भाँजता ही चला जा रहा था।

बहादुर कहाँ न रहने वाले हो तुम ? निस्तानित्की ने स्तीपान से पूछा।

तातारस्की का है। सण भर हिचकिचाहट के बाद स्तीपान बोला और प्रिगोरी की ओर क्रदम बढ़ाया।

‘क्या नाम है तुम्हारा ?’ निस्तानित्की ने पूछा।

भस्ताखोव।

पर कब तक लौटोग डेटे ?

घाज रात को लौट गा ।

लिस्तनित्स्की ने भेडिय की ओर पाँव से इशारा किया । उसके जबड़े भाँत स लड चुक थ और उसका पिछला एक पर ऊपर को उठकर बड़ा पड चुका था ।

वृद्ध वाला भडिया मेरे यहाँ पहुँचा गा जो खच हांगा तुम्हें मिलगा । उसन अपन रुमान स चहरे का मसीना पाछा मुठा और पीठ पर से प्लास्क लिस्काया ।

प्रिगोरी अपने स्टलियन की ओर बड़ा और रकाब म पर रखते समय उसने मुडकर देखा । भावेन से काँपता हुआ स्तीपान उसकी ओर आया और सटकर उसने रकाब थाम ली ।

प्रिगोरी कैस हो ? स्तीपान बोला ।

भगवान् की दया है ।

सोष क्या रहे हो ?

मोचूगा क्या मैं ।

तुम दूसरे की शीरत को उठा ले गए तुमने उसे अपनी बात मानने पर मजबूर किया ।

रकाब छाड दो ।

डरो नहीं मैं मारूंगा नहीं ।

इसका मुँह डर नहीं । यह बात छोडा । प्रिगोरी ने गुस्से म सास होकर और स कहा ।

मैं तुमसे धाज नहीं लडूंगा लेकिन मेरी बात मान रखना नमी न-नमी मैं तुम्हें जान स मार डालूगा ।

देखा जाएगा ।

मेरी बात अच्छी तरह याद रखना । तुमने मेरे मुँह पर बालिख पोती है । तुमने मुझे सूमर की तरह भडिया करके छोड दिया है । उपर देखो उसने अपने हाथों का हथलियाँ ऊपर उठायी— मैं जोतता-बोता हूँ और भगवान ही जानता है कि किसलिण यह सब कस्ता हूँ । क्या मुँह अपन लिण इस सबकी जम्बरत है ? मैं चाँडा उस तरफ चला जाऊंगा और सर्नी पार कर दूँगा । मुसीबत ता इस अपनेअपन ने कर रखी है । यह

मुझे याद जाता है। तुमने मुझे बहुत तरुनीफ पहुँचाई है प्रिगारी।

मुझसे शिकायत करना बेकार है। मेरी समझ में कुछ नहीं आएगा। जिसका पेट भरा रहता है वह भूख की बात नहीं समझ पाता।

यह बात सच है। स्तीपान ने प्रिगारी के बहर की ओर दबते हुए हामी मरी। अचानक ही उसका हाँठा पर बच्चा की-सी सरल मुसकान खिन उठी। मुझे सिर्फ एक बात का दुख है, और बहुत दुख है— तुम्हें याद है तयोरस साल थावेतीदे महम दानो में मुक्केवाजी हुई थी ? नहीं मुझे याद नहीं।

क्या तुम्हें याद नहीं क्वारा ओर ब्याहता में रगल हुआ था ? मैं किस तरह तुम्हारा पीछा किया था ? उन दिनों तुम मेरे मुकाबले सरपत की तरह सीक-सलाई थे। उम्र बार मैंने तुम्हें छोड़ दिया था। लेकिन तुम्हारे भागत समय घर में तुम पर चोट कर दी जाती तो तुम्हारे दो टुकड़े हो जाते। तुम ताबडताड भाग। मान कि उस वक्त में तुम्हारी बगल में एक करारा घुँसा जमा दता तो तुम आज इस दुनिया में ज़िन्दा न होते।

अब उसके लिए पछताओ नहीं। अब कोई भी ऐसा मौका हम दोनों के हाथ में आ सकता है।

स्तीपान ने माया रगडा मानो कुछ याद करने की कोशिश कर रहा था। वृद्ध निम्ननिस्स्वी ने प्रिगारी का आवाज दी। वाए हाथ से रकाब धामे स्तीपान स्त्रियन की बगल में चल रहा था। प्रिगारी की निगाह उसकी हर हरकत पर थी। उसने स्तीपान की नीचे का झुकी हुई सन के रंग की मूर्छे और बहुत दिनों की विना बनी दाढ़ी देखी। पसीने की धारा बाली धारियों में भरा उसका गला धहरा उभास और पहले से बहुत बदमा हुआ था। प्रिगारी को लगा कि वह किसी पहाड़ी से घुग्घ में नहाये स्तपी मगान में नबर दौड़ा रहा है। थकावट और मन के खालीपन ने स्तीपान के बहर का राल कर दिया था। मा अलविदा कह बिना ही वह पीछे रह गया। प्रिगारी घोड़े पर सवार हो गया और उसे क्रम बाल से से घसा।

ठहरा जरा । और अकसीनिया 'अकसीनिया मजे में ता है ?

अपने झूत पर पठी मिट्टी को चाबुक में नीचे गिरात हुए प्रिगोरी ने उत्तर दिया हाँ मज में है ।

उसने अपने घोड़े का रोकता और पीछे मुड़कर देखा । स्तीपात पाँवों को फनाए सखा एक डठल चवाता दीखा । प्रिगोरी क्षण भर के लिए बुरी तरह द्रवित और विचलित हा उठा । लेकिन फिर ईर्ष्या ऊपर आ गई । वह काठी पर बठे-ही-बठे मुड़ा और चिल्लाकर बोला 'फिक्र न करो 'वह तुम्हारे लिए कल्पती नहीं ।

यह वान है ?

प्रिगोरी ने घोड़ के काना के बीच चाबुक जमाया और बिना उमर लिये उड़ पला ।

१८

ईस्टर-शुक्रवार को औरतों कोरसूनोव की पदासिन पलागेआ माइ दात्रीकोवा के यहाँ बातचीत करने के लिए जमा हुई । उसका पति गावरीला ने सौज से पत्र लिखा था कि मैं ईस्टर पर घर आने के लिए छुट्टियाँ की बोगिंग म हूँ । पलागेआ ने दीवारा पर सपेती कर ली थी । ईस्टर से पहले ही सोमवार आत-आत उसने घर को भाड़-बुद्धारकर साफ़ कर लिया था । बृहस्पति स ता उसने प्रतिक्षण अपन पति की राह देखी थी—कभी दौड़कर पाटक पर होनी तो कभी घहारतीवारी के पास जा खड़ी हाती । वह देखने में दुवनी-पतली थी और उनके चेहरे पर गर्म के लक्षण स्पष्ट भनकत थे । आँखों पर हाथ रबे वह सबक की ओर देखती रही कि गायद वह आ रहा है । गावरीला पिछले साल घर आया था और अपनी पत्नी के लिए पोलड की स्त्री लाया था । चार रातों उसने अपनी पत्नी के साथ बिताई थी । पर पाँचवें दिन उसने बहुत शराब पी ली थी पोल और जमन में खूब गालियाँ बकी थी और फिर आँखा में धाँसू भरकर पोलड के बार में एक पुराना कज्जाक गीत गाता बठा रहा था । गीत सन १८०१ का था । खान के पहले उसने भाई और मित्र उनके साथ बठकर घादुवा पीठ और गीत गाने रहे थ । खान के

बाप उसने अपने परिवारवाला को बिना देकर उनस पिठ छुड़ाया था ।

और उसी दिन से पलागेमा के पट म बच्चा भ्राया था ।

उसने नताल्या कोरूनाथ को बतलाया कि वह गभवती कैसे हुई । वह बोली गावरीला के जाने स दो-एक दिन पहले मुझे एक मपना हुआ । मैं बरागाह को पार कर रही थी तो मुझे अपनी पुरानी गाय दिखलाई दी । वह गाय हमने पिछले साल बेच दी थी । गाय चर रही थी और उसके घना से दूध छू रहा था । मैंने सोचा हे भगवान् क्या मैंने भाज इमे ऐसी बुरी तरह दुहा है ? भगले दिन बुदिया द्रोत्रदीप्त् कुछ लताएँ लेने आई । मैंने उसको अपना मपना मुना दिया । वह मुभम वाली एक मोमवती मोठकर मोम की गैर बना ली और कही जाकर गाय के गोबर म गाठ भ्राया क्योंकि होनी लिडवी से भक्ति रही है । मैं उसका कहा करने को भागा किन्तु मोमवती नहीं मिली । एक मामवती थी घर म लेकिन रायन् बच्च बडा मकडा पकडन व लिए उस उठा ले गए । फिर गावरीला भ्राया और उसके साथ ही होनी । मैं तीन साल तक भ्रमट मे बची रही लेकिन अब जरा यह दया । उसने अपने पट म भ्रगुलियाँ गढाई ।

पेलागेमा अपने पति की प्रतीक्षा करने-करने उन्निन हो उठी थी । वह अपने आपसे ऊब गई थी इसलिए शुक्रवार की शाम को उसने समय काटने को अपनी पड़ोसिनें बुला लीं । नताल्या धधूरे मोज साथ ले आई । ये मोज वह बड्डी-बा के लिए बुन रही थी क्योंकि वमन्त धाते ही उमे और भी सदीं सताने लगती थी । वह भ्रमाधारण रूप मे प्रसन्न थी और दूसरी औरतो क हसी-मजाक पर जरूरत स ज्यादा हसकर अपने पति के विद्याह का दुख छिपाने का प्रयास कर रही थी । पेलागेमा अपनी नीली नगावाली नगी टाँगों को हिलाती जा रही थी और स्टोव के पास बठी ककगा फोणिया का मजाक बना रही थी ।

'फोणिया तुमने अपने मन् को मारा कैसे ?

और जानती हो मैंने कैसे मारा ? पीठ पर मिर पर और जहाँ भी पड गया भरपूर हाथ पडा ।

मेरा यन् मतलब नहीं था मेरा मतलब है कि तुमन उने मारा क्यों ?

मारना पडा । फागिया न अनिच्छा स उत्तर दिया ।

अगर तुम अपने मद को किसी दूसरी औरत क साथ देखो तो चुप रह जायागी ? एक दुबली-पतली औरत ने कुछ सोचकर पूछा ।

'फोगिआ पूरी बात सुनाओ ।

सुनान की क्या बात है

डरो नहीं यहाँ सब तुम्हारी महलियाँ ही ता हैं ।

सूरजमुखी के बीज का छिनका अपने हाथ म धूँकर फोदिया मुमकराई— हाँ तो मैं बहुत दिनों मे उसके रग-रग देख रही थी । एक दिन मुझम त्रिमी ने कहा कि दान के पार की मिम म काम करनेवाली एक बदचरन औरत क साथ उसकी मोहब्बत चल रही है । सो मैं गई और मुझे दोनों एक साथ मिल गये

तुम्हारे मर की कोई खबर मिली नताल्या ? दूसरी स्त्री ने नताल्या की ओर मुड़कर उसकी बात काटी ।

बन यागोनाए म है । उसन धीरे म उत्तर दिया ।

'तुम्हारा अब उसके साथ रहने का खयाल है या नहीं ?

यह ता चाहती है लेकिन वह जो नहीं चाहता । पलागेआ न दान कानी । नताल्या को लगा कि उसके चहर पर धून भलक आया है । उसन अपने मोड़ों पर सिरे झुका लिया और दबी नजर स औरता की भोग देखा । उस लगा कि उसका चहरा जिस गन स समतमाया उस सभी न समझा । इस पर उसने ऊन का गाला अपने घुटना से नीच इस तरह झुकाया इनन भड़े दग से झुडकाया और फिर झुककर इस तरह नमेटा कि सभी औरतों बात का भाप गइ ।

'गोमी मार उसे छाकरो ! गन सलामत रह जुए बहुत मिल जाएँगे । एक स्त्री न प्रकट करणा स भरकर राय दी ।

नताल्या का नकनी उल्लाह हवा म चिनगारी की तरह बुझ गया । औरता की बास्रघात का रस बदला । वे बेकार का बातें करने लगी— इधर की उधर की बपर की । नताल्या बठी उपवास बुनती रही । वह औरता क उठन तक मन मारे बठी रही फिर घर गइ और उसने अपने मन म घुचना-सा कुछ निश्चय किया । उस अपनी अनिश्चित

भवस्या व प्रति लज्जा का अनुभव हुआ । अभी तक उस व विश्वास नहीं था कि प्रिगोरी हमारा के लिए उसकी जिदगा स जा चुका है । वह उसे क्षमा कर देने और फिर ग्रहण कर मन को तयार थी । इस पर भी उमन घगना कदम उठाने का इरादा किया । उसने प्रिगोरी को एक गुप्त पत्र भेजने की बात सोची ताकि व व जान सक कि उसने उसकी व व दिनहुन मुना दी या अभी वह अपना निचय बदल सकता है । घर पहुँचकर उसने देखा कि प्रीशवा अपने छोटे कमरे म बठा हुआ चमड़े की जिल्म की एक पुरानी-सो चौकट वाइनिंग पड रहा है पिता रसाईघर म बठा जान की मग्मत कर रहा है और मिखई उन किसी करल का काई कहानी मुना रहा है । बच्चा को खाट पर मुमान म स्टीव क ऊपर के तल्ल पर सा गई । नताल्या ने अपनी जकेट उतारी और एक कमर स दूसरे कमरे म निकम्मी-मी घूमन लगी । क्षण भर बाबा के कमरे म रुककर उसने मूर्तिधा के नीचे रखे धार्मिक प्रयो के डेर को धोर उदासी मे दखा ।

बाबा ! कागज है तुम्हारे पास ? वह वाली ।

कसा कागज ? पूछने समय प्रीशवा क माथ पर बल पड गए ।

लिखने का कागज ?

बूटे ने भजन-मग्रह के पन्न पलटे और सुगचित घ से मुषासित एक मुडा-मुशया कागज निकाला ।

और पेंसिल है ?

पापा स माँग । जा बेटी जा मुझे परेगान न कर ।

नताल्या अपने पिता स पेंसिल का टुकडा ल आई मेज के किनारे बठ गई और अपने विचार और भावनाया स उलभन लगी । यह विचार और ये भावनाएँ उस इतने समय तक मताती रही थी और मन को घनजानी कसक स भरती रही थी । उसने पत्र लिखा—

प्रिगोरी पन्नेलिएविच मुझे बतलाओ कि मैं कस जिऊँ ? मुझे बतलाओ कि मेरी जिन्दगी मिटकर रह गई है या न ? तुम पर स बले गए और तुमन मुझमे एव शक भी नहीं कर । मैं तुम्हारे साथ कोई बुराई नहीं की । मैं राह देखती रही कि तुम आकर मेरे बचन

नाटाग लेकिन ऐसा नहीं हुआ। तुम चल गये जम कि हमारा-हमेगा व
लिए चले गये और जाकर कुत्र की तरफ चुप्पी साधकर बैठ रहे।

मैं माचती थी कि तुम या ही भावना म आ गये हो। मैं
तुम्हारे लौटने की इन्तजार करती रही करती रही। वने मैं तुम्हारे आड़े
भाना नहीं चाहती। दो का सतान स अच्छा तो य है कि भादमी एक
का जमीन मे गाड़ दे। मुझ पर थाडा तर्गन साम्रा और चिट्ठी लिखो।
उसके बाद ही मैं जान सकूंगी कि मुझे क्या करना है। इस समय ता मैं
अधर म लटकी हुई हूँ।

‘योगु व नाम पर मुझम नाराज न हाना प्रीत्ता।’

—नताल्या।

अगले दिन सुबह हेत-बाबा स बोद्धा पिलाने का वायदा कर उसने
उस यागा-नोए जान को तयार किया। गराव की उम्मीद म मस्त हूत
बाबा न एक घाडा निकाला और मिरान मिगागिगिबिच को सूचना दिय
बिना ही उस पर सवार हो यागादनाए चल गिया।

घाडे पर वह सजा नहीं और एमा अटपटा लगा जसा कि कोई
अजनबी कसबाका वे बीच लगता है। घोडा दुलकी चला तो हेत-बाबा
की कुहनियाँ उछल-उछलकर इधर-उधर जान लगीं।

गनिया म सलते कसबाक-बच्च उस दमकर उसका मजान धनान
और रहे रहकर चिल्लाने लग।

‘उकईनी गन्ना।’

‘खा कही नीच न आ जाना।’

एसे सगते हो जस कि चहागदीवारी पर कोई कुता।

दापहर वा वह लौटा ता चीनी का थली वे नील कागज का एक
दुकडा लेकर लौटा। उन जब से निकालस समय उमन नताल्या की धोर
लेसकर धीमे मारी।

महक बड़ी खराब है। ऐस घबके तग कि मरी कमर का डेर हा
गया। वह थाना।

पत्र पढत ही नताल्या का खहरा पुर्छा हा गया। कागज पर लिख
चार शब्द उसक हृदय वे एने धार-धार हा गए जस कि तेज दान बुने

हुए कपड़े के धार-धार होते हैं। लिखा था—

अकेल जियो—प्रिगारी मलसोव ।

मानो उस घपना शक्ति पर भरोसा नहीं रहा। वह तजी से घर में घुसी और जाकर अपनी चारपाई पर डूब पड़ी। उसकी माँ स्टोव जला रही थी ताकि ईस्टरी रबिदार की सुबह तक राता रात सारे घर की सफाई हो जाए और ईस्टरी-केक समय से तयार हो जाए।

नताल्या भाकर जरा हास तो बना बेटी! उसने अपनी लडकी को पुकारा।

माँ सिर में दर्द हो रहा है। मैं जरा देर लेटूंगी।

उमकी माँ ने दरवाजा से माँककर कहा थोड़ा सिरना पी स तबीयत फौरन ही ठीक हो जाएगी।

नताल्या ने सूखी जीभ ठंडे हाथों पर फिराई और चुप रही।

१६

गरम ऊनी गाल स सिर ढँके नताल्या शाम तक लेटी रही। उसने बदन में हल्की हल्की कपकपी छूटनी रही। जब मिरोन प्रिगोरिणविच और प्रीवा गिरजा जाने को हुए तब वह उठी और बावर्चीखाने में गई। उसने सुन्दर कडे बना स डकी कनपटिया पर पमीने की बूँदें चमक रही थी। उसकी धाँस जस किसी बीमारी से धुंधली धुंधली हो रही थी।

अपने पतलून के बटन बन्द करते हुए मिरान ने लडकी की ओर देखकर कहा बेटी! बीमार होने का तुमने खूब बक्त चुना। मामो हमारे साथ प्रार्थना में खरो।

धाय जाइये मैं जरा देर से आऊंगी। वह बाली।

हम लोग के घर लौटते-लौटते तो आ जायागी न ?

नहीं मैं जरूरी ही आऊंगी कपड़े पहन लूँ जरा!

पुरुष चल गये। बावर्चीखान में सुबोनीचना और नताल्या रह गये। नताल्या बेचैनी स विस्तर स सक्के की ओर जाती और फिर लौट आती। वह बचने के अन्दर के उलटे-मीधे रस्ते कपडा के दर को ताकती रही बुझबुझती रही। वही पुरानी बातें दिल और दिमाग को मयती रही।

सूकीनीचना ने साचा कि नताल्या समझ नहीं पा रही है कि कौन-से कपड़े पहन और कौन-से न पहने। इसीलिए माँ की ममता से भगकर बोली बेटी मेरा नीला स्कर्ट पहन लें। तेरे ठीक आएगा। सँघाऊ ?

नताल्या ने ईस्टर पर नये कपड़े नहीं बनवाये थे। लुकीनीचना को यह भी याद हा आया कि शादी के पहले उसकी बेटी उसका गहरा नीला स्कर्ट कितन प्यार से पहनती थी। इसीलिए उसने नताल्या से बार बार उस पहन लेने का कहा।

नहीं मैं यह पहन जाऊँगी। नताल्या ने सावधानी से अपना हरा स्कर्ट बाहर निकाला तो अकस्मात् ही उस ध्यान हो आया कि यह तो उसन उस समय पहना था जब प्रिगोरी में गान्गी की बात हो चुकी थी वह पहली बार यहाँ आया था और उसन खत्ती के पास उस नूम लिया था। गम स लान हो गई थी वह। इसके साथ ही उसे रोना आ गया। फिर हिचकियाँ बंधी ता उसका गरीर उस तरह कांपन लगा कि वह वकसे के झुले डकन पर भहरा पड़ी।

‘क्या बात है नताल्या ? माँ ने पूछा।

नताल्या ने अपनी चीखने की इच्छा दबा ली और खोखल ढग स हसती हुई बोली पता नहीं आज क्या हा गया है मुझे।

ओह नताल्या मैं समझ गई

क्या समझ गई माँ ? अपने हरे स्कर्ट को मसतते हुए वह खोम स चिल्लाई।

ऐस नहीं चलगा तुझे आत्मी की जरूरत है।

हा लिया आत्मी एक आदमी न कौन कम भलाई की मेरे साथ कि अब दूमरे की तलाश कर ?

वह अपने कमर में गई और जल्ने ही बावर्चीखाने में चोट आई। उसन कपड़ पहन लिये थे। दुवनी पतनी—देखने में लडकी-मी सपती थी। पील गालों पर जगसी की नीली रखाए थी।

‘तू चली जा। मैं अभी तयार नहीं हुई हूँ। माँ ने कहा।

नताल्या आस्तोन में कमाल मोस चल गी। तरती हुई वफ की सर मराहट और बफ के पिघलने की नमी उसकी नाक में भरन लगी।

स्वट का बाण हाथ से ऊपर उठाया पानी में भर गढ़ पार करती वह गिरजाघर पहुँची। रास्ते में उमन पत्र-स्याहार और हजारों दूसरी चीजों के बारे में सोचा और अपने को माधन की कोशिश की। किन्तु उसे फिर चीनी के नीले बल के कागज के टुकड़ों का ध्यान ही आया। वह दुःखी उसने अपने सीने में छिपा रखा था। इसके साथ ही प्रियोरा और वह किम्बत की सिन्दूर औरत धक्कीनिया उसकी कल्पना में साकार हो उठी। नताल्या ने साचा वह औरत इस समय मेरी हँसी उठा रही होगी हा मकता है कि मुझ पर तरस भी खा रही है।

गिरजाघर के द्वार में पर रखने ही कुछ मटक उमक रास्ते में आ बड़े हुए। वह धक्कर बाटवर निकल गई। लड़का की बातें उसने बानों में पड़ी।

कौन है यह? नुमन दसा?

नताल्या काग्लूनोवा थी।

लाग कहते हैं कि मैं से मकी बननी नहीं थी इसलिए इसके मद में इसकी धाड़ लिया।

यह बात सही है। यह अपने लगे से समुद्र पन्तली पर डोरे डाल रही थी

अच्छा तो यह बात थी। ता प्रियोगी क्या इसीलिए भाग गया?

हाँ इसीलिए भाग गया और मैं अभी भी अपनी उम्मीदों पर बली जा रही है

ऊँचे-नीचे पत्थरों पर लड़कियों की गमनाक गली कानाफूमी के बीच वह गिरजा की ब्याड़ी तक पहुँची। वहाँ वह आगे के दरवाजे में मुड़ी कि पास लड़ी लड़कियाँ बबूफा की तरह हँसा। नताल्या धराबिया की तरह गिरती-पड़ती घर को लौट पड़ी। द्वार के फाटक पर ही आकर उमन रुक गया। वहाँ स्वट का सिर, उस तरह पँसा कि गिरते-गिरते बची। उसने एक दम भीष कि हाँहा मखून निकल आया। बजाहनी धक्कार के बीच में शेर का गुला दग्वाशा अंधेरे में भगडाई चला रहा। लज्जा और दुःख से पूरे उसकी आत्मा पर दुःखिचार का एक काला बादल घिर आया। उमन पूर्ण शक्ति इकट्ठी की दरवाजे की आर लौटी और

तेज क्रम बढ़ती हुई बोन म पहुँची । अब उसन एक हँसिया उठाया सोच-समझे डग म भटक म बँट भ्रमण किया अपना मिर पीछे की ओर भटका और अपन गल म मार लिया । धद अन्तर भेद गया । वह गिर पड़ी । पर अपना निश्चय अबूरा रह गया दब उम बहुत दुब हुआ । वह हाथ-भर पटककर घुटना क बल गिर पड़ी । सीन पर खून बहता देखकर सड़म उठी । पर जल्दा जल्दा कौपती भ्रगुनिया म उमन जकट के बटन खान एक हाथ स कमा हुई कड़ी छातिया का एक भार किया और दूसरे हाथ म जमीन पर पड़े हम्मिल का नाक सीधी की । फिर घुटना क बल चनकर यह मिट्टी की दीवार क पास गई हँसिए का गाठिन मिरा उसन घुसडा और अपन मिर क ऊपर हाथ रखकर हडता स अपना सीना भाग बढ़ाया और भाग बढ़ाया उन फटत हुए मौस का आवाज या मुनायी न जम गाभा के चिरन की आवाज मुनाइ पती है और छातिया म गने तक एक तीखे दग का लहर उठी और उसक कानो म घण्ट्य सुदियाँ एक साथ चुभन लगी ।

बावर्चीखान का दरवाजा चमराया । लुकीनीचना नोनिया म नीच उतरा । गिरज की घटियों का तालमय स्वर आया । पीम देनेवाली गरज क साथ हिमखह दान मे टूट-टूटकर बराबर बहत रह । छुी म उमडता ननी पूरे जार गार म बफ क टुकडा का अज्ञात-भाग क पाम न जाती रही ।

२०

भरसीनिया ने प्रिगारी को अपन गभ की बात उस छडा महीना भगन पर ही बताई और तब बताइ जबकि बनाना ही पडा । इतन भम्बे कान तक न बनमान का कारण या उमका यह डर कि प्रिगारी का विश्वास न होगा कि पट का बच्चा उसका ही है । इस बीच अगर उसकी तबीयत खराब रही तो या तो प्रिगारी का उम भार ध्यान नही गया और गया भी ता उसन उसका कारण नहा समझा ।

एक दिन शाम की उलजना म उसन प्रिगारी का बात बतसा दी और उसक खहरे पर भान-जाने वाल भावा का पढन क लिए उसकी ओर

देखती रही । किन्तु पिगोरी परेगानी न खिडकी की धार मुझ धौर खामने लगा ।

तुमने पहल बना नही बलनाया मुझे ? वह बोला ।

मुझे दर था पिगारी । मैंन साचा कि तुम मुझे कही छोड़न दो । पसग पर अगुलियाँ बजान हुए वह बाला बच्चा जल्नी ही होगा ?

अगस्त लगने ही हागा गायद ।

पट स्तीपान का है ?

नही तुम्हारा है ।

ठीक कहती हो ?

खुद हिसाब लगा लो । जगल की कटाई के दिन

'भूठ मत बालो अकसीनिया । अगर पेट स्तीपान से रहता तो भी अब तुम जाती कहां ? पर मैं चाहता हू कि तुम बात ईमानदारी की करो ।

क्रोध म रोनी हुई अकसीनिया बेच पर बठ गई और बटवझाने लगी मैं इतने साल रही उसके साथ और कभी कुछ नही हुआ । खुद साधो जरा । मैं बीमार नही हूँ तुमसे ही पट रहा है और तुम

पिगोरी ने म विषय म अधिक बातचीत नही की । अकसीनिया क प्रति उसके व्यवहार म घुल गया एक अलगाव और एक अजाकिया सी हमदर्दी । अकसीनिया न उस दुख को पी लिया और दया की भीख नही मांगी । गर्मियो के घुरू म उसक चेहरे का आकषण कम हो गया किन्तु गर्भास्थि के कारण उसकी सुन्दर आकृति प्रकृति म कोई अंतर नही आया । उसके मराव ने उसकी अवस्था पर पदा डाला और मुँह अटक जान पर भी उसकी आगा से अमकती आँसो न उस एक नई ही आभा प्रदान कर दी । खाना बनाने का काम वह सरलता से करती रही यद्यपि उस वय सनों पर काम करन वाले मजदूरों की सख्या भी कुछ कम ही रही ।

बूड़े गानवा को अकसीनिया स बड़ी ममता हो गई । गायद उसका कारण अकसीनिया का बेटी-मुलम व्यवहार और खिन्ता रही । वह उसके कपडे धो देती कमीजों की मरम्मत कर देती और खान को मुलायम चीजें दे देती । गानवा अपन घोडो की देख रेख के बाँ आता तो पानी

ना देता सूझरों व लिए झालू मसल दता और सार टन्ने-सीध काम कर देता । जब-तब ही कहता—

तुम्ह मरी वही फिर रहती है । कभी बदला चुका दूंगा । भक्तनीनिया तुम्हारे लिए कुछ भी कर दूंगा मैं । तुम्हारी तरह की कोई औरत मेरी तरफ ध्यान न देती ता मैं तो कही का न रहता । य जुए ही खा डालती मुझे । अब यह है कि मेरे लायक कभी कुछ भी काम हा तो मुझम फीरन रहना

येवोनी न प्रिगोरी का बसन्त ने शिक्षण गिविर से मुक्ति दिला दी । अब वह पास की कगई करता कभी-कभी निस्तनित्स्की को जिला-केन्द्र से जाता और बाकी समय उसक साथ चिहियों के शिकार म लया रहता । आराम स भरी जिवन्दी ने उसको विगाठना शुरू कर लिया । वह मन्मद् और झालसी हा गया । अधिक उम्र का लगने लगा । उसे भविष्य म भान वाल सनिक जीवन की ही एकमात्र चिन्ता रहती । उसक पास न घोडा या न कोई दूसरा साथन । पिता से कुछ प्राप्त हाने की आशा भी नहीं थी । वह अपनी तथा भक्तनीनिया की तनख्वाह बचाता और सिगरेट बगरह पर भी व्यय न करता । सोचता कि पापा ने सामने बिना हाप फलावे ही घोडा खरीद लूगा । बूढ़ लिस्तनित्स्की ने भी उस सहायता देने का बचन लिया । शीघ्र ही उसको यह भावना पुष्ट हो गई कि पिता कुछ नहीं देगा । जून के अन्त म प्योत्र अपने माई स मिलन भाषा और बाला कि पापा तुमसे कभी तक नाराज हैं । कहते हैं कि मैं घोडा खरादन के लिए प्रिगोरी को कुछ नहीं दूगा । वह गांव क अधिकारी क पास घोडे के लिए जाए ।

वह बेकार परेगान न हा । मैं अपनी ही खरीद का घोडा लेकर नौकरी पर जाऊंगा । प्रिगोरी ने अपनी ही खरीद पर जोर देते हुण कहा । 'लामोगे कहीं से ? प्योत्र ने पूछा ।

मैं सो काम करूंगा भील भाँगूंगा और अगर इत पर भी कुछ न कर पाऊंगा तो किसी का घोडा चुरा लाऊंगा ।

गावाग बहादुर ।

घोडा मैं अपनी तनख्वाह स खरीदूंगा । प्रिगोरी ने अधिक गम्भीर

होकर कहा ।

प्योत्र प्रिगोरी क काम खाने और आमदनी के विषय म पूछनाछ करता और अपनी मूछा को बजाता सीडियो पर बठा रहा । फिर उठा जाने के लिए मुछा और अपने भाई स बाला तुम्ह घर सौट चसना चाहिए । अपनी जिद पर अड रहने स कोई फायदा नही । इस तरह तुम कुछ उत्पादा कमा लोगे ?

नही ऐसा तो कुछ नही है ।

तो अब उसक ही साथ रहने का विचार है क्या ?

किसक साथ ?

इस औरत के साथ ?

हाँ क्यों नही रहूगा ?

खर सैन ता या ही पूछ लिया था ।

अपन भाई को विना करते समय प्रिगोरी को भन्त म परिवार के लोगो का खयाल आया । पूछा घर के क्या हाल बाल है ?

सीडियो के जगल स घोडा धोलते हुए प्योत्र हँसा और बोला तुम्हारे घर भी तो बहुत-सी हैं खरगोणा के भिटा की तरह ! अब ठीक-ठाक हैं । माँ तुम्हे बहुत याद करती है । हम लोग घास के काम म मने हुए हैं तीन गाडियोँ ता घुके हैं ।

प्रिगोरी ने परगानी से भाई की बूढी घोडी को परखा । पूछा इस साल बच्चा नही हुआ ?

नही यह भूख गई है । लेकिन जा घोडा हमने त्रिम्तोया से सी थी उनके बच्चा हुआ है । स्तलियन है—गानदार उम्वा टाँगें चौडा सीना' भच्छा घोडा निकलगा ।

प्रिगोरी न घाँ भरती गाँव की बडी याद घाती है प्योत्र । वह बोला दोन क लिय हुंकरता है । यहाँ बहता पानो दखन को भी नही मिलता । खराब जगह है यह ।

घाना कभी घर । प्योत्र ने घोडी की पीठ पर उछलकर सवार होने हुए कहा ।

किसी दिन आऊगा ।

अच्छा दास्विनानिया ।

भगवान् कर तुम्हारी यात्रा शुभ हा ।

घ्रांगन म बाहर निकलकर प्यात्र को एक बात याद आई । उसन प्रिगारी को पुकारा वह अभा तक सीढ़िया पर खन्ग था ।

नताल्या भूल ही गया था मैं ता नताल्या मग्ते-भरत बची

वाक्य के अन्तिम शब्द छत म सराटे भरती हुवा उठा ले गई । प्रिगारी न नही सुन । प्योत्र और उसना घोडा मखमली धूल स ढक गय । प्रिगारी कचे हिलाता अस्तवतन म चना गया ।

३

गर्मी सूखी गई । वर्षा हुई किन्तु कम । अनाज जल्दी पक आया । राई जुनन भी न पाई कि जो पक्कर पीला पड गया । तिन म काम करन वाल चार मजदूर और प्रिगारी उसे काटन म लग गए ।

उस तिन अकसानिया का काम जल्दी खत्म हा गया और उसन प्रिगारा क साथ जान की इच्छा प्रकट का । प्रिगारी न उस राकिन का प्रयत्न किया लेकिन भटपट मिर पर रूमाल बांध बहु दौड़ी और मर्दों का गाढी म ना बठी ।

जिस घटना की प्रतीक्षा अकसीनिया उत्कठा एक आह्लादपूर्ण अघारता स कर रही था और प्रिगारी भय म कर रहा था वह फसल की कटाई क समय घटा । नक्षत्र दिखलाई दंत ही अकसानिया न हेंगा जमीन पर पन्क दिवा और पुनिन्दा क एक ढर के नीच जा सेटी । तुरन्त ही प्रसव वेरना हान लगी । अपनी काली पढी जीभ को दाँता स काटती बह जमीन पर चित लख गई । कटाई-मगीनें तिय मजदूर उसक पास स गुडर रह थे । एक पील काठ के-स चहरे धाना आदमी बोला धर तुम यहाँ क्या नटा हा ? उठा यहाँ म नहा ता धूप म पिघन आआगो ।

मगीन पर अघना जगह किमी को बिठाकर प्रिगारी उसके पास आया । धाना क्या बात है ?

अकसीनिया क हाठ ऐँठन लग और वह अपनी सम्हाल म नहा रही ।

‘पट द कर रहा है बच्चा’

मैंने कहा था न कि मत चल गयी कही की ! अब क्या किया जाए ?

गुस्सा न होओ प्रीशवा ! हमारे हाय र ! गाड़ी साधा । मैं घर जाऊंगी यहाँ कैसे क्या होगा कज्जाका के सामन ? दर की लोहपकड़ में जकड़ी-सी बह कराही ।

प्रिगोरी घोडा साने का दौडा । वह थोड़ी दूर खड्ड में चर रहा था । जब तक वह भाया तब तक भकसीनिया की सारी गति हा ली । गद स भरे जो व डेर में उसने अपना सिर घसा लिया था और दर के मारे जो बायें घवा ली थी उन्हें धू-धू कर धूकने लगी । उसने फटी फटी सुटी-लुटी-नी दृष्टि से प्रिगोरी को देखा और मुंह में रुमाल दूम लिया ताकि उसकी चीखें मजदूर न सुनें ।

प्रिगोरी न उठाकर उस गाड़ी में लिटाया और घोडे को इलाके की ओर भगा ल चला ।

भकसीनिया का सिर गाड़ी के पेंडे से टकराया । वह चिल्ला उठी हाय रे जल्दी न करो भर जाऊंगी मैं धीरे हाँको धीरे मुझे घबरा सग रहे हैं

प्रिगोरी न चुपचाप चाबुक नीध रख दिया और अपने सिर के चारों ओर रास घुमाई । उसने पीछे मुड़कर देखा नहीं ।

उसने अपने गाल हथेलियों पर टिका लिये । गाड़ी ऊँची-नीची सड़क पर भागे बड़ी ली वह वभी इस धार को लुठकने लगी ता कभी उस धार को । प्रिगोरी घोडे को दौडाता ही रहा । क्षण भर के लिए भकसीनिया ने चीखना चिल्लाना बन्द कर दिया । पहिले सड़कवाये और उसका सिर नीच के तले से टकराया । पहले ली प्रिगोरी पर उसकी घुप्पी का कोई प्रभाव नहीं पडा लेकिन फिर उसे कुछ ध्यान भाया । उसने मुड़कर पीछे देखा । भकसीनिया लटो हुई थी । उसका मुह बुरे तरह एँठ गया था । गाल गाड़ी के बाजू से निचा हुआ था । जबडे पानी के बाहर पबो मछनी व जखमो की भाँति काँच रह थे । माये से पमीना बहकर नीच फुकी आँखा पर आ रहा था । प्रिगोरी ने उसका सिर उठाया और अपनी मुडी मुडाई टोपी उमके नीच रख दी । तिरछी

दृष्टि से उसकी धार देखती हुई भ्रकसीनिया दृढ़ता से बोली मैं नहीं बचूंगी श्रीदका ! अब सारा खेल खत्म ही समझो ।

प्रिगोरी काँप गया । उसके सिर से पर तक कपकपी दौड़ गई । उसने धीरज बचाने के लिए कुछ कहना चाहा पर शब्द ही न मिल । उसके परथराते होठ एँठे और वह गरजा । उसके काँपते हाठों से शब्द निकले बकवास मत कर बेवकूफ कहीं की ! इसके बाद उसने सिर हिलाया । वह भ्रकसीनिया की तरफ झुका और उसका पाँव हिलाते हुए प्यास से वाला 'भ्रकसीनिया मेरी रानी मेरी सोनचिरेया ।

क्षण भर के लिए दद बन्द हो गया लेकिन फिर दूने वेग से उभर आया । उस लगा कि कोई चीज उसका पेट चीरे बान रही है । मुँह से भयानक गगनभेदी चीख निकली । प्रिगोरी एकदम घबरा गया । उसने पागल की तरह घाटे पर चाबुक सटकारा । पहिया की खडखडाहट का भेदती पतनी घीमी आवाज उसके कानों में पड़ी— 'श्रीगा' श्रीदका ।

उसने घाड़ा रोका और पीछे मुड़कर देखा । भ्रकसीनिया बाँहें फलाये खून में लयपथ लेटी थी । उसकी टाँगों के बीच एक गोरी तान थी जो पड़ी हिल रही थी । प्रिगोरी बौखलाता हुआ नीचे झूटा और खडखडाता हुआ पीछे की धार गया । भ्रकसीनिया के धौंकनी की तरह जलते हुए मुँह को देखकर उसने उसकी बात सुनी कम उसके भाव समझे क्या ।

नारकाट डाला सूत बाँध दो कमीज चीर डालो ।

प्रिगोरी ने काँपती हुई भ्रंगुलियों से अपनी सूती कमीज की भास्तीन पाही उससे तांग खींचे और भाँखें सिकोड उसने दाँता से नारकाट डाला । फिर खून उगलते सिरे को तांगे से बाँध दिया ।

५

यागोदनाण की जागीर एक चौड़ी घाटी में थी स्थित थी मानो बीच में उग आई हो । हवा अभी दक्षिण की धार से बहती तो अभी उत्तर की लिंगा से । मूरज आसमान की नीलम सफेदी पर लहरें लेता । घ रंगे रंग रमी का पीछा करता सरसरता चला घाता । सदिमा बफ़

पाले से मडी रहती । पर यागोदनाए ज्या-ना-त्या जदता म जडा रहता । दिन जुडवाँ बच्चा का तरह बीतते जात भार जागीर सारी दुनिया म कटी रहती ।

सो काम क हाते म पाली बत्तखा की चहन-महल थब भी रहती । उनकी झालो क चारो ओर के काने घेरे चश्मा-स लगते । गिनी क मुर्गे दानदार बूदा की भाँति घारा ओर बिलरे रहते । मुँदर परो बाल मोर भस्तबल की छन से पी-बहाँ ! पी-नहाँ ! करते । वृद्ध जनरल का हर तरह के पछियो का दौक था । उसके पास एक पालतू सारस भी था । नवम्बर म जब जगनी सारसा का दक्षिण की ओर जाते देखता तो उसके कठ के स्वर उसके दिल की तडफ और कनप का वाणी देन लगत । वह उठ नहीं सकता था क्योंकि उमका एक पक्ष बकार था और एक ओर को झूलता रहता था । मिडकी पर खडा हो जनरल जब पक्षी को अपनी गदन तान छल्लांग मारत और पक्ष फडफडाते देखता तो हस पडता । हसी से सफद शीवारो घाला हाल गुँजन लगता ।

वनयामिन पहले की तरह भ्रबडा फिरता और पीछे के कमरे म भ्रबेला ताग खेतता रहता । तीखोन अपनी चेचक के दागा वाली बीवी शांका प्रिगोरी मजदूरो और सारस को लेकर उसी तरह नुडता रहता । विधवा सुकरिया अपने हृदय की सारी ममता सारस पर उठेवती । बूडा गाक्षन जब-सब बाल पाता और लिस्तानित्स्की की विडकी क नीचे खडा हानर पघाम मोपेक माँगता ।

यागोदनाए म प्रिगोरी के निवास-बाल में कवन दो ऐसी घटनाए हुईं त्रिनस वहाँ क एकरम बजान जीवन म कुछ हलचल हुई । एक भ्रवसानिया का बच्चा हुआ । दूमर चणकीमती हस मर गया । जहाँ तक प्रिगोरी की बच्ची का सवाल है यागानोए क लोग जल्दी ही उस अपना भानन लगे । हस के मामल मे भी उनकी उत्सुक्ता जल्दी ही समाप्त हा गई । चरागाह म उठ पक्ष मिने और उन्होंने मान लिया कि कोई सामडी उसे उठा ल गई ।

सुबह जगते ही मालिन वनयामिन को धायाउ देता 'रात को तुमने सपना देला था कोई ?

क्या देखा था शानदार सपना देखा था ।

‘बनाम्ना मुझे क्या देखा तुमन ?’ सिगरेट रोल करते हुए लिस्त निल्की घ्राणेंग देता ।

घौर बेनयामिन बतानाता । अगर सपना खराब या बुरा निकलता तो जागीरदार विगड उठता गधे हो तुम ! बबूफा का ही बबूफा ही सपन घ्रात है ।

इस पर बेनयामिन खूनी स भर मज्जेदार सपन गन्न लगता । काम मुदिक्क हाता । वह कई दिन पहल स ताग के पत्ता स जूझत जूझते यह काम गुरु करता । कभी-कभी तो एसा हाता कि सोचत-सोचत उसका दिमाग काम करना बन्द कर देता । रात को वह सोता तो मुबह उठने पर सपन याद करन की कोशिश करता पर हाथ घ्राता केवल भंधेरा और सुनमान भंधेरा ।

फिर यह होता कि बेनयामिन का सपना का खजाना खाली हा जाता और वह सपने दाहगन लगता ता मालिक चीख उठता घाडे वं बारे म इस सपन का किस्सा तो तुमन मुझे पिछल बूहस्पति को सुनाया था ।

बेनयामिन गान्त भाव स जवाब देता मैंने दुबारा देखा यही सपना भिकालाई लकसेणविक ! ईश्वर जानता है—दुबारा देखा मैंन वहा सपना ।

खर ता दिसम्बर म एक बार प्रिगारी का जिला प्रशासन कार्यालय म व्यनेस्काया बुलाया गया । वहाँ घोडा खरीदने को उन एक सौ रुबल मिन और घ्राणेंग दिया गया—बडे दिन के दा दिन बाद तुम्हें मनिक घुनाव क लिए मानकोवो गाँव म पहुँचना है ।

प्रिगारी मागोदनाए लौटा तो काफ़ी परेगान था । बडा दिन पास घ्रा रहा था और तयारी कुछ भी नहीं हुई थी । अधिकारियों म मिले और अपन बचाव उसवे पास बुल एक सौ घालीस रुबल थ । सो उसन अपन माय गाँवका को लिया और दाना न मिलकर एक घोडा खरीगा । घोडा छ साज का था । एक पल उसमें थी पर वह छिपी हुई थी । घोगुलिया को दाढ़ी क बाला म फिरान हुए बूढ गाँवका ने राय दी इससे सस्ता

नहीं मिलेगा और घपसरो की नजर पल पर जाने की नहीं । तन समझदार नहीं हाने घफसर ।

घोड़े की नगी धीठ पर सवार हो प्रिगोरी न यागोनोए तक उसकी पास परली ।

पन्तली के यागादोनोए धान की तो कोई धाना थी नहीं लकिन बठ दिन स एक सप्ताह पूव वह वहाँ अकस्मात् ही धा पहुँचा । उसने घपना घाडा और बास्वट फाटक पर ही छाड दी । लकी के ऊपर पडे हिम-कणा को भाडता सगडाता हुमा वह नीकरो के क्वाटरा म गया । प्रिगोरी ने लिडकी स उसे देखा तो वह अकित हा उठा । पन्तेली बोला मैं हू तेरा पापा ।

न जाने किस विचार स अकसीनिया ने पालने म सटी बच्ची पर दौडकर आदर डक दी । पन्तली अन्दर घाया और उसके साथ ही घाया ठडी ह्या का एक लहरा । घपने सिर की टोपी उतारकर उमने मूर्ति के सम्मुख कौंस बनाया और फिर कमरे में चारो ओर नजर दौडाई ।

दोबयेवमा' पापा ! बेंच स उठकर बोध कमरे म घाते हुए प्रिगोरी न कहा ।

भगवान् तुम्हें स्वस्य रने ! उमने धानीर्वा दिया ।

पन्तेली ने बर्ष-मा ठडा हाथ मिलाया और भठ की खाल सपेटते हुए बेंच क सिर पर बठ गया । उमने अकनीनिया को ओर देखा तक नहीं । वह भूल के पास अत्र भी शान्त भाव से खडी रही ।

नीकरी पर जाने की तयारिया कर रहे हो ? उसने पूछा ।

हाँ मो तो करनी ही है ।

प्रिगोरी की ओर गहरी प्रदनभरी दृष्टि मे देखन हुए पन्तेली चुप रहा ।

पापा ओवरकाण वर्गरेह उनार दो ठड मे परेगान हो गए हाग ।

कोई बात नहीं ।

समोवार तयार हो रहा है ।

धन्यवान् बूते न घोंगुली न नाखून स अपने कोट पर लगा कीचड़ का पुराना दाग खुरचा घोर वाला मैं तुम्हारा मामान ले धाया हूँ । दा कोट हूँ एक जीन है पतलून है । सब-कृच्छ स्नेज मे रखा है ।

प्रिगोरी उठकर गया और स्नेज स दो वारे मामान उठा गया । उसक भात ही पिता बेंच स उठकर खड़ा हो गया । पूछा नव जाओगे ?

बड़े दिन क दूसरे दिन । आप जा रहे हैं क्या ? अभी रुकिए न पापा ।

'मुझे जल्दी लौटना है ।

पन्तली न प्रिगारी स विदा नी और अकसानिया की दृष्टि से वषता हुआ द्वार का घोर बड़ा । कुडी खालते हुए वह पालने की घोर देखकर बाना तुम्हारी माँ न तुमका आगावादि भजा है । परकी तकनीफ म वह बीमार है । फिर क्षण भर चुप रहकर तेज स्वर म कहा मैं मानकोवा साथ चलूंगा । आऊंगा तयार रहना ।

हाथ क बुन गरम दस्ताना में हाथ डालते हुए वह बाहर चल लिया । अपमान स पीली अकसीनिया न मुह स कुछ नहीं कहा । प्रिगोरी उसकी घोर निरखी दृष्टि से दखते हुए कमरे म टहलना रहा । उसक परों के नीच का तन्ना घरमराता रहा ।

बड़े दिन क अक्सर पर प्रिगोरी मालिक को बग्घी म ध्येशन्कामा स गया । लिस्तनित्स्की घम-समाज में सम्मिलित हुआ उसन वहाँ के एक जमीदार अपने भतीजे के साथ भोजन किया और फिर प्रिगोरी का वापसी क लिए बग्घी जातने को कहा । प्रिगारी अपना शोरवा पी भी नहीं पाया था कि टुकम पर उठ खड़ा हुआ अस्तबल म गया और वहाँ उसन इल्की स्नेज म भूर घोड़े जात लिए ।

हवा थप क फाहा की उठाती फिर रहा थी । स्पहला फेल-सा हाते भर म उमड रहा था । जगन क बाहर क पेड़ों की शाखों पर थप सूना भूल रही थी । हवा उस उठाकर जमीन पर गिरा रही थी और सूरज की किरणें उसम इन्द्रधनुष बुन रही थीं । धुमाँ पेंती चिमनी क

नहीं मिलेगा और अपसरो की नजर पल पर जाने की नहीं । इतने सभभदार नहीं हाते अफसर ।

धोड़े की नगी पीठ पर सवार हो प्रिगोरी न यागादनीए तक उसकी चाम परली ।

पन्तेली के यागोदनाए जाने की तो कोई धासा थी नहीं लेकिन बड़े दिन से एक सप्ताह पूव वह वहाँ अकस्मात् ही आ पहुँचा । उसने अपना घोडा और बास्वेट फाटक पर ही छाड़ दी । दाड़ी के ऊपर पड़े हिम-बग्गा को झाडना लगडाता हुआ वह नौकरो के स्वाटरो म गया । प्रिगोरी ने लिडकी से उस देखा तो वह अकिन हो उठा । पन्तेली बाला में हूँ तेरा पापा ।

न जाने किस विचार से अकसीनिया ने पालने म लटी बच्ची पर दौडकर घादर डक दी । पन्तेली घादर घाया और उसके साथ ही आया टडी हवा का एक सहरा । अपने सिर की टोपी उतारकर उसने मूर्ति के सम्मुख क्रॉस बनाया और फिर कमरे म चारो ओर नजर दौडाई ।

दोअयेउमा' पापा ! बेंब से उठकर बीष कमरे म जाने हुए प्रिगोरी न कहा ।

भगवान् तुम्हें स्वस्थ रहे ! उसने आगीबाद दिया ।

पन्तेली न बर्फ-सा ठहा हाथ मिलाया और भेड की लाल सपेटते हुए बेंब के सिरे पर बठ गया । उसने अकसीनिया की ओर देखा तक नहीं । वह भूले के पास अब भी दान्त भाव से खडी रही ।

नौकरी पर जाने की तयारियाँ कर रहे हो ? उसने पूछा ।

हाँ सो तो करती ही है ।

प्रिगोरी की ओर गहरी प्रश्नमरी दृष्टि से देखत हुए पन्तेली चुप रहा ।

'पापा ओवरकाट वर्गरह उतार दो ठड से परेसान हो गए होंगे ।

कोई बात नहीं ।

समोवार तयार हा रहा है ।

घयवान् बूढ़े ने झँगुली व नाखून से अपन कोट पर नगा कीचड़ का पुराना दाग झुरचा और घोला में तुम्हारा सामान ले आया हू । दा कोट है एक जीन है पतलून हैं । सब कुछ स्लेज म रखा है ।

प्रिगोरी उठकर गया और स्लेज से दो बोरे सामान उठा आया । उसक आते ही पिता बेंच से उठकर खड़ा हो गया । पूछा कब जाओगे ?

बड़े दिन व दूसरे दिन । आप जा रहे हैं क्या ? अभी रुकिए न पापा ।

मुझे जल्दी लौटना है ।

पत्तेली न प्रिगोरी से विदा ली और अक्सानिया की दृष्टि से वचता हुआ द्वार की ओर बढ़ा । कुडी झालते हुए वह पालने की ओर देखकर वाला तुम्हारी माँ न तुमको आशीर्वाद भेजा है । पर कीतनलीफ्र स वह बीमार है । फिर दाए भर चुप रहकर तेज स्वर में कहा मैं मानकोवा साथ चलूंगा । आऊगा तयार रहना ।

हाथ क बुने गरम दस्तानो में हाथ डालते हुए वह बाहर चल दिया । अपमान म पीली अक्सानिया ने मुह स कुछ नहीं कहा । प्रिगोरी उसकी ओर तिरछी दृष्टि स देखने हुए कमरे म टहनता रहा । उसक परों के नीचे ना तस्ता धरमराता रहा ।

बड़े दिन के अवसर पर प्रिगोरी मालिक को बगधी म व्यशेन्स्काया ल गया । लिस्नित्स्की घम-समाज में सम्मिलित हुआ उसन वहाँ के एक जमींदार अपन भतीजे के साथ भोजन किया और फिर प्रिगोरी को वापसी क लिए बगधी जातने को कहा । प्रिगोरी अपना शोरवा पी भी नहीं पाया था कि ड्रवम पर उठ खड़ा हुआ अस्तबल म गया और वहाँ उसन हल्की स्लेज म भूरे घोड़े जात दिए ।

हवा बफ क फाहा को उठाती फिर रही थी । स्पहला फेन-सा हाते भर म उमठ रहा था । जगले क बाहर क पेठों की गाला पर बफ झूला झूल रही थी । हवा उस उठाकर जमीन पर गिरा रही थी और मूरज की किरणें उसम इन्द्रधनुष बुन रही थीं । धुमा गैती चिमनी के

पास की छत पर काँवे काँव-काँव कर रहे थे। पगध्वनिया से चौककर वे उठ-उठकर बत्तख व रग की बफ के फूलों की तरह मकान व चाँगे धीरे धीरे भाट रहे थे। फिर पूरव में स्थित गिरजे की धीरे उठे जा रह थे। गिरजा सुबह के बजनी आममान व साय म दूर से सौ दे रहा था।

मालिक से कह दा कि गाड़ी तयार है। प्रिगोरी ने मकान की सोड्रिया पर खड़ी एक नौकरानी से कहा।

निस्तनिस्की आया धीरे गाड़ी में बँठ गया। रेडन रीछ व फर वास कॉलर म उसने अपने गनमुन्दे छिया लिय। प्रिगोरी न अपनी टाँगें ढकी धीरे मखमली धस्तरवाली भेडिये की खान ठीक की।

प्रिगोरी को अपनी गद्दी पर बँठे-ही-बँठे याद आँ जाड की एक धीरे धीरे याद आया यह भी कि स्लेज को मद् डग से चलाने के लिये मानिक न कस उसके कान गरम किये थे। सा गाड़ी दोन प्रण्य व निचले इलाको में पहुँची तो प्रिगोरी ने रास ढीली कर दी धीरे गाल दस्ताने से रगडे।

वे दो घटे म यागादनोए पहुँच गए। रास्ते म निस्तनिस्की धीरे प्रिगोरी के बीच काई बातचीत नहीं हुई। एक धीरे केवल निस्तनिस्की ने पीठ पर धँगुली गडाकर प्रिगोरी को गाड़ी रोकने का आँारा किया कदोंकि वह सिगरट जलाना चाहता था। पर पहाडी स उतरन ही उसन पूछा कल तडवे जा रहेहो ?

प्रिगोरी एक धीरे का मुडा। जमे हुण हाठ बडी मुक्किल म खुले। ठड से धकडी बडी जीम दाँतो के पीछे फमी-मी लगी।

जी हाँ ! उसन जस-तसे कहा।

रुबल पूर मिल गए ?

जी हाँ।

अपनी धरवाली की चिन्ता न करना। वह यहाँ कायम म रहगी। अच्छे सिपायो बनना। तुम्हारे बाबा बड़ धरुध धज्जाक थे। तुम्हारे काम से तुम्हारे बाबा धीरे पिता की इज्जत पर किसी तरह बट्टा नहीं लगना चाहिए। तुम्हारे पापा को सा सन् १८८३ म राजकीय

प्रश्न क समय धुइसवारा में प्रथम पुरस्कार मिला भा है न ?
लिस्नित्स्की न हुवा से चचाव के लिए कालर म अपना मुह छिपा लिया ।

‘जी हाँ मिला था ।

ता अब तुम्हें कहा शान रखनी है । बड़ न अपना वाणा म
रखाई नात हुए कहा और फिर फर म चहरा धमा लिया ।

हात म पड़ेकर प्रिगारी न गाँका का घोडा धमाया और नौकरा
क न्वाटरा की घोर बडा ।

तुम्हार पापा भा गण हैं । गाँका न पुकारकर कहा ।

प्रिगारी न पन्तली का मड क बिनार बठकर गोशन की चटनी खात
देखा । मजे म हैं । पिता क तमनमाय चहरे का दावकर प्रिगारी ने
सोचा ।

ता लौट घाय कौजी ? पन्तली बाभा ।

‘मैं ता बक स मकड गया । प्रिगारी न हाथा को रगडन हुए
रुहा । वह धकसीनिया की घाय मुहा और बाभा मेरा कनटोप खोल
दो ठड क मार मेरी भंगुलियाँ मुझ पड गई हैं ।

‘हवा विरुड हागी । पिता ने मुह चलात हुए कहा ।

इस बार पापा क व्यवहार म कही अपिध ममता मिली । वह
धकसीनिया स भा बाला माना अपन ही घर म हा ।

मुझे राटी और दा बचाकर न रखा ।

खाना खाकर पन्तली उठा और हाने म जाकर सिगरेट पीन क
लिए दरवाजे की घोर बडा । पालन क पास स निरन्तर समय उसने
पालन का दा-नोन बार हिता लिया । पर लिखाथा ऐसा किया जस कि
यह हरजज या ही हा गइ हा । उसन पूछा कचचाक है ?

लडकी है । धकसीनिया न प्रिगारी क बदल जबाब लिया और
बूडे क चहरे पर ममन्तोप का भाव देखत ही यह तुरन्त बोली ग्रीदका
है बिलकुल !

कपड़ों म बाहर निकले छाटे काम सिर का गौर स देखत हुए,
ऊपर मनिमान न पन्तली बाभा हनारा खून है इत्तम ।

तुम किस पर घाय पापा ? प्रिगारी ने पूछा ।

प्योत्र ना घाटा घीर अपनी घाटी मर साथ है ।

एक ही से घाए होते मानकावो तब मेरा घोडा ता जाता हो ।

उस पर जरा थोका कम डाला । तुम जानो कि घाटा बुरा नहीं है ।

यद्यपि दोनों के दिल म यात एक ही शुभ रही थी लेकिन वे हजार दूसरी बातों को लेकर बातचीत करते रहे । अकसीनिया ने बातचीत में भाग नहीं लिया और पलंग पर बठी रही । उसकी भरी हुई छातियाँ कसा हुआ प्याउज जैसे भेन्ती रही । प्रसन्न ब बान वह काफी तगडी हो गई थी और उसके मुख पर विश्वास की एक नई चमक आ गई थी ।

काफी रात बीतने पर वे लोग साये । प्रिगारी स चिपटकर लेटी अकसीनिया ने उसकी कमीज घाँसुघो स तर कर दी । उसकी छातियाँ से दूध बहता रहा ।

मैं तुम्हारे बिना मर जाऊगी । कैसे रहूँगी तुम्हें छोड़कर ?

ठीक ही रहोगी तुम । प्रिगारी ने धीमे से कहा ।

लम्बी रातें बच्ची की खुली हुई घाँसों से सोधो ता घीष्का
कैसे बटेंगे चार साल ?

लोग कहते हैं कि पुराने जमाने म तो फौजी-नौकरी पचीस साल की हाती थी ।

'पुराने जमाने से मुझे क्या सना-दना ? मैं तो कहती हूँ घाग नगाघो फौज की इस नौकरी म ।

छुट्टी पर घर आ जाऊगा ।

छुट्टी पर ! सिसकियाँ भरती और नाज पाछनी अकसीनिया बोली तब तब तो दोन म न जाने कितना पानी घाएगा और बह जाएगा ।

ऐम न बिलखा । तुम ता गरद की बरसान बन गई हा कि बूँद टूटन को ही नहीं घाती ।

तुम मरी जगह आकर देखो । यह बाली ।

मार हाने से थोडी देर पहले प्रिगारी को भीन घा गई ।

अकसीनिया न उठकर बच्ची को दूध पिलाया और फिर जा लेटी । उसन कुहनियां टेकी अचलक प्रिगोरी क चहरे की और देखा और जान बच तक बिना लेती रही । उस बह गन यान भाइ जब उसने प्रिगोरी स ब्रह्मान चलन का भाग्रह किया था । वह रात भी ऐसा ही थी निवाय इसके कि उम तिन खिडकी के बाहर पूरे हान म चाँदनी का पसारा था । हर तरफ चाँदी बिजरी हुई थी । तब भी के ऐम ही भेटे थे और प्रिगोरी भी ऐसा ही था । पर आज पहल जमा होकर भी वह बिलकुल पहल जसा नही था । उनक पीछे रह गया था एक पला हुआ रास्ता । गुजरे तिन इम रास्ते स ही तो हाकर निकल य ।

प्रिगोरी ने करदट नी और भोलगान्स्वी गाँव के बारे म कुछ बुन बुदाया फिर गान्त हो गया । अकसीनिया न सान की चप्टा की पर उसक बिचार उसकी नीन को इस तरह उठा न गए जिस तरह हवा सूखी घास के दर को उठा ले जाती है । दिन निकलन तक वह प्रिगोरी की असांभल बात पर बिचार करती और उसका अय लगाती गेटी रही । पन्तेली की अग्रि तब खुली जबकि तिन का प्रकाण पाल से मदी खिडकी स आँकन लगा ।

प्रिगोरी उठो ! उमने जोर म पुकारा ।

जब तक सामान की बाँधा-बूँधी हुई तब तक पूरी तरह सवरा हो गया । पन्तनी अचन घोड़ा को जोतने चना । अकसीनिया क अग्निगन पाग से मुक्त हो और घुम्बनो क अचन तार स अलविदा कह प्रिगोरी गाँवका और दूसर नौकरा म विदा लेन चला ।

बच्ची को गरम कपडो स भली अति डक गाँव म ले अकसीनिया अन्तिम विदा लेने के लिए बाहर भाइ । प्रिगोरी ने बटी क नम नन्ध माये पर हलके मे हॉठ रखे और अपने घोड़े की अार चला ।

'स्लज म आ जाओ । अपने घोड़ा को सहजात हुए पिता वाला ।

'नहीं मैं अपने घोड़े पर चलूँगा ।

प्रिगोरी ने सधे हाथो म धीरे-धीरे घोड़े के साज क बन्द कस उम पर सवार हुआ और हाथ म रामें सम्हाली । अकसीनिया न खडाव पर हाथ रखा और बार-बार कहा जग रको प्रीक्षा मुझे तुमम एक

घान बहती है और अपनी भौह सिकोड़ने हुए सोचन लगी कि आखिर क्या हुआ है ।

अच्छा दोस्तिदानिया^१ बच्ची की देखभाल कायदे स करना जाता है देसो पापा कहीं पहुँच गय ।

रहा राजा । बाए हाथ से सोह की बर्फीली खाज पकड़कर धक्कीनिया बोली । 'पापा हाथ बच्ची का साथे रखा । नतीजा यह कि भौमुभा की घाग बहती रही । उन्हें पाछने की नौबत ही न आई ।

वनयामिन ने सीढी पर धानर आवाज दी विगोरी मुमका मालिक बुला रहे हैं ।

विगोरी ने गाली दी अपना आबुक घुमाया और घाह का दौड़ाकर हाते के बाहर धा गया । बग के घ-घह म लड़पशाती हुई भक्कीनिया पीछ-पाछ दौडी ।

घोडा दौड़ाकर पहाडी की धानी पर उसने पिता का पकड़ लिया । फिर मुहकर उसन पीछे दला । बच्चे को सीने से मटाए धक्कीनिया भय भी फ्राटक पर खडी थी । उमका साल शाय हवा में फड़फड़ा रहा था ।

उसने अपना घाहा पापा की स्तज की बगल म कर लिया । शण भर आन बूडे ने घाहा की धोर पीठ की धोर बोना ता तुम अपनी वीवी के साथ नही रहना चाहते ?

फिर वनी पुरानी पचायत मैंने तुमस पहल ही कह दिया तो तुम नही रहना चाहत ?

नही मैं उमने साथ नही रहना चाहता ।

'तुमन मुना उसन अपनी जान देने की कागिग की थी ?

हाँ, मुना था । मुझे गाँव का एक आदमी मिला था ।

'धीर भगवान की नजर म ?

पापा क्या आखिर क्या चिटियाँ गत चुग जाए ता पछतान से क्या हागा ?

इस तरह की बकवास मुझसे न करा। जा बात मैं कह रहा हूँ तुमसे तुम्हारे भल व लिये कह रहा हूँ। क्रोधित हो पन्तली उबल पड़ा।

तुम्हें मालूम है कि मर एक नडकी हा चुकी है। भवसा बातचीत का सवान ही नहीं उठता। अब तुम दूसरी औरत मेरे ऊपर नहीं थोप सकत

कही ऐसा ता नहीं है कि बच्ची किसी और की हों और पाल रहे हो तुम।

प्रिगोरी का चेहरा उतर गया। पापा ने दुखता रंग पर हाथ रख लिया था। नडकी व जन्म के समय से ही उसके मन्तिष्क में यह भ्रम पनपता रहा था और उसने भक्तीनिया से छिपाय रखा था। कई बार राता का भक्तीनिया साइ रही कि वह पालन व पास गया और बच्चा के गुलाबी चहर में अपने नाक-नङ्गा गोजे पर गाँठ मुनभी नहीं। वह फिर विस्तर पर जा बैठा। स्तीपान का भाँ डँका हुआ रंग लाली लिय हुए था उसे कस मालूम होता कि नडकी की नमा में किसका खून दौड़ रहा है? कभी उसे लगता कि बच्ची मुझ पर गई है और कभी लगता कि नहीं स्तीपान से मिलती है। प्रिगोरी के हृदय में उसके लिए कोई भावना न थी। अगर थी तो शायद दुःखना की क्योंकि उसके हान व पहने भक्तीनिया का जंगल से घर लाते समय वह काफी भुगत चुका था। जन्म के बाद में अब तक बचन एक बार उसे बच्ची का मनरा बदलना पड़ा था क्योंकि भक्तीनिया काम में फसी हुई थी। सो कपड़ा बदलने समय आक्रान्त भीमा पार कर गया था। उसके बाद वह चुपचाप पालने पर भुका था और उसने बच्ची के गुलाबी अगूठे का दाँता के बीच मस कर दबा लिया था।

उसके पिता ने बरहमी से धाव नुरेद दिया। प्रिगोरी ने काठी पर हाथ रखकर धीरे में उत्तर लिया किसी की भी हा में बच्ची का छोड़ नहीं सकता।

पन्तली ने मुझे बिना ही घोड़ा पर सावुक सटवारा।

नताल्या ने अपना चेहरा बिगाड़ लिया। उमका मिर एक तरह

भूलता रहता है जैसे कि लकवा मार गया हो। मासूम पड़ता है कि उसने कोई नस काट ली। वह घुप हा गया।

घोर अब उसकी हालत कसी है? घाटे की भयानक बीच से घातु का एक खुरखुरा टुकड़ा हटात हुए प्रिगोरी ने पूछा।

जिसी तरह ठीक हो गई। सात महीने पड़ी रही चारपाई पर। ट्रिनिटी रविवार को तो उसने प्राण निकलते-निकलते बच। पादर पानत्राती उसका आतिरी सस्कार के लिए युना लिये गए थे। फिर उसकी नई जिन्दगी हुई। वह मम्हलने लगी और चलने फिरने लगी। उसने अपने कपड़ों में हर्मिया घसाया था लेकिन उसका हाथ नाप गया और धार खाली बला गया था।

पहाड़ी से जल्दी उतर ला। प्रिगोरी ने प्रस्ताव रखा अपना चाबुक सन्कारा और पापा की स्तज क ऊपर घोड़े के सुरो सबफें उछालता घाग निकल गया।

हम ननाल्या का अपन घर ला रहे हैं। उसके घरवालों के घाते हुए पन्तली ने चिल्लाकर कहा लडकी अपन बूढे माँ-बाप के यहाँ नहीं रहना चाहती। वह मुझे अभी उम दिन मिली थी तो मैंने उससे अपने यहाँ पान को कह दिया था।

प्रिगोरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे पहल गाँव तक घुपघाप बढ़त गए। पिता ने उस विषय पर आगे कुछ नहीं कहा।

उस दिन उन्होंने सतर बस्त लिये किए। अगले दिन घुंघलका होते होत के मानकोवा पहुँच गए और ब्यगन्स्वाया के रगरूटा के लिए निश्चित बचावों में उन्होंने रात बिताई।

आले दिन सुबह जिला-अनामान ने ब्येगन्स्वाया के रगरूटो की स्वास्थ्य-परीक्षा के लिए भेजा। प्रिगोरी अपने गाँव में आए दूसरे लडकी के साथ हा लिया। तब एक एक नानदार नई फाठीवाने ऊँचे घोड़े पर सवार मीस्वा कारपूनोव प्रिगोरी के पास से निजना पर उस देखकर मुह भी न राना।

स्थानीय नगर प्रशासन के ठेके कमरे में अपनी अपनी पारी से सबने कपडे उतारे। फौजी-जनक काय में ब्यस्त इपर-उधर करते रहे कि

प्रान्तीय प्रतामान का एडजुटेंट उधर से तजी स गुजरा । भीनरी कमर से डॉक्टर क आदेगा और बातचीत की आवाज आती रही ।

उन्हतर

पावेल इवानोविच जरा वह पक्की पेंसिल उठा दना । नस से भर्रायी-सी आवाज म किमी न कहा ।

सीने की चौड़ाइ

हाँ साफ ह कि पुतनी है

निख लो गरमी

हाथ हटाओ कोइ लडकी तो हो नही तुम ।

बहुत अच्छा स्वास्थ्य है ।

सारे गाँव का नग जाती है खास नदम उठाए जाने चाहिएँ

मिने इसके बारे म महामहिम से निवेदन किया है

पावेल इवानोविच जरा इस आदमी का स्वास्थ्य देखो

ओ हो ।

प्रिगोरी न एक दूमरे गाँव के नाल बालावाले लडके के सामने कपडे उतारे । इसी समय एक कलक बाहर आया । उमने अपन कधे या सीधे किए कि पीछे टयूनिंक म बन पठ गए । उसन रुख ढग स प्रिगोरी और दूसरे लडका से डॉक्टरी जाँच के नमरे म जान का कहा ।

जल्दी करा ! लाल बालावाले लडके ने पर का एक भाजा खींचत हुए नम स लाल होकर कहा ।

प्रिगोरी आदरचना गया । ठड के कारण उसकी सारी पीठकलहस के माँस की तरह लगी थी । उसका बदन शाहबलून क रंग की याद दिलाने लगा । अपनी बाना से भरी टाँगा का देखकर वह व्यग्र हो उठा । डॉक्टरी जाँच क खय ने उसे सीख टिला दी । सफद सबादा पहने मूरे बालावाल डाक्टर ने स्टेथेस्कूप उसके सीने पर रखकर देखा । उसस कम उन्न क डॉक्टर न उमकी पलकें उलटाकर देखी और जीभ देखी । उसके पीछे एक तीसरा डॉक्टर साग क प्र म का चन्ना पहन अपन हाथ मलता हुआ इधर-से-उधर घूमता रहा ।

'बजन की मगीन पर लडे हा । एक अपसर न भाजा दी ।

प्रियारी एक ठडे चबूतर पर चढ़ा ।

पाँच पूड साठ छ पाँड ।

क्या था ' यह बोई एसा लम्बा तो नहा है । बाई पकड़कर प्रियारी का घुमाते हुए भूरे बानावाल डॉक्टर ने कहा ।

ताज्जब है । छाटा डाक्टर खाँसते हुए बोला ।

'बचन कितना है ? कुर्मी पर बठे एक अधिकांग न यचज म पूछा ।

पाँच पूड* साठे छ पाँड । भूरे बाना वाल डॉक्टर न जवाब दिया ।

लाइफगाइड म भज दिया जाए इम ता कसा रह ? जिला सनिब-कमिन्तर न अपने पडोमी की घोर भुक्कर पूछा ।

टुटेरा की-सो 'कन है इसकी विसकुल जगनिया-जमी

ए, मुडना पछि । यह तुम्हारी पीठ पर क्या है ? बचन के मळ्दे लक्वाण एक व्यक्ति न अधीरता से मज पर अगुनियाँ बजाने हुए चिल्ला कर पूछा ।

अपने बदन की सिहरन को राबन को चप्टा करत हुए मज की घोर मुह कर प्रियारी ने उत्तर लिया कमन्त म सार्ने लग गई थी । यह पाई का निगान है ।

परीक्षा क अत म मेज पर बठे हुए अधिवारिया न निणय दिया कि प्रियारी का साधारण रज्जीमट म रखा जाएगा ।

'बास्टर्था रज्जीमट मेदखाव मुना तुमने ? उनस का गया ।

दरवाजे की धार बढ़ने समय उम फुमफुमाहट मुनाई दी 'यह हो नहा मवता । साचा तो सम्राट की निगाह क सामने यह भ्राम्मी पड गया तो क्या होगा ? उसकी धाँचें ही

इमम दो जानिया का खून मिना हुआ है । पूव की धार का खून तो है ही ।

घोर कम्का बन्न भी साफ नहीं है । क फीकों क निगान

* १ पूड = लगभग १९ पाँड = १ = सेरे ।

बाहर आत ही गाँव क बाकी लोग उससे चारों ओर जमा हो गए ।

कसा रहा श्रीगा ?

किम रेजीमट म लिया ?

माइफगाड-रजीमट म न ?

वजन कितना निकला ?

एनलून म पर टालत और एक पर पर डगमगात हुए प्रिगोरी ने फिडका घाह माड म जाए कौन-सा रेजीमट ? बारहवाँ और कौन-सा ?

बोरगूनोव निमित्री कारगिन ईवान ! कलक न दरवाज से होकर भावाज दी ।

कोट के बटन लगाते हुए प्रिगोरी ने सीढियाँ पार की । गरमी स भरी हवा बफ के पिघलने का संकेत दे रही थी । सड़क की बफ जहाँ-तहाँ स पिघल गई थी और उसस माप निकल रही थी । मुर्गियाँ सड़क पर पल फडफडाता हुई फुंक रही थी । बत्तलें तानाब म छीटे उडा रही थी । उनक पर पानी म नारंगी-गुनाबी लग रहे थे जैसे कि गरद की पाला मारी पतियाँ हा ।

भगले गिन घोडा की परीक्षा हूह । चौक म गिरजे की दीवार स सटाकर उन्हें एक पाँत म खडा किया गया । घोडा-डॉक्टर अपने सहायक क साथ उम पक्ति क पास स निकल । ब्यशेन्काया का भतामान शौडना हुआ चौक क बीचों-बीच रखी मेज क पाम गया । वहा परीक्षा के परिणाम लिख जा रहे थे । एक फ्रीजी पुलिस अफसर एक जवान कप्तान से बातचीत करता हुआ बगल म गुजरा ।

घपनी पारी भान पर प्रिगोरी अपने घाडे को वजन की मीन पर ल गया । मजन और उमक सहायक न घोडे क प्रत्यक भग को नापा फिर उस ताला । प्रिगोरी घोडा मीन से उताग नी नही पाया कि सजन ने खुतुराई स उसका ऊपरी हाठ परखा उमका गना देखा सीने क पुट्टा पर हाथ फेरा और घपनी मजबूत भगुलिया का मकड़ी की टाँगा की तरह उसकी टाँगा पर फेरेने लगा । उसन घुटना क जाड टटान पुट्टे थपथपाए और टखना के पीछे क बाजा के ऊपर की हड्डी दबाई । जब

परीक्षा कर चुका तो अपने सफ़द लबादे के लटकत भाग का हवा में फड़फड़ाता कार्बोलिक एसिड की गंध उड़ाता वहाँ से चल लिया।

प्रिगारी का घोड़ा नामज़ूर हो गया। गाँवा के आवासन भूठे सिद्ध हुए। अनुभवही सजन ने वह गुप्त खोटा ढूँढ़ निकाला जिसके विषय में उस वृद्ध ने पहले ही सक्त किया था। तुरन्त ही जोग से भरकर प्रिगोरी पिता के पास गया, उसकी राय ली और भाषा घटा बीतते-न-बीतते प्योत्र के घाट का वजन की मशीन पर ल आया। सर्जन ने उसे देखते ही पास कर दिया।

घोड़े को ल प्रिगारी यानी पूर आया और जरा सूखी जगह देख उसने जौन के कपड़े का जमीन पर फला दिया। पिता घोड़ा पनड एक बूँदे से बाँते करता रहा। वह बूढ़ा भी अपने भेटे को पहुँचान आया था। भूरे घाला वाला हलका भूरा लबादा पहने और स्पहली अस्तराला टोपी लगाए जनरल घोड़े पर सवार अगुल से गुजरा। उसके पीछे-पीछे अधि कारिया का दल चला आ रहा था।

‘यह प्रान्तीय अतामान है। पन्तैली ने प्रिगोरी की पीठ पर अगुली गड़ाकर कहा।

‘जनरल मासूम होता है

‘यह भेजर जनरल मानेयेव है वडा सख्त है शतान !

मानेयेव के आते ही अलग अलग रेजीमेटों के अफसर उमड आए। एक चौड बूटहा और कथा वाला तापलान का भेजर अतामान रेजीमट के गाड से अफसर से बाँते करता रहा—

अपानक है ऐसा उलटा हिसाब किताब है कि अफसरज हाता है। एस्तोनिमा के गाँव में क्यादातर लागे के बाल सुनहरे देखे और यह लडकी ऐसा विरोधाभास देला कि बस। और काई यह अवेत्ती ही ऐसी घोडे थी। हमने बडी-बडी फठबटियाँ बठा ली। अन्त में पता चला कि बीस साल पहले

अफसर प्रिगोरी की बगल से गुजरा ता हेंसी के ठहाका के बीच आखिरी गाँव जाना में पडे तुम्हार गाडों की एक टाला गाँव में रहा करती थी बात साफ है।

अपनी जकेट क बटन बन्द करता अगुलिया म स्याही पात एक फलक दौड़ता दीखा । जिले की पुलिस के सहायक प्रमुख न चिल्लाकर कहा तीन प्रतिया के लिए कहा या मुमस निमाग सराब है ।

प्रिगोरी न अधिकारिया और अफसरो क अपरिचित चेहरा को कुतूहल से देखा । एक एडजुटेन्ट न उसे पनी दृष्टि से देखा किन्तु प्रिगोरी के सावधान नत्रा से नेत्र मिलत ही उसने अपना मुह फेर लिया । एक बूढ़ा कप्तान किसी कारण उत्तेजित अपन पीले दाँता से ऊपरी होठ भीचे लगभग भागता हुआ बगल स निकला ।

जीन के कपडे पर प्रिगोरी ने हरी गोटवाली अपनी जीन रखी । उसके पास रख दा फौजी कोट दा जोड़ी पतलून एक छोटा काट दा जाड़ी सागबूट डेढ़ पाँड विस्कुट नमकीन गामाम का एक टिन और कानून के अन्दर अाने वाली खान की दूसरी चीजें थी । खुले थलो मे थी चार नालें जूत की कीलें सुइयाँ घागा और तौलिय । यह हुआ सिपाही का साधारण साज-सामान ।

अपनी फौजी पोशाकों पर अन्तिम दृष्टि डाल वह पीता पर जमी कीचड़ छुडाने के लिए आलती-मानपी मारकर बठ गया । अपने-अपन जीन के कपडो पर बठे हुए कड़वाका के सामन स सनिक-कमीसन धीरे धीरे निकला । अधिकारिया और अतामान न सामानों की पूरी जाँच की । व झुककर ओबरकोटा के किनारा का देखते थला को टटोसते सामान उलट-पुलट देत और विस्कुटा क थलो की तोल करते ।

जरा उस लम्बे आदमी को देखो । प्रिगोरी की बगलवाला कड़वाक फौजी पुलिस क प्रान्तीय प्रमुख की ओर इगारा करते हुए बोला या सराचा-सराची कर रहा है जैसे कि पोलड की बिल्ली ने पीछे दौड़ने वाला कुत्ता हा ।

जरा उमे देखो थला ही उलटकर रख लिया

कुछ-न-कुछ यत्ने म होगा करना थला उलटा न जाता ।

हाँ नहा तो घोड़े की नाल तो फाइ गिनने की चीज नहीं ।

बिलकुल कुत्ते की तरह

कमीसन ने आठ ही बातचीता का स्वर धीरे धीरे गान्त हो गया ।

प्रांतीय अतामान के बाएँ हाथ में दस्ताना सधा हुआ था। दाहिना हाथ हिसता जा रहा था। कुहनी सीधी थी बिल्कुल। प्रिगोरी तनकर सीधा हो गया। उसके पीछे बड़ा पिता खड़ा। घोड़ों के पैगाम और पिघली बर्फ की बाम हवा चैन में जहाँ-तहाँ से जा रही थी। मूय जगस लग रहा था जैसे कि शराब के दौरा के बाद उठा हो।

अधिकारियों का दल प्रिगोरी की बगल वाले व्यक्ति के पास रुका। वहाँ से वे एक-एक कर उसके पास आये।

तुम्हारा कुल-नाम और उपनाम ?

मेलेखाव प्रिगोरी।

अधिकारी ने सिर से पकड़कर उसका घट कोट उठाया उसका घस्तर सूँधा और उसके बटन गिने। कोरनेट का भुजा लगाए दूसरे अधिकारी ने पाजामे का रूपड़ा धगुलियों से देखा। तीसरा आया उसने मुँहकर उसके थस की ध्यानबीन की। कमिस्तार ने सावधानी से जूते की कीलों के टाट में हाथ घों डाला मानो वह गरम हो। उसने फुस फुमाते हुए कीलें गिनी।

तेईस ही कीलें क्या है ? क्या बात है ? क्रोध से उसने टाट का मिरा लीधा।

'नहीं साहब चौबीस हैं।

'क्या मैं क्या हूँ ?'

प्रिगोरी ने तुरन्त ही मुँहा हुआ सिरा पलटा और चौबीसवीं कील खोज निकाली। इस सिलसिले में उसकी बाला से भरी वाली धगुलियाँ अधिकारी के गोरे हाथ से छू गईं। कमिस्तार ने अपना हाथ भटके से झलक हटाया जैसे कि चोट आ गई हो। फिर उपेक्षा की दृष्टि से खोखली बगलते हुए उसने दस्ताना पहन लिया।

उसकी हुरपतें देखकर प्रिगोरी को हँसी आ गई। कीलें मिलत ही कमिस्तार क्रोधित हो उच्च स्वर में बोला 'यह क्या है क्या बात है यह करवान ? न तुम्हारे बन्द ठीक हैं और न लगाम ! इसका मतलब क्या है ? तुम करवान हो या देहाती मुजिब ? कहाँ है तुम्हारा पिता ?'

पन्तेली ने घोड़े की रासों खीची और लँगबाटा हुआ एक बंदम धाया ।

तुम्ह कज्जाकी मायदा-कानून नहीं मालूम ? कमिसार उबन पडा । आज सुबह ताश म हार जाने की सारी खीझ उसने उतार डाली ।

इसी बीच प्रान्तीय प्रतामान भा गया और कमिसार चुप हा गया । प्रतामान न अपने जूते का सिरा जीन मे गढाया और भागे बढ गया । रजीमट का चुनाव अधिकारी सबसे बाद में धाया । उसने सारा सामान उलट दिया और भागे बढा । फिर पीछे हटकर सिगरेट जलान के लिए ल्यासनार्ई की सीक पर घाड की ।

सगले दिन घोड़ों कज्जाकी और घोड़ो का चारा-दाना से गाडी के लाल डिब्बे बारोनेज के लिए खाना हो गए । उन्ही मे से एक डिब्बे म प्रिगोरी खडा रहा । खुले दरवाजे के सामने स मनजाना प्रश गुजरन लगा । दूर जगना का दृश्य नीसे पतले धाग की भाँति नाचता नजर धाया । प्रिगोरी के पीछे खडे घोडे सूखी घास चबाते रहे । गाडी क हिलने हलने के कारण कभी यह पर उठाते तो कभी बह । डिब्बो से चिरायते पाठा के पसीने और ससन्त म बर्फ के पिघलने की बास धाती रही । सितिज पर नीसे जगलों के पसारे ने लौ दी पर वे सौंभ के घुंघल सितारे की तरह ही पहुँच के बाहर सगे ।

भाग ३

१

सन् १९१४ की भाब म उमग से भरे वसन्त के जमाने म एक दिन नताल्या अपने ससुर के घर आ गई । पन्तेली सरपत की दूटी चहारदीवारी की मरम्मत पेड़ की क रग की टहनिया स कर रहा था । पहले हिमकण धत से टपक रहे थे । मूरज की धूप म साली घौर ताप फूल गया था । धूप पहाडिया की दुलार रही थी और घरती खुनी से फूली खसी जा रही थी ।

नताल्या पीछे से उमरकर पन्तेली के सामने आई और धादर से मुकी । उमकी गन्न म दाग थे और वह एब धार को मुकी हुई थी । बोली पापा भगवान् आपको स्वस्थ रख ।

नताल्युशका तुम्हारा स्वागत है बेटो स्वागत है । पन्तेली गद्गद होकर बोला । टहनियाँ उसने हाथ स सूट गिरी । तुम वभी भाइ ही नहीं यहाँ । अन्तर धाघो तुम्हारी माम तुम्ह देखकर फूली नहीं ममाएगी ।

'पापा मैं आ गई हूँ नताल्या ने हाथ फनाए और बोली धब धगर धाघ धक्के देकर ही न निकालें तो मैं धब गायद ही जाऊँ यहाँ से ।

और भना तुम यहाँ क्या नया रहो बेटा ? तुम काई रीर हो ? देखो प्रिगोनी ने इस चिट्ठी म तुम्हारी चर्चा की है । तुम्हारे बारे में पूछताछ करने को लिखा है । धब व दानों वाधर्चाखाने मे गये । जब इलीबिना ने नताल्या को

बाँहा म भरा तो उसके भाँगू बह चले । रुमान मे नाक साफ कर वह धीरे से बोली तुम्हारे एक बच्चा हो जाए तो सब-कुछ ठीक हो जाए । बच्चा उसका दिन सीच लगा । बठो मैं तुम्हारे लिए पनककेँ लाती हूँ । ल भाऊ न ?

दूया मुसकगती हुई बावर्चीखाने म दीठी भाई और नताल्या को सीन से उगाया । उस भिडकते हुए बोली गम नहीं घाती तुम्हें ? हम सबका ताँ जसे तुमन मुला हो लिया ।

पागल है तू क्या ? पिता न बेटी को घुडका ।

कितनी बडी हो गई हो तुम ! नताल्या ने दून्या की माँखो म भाँख डालकर नग्य ।

फिर व सब एक-दूसरे की बात काटते हुए आपस म बातें करन लगे । हथली पर गाल रख इलीचिना नताल्या का एकटक देखती रही । उसे नताल्या का भाज का चेहरा देखकर दुख हुआ । उमने सोचा—कितनी खूबसूरत थी यह पहल !

अब तुम यही रहोगी न ? नताल्या के हाथा को अपन हाथों म लेते हुए दून्या ने पूछा ।

भगवान् जाने ।

क्या और कहाँ रहगा भरे बेटे की बहू ? तुम यही रहोगी हमारे पाम । मज पर पनकेकेँ सरकाते हुए इलीचिना ने प्रसला-मा दिया ।

बड़े लम्बे मौच-विचार के बाद नताल्या अपनी समुराल म लौटकर भाई थी । पहल तो उसके पिता ने ही नहीं मान दिया । जब उसने पिता के सामन यहाँ मान का प्रस्ताव रखा तो वह क्रोध से चीख पडा और उसन उसे बहुत समझाया-बुझाया । पर नताल्या अपन मक के लोणा स घाँवें नहा मिला पाती थी । अपनी मामहत्या की कोणिस के बाद स वन अपने को वहाँ गर समझने लगी थी । रही बात पन्तेली की वह पिगोरी के सना म चल जाने के बाद स ही नताल्या से समुराल पन मान का भाग्रह करता रहा था क्यकि नताल्या को अपन यहाँ बुलाकर रगन और पिगोरी स समझीता करा देने का वह पक्का इरादा कर चुका था ।

माघ के उस दिन से नताल्या मेलखोव परिवार म रहने लगी । प्योत्र उससे स्नेह का भाई का-सा व्यवहार करता । दारूया बाहर ता कुछ जाहिर न करती पर अपने अन्तर का सारा आक्रोश अपनी कनखियो म उबेल देती । पर दूया को ममता और बढ़ा के माँ-बाप जैसे व्यवहार स यह कमी काफी हू तक पूरी हो जाती ।

नताल्या के घाने के अगले दिन ही पन्नाला न दूया स प्रिगोरी का पत्र लिखवाया—

बेटे प्रिगोरी पन्तरीएविच ! स्नेह और आशीष ! हम सब तुम्हारे स्वास्थ्य की शुभ कामना करते हैं । तुम्हारी बहुत दूया और घर क अय लाग भी तुम्ह प्यार भेजते हैं । तुम्हारा पाँव परखी का पत्र मिला । अन्ववाद । तुमने लिखा है कि तुम्हारा घाडा पाँव पटकता है सो तुम उसकी टाँगा म थोड़ी-सा सूअर की चर्बी की मालिश कर दो । और उसक पिछम पाँवा म तब तब नान न ठुक्वाना जब तक कि बफ न पड़े या फिसलन न हो । तुम्हारी पत्नी नताल्या हमारे ही पास रह रही है और मजे मे है । तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए कुछ सूखी धरी ऊनी मौजा की एक जाड़ी और खान की कुछ चीजें भेज रही है । हम सब ठीक है । हाँ दारूया का बच्चा जाता रहा है । अभी उस तिन मँने और प्योत्र ने शोड पर धत डाली है । वह तुम्हें हुनम देता है कि घाड़े को क्लायन स रखना और उसकी पूरी देखभाल करना । गायन न बच्च द दिय हैं । बूटी घोड़ी का गायन बच्चा होगा । हमन उसक लिए जिले के अस्पताल स एक इन्तिमन भेगवाया था । हम तुम्हारी नौकरी के बारे म यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारे अफसर तुमसे खुश हैं । नौकरी ईमानदारी स करना । खार की मवा बजार नहीं जाएगी और नताल्या अय म्हा रहगी । तुम इस मामल म फिर ठडे तिल से सोचना । एक टुख की यात और है । लेंत म थोडे परल भेदिय न तीन भेडें मार डाली । टीक म रहना भगवान् की प्रायना करना । अपनी पत्नी को न भूलना । यह तुम्हारे लिए मरा हुनम है । वह बडी भली औरत है और तुम्हारी म्याहता बीबी है । बने-बनाव जानून-बायदे न तोडा अपने पिता की बात मानो ।

—मुम्हारा पापा सीनियर साजेंट पन्तेली मेलखोव ।
 प्रिगोरी की रेजीमेंट न रूस ग्रास्ट्रिया की सीमा से लगभग चार
 दस्त दूर रादजीविखोवो नामक एक छोटे-स गाँव म पढाव ढाल रखा था ।
 प्रिगोरी घर पर पत्र कम ही लिखता था पर जिस पत्र म उस नताल्या
 के पिता क यहाँ रहन का समाचार मिला जयाव उसन बड़ी माववानी से
 निया और पत्र पिता का लिया कि मेरी तरफ संनताल्या को स्नह कहना ।
 वह किसी तरह का कोर्न कौल न हारता और अपने सारे पत्र गाल-मोल
 ढग से लिखता । उन्ह बार-बार पत्रवान क लिए पन्तेली कभी प्योत्र को
 बुलाना तो कभी दूया को फिर वह गब्दा म छिपे हुए प्राणय को समझन
 क लिए गम्भीरता म सोचता रहता । ईस्टर से पहल जमन प्रिगोरी
 का चिट्ठी लिखी और पूछा कि तुम ठीक-ठीक बतलाओ कि तुम मेना स
 लौटने पर अपनी बीबी क साथ रहोग या पहल की तरह अकसीनिया के
 साथ ही रहते रहामे ?

प्रिगोरी ने पत्रांतर म विजम्ब सगाया । ट्रिनिटी रविवार क बाद
 कही उसका मक्षिप्त-सा पत्र प्राप्त हुआ । दूया गग्ने क अन्तिम प्रसो
 का खाती हुई जल्दी जल्दी पत्रन लगी । पन्तेली को जरूरी बात समझने
 म कठिनाई हुई क्योंकि उसम स्नह-प्यार के सन्सा और प्रसो के ढर
 सगे हुए थ । पत्र के अन्त म प्रिगोरी ने नताल्या की चर्चा की थी
 तुमन पूछा है कि मैं नताल्या क साथ रहूँगा कि नहीं पापा मैं
 कहता हूँ कि जो सार एक बार दूट जाता है वह फिर कभी जुड़ता नहीं ।
 और मैं नताल्या क साथ रहूँ भी कैसे सकता हूँ जब तुम्ह खद माखून है
 कि मर एक वच्ची है । ऐसी हालत मे मैं कोई वायण नहीं कर सकता
 क्योंकि इस बारे म बात करने स मुझे तनसीफ होती है कम एक
 यहूदी सामान चारी स सीमा के पार ले जा रहा था कि हम लोग न
 उम देख लिया । उसन बतनाया कि ग्रास्ट्रिया से लडाई जल्दी ही शुरू
 हो जाएगी । जार यह दखन सीमा पर आया है कि लडाई कहाँ से शुरू
 की जाए और कौन-सी जमीन वह अपने लिए हक्य स । लडाई शुरू हो
 गई तो मैं मोर्चे पर काम भी धा सकता हूँ । इसलिए इतन पहले स कहा
 भी क्या जा सकता है ।

नतास्या अपने सास-ससुर की सेवा करती रही। उसे अपने पति के वापस लौटने की आशा निरन्तर बनी रही। उसने प्रियारी को कभी कोई पत्र नहीं लिखा। लेकिन परिवार भर में पत्र का इन्तजार सबसे ज्यादा उसी को रहता था और पत्र के न आने पर सबसे अधिक दुःख भी उसी को हाता था।

गाँव में दिनभरी अपनी गति में चलती रही। जिन बड़बानों ने पीछी मेवा पूरी कर ली वे गाँव लौट आए। काम के दिनों में लोग व्यस्त रहते और समय बीतते दर न लगती। रविवार के दिन बहुत-से परिवार गाँवियों में लडकर गिरजाघर जाते। ऐसे अवसर पर बड़बान पुरुष पहनते छोटे कोट और पतलून और स्त्रियाँ पहनतीं लम्बे रंग-बिरंगे स्कर्ट। ये स्कर्ट मडक की धून सुंकारते चलते। उनके बसीदाकारी वाले ब्याजड़ों की बाँहें फूली रहतीं।

चौक में खाली गाँवियाँ कंधे पर हुवा में ऊँचे उठे रहते। छोटे हिन हिनाते रहते। घागवासी छानी की बगल में बलगरिया से आकर बस योग सम्बी कतार में बैठकर फूल-फल बेचते। उनके पीछे दल बनाकर बच्चों दौड़ते भागते और बड़े घमंड से बाजार में घूमने आजाद ऊँग को कुतूहल में देखते। हर जगह जाल धारीदार टोपियाँ पहने पुरुषा और घमंडील रुमास बाँधे स्त्रियाँ की भीड़ त्रिपसाई पडती।

गाम को पाँवा की पटपटाहट गानों की आवाज़ा और अर्कोरदीयन की धुन पर हान वाले मृत्या से सबके कराह उठती। बस काफी रात भीगन पर ही कहा जानकर गाँव में आस-पास शान्ति हाती।

नतास्या गामो के राम रंग के आयोजनों में कभी नहीं जाती। वह दून्या की मोधी-सानी बानियों को खुशी से सुनती रहती। दून्या के नाक-नकाश निवरने आ रहे थे और उगवा सौन्दर्य अपने ढंग से उभरता आ रहा था। वह जल्दी पत्र जान घाल सेव की तरह ही पकती जा रही थी। उस समय उसकी उमर बड़ी सहेलियाँ यह भूल ही गई कि यह तो अभी छोटी है। उन्होंने उस अपनी मण्डली में कर लिया। दून्या अपने पिता की ही मति मानने और तगड़ी थी। उगकी अवस्था अब पंद्रह की थी लेकिन उसकी मूरत में अब भी बचपन छलकता था। उसके

व्यक्तित्व में खिलती हुई जवाना और बचपन एक-दूसरे में घुल-मिल रह
 य । उनकी छोटी छातियाँ बड़ी हा गद्द और नाउज के बीच में अपना
 पता देने लगी थी । उनकी लम्बी काली छाँया में लाज और शतानी
 ध्रुव भी लहरें लती थी । ऐस में वह गाम का लौटती ता अपन गिल क
 राञ्च केवल नताल्या का बतलाती । कभी नहती नताल्या एक बान
 कहनी है

अच्छा कहा ।

बन गाँव के खनिहाम की बगल वाल ठूठ पर मीणा काशवाई
 सागी गाम मेरे साथ बठा रहा ।

ता चेहरे पर लाली क्यों दौड़ रही है ?

नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं ।

मीणा दम्बा जरा मारा चहरा अगार-जसा भभक उठा है ।

दून्या अपन जलन हुए गाला पर अपनी साँवनी हयेनियाँ रगड़ती
 बतपटिया पर अगुला जमाती और भोनेपन मे हस पडता 'वह कहन
 लगा कि तुम एमी हा जस कोई छाटा-सा नीला-सा फूल ।

भाग । उनकी खुगी से खिलत हुए नताल्या उसका गिल बगती
 और पाँवा ठल रौंग गई अपनी हमी-खुगी को मूल बठती ।

मैं बानी 'मीणा मूठ न बाल । इन पर उसन कमन खाकर
 कहा'

दूया की हमी से मारा कमरा गुंज उठता । उमका सिर हिलता
 और उसकी कानी-लम्बी शर्टें छितकनियो की तरह कथा और पीठ पर
 सरक धाँगी ।

और क्या कहा उसन ?

'वह बाला कि यागार क निण मुझे अपना कमाल द दा ।

तुमन द दिया ?

नहा । मैंन वहा मैं नहीं दूगी । अपनी औरत स जाकर माँग ।
 लोग न उसको यरोन्धेयव के लठके की बड़ क साथ गया है । वह औरत
 खराब है । लाग क पीछे दौड़ती-फिरती है ।

तुम उसस बचकर रहना ।

घाखिन यहाँ भरता क्या है ? सबक दिल ही ता दहलते ह न ! यह बदमाग हमारे लिए प्राप्त बुना रहा है । लडाईं छिड़ जाएगी तो सरकार के लाग मुझे घसीटकर ले जाएँगे । फिर इस मन की फिर कौन करेगा ? उसन सात हुए बन्वा की धार हाथ दिखाकर कहा ।

सा चरागाह की पहनी घास कटाई की राह दम रही थी । दान पार का घास घटिया किस्म की थी । उसम न ता गंध थी और न हरियाली । धरती वही थी लेकिन घास न रंग-रूप म अन्तर था । चरागाह की काली मिट्टी इतनी सख्त और भारी थी कि पशुमा के चलने फिरने स उस पर कोई निगान न बनत थे । वहाँ की घास पाथी और महकदार थी । किन्तु दान के किनारे की मिट्टी तर और सटी हुई थी जिसकी ओर पशु मुह भी न उठाते थे ।

घास की कटाई शुरू ही होने वाली थी कि एक ऐसी घटना घटी जिसन मारे गाँव का एक सिरे स दूमरे तक हिलानेर रख दिया । जिला नमिसार गाँव म घाया । उसके साथ घाया एक इन्स्पेक्टर और दूमरा नकली दाँता वाला साँवला-सा अफ़मर । उसकी बर्दी उस गाँव वाला क लिए बिलकुल नई थी । उट्टनि अतामान का बुलाया गवाह इकट्ठे किए और फिर ऐँची-तानी घाँसो वाली सूकन्का के घर की ओर खाना हुए । व सडक न किनारे किनारे घूष म चले और गाँव का अतामान एक छोटे मुँगे की तरह भाग-भागे गौटा । इन्स्पेक्टर न धूलभरे जूते पटकते हुए पूछा स्तॉकमन पर पर है ?

जी हुनूर है ।

‘वह अपनी रोजी रोटी कस घलाता है ?

हाथ का कारीगर है वह ।

तुम्हें उसके बारे म कोई सन्देह तो नही ?

जी नही बिलकुल नही ।

पुलिस अफ़मर न टोप हाथ में लेकर जमत-चलते नाक के सिरे पर एक मुहामा फोटा । वह मोटी वर्ण न कारण हाँक रहा था । छोटे अफ़मर ने एक निनक व सहारे अपना काला दाँत और सात फ़ेम का चन्मा उतारा ।

उसके पास नाग-बाग आत-जाते ? इन्स्पेक्टर ने प्रतापमान का पीछे खींचत हुए पूछा ।

‘जी हाँ जब-तब तांग खेलन के लिए लाग पहुँच जाते हैं ।

कौन-कौन जाता है वहाँ ?

मिल-मजदूर जाते हैं ।

आखिर कौन-कौन ?

इजीनियर तार करत बाबा, रोम करत वाला एकाध दाकिये कभी-कभी हमारे कज्जाक भी चले जाते हैं वहाँ ।

इन्स्पेक्टर रुक-रुककर प्रतापमान की प्रतीक्षा करत नगा क्याकि वह पीछे रह गया था । उसने उससे कुछ बानचीत की अगुनिया से अपने छोटे कोट के बटन का गेंठा और प्रतापमान को बुलाया । प्रतापमान हाँफता हुआ दौड़ा आया ।

दो मिपाहिया को ले जाभा और जिनके नाम अभी तुमने गिनाए हैं उन सभी को गिरफ्तार कर लाओ । वही अपने दफ्तर में ले आना । हम लोग अभी पहुँचते हैं दो मिनट में समझे ।

प्रतापमान सीधा हुआ और आना-पानन के लिए लौटकर चल गया ।

स्टॉकमन की वास्तव के बटन खुल हुए थे । दरवाजे की ओर पीठ किये बठा वह सक्ड़ी पर बने एक नमूने को रेत रहा था । लोना के अन्दर आने पर वह घूमा और उसने अपने हाठ भीके ।

मेहरबानी करने चलिए भाग गिरफ्तार किए जाते हैं ।

आखिर किसलिए ?

आपके पास दो कमरे हैं ?

हाँ ।

‘हम उनकी तलाशी लेंगे ।

अधिकारी ने मज के पास जाकर सामने खी पुस्तक उठा ली । उसका माप पर बल पढ़ गए । बोना ‘मुझे उस बक्स की ताली दो ।

‘यह दौड़ आखिर क्यों ?

य सब बातें चान म हागी ।

स्तावमन की पत्नी ने दूमरे कमरे से भाँककर देखा और पुलिस को दस पीछे हट गई। इन्स्पेक्टर अपने दीवान के साथ अन्दर आया।

यह क्या है ? पीली जिल्दवाली किताब हाथ में उठाकर अफसर ने घीरे से पूछा।

किताब है कच्चा भटकत हुए स्तावमन बोला।

मजाब फिर कर लेना। सबान का जबाब कायल से दो।

स्तावमन न मुसकराते हुए स्टाव से अपनी पीठ सटाई। कमिसार न अधिकारी के पीछे स झुककर पुस्तक पर नजर डाला और मुड़कर बोना क्या आप इसका अध्ययन करत हैं ?

मेरी इस विषय में दिलचस्पी है। स्तावमन ने दाढ़ी के बाला के बीच कधी दौहाते हुए स्टाव से कहा।

ठीक।

अफसर ने पन्ने उलट-पलटकर किताब मेज पर पटक दी। दूसरी पुस्तक उठाई और वह भी एक तरफ रख दी। तीसरी का नाम पढा तो स्तावमन की घोर फिर घूमा और बोला ऐसा घोर साहित्य कहाँ रखा हुआ है आपने ?

स्तावमन ने अपनी एक शॉल या सिकोटी जैसे कि निगाना साथ रखा हा। जबाब दिया मेरे पास जो कुछ है आपने सामन है।

गुम मूठ बासत हा। किताब हाथ में लेकर निगाने हुए अफसर ने घुड़वा में घाटता हू कि कमरा की तलाशी ली जाए।

अपनी बटार की मूठ पर हाथ रखे कमिसार सबसे के पास पहुँचा। वहाँ चेपक क दागा वाला कज्जान चौकीदार इस परिस्थिति से भयभीत होकर कपडा घोर दूसरी चीजा का उलटने पलटने लगा।

मैं अनुरोध करता हूँ कि मेरे साथ ब्रायदे का व्यवहार किया जाए। स्तावमन ने जस-तम कहा घोर अपनी निगाह अफसर की नाक के सिरे पर गढा दी।

गान्त रहो समने।

फिर बकगॉप की भी तलाशी ली गई। इन्स्पेक्टर न अपनी घगुलिया की पोरा स दीघारा तक को बजाकर दखा।

तलाशी के बाद व लोग स्टाकमन का प्रशासन-कार्यालय में ल
 चन। स्टाकमन बीच सड़क में चल रहा था। उसका एक हाथ पुराने
 कोट की बट्टि में खासा हुआ था ता दूसरा यो हिलता जा रहा था जस
 कि वह कीचड़ भगा रहा हो। दूसर लाग दीवारा के सहारे-सहारे धूप
 में चल रहे थे।

वहाँ सारे बंदिया व बाद स्टाकमन की पारी घाई। ईवान
 प्रलम्बएविचक हाथो म अभी भी तेल पुता हुआ था। दाविद अपराधिया
 की भाँति मुसकरा रहा था। नय के कंधो पर जकट पठी हुई थी। मीशा
 काशवोई स सवाल जवाब हा चुक थ। य सभी लोग पीछे क नमरे म एक
 साय बन्ध घ घोर वहाँ कज्जाका का पठरा था।

अपने पोल्पोलिया को टटोरते हुए इन्स्पेक्टर न स्टाकमन से पूछा
 जब मैं मिल के कलन क मामले म तुम्हारी जाँच की थी तब तुमन यह
 बात क्यों छिपाई थी कि तुम हमी सोशल डेमोक्रेटिक लबर-पार्टी क
 सदस्य हा ?

पर स्टाकमन चुपचाप पूछतवाने क सिर क ऊपर नजर गढाय
 रहा।

इतना तो साबित हो ही चुका है। इस काम के लिए तुम्हें भरपूर
 इनाम मिलगा। बन्नी की चुप्पी म तग घाकर इन्स्पेक्टर ने चीखकर
 कहा।

कृपा कर अपनी जाँच धारम्भ करें। स्टाकमन थक स्वर म
 बोना घोर एक स्टून दबकर उसने उस पर बठन की अनुमति माँगी।
 इन्स्पेक्टर न कोई जवाब नहा लिया सकिन स्टाकमन को स्टूल पर
 ठने दण वह प्रोपित हो उठा तुम यहाँ बब भाय ?

पार साल।

अपनी मस्या क घातेन पर ?

बिना किसी घातेन क।

तुम इस मस्या क सदस्य कितन दिना म हा ?

घाप किस मस्या की बात कर रहे हैं ?

मैं पूछता हूँ कि तुम हमी सोशल डेमोक्रेटिक लबर-पार्टी क

स्ताँकमन की पत्नी न दूसरे कमरे से भाँककर लेखा और पुलिस को दल पीछे हट गई। इन्स्पेक्टर अपने दीवान के साथ अन्दर आया।

यह क्या है ? पीली झिल्लवानी किताब हाथ में उठाकर अफसर ने धीरे से पूछा।

किताब है कच्चा मटकते हुए स्ताँकमन योला।

मजान फिर कर सना। मवान का जवाब कायदे से दो।

स्ताँकमन ने मुसकराते हुए स्टोव से अपनी पीठ सटाई। कमिसार ने अधिवारी के पीछे से मुककर पुस्तक पर नजर डाली और मुठकर बोला क्या आप इसका अध्ययन करते हैं ?

मेरी इस विषय में दिलचस्पी है। स्ताँकमन ने दाढ़ी के बाना के बीच कधी दौड़ाते हुए खवाई से कहा।

ठीक।

अफसर ने पल्ल उलट-पलटकर किताब मेज पर पटक दी। दूसरी पुस्तक उठाई और वह भी एक तरफ रख दी। तीसरी का नाम पढ़ा तो स्ताँकमन की ओर फिर घूमा और बोला ऐसा और साहित्य कहाँ रखा हुआ है आपने ?

स्ताँकमन ने अपनी एक झाल या सिकोड़ी उसे कि निगाना साथ रहा हा। जवाब दिया मेरे पास जो कुछ है आपके सामने है।

तुम झूठ बोलत हा। किताब हाथ में लेकर त्रिभुजाते हुए अफसर ने पुडका में चाहता हू कि कमरा की तलाशी ली जाए।

अपनी बटार की मूठ पर हाथ रखे कमिसार सबसे बंध पास पहुँचा। वहाँ बचक के दागा बामा बज्जार चौकीदार इस परिस्थिति से मयभीत होकर कपडा और दूसरी चीजा को उलटने पनटने लगा।

मैं अनुरोध करता हूँ कि मेरे साथ कायदे का व्यवहार किया जाए। स्ताँकमन ने जस-तने कहा और अपनी निगाह अफसर की नाक के निरे पर गडा दा।

गान्त रहो समझे !

फिर बकगॉप की भी तलाशी ली गई। इन्स्पेक्टर ने अपनी अनुलियों की पोरों से दीपारा तब को बजाकर दला।

तलागी क बाट क लाग स्टाकमन का प्रशासन-खापालय म ल चल । स्टाकमन बीच महक म चल रहा था । उमका एक हाथ पुरान काट का बाँह में गामा हुआ था ता धूमरा या हिनता जा रहा था जस कि वह कीचड़ भाड रहा हा । दूसर लाग दीवारा क महारे-सहार धूप में चल रहे थे ।

वहाँ मार बन्दिया के बाट स्टाकमन की पारी घाई । ईवान अलेक्जिण्डर क हाथा म धमी भी तल पुता हुआ था । तकि अणगाधिया की भाँति मृनकरा रहा था । नव के कथा पर जकट पड़ी हुई थी । मागा कागेवाइ म मवाल-जवाव हा चुक थ । य सभी लोग पाछे के कमर म एक साथ बन्द थ और वहाँ कज्जाकों का पहग था ।

अपन पाटफोनिया को टटानन हुए इन्स्पक्टर न म्वाकमन स पूछा जब मैंने मिन के कुल क मामल म तुम्हारी जाँच की थी तब तुमन यह बात क्या दियाह थी कि तुम म्मी मागन डेमोक्रेटिक तबर-मार्गी के मन्म्य हा ?

पर स्टाकमन चुपचाप पूछनवाल क मिर क ऊपर नजर गढाय रहा ।

इतना तो माकित हो ही चुका है । इम काम के लिए तुम्हें भरपूर इनाम मिलगा । बन्पी की चुप्पी म तग भाकर इन्स्पक्टर न चीखकर कहा ।

हुया कर अपनी जाँच धारम्भ करें । म्वाकमन थक स्वर म वाला और एक नून देखकर उमन उम पर बठन का धनुमति माँगी । इन्स्पक्टर न का जवाव नहा लिया तकिन स्टाकमन का म्दम पर बैठन तब वह प्राधिन हो उठा तुम यहाँ कब भाय ?

'पार ताल ।

'अपना नम्या क आत्मा पर ?

बिना किमा आत्मा क ।

तुम इम मम्या क मन्म्य कितन तिनो म हा ?

भास तिम मम्या की बात कर रहे हैं ?

मैं पूछता हू कि तुम म्मी मागन डेमोक्रेटिक तबर-मार्गी क

सदस्य कब स हा ?

मेरा विचार है कि

मुझे इससे मतलब नहीं कि तुम्हारा विचार क्या है समझे । सबाल का जवाब दा । नकार जाने से कोई फायदा नहीं हांगा' उलटे जान खतर म ही पड़ेगी । इन्स्पक्टर ने फाइन से एक कागज निकाला और उसको मेज़ पर पिन कर दिया— मेरे पास रास्ताब की सूचना है कि जिस सस्था का मैंने नाम लिया है तुम उसका सदस्य हा ।

स्टॉकमन ने कागज पर नज़र डाली धण भर दन्वता रहा फिर अपने घुटन पर हाथ फरत हुए दृढता से बोला सन् १९०७ से ।

ठीक ! और तुम इस बात से इन्कार करते हा कि तुम्हारी सस्था ने तुम्हें यहाँ भेजा है ?

जी ।

फिर तुम यहाँ प्राय क्या ?

यहाँ मिस्त्रिया की बमी बतार्ई गई थी ।

लेकिन तुमने इसी जिल को क्या चुना ?

कारण बता चुना हूँ ।

अब या इससे पहले इस सस्था से तुम्हारा कोई सम्बन्ध रहा है ?

नहीं ।

क्या मन्था के लागे को इस बात का पता है कि तुम यहाँ रहे हा ?

हो सकता है ।

इन्स्पक्टर ने कलम धनान के घातू से अपनी पेंसिल की नाक तेज की और हाठ मिबाडकर बोला क्या सस्था क किसी सदस्य से तुम्हारा पत्र-अपबहार चलता है ?

नहीं ।

तब वह पत्र कहाँ से प्राया जा तलागी क सिलमिले म तुम्हारे पास प्राया गया है ?

वह पत्र मेरे एक मित्र का है । उसका किसी वान्तिवारी सस्था से किसी तरह का काई भी सम्बन्ध नहीं है ।

रोस्ताव स तुम्हारे नाम कोई आदेश भाया है ?

नहीं ।

'तो य मिल मजदूर तुम्हारे यहाँ क्यों जमा होते रहे हैं ?

स्टॉकमन ने कंधे झटके जैसे कि इस बेवकूफी के सवाल पर उसे अचरज हो रहा हो ।

लाग जाड़े के दिनों में शाम की अपना समय काटने के लिए मेरे यहाँ चले आते थे । हम लोग ताश खेला करते

और जल्द-जिताबेँ पढा करते थे । इन्स्पक्टर ने अपनी घोर से जोड़ा ।

नहीं य सब-के-सब लगभग अपढ़ हैं ।

'इस पर भी मिल का इंजीनियर या कोई और इस बात से इन्कार नहीं करता ।

'यह झूठ है !

मुझे लगता है कि तुम्हें इस बात की इतनी-सी भी जानकारी नहीं है यह सुनकर स्टॉकमन मुसकराया तो इन्स्पक्टर झूल गया कि यह कह क्या रहा था । उनमें अपनी बात समाप्त की तुममें अक्ल की विलकुल कमी है । तुम चीजों से जिस तरह इन्कार करते हो उससे तुम्हारा अपना नुकसान होगा । साफ़ है कि तुम अपनी सस्था के आदेश पर यहाँ आये श्री और तरह-तरह की हरकतों से कज्जावा को सरकार के खिलाफ भड़का रहे हो । मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम क्या कर रहे हो ! इससे तुम्हारा जुम कम नहीं होता

य सब आपकी अपनी घटकलबाजियाँ हैं सिगरेट पी लूँ ? धन्यवाद और इन घटकलबाजिया का कोई आधार नहीं है ।

क्या तुमने अपने यहाँ आनवाले मजदूरों को यह पुस्तक पढ़कर सुनाई थी ? इन्स्पक्टर ने एक छोटी-सी पुस्तक का नाम का हाथ से ठककर उसमें पूछा । हाथ से ऊपर प्लेखानोव नाम नज़र आ रहा था ।

हमन कविता पढ़ी । स्टॉकमन ने सिगरेट से क्या करते हुए हठी के सिगरेट-होल्डर को अगुनिया से और बसकर पकड़ा ।

अगले दिन सुबह स्टॉकमन को डाक-पोड़ागाड़ी में चढाने गाँव से

बाहर ले जाया गया। वह पिछली सीट पर बठा ऊब रहा था घोर उसकी दाबा कोण क कालर के नीचे दबो हुई थी। उसकी भगन-बगल नगी तलवारों लिय बज्जाक बठे थ। उनम स एक क बान घुघरात थ घोर चेहर पर चक्क क दाग थे गिमने कि तलागी ली थी। उसन घपनी टेकी गदी अगुनियो से स्ताकमन की कुहनी पकड रखी थी। वह उसगी घोर कभी-कभी भय स भरी तिरछी हृष्टि डाल लेता था। धाङ्गागाडी सडक पर सटर-सटर फरती चली जा रही थी। एक ठिगनी घोरत गाल मोडे मेलेखाक के फाम क पास चहारदीवारी से टिकी उमकी प्रतीक्षा मे लडी थी।

धोडागाडी भाने निकल गई अपने बख स हाथ सटाण वह घोरत उसक पीछे दौडी।

घोसिप ! घोसिप दाकिन्किच ! हाथ भ्रव मे क्या करू गी !

स्तोकमन ने उमको देखकर हाथ हिलाना धाङ्गा लेकिन चेचक क मुहवाल बज्जाक ने उधनकर उसकी बाँह फाम ली घोर मोटी जगली घावाज म पीला बठ जा नहीसो भनी तेरे टुकडे-टुकडे कर डालूगा !

बज्जाक न अपनी सीधो-सागी चिन्गी म यन् पहना भान्मी देला था जिसन कि स्वय जार क खिलाफ कर्म उगान की हिम्मत की थी।

२

मान्गोवा से राजीविलावा नामक छोटे बस्ये को जानवाली घुन्म से भूरी लम्बी सडक पीछे छूट गई थी। प्रिगारी ने सडक बाच-बीच म यान बरली चाही लेकिन हनक डग स यान घाड उस कवल स्टेशन की इमारतें हिससे पनफाम क नीचे रेलगाडी क गडगडाने हुए पहिले धाडा घोर मुरगी पास की गथ उनके नीचे बिछी रज की पटरिया क घनन्त सार इजिन म उमडता घुघ्रा घोर दोरोनेज या कीथव क स्टेगन पर मिलने धान दाडीबान हथियारबन् फौजी का चहरा।

दिम स्टेगन पर य साग उनरे वहाँ अधिबारिया घोर सफाचन् भूँडा बाल लोगो की भौड थी। गमी ने भूरे रग क घोघरबोट पन्न रने थे। बाते गमी वाली म कर रहे थ जो प्रिगारी की ममक स बाहर थी।

घाडा क उतारन म बहुत समय लगा लकिन जब यह काम हो गया तो महायज्ञ कमाडर तीन सौ या तीन सौ स ज्योत्स कज्जाको का घाडा घस्पताल म ले गया । यहाँ काफी दर तक धोखा की परीक्षा की गई । फिर घाडे प्ला म बटि गए ।

पहला प्ल बना हलके भूरे घाडा का दूसरा तबि क रंग या पिलछरे घाडा का तीसरा गहर भूर घाडा का चौथा सीधे-सादे भूरे और सुनहर घाडों का पाँचवाँ वाग्मी घाडा का और छटा काल रंग क घोडा का । ग्रिगारी का घाडा चौथे दल म पठा ।

घाडों के दल मार्जेट जनरल की कमान म लिये गये । वह उन्हें पाम पडाम क गाँवा और जागीरा म स्थित स्कडरना म ल चला । लम्बी फौजी सेवा क प्रतीक-स तमाम वज लगाए वह ग्रिगोरी की बगल से गुडरा और बोला किस इलाके के हा तुम ?

व्यशन्स्वापा का ।

'तुम्हारी दुम म बाल हैं कि नहीं ?

बाकी इनाका के कज्जाक पठाकर हँस पडे । ग्रिगारी अपमान पा गया और चुप रहा ।

ग्रिगारी का दल जिम सडक पर बटा वह चौड़ी और पक्की थी । दान के घाडा को गमी मडक स पहल कमी वाग्मी न पडा था । सो पहल तो व काना को खडा किये हीसत हुए बडी सावधानी म यों थले जैसे कि हमवार बफ पर क्लम एक रहे हा लकिन धाडी दर वाग ही रास्ता उनकी समझ म था गया और उनक नागर कुर मडक पर पटापट बजन गग । पोलड की उम अपरिचित मडक के पाएँ-बाएँ जहाँ-तहाँ जगला क टुकड़े छिटके पडे थे ।

यह कौन-सा गाँव है चाचा ? एक कज्जाक ने बाग के पडा क नग मिर भ्रमकर मार्जेट मेजर म पूछा ।

कौन-सा गाँव है ? अब अपन कज्जाक-गाँवा की बान भूल जाया— यह काई दान प्रथा थोडे ही है ?

'ता यह क्या है चाचा ?

मैं तुम्हारा चाचा हूँ ? क्या गानगर भतीजा मिला है मुझे । साहब

जाने यह राजकुमारी उरमावा की जागीर है। हमारी चौथी कम्पनी का हेडक्वार्टर यही है।

रादजीविलोवो स्टेशन स काई चार बस्ट दूर था और मजिल प्राधे घंटे म ही तय हो गई। अपने घाड़े की गन्त यथपाते हुए प्रिगोरी ने मानदार मुमजिले मकान मकड़ी की चहारनीवारी और नर्क तरह की बनावट की फाम का इमारतो पर नजर दासी। किन्तु जब ये बगीच क नगे पेडा की बगल से गुजरे तो व उसी भाषा म बोल जिम भाषा म दूर दोन प्रणै के नगे पेठ दोनत हैं।

घर बरदाका की ज्दिन्दगिया म एक नया और मुजिल दौर आया। उनके दिमाग श्लोखले पढने लगे। काम न होने के कारण जवाना की घर की याद सताने सगी और अपना छाली बस्त ब गणप म उढाने लगे। प्रिगोरी का दल मकान की टाइलवाली बड़ी छतवाले हिस्से मे ठहरा था। व लोग खिडकिया के नीचे फूम मे बिछावन पर सोने थे। खिडकिया म चिपका हुआ भागज रात के समय हवा स एमे बजता था जैसे दूर के शहरिये का सीगा। ज्योही वह उस भावाज की मुनता उसकी उत्कट इच्छा हानी कि वह उठे अस्तबल मे जाए घोडे पर जीन बसे और फिर तब तक घोडा दौडाता रहे दौडाता रहे जब तक कि धरन पहुँच जाए।

पाँच बज मुदह विगुप्त बजता तो सबसे पहने घोडे की साफ और खरहरा बरना पड़ता। घोडे के चार-दाने के आधे घंटे म उन्हें आसत म गणप का मौका मिलता।

जिन्गी है कि नरक है मही।

मुभम तो चलन से रहा।

और यह मारुट भजर बसा मूअर है। वह हमन घोडा के शुरु तक घुमवाता है।

घर पर ता आब पनपब बन रही हागी—भाज याव-मगल है।

कन गन मैन एव गपना दवा मैन देवा कि मैं अपने पिता के साथ पास की बटाव कर रहा हूँ और गौब के लोग आम-याम या जमा हैं जम गनिगन म डेडी के फूम। गाय के बछड़े-जसी भाँया वान प्रोखार

जिकोव ने कहा और हम घास काटते रहे काटते रहे जो खुग हो गया ।

शत बदकर कह सकता हूँ कि मेरी औरत मेरी याद कर रही होगी कह रही होगी— पता नहीं निकोलाई क्या कर रहा होगा इस वक्त ।

हा हा तुम्हारे बाप से कही ताद न मडा रही हो वह ।

मैं कहता हूँ कि दुनिया में शायद ही कोई ऐसी औरत हो जो अपने पति के न रहने पर किसी दूसरे आदमी की आज्ञाकारी न करे,

धरे इसकी भी क्या फिक्र करना औरत कोई दूध का घड़ा तो होती नहीं बापस जाने पर भी कुछ-न-कुछ मजा तो बचा ही रहेगा हमारे लिये ।

यंगोर भारकोव उनमें सबसे ज्यादा खुशामिजाज और माथ ही-साथ फूहड़ आदमी था । आदर उसके मन में किसी के लिए न था । गम या लिहाज तो इससे भी कम थी । वह भाँखें भारत और मुसकराते हुए बीच में टपक पडा खर यह तो तय ही समझो तुम्हारा बाप तुम्हारी बीबी को छोड़ेगा नहीं मैं तुम सबको एक कहानी सुनाता हूँ । उसकी भाँखें धमकन लगी—

एक बूढ़े की भाँखों में लडके की बहू गडी तो भय हालत यह कि वह उस साँस ही न लेने में मगर बेटा कि हर धार आड़े आ जाए । तो जानत हो क्या किया बूढ़े ने ? एक दिन वह हाते में गया और उसने फाटक खोल दिया । फाटक खाल दिया तो सार जानवर बाहर निकल गए । जानवर निकल गए तो वह बटे से बोला यह क्या किया तुमने ?

तुमसे फाटक भी बंद नहीं करते बना ! दलान न मारे और बाहर निकल गए जाया हैकर धरने लाभा ! बूढ़े ने सोचा कि उधर लडका गया और इधर उसे मौका मिला । मगर बना कि एक काहिल । बीबी सवाना जा तू हाँक ना । मो बेचारी औरत गई । उमका समुर आहट लेता रहा और उमन वान समझी नहीं । वह धीरे से पलंग से नीचे उतरा और हाथ और परा के बल पनोड़ की धारपाई तक पहुँचा । बटे ने हम बीच एक मोटी-सी चीज उठा ली थी । फिर तो बाप

न जसे ही उम पर हथेली रखी उसन बाप की खापटो पर भरपूर हाथ जमाया । चाखा भाग जा यहाँ से । कम्यल म दाँद न लगे' मौत से जाए तुम्हे ।

बात यह हुई कि घर म एक बछड़ा था और बछड़े का चीड़ चवाने की आदत थी । असलिय बेटा ऐसा बना जैसे कि उमने बछड़े को मारा हा । बूढ़ा जमे-तस अपन पलग पर जा सेटा । लडके म बाबा किमे माग घनी तुमन ?

बछड़े का

तुम पर के अच्छे मालिक बनाग मारोग जानवर को सिर फटेगा इमान का ।

तुम झूठा के सरदार हा ।

क्या बाजार लगा रखा है तुम लोगन । सहसा ही सार्जेंट मेजर न बनी आने हुए बहा । बरबाक हसत हंसते एक-दूसरे को देखत अपने घोडा की ओर बढ ।

परे के समय अफसर निगरेट पीते किनार लडे रहत । कभी-कभी ही बीच म बोलते । एस म प्रिगोरी का दृष्टि घमकील कायने सबद हुए वालों वाल भूरे रंग क मुन्टर लवाना और बिलकुल फिट कपडा म कस अधिकाऱियो पर पडी । उमन अपने भावस बहा मरे और इनक बीच एक एमी दीवान है जिस पार नहा किया जा सकता । इनकी जिन्गी बिलकुल घनग है । आराम म बोलती है । मारा हिमाव ठीक है । इन्ह न गने धूल की फिक्र है न पिम्मुधा की और न सार्जेंट-मेजर क घुसा का ।

राजोविलोवा पहुँचन के तीसरे दिन जा घटना घनी उसका प्रिगारी पर तो पडा ही मभी जवान कज्जाका पर बडा श्री घुरा अक्षर पडा । वे घुङ्गवारी का अम्मास कर रू दे कि प्रोथोर जिबोव के घाडे न पास स निकलत समय सार्जेंट मेजर क घोड़े का सात मार दी । सात जोर की नही पड़ी और घोड़े की मिर्क बाइ टाँग क घुन्त म मामूनी-मी सराब घा गई । लजिन सार्जेंट-मेजर न प्रोथार जिबोव क मुह पर बाबुब मारा और ठीक सामन आकर चीन्हा मूषर के अच्छे लेगता नही कि तू जा कियर रहा है ? दस सुगा तुम्हे अगत तीन दिन तू झपूरी पर

रहगा ।

सयागवण कम्पनी-कम्पाण्डर भा बहा खडा था । पर अपनी तलवार की मूठ पर हाथ फेरत हुए उसन पीठ फेर ली और जब स भगडाइ लने लगा । प्रोन्वार क हाठ काँप उठे और उसन अपन सूज हुए गाल पर बहती हुई खून की धार पाछी । प्रिगोनी न घाड पर स भफमरा पर नजर डाली । वे मद धा दाता म मगन रहे जत कि कुछ हुआ ही न हा ।

पाँचवें दिन प्रिगारी क हाथ स झूटकर एक वाल्टा कुए मजा गिरी । इस पर साजेंट-मेजर वाज की तरह उम पर टूट पडा और घूमा जमान का बडा ।

मुझे हाथ न लगाइय । नीचे कलकल करत पानाकी धार देखकर प्रिगारी न धीरे स बहा ।

मुनना है बे पानी म कृण औरवाल्गी निकालकर ला । दोगना कहीं का ।

मैं वाल्टी निकाल नाऊगा पर मरे बदनको भगुली स भी छुडयगा नही । प्रिगारा न मिर मुनाय-ही मुनाय कहा ।

भगर याडे-म कज्जाक भा कुए क पाम हात ता भफमर प्रिगारी को बिना मार छाडता नना । पर थ साग अपन घोडे क साथ चहार दावारी क पाम थ और उनक कानों तक बातें पहुँच न रहा थीं ।

यानी साजेंट-मेजर पीछे मुटकर कज्जारा की धार देखत हुए प्रिगारी की तरफ बडा । वह काध स पगला उठा । उसकी आँखा म भाग धधकन लगी । गरजा— क्या समझता है तू अपन को । अपन भफमर स बात किन तरह बगता है ?

‘बहार की मुनीबत मान न ला मय्यान यगाराव ।

धमका रहा है तू मुझे ! मैं’

देखिय प्रिगारी न सिंग ऊचा करत हुए कहा भगर आपन मुक पर हाथ उठाया ता मैं आपको जान स मार डालूगा । समझे न ?

साजेंट-मेजर का काप-मछली का-मा बडा मुह आन्धय मे फल गया और उमम काइ जवाब देने न बना । प्रिगारी का चहरा भयानक

हो गया था। मैजेंट-मेजर व छक्के छूट गए। वह वहाँ से घागे चढ़ा तो कीचड़ में फिसल गया। पर कुछ दूर जाने पर मुड़ा और मुट्ठी दिखात हुए बाना 'स्वयंभूत-वमाण्डर से तुम्हारी निवायत शर्कूंगा न की निवायत तत्र कहना।

पर जाने क्या उसने निवायत की नहीं। लेकिन पन्द्रह दिन तक बराबर शिगोरी के काम में थोड़े-न कोर्न एवं निबालता और पारी बेपारी उस मन्तरी की ड्यूटी देना रहा।

इस अजीब नोर्म जीवन ने मुक्क बज्जाको को बंजान कर दिया। मूरज हूवने तत्र व ड्रिउ या घुड़सवारी का प्रम्यास करत। शाम को घोडा को खरहरा करत और उह दाना चारा खिलात। हम बजे रात को उनकी हाडिरी होती। पन्तर सनात किये जाने और फिर उन्हें प्रार्थना व लिए बुनाया जाता। प्राथना में अपने सम्मुख खड़े हुए सनिका की धोर मुह कर एक मैजेंट-मेजर ईश्वर की बन्दना गाता।

मुक्क से फिर वही क्रम शुरू हो जाता और दिन-पर दिन मटर के गन की तरह मुक्कत चल जात।

पूरी आमीर में धीरतें वहाँ सिफ़ शो थी—बारिन्दे की बूडी बीबी और उसकी जवान और खूबसूरत नौकरानी पालक की फाया। फाया अकसर घर में आगकर बावर्चीबाने में पहुँच जाती। वहाँ का मालिक था बिना भौहावाला बूडा फीजी बावर्ची। सो परड के मदान में ड्रिल करतें जवान उस दक्ते सो धातें मारत और लम्बी-लम्बी साँगे लेते। उगक भूरे स्वर की हर हरकल हसरत में देखत। लडकी बज्जाको और अफसर की निगाह पहचानता। उनकी कामुकता में रम लती जाने जान ममम बूल्ह मटका-मटकाकर लयनवानी तीन सौ धाया में वास्तव उडेलनी और हर ड्रूप का लैवरर अपन दग में मुमररानी। अफसर पर सो मुमबान वरगा लैनी। वम तो सभी उमका ध्यान अपनी धोर गानना चान्न पर अफवाह उठी कि गफयता सिफ़ स्वयंभूत-वमाण्डर की मिली।

धमन के आरम्भ में एक दिन शिगोरी की ड्यूटी अन्तवत में गयी। वह प्राय एक ही तरह रमा रहा। वहाँ अफसरों के छोड़े एक पोडी

की उपस्थिति के कारण पगला रहे थे। इस तरह चक्कनी करता हुआ वह कमाण्डर के घोड़ेवाली कोठरी से भाग निकला कि उसे लड़ाई भण्डे और गोन की आवाज सुनाई दी। आवाज अस्तबल के अंधेरे कोन से आ रही थी। प्रिगोरी अचम्भे में पड़ा और तेजी से उस ओर बढ़ा। किसी ने अस्तबल का दरवाजा मटाक से बन्द किया कि उमकी घोड़ा के सामने अंधेरा छा गया। उसने दबी हुई आवाज में किसी को चिल्लाते हुए सुना जल्दी लड़की जल्दी।

प्रिगोरी ने कदम तेज कर पुकारा कौन है वहाँ ?

इसी समय उसकी टक्कर एक कम्पनी-साजेंट से हो गई। साजेंट दरवाजा टटोल रहा था। तुम हो भेलेन्वोव ? प्रिगोरी ने कंधे पर हाथ रखकर साजेंट ने धीमे स्वर में कहा।

कविये ! बात क्या है ? प्रिगोरी ने पूछा।

अपराधियों की भाँति साजेंट हलक से हँसा और प्रिगोरी की आंखों पर हाथ रखते हुए बोला हम लोग अरे तो तुम कहाँ जा रहे हो ? प्रिगोरी ने बाँह छुटाते हुए दौड़कर दरवाजा खोल दिया। हाते के उस वीराने में एक मुर्गी भड़ा देने के लिये लीन खान रही थी। उसे क्या पता कि कारिन्ने के शोरबे के लिए वावर्ची उस हलाल करने के मन्मूबे बाँध रहा है।

दूसरी ओर रोगनी के कारण प्रिगोरी कुछ देख नहीं सका। उसने आँवा पर हथेली का साया किया और बढ़ते हुए कोलात्सकोसुन अस्तबल के अंधेरे काने की तरफ मुड़ा। उसने भारकोव का अपनी पल्लू के बदन लगाते देखा।

क्या बात है तुम क्या कर रहे हो वहाँ ?

'जल्दी करो !' भारकोव ने प्रिगोरी के मुँह पर साँस छाड़ते हुए धीमे से कहा बड़ा मजा है खान फ्राया को यहाँ आँच लागे हैं नगी पड़ी है वहाँ ! पर प्रिगोरी का धूना पड़ते ही उसकी हसी हवा हो गई और वह सज्जी के कुल्हा की लीवार से जा टकराया। प्रिगोरी कोन की ओर भपटा। वहाँ उसने पहल दू प के अस्तबल का देखा। वह रूप धार मांग बनाता भाग खड़ा गया। वहाँ फ्रान्का जमीन पर निचल पड़ी

२६२ धीरे बहे दोन रे

थी। उमका सिर घोड़े क कपड़े स ढका था। उसके कपड़े फटे और सीने तक उलटे हुए थे। घघेरे म भी चमकती उसकी गारी जाँचे नयानक डग से नगी नजर घा रही थी। अभी अभी एन कजड़ाक उसक ऊपर से उठा था कि दूसरा आया। भिगारी भीड़ चीरता हुआ वापस आया और दरवाजे पर जाकर उसन साजेंट मेजर को आवाज दी। लेकिन दूसरे कजड़ाको न दौड़कर उसे पकड़ लिया। अब एक ने उसने मुह को बग़ाय़ा त' दूसरा उस घसीटकर वापस ल घना। पर एक को तो उसन घुंसा द एक और का ढकल लिया और दूसर बे पट म लात मारी। मकिन बाबी सागा ने उसक ऊपर घाड़े का कपडा घनाया और हाथ पीछे बाँधकर उस एक खापी नाँ म डाल लिया। उम बन्दूदार कपड़े स उमका दम घुटन लगा। उसन चित्लाने की घप्टा की और बीच के तम्बे पर ठोकरा पर ठोकरें मारी। इस बीच काने म लोग फुसफुसाते रहे और एक कजड़ाक अन्दर जाता तो एक बाहर आता रहा। लगभग बीस मिनट बाद भिगोरी का छुंकारा मिला। उसन साजेंट मेजर और दूसरे डू प क दा कजड़ाका को दरवाजे पर लडापाया।

तुम मह सिय रहता। साजेंट मेजर ने भाँव मारकर उसकी और द' बिना कहा।

आवाज न निकल नहीं तो कान उडा लिए जाणें। दुवाक नाम के एन दूसरी टुकड़ी के कजड़ाक न सामें निपोरते हुए कहा। मान्या क पर स्कट क नीच कडे पढ़कर फम गए थ। ता व दाना कजड़ाक अन्दर गय गतिहीन आया के पुलिन्द को उठाकर एन नाँ क ऊपर घडे और दीवार के बाबी और के तबना स बनी एन मघ म उठाने उस पर दिया। दीवार बगीच की सरहद पर थी और हर कोठरी क ऊपर एक छाटी गन्नी-मी लिङ्की थी। कुछ कजड़ाक कान्नी पर यद दपने का चड कि देखें आया करती क्या है ? बाकी अम्भवस से निरसन का एडमदान लग। भिगारी के अन्दर भी पाणविक वीकृतल जागा। वह भी एक मिडकी पर खडकर नीच भाँवने लगा। इस तरह दऊना आँलें उन गन्नी लिङ्किया स दीवार क नीच पड़ी मडनी का भीवन लगी। लडकी पीठ के बल पड़ी थी। उमकी टाँग

कची की तरह एक-दूसरी पर सधी थी। उसकी भ्रगुलियाँ धीवार से लगी बफ को गुरच-सी रही थी। त्रिगारी फ्रान्चा का चेहरा न नेव सका पर दूसरे वज्राका की दबी हुई साँस और उनके परा क नीचे दबनी सूखी घाम की कोमल सुहावनी भावाञ्ज उसने जम्बर सुनी।

लडकी वहाँ बढी देर तक पढी रही इमन बाद उसने हाथों और घुटना के बल उठन का प्रयत्न किया। त्रिगारी ने देखा कि उसके हाथ इस तरह काँप रहे हैं कि उसे साध नहीं पा रहे। उसके बाल बुरी तरह विग्वर गए थे। किसी तरह गिरती-पडती यह उठकर खड़ी हुई और उसने दुग्मनी से भरी भजीब-सी नजर खिडकियो पर डाली। वो कहे कि वह उन खिडकिया को एकटक घूरती रही।

फिर वह एक हाथ से बेल की भाडिया का सहारा लेती और दूसरे से दावार टटोलती हुई लडखडाती भागे बढी।

त्रिगारी न नीचे बूदकर अपना गसा मला। उस अपना दम घुटना लगा। दरवाजा पर किसी ने उससे स्पष्ट और निश्चिन स्वरो मे कहा एक णञ् भी मुह से निजसा तो यागु की वसम गुम अपनी जान स हाथ घोथोग।

पीछे उसे ध्यान नहीं रहा कि यह कहा किसन था।

और परेड प्राउण्ड पर त्रिगारी के कोट का एक बटन टूटा दगकर नमाण्डर ने उससे पूछा किससे कुन्ती सड डानी? यह कौन-सा तरीका है?

त्रिगारी न बटन के टूटन से उमर भाए छोटे छेत् को नखा। उस पर उस पूरी घटना यात् आई तो उसका हृदय भर भाया और जीवन मे पहली बार रोने का जो सलना।

३

जुलाई का महीना था। स्तंपी का मन्गन धूप मे नहा रहा था। गेहूँ की पकरी वाला की बाड न पीनी गत् का घुमाँ-सा उठ रहा था। कटाई क यत्रा का लाहा इतना गरम था कि हाथ मे छुभा भी नहीं जाता था। निमहरे पीने भासमान की धार देग्ने से भी भाँसों से दर्द

हाता था । गर्हें क खेता का पसारा जहाँ खत्म हाता था वही से निन पतिया धास का कसरिया फनाव शुरू हो जाता था ।

सारा-का-सारा गाँव राई की कटाई क लिए मदान म घा वमा था । सीधी गर्मी और धूल क कारण घोडा क प्राण मुह की घा रह थ । व कटाई क यत्रा का खीचते-खीचत भड जाने थे । नदी की घोर से घाती हवा मदान में धूल क बाल्ल उडा रही थी और धुध स सूरज के प्रयाग पर भी पर्न पड रहा था ।

प्यात्र कटाई क यत्र क खबूतर स गहू की घलग कर रहा था । मुदह म घव तव पी-पीकर उमने पानी की घाधी बाल्टी खाली कर डाली थी । पर गरम बेस्वाण पानी पीन के बाद भी उमका गला फिर भूखने लगना था । कमीज पसीने स तर हो गई थी और चेहरे स पसीने की धारें चालू थी । दार्या न मुँह हमाल से डक रपा था और कमीज के घटन खाल रने थ । वह घनाज क गट्टर बाँधती जा रही थी । पमीना बूँद बूँद कर उसकी साँवली छातिया क बीच बहा आ रहा था । नताल्या घोडा को खपा रही थी । धूप क मार उसक चेहरे का रग झुकन्तर की जड की तरह लाल हा उठा था । सूरज की तेज किरणा क कारण उमकी घाँवा म घामू भर भर घात थे । पन्तली घनाज की टालों क पास न घा-जा रहा था । उमकी गीनी कमीज उसक वलन स चिपट गद थी । उम अपनी दाढी एसी लग रही थी जस कि दाढी न हाकर वह गाडी की बाली ग्रीज हा जा पिघल पिघलकर उसके सीने तक बही खना घा रहा हा ।

पसाना छूट रहा है ? क्रिस्तान्या ने बगल स गुजरती गाढी म कहा ।

'तर-बतर हूण जा रहे हैं वन्तेनी न पमीने से तर अपने पेट को कमीज के निरे म पाथते हूण कहा ।

दार्या दूर स चिल्लाई प्योत्र भव वस करो ।

घोड़ा टहरो इम पात को पूरा कर सें ।

घन्त करो धूप कम हा जाए था फिर कर सेंगे । मैं ता बोल गई ।

नताल्या ने धाडे रोव लिए । उमका सीना इस तरह उभर घोर

उठ-बठ रहा था जैसे कि वही कटार्ड के यत्र म जुती रही हा । कटे हुए ग्रन्न पर साबधानी से फफोला स भरे अपने साबल पर रखती हुई दार्या इस पार भाई ।

प्योत्र ताल ग्रहाँ स दूर नहीं है ।

हाँ क्यादा दूर नहीं है । गायद तीन बस्ट है ।

कहाँ तो जाकर नहा भाऊ ?

तो तुम इतनी दूर जाभोगी और लौटोगी नताल्या न लम्बी साम लेते हुए कहा ।

भाऊ, मारो पदल क्या जायेंगे ? हम घोड़े का खास लेंगे और उन पर सवार होकर चलेंगे ।

पन्तेपी गट्टर बाँध रहा था । प्योत्र ने बेचनी स उसकी धार देखा और कंधे हिलाकर बोला अच्छा खोल ला घाड़े ।

दार्या ने जोतें खोली और पुर्ती से बूदकर घोड़ी की पीठ पर सवार हो गई । नताल्या भुसकराते हुए अपने घोड़े का कटार्ड के यत्र क पास ल भाई और उस पर चढ़कर घोड़े पर सवार होने की कोशिश करने लगी । सहायता की प्यात्र उसके पास गया । उसने उमकी टाँग का उठाकर घोड़े की पीठ पर रख दिया । वे चल लिए । दार्या कज्जाक ढग स घाड़े की पीठ पर जमी भागे-भागे चल रही थी । उसन अपना स्वट नगे घुटना के ऊपर तन चढा लिया था रुमाल सिर के पीछे पहुँच गया था ।

दखो कही चोत्र चपेट न लगा लना' प्योत्र पीछ से चिल्लाया ।

फिर न करा दार्या ने लापरवाही स जवाब दिया ।

दार्या और नताल्या ने मत पार बिया तो प्योत्र ने दाया धोर देखा । धूल का एक छोटा-सा बादल गाँव स दूर की बड़ी सड़क की धार पल लगाकर उड़ता नशर भाया ।

कोई घुडसवार घसा भा रहा है उसन नेत्रो को सिबाढते हुए नताल्या से कहा ।

और बहुत तेजी स चना भा रहा है । दखा ता कसी धूल उड़ रही है !" नताल्या ने अचरज स भरकर जवाब दिया ।

कौन हो सकता है मला दार्या ? प्योत्र ने अपनी

२६६ घीरे बह बोन रे

पुकारकर कहा एक मिनट का राम खीचना देखें तो कौन है यह भ्राम्मी ।

धूल का दानल भूय म विलीन हो गया । फिर दूसरी धार छा गया । प्रब उदती हुई धून के बीच से पुडसवार उभरा । गर्मिया म पहन जानवाले तिनका क टोप पर अपनी गन्दी हथेली रखकर प्योत्र बठा उधर ही देखता रहा ।

कोई घोडा इतनी तब रफ्तार से इतनी मजिल तय नहीं कर सकता यह भ्राम्मा ता मार डालगा इन । प्योत्र के माथे पर बल पड़ गए और उसने अपना हाथ हटा लिया । चेहरे पर परेगानी की रखाएँ खिच गई ।

प्रब पुढमवार बिलकुल साफ दिवाई देन लगा । वह घोडे को घुमाघार डग म दौडाना ला रहा था । उसके बाएँ हाथ म टोपी थी और दाएँ म फरफराता हुमा माल भडा । वह उनक इतने पास से गुजरा कि प्योत्र न उमके घोडे की हफहफी तक मुनी । पाम म निनलते हुए वह व्यक्ति चिन्वारर बोला खतरा है ।

उमके घोडे क मंह से साबुन-सा पीला भाग घुमा और गुर के एक निगान पर जा गिरा । प्यात्र पुढमवार को देखता रहा । घोडे का हीमना उसका हर मुजरती चीज को एकटक देखना और उसके इस्पात म पुड्डा का पमीन म तर हावर इस्पात-मा घमकना उसने हृदय पर गहरी लबीर बना गया ।

प्योत्र य तो न समझ मना कि भाविर मुमीवन का कौन-सा पहाड टूटने वाला है पर धून म पडे भाग को वह निगाह गढाये देखना जरूर रहा । फिर उमन अपने चारो ओर के चत्राकार नदान पर नजर डाली । हर धार म बज्जाक गाँव की ओर को भागत दीख । मगान के पार दूर क टीने पर धून क दानल प्रब भी खिचवायी न्य । यानी ओर पुडसवारों की उपस्थिति का भी संकेत मिला । गाँव को जान वाली सडक पर धून क दानला का एक मिनतिला लम्बा हा गया । सनिब मेवा की सूची म जिन बज्जाका क नाम थ उम्हने अपना-अपना काम छोड़ा जोतों स पाड़े सान और सवार हाकर उहेँ दौडत हुए गाँव की

घोर चल पड़े ।

यह सब है क्या ? नताल्या न प्योत्र की घोर भय से देखा घोर जाल में फँसे हुए खरगोश की तरह महम गई । उस दृष्टि से प्योत्र विचलित हो उठा । घोडा वापस दौड़ाकर वह बगई की मगीन व पास पहुँचा उसने खनन व पहले ही नीच दूद गया । काम करन समय जा पतलून एक धार को फँक दी थी उसे चढ़ाया घोर अपन पिता की घोर देखकर हाथ हिलाता हुआ घोडे को हवा की रफतार से हॉक बसा । गद ने बादना के फूल हुए फूला व एक फूल घोर बुड गया ।

५

चौक व उसन भारी भीड जमा देखी । कितन ही लोग तो फ्रीजीवर्दी में अपन माज-सामान से लस मिल । अतामान रेजामट के सनिक नीमी टोपियाँ लगाय बतखा व हुसा की भाति दूमरा से अलग नजर भा रहे थे ।

गाँव की सराय बन्द थी । सनिक बमिसार के चेहरे पर उगामी घोर चिन्ता थी । घोरते मडक व विनार की बाइक के महारे एक मोध से खडी थी । हरेक के मुह पर एक ही शब्द था— भरती । सभी ब्यग्र घोर उत्तेजित थ । चारा घोर की परेसानी का अनुभव घाडा को भी हा गया था । व भी गुस्म से लाल हो रहे थे उछन रहे थे घोर नधुने फडफडा रहे थे । चौक व खानी बोटलें घोर सस्ती मिठाइया के बागज जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े थे । धून का बान्गल नीचे की घोर मून रहा था ।

नसे-बसाय घाडे की लगाम पकडे प्योत्र आया । उसने गिरज की पहारदीवारी के पास अतामान रेजामट के एक माटे-तगडे बरजाक को अपने नीले पतलून के बटन लगाते देखा । वह हम रहा था घोर उमकी बत्तीमी खिली हुई थी । उमके पास खडी उमकी भारी भरकम नागी पत्नी या प्रयमा उमके चारा घोर धूम धूमकर वरत रही थी अब की तुम उस छिनास के पास गय तो मैंन तुम्हें ममभा

घोरत नस में घुस थी । उसने बिखरे हुए बान्गों व भूरजमुखी व

बियो के छिनके बिसरे हुए थे । उसका फूलदार रुमाल एक घोर की लटक रहा था । बज्जाक अपनी पेटो को बस रहा था और हसता जा रहा था ।

माशका तुम मेरी जान छोडो न !

बेशर्म जानवर कही का ! छिनरा !

पास ही लाव दाढ़ी वाला सार्जेंट मेजर एक तोपची से बातचीत कर रहा था ।

डरो मत कुछ हाने का नहीं । वह उसकी हिम्मत बँधा रहा था थोड़े दिन के लिए भरती हो रही है उसके बाद घर लौट आयेगे ।

लेकिन मान लीजिये लडाई शुरू हो जाए तब ?

‘छोडा भी हमसे लोहा लेने की हिम्मत किस देगा म है ?

पास के एक दल मे एक सुन्दर बूढा बज्जाक शोध से उबल रहा था हम हमसे क्या सेना-देना सरकार छुद लड़े ! हमारा तो अनाज भी घर म नहीं पहुँचा ।

‘गम की बात है । हम यहाँ हाथ पर हाथ रखे खड़े हैं । आज तो ऐसा दिन है कि हम दिन भर म मानभर की फसल काट सकते थे ।

अनाज म जानवर घुस जायेंगे ।

और अभी तो जो की बगई बाकी है ।

सुना है कि आस्ट्रिया का जार मारा जाता गया

नहीं उसका वारिम मारा गया है ।

लेकिन अतामान का ता कहना है कि हम बरत-डकरत के लिए बुमाये गए हैं ।

अब तो भोगलो म सिर देना ही है, भाई !

और बारह महीने बीत पाते तो मैं स्थायी सना की सीसरी पंक्ति स निबल गया होता । एक प्रौढ़ बज्जाक ने दुखी स्वर में कहा ।

‘तुम्हारा व लोग क्या करेंगे बाबा ?

घबराने की कोई बात नहीं मार काट शुरू हुई कि उन्होंने बुबडों की भी गुहार की ।

मान तो गराववाना बन्द है ।

ता मारफुला के यहाँ चला पीप का पीपा मिल जाणगा ।

मुमाद्ना शुरू हुआ । एक शराब-धुत रक्त-रजित बज्जान का तीन दूसरे बज्जान गाँव प्रशासन-कार्यालय म ले गय । वहाँ घट छिटककर पीछे हटा अपनी कमीज फाड़ी और आँखा को नचाने हुए चाखा 'मैं बतलाऊँगा उन गवार मुजिब को । मैं उनका खून पी जाऊँगा । उह पता लग जाणगा कि दोन क बज्जान कने होत हैं ।

उनके चारो ओर खडे लोग वान का अनुमान करत हुए हेम ।

ठीक बात है उन्हें सीख ता देनी ही चाहिए ।

इसको बाँध क्या रखा है ?

महू किसी मुजिब के फेर म गया था ।

उन्हू यही चाहिए ।

हम उन्हें और मज्जा चम्पायगे ।

१९०५ म उन्हूनि उन्हू दवाया तो उनमें मेरा भी हिम्मा रहा । चीज देखने लायक थी ।

'सडाई होन वाली है मोर्चा भारत के लिए बेफिर हम बुलायेंगे ।

मोखोव की इज्जत म सागा की भीट लगी हुई थी । नणे म पूर इवान सामीलीन खडा बहस कर रहा था । मोखोव उस गान्न करने की कोशिश कर रहा था । उसका सामीनार प्रत्यापिक्तिन दग्वाजे की धार बढ गया था क्या है यह सब ? बडा जुम है लडके जा मो जरा प्रतामान के पास ।

पमान से तर हाथ पतलून म रगडते हुए सामीलीन क्रुद्ध व्यापारी की ओर बग और व्यग्य से बोला भूषर ! तुमन भूमा और जी भर भूमा भव बनते हो मैं तुम्हाय मुह चङनापूर करने रख दूगा' तुम हम बज्जाकों के हक मारत हा

गाँव का प्रतामान अपने चारा धार लडे बज्जाना की मलाई के लिए मीठे-मीठे गल्ल उडैले जा रहा था— 'सडाई' नहा कोई सडाई ननी होने की । सबसे बडे फौजी कमिमार न कहा है कि भरती तो महज द्विन करान के लिए की जा रही है । पवरान की कोई बात नहीं है ।

नया कहने हैं बस घर से मोटो घोर फिर सेता में जुटो ।

ये भ्रमसर लोग पता नहीं चाहत क्या हैं ? मुझ एक सौ
देसियातीन से जयान्त जमीन की कटाई करनी है

तिमोदका घरा में कह देना कि हम लोग बल घर वापस पहुँच
जायेंगे ।

बाफ़ी रात गए देर तक उत्तजित भीड़ का शोरगुल और चहल
पहल चौक में होती रही ।

कोई चार दिन बाद बरजाक फ़ौजी गाड़ी के लाल डिब्बों में सवार
होकर रुस और आस्ट्रिया की सरहद के लिए खाना हुए ।

'लडाई'

डिब्बा स घोड़ा की हिनहिनाहट की आवाज और सीद की बदबू
आती रही ।

उसी तरह की बार्नें यहाँ भी चलती रही उसी तरह क गीत गुँजते
रहे ।

स्टेशन पर जाग बड़ी ही उत्सुकता और ममता से बरजाकों को
देखत । लोग उनकी पतझूना की पट्टियों और उनके चहरों को एकटक
पूरते । उनके साँवल चहरे सेता की दमर की मेहनत से और सँवरा
गए थे ।

'लडाई'

असवारों में बड़े-बड़े अक्षरा में खबरें छपतीं । स्टेशनों पर औरतें
रूमाल हिमालीं मुसकराती सिगरेटें पेंकती मिठाइयाँ सोकानी । गाड़ी
के धारोनेड़ पहुँचने के पहल आधे नरों में पूर रेलव क एक पुराने
कमचारी ने दूसरे २६ बरजाको क साथ बठे मेलेखोव क डिब्बे में झँका ।
उसने पूछा 'तुम लोग जा रहे हो ?

हौ दान तुम भी आ जाओ हमारे साथ । एक बरजाक ने जवाब
दिया ।

माई मेरे बस होते हैं बटने के लिए । बूडे ने कहा और सिर
हिलाया ।

ऐसी घटना मिक्र एक बार घनी ।

तातारस्की और उसके पास के गाँवों के कज़ाकों के पहले दस्ते ने दूसरी रात को एक छोटे-से गाँव में पड़ाव डाला। तातारस्की के निचले भाग के कज़ाकों का एक अलग दल बन गया था और ऊपरी भाग वालों का एक अलग। इसलिए प्योत्र भेलेखोव अपनी कुदका क्रिस्तोया स्तीपान अस्ताखोव इवान तोमीलीन और बाकी लोग एक मकान में टिकाये गए। कज़ाक वावर्चीखान और सामने वाले कमरे में नम्बल बिछाकर सोने को लेटे और उहाने आखिरी सिगरेटें जलाइ। लम्बे क्रुद का दुबला पतला बूढ़ा मकान-मालिक उनके पास बैठकर बातें करने लगा। उसने भी पहले तुक़ युद्ध में भाग लिया था।

तो मोर्चे पर जा रहे हो फ़ौजियो ?

हाँ बाबा लडाई पर जा रहे हैं हम लोग।

जहाँ तक मेरा खयाल है तुर्की की लडाई की तरह घब लडाई नहीं होगी। घब तो हथियार ही बदल गए।

“यह लडाई भी बसी ही होगी उतनी ही खतरनाक होगी। जैसे तब तुक़ लोग मारे गए थे वस ही घब मारे जाएंगे। तोमीलीन ने क्रुद होकर कहा किन्तु यह कोई नहीं जान सना कि वह क्रुद हुआ किस बात पर।

यह बेकार की बात है आज की लडाई दूसरी क्रिस्म की लडाई होगी।

‘हाँ सो तो होगी क्रिस्तोन्या ने हामी मरी।

हम भी अपने जोहर दिखलायेंगे। प्योत्र भेलेखोव ने जमुहाई सी और भोवरकोट से मुँह ढँक लिया।

लडको मैं एक बात कहता हूँ। गम्भीरता से कहता हूँ। उसे तुम ध्यान से सुनो। वृद्ध ने कहा ‘एक बात याद रखो। अगर तुम मौत के पजे से सही-सलामत और साबित सौटना चाहते हो तो तुम्हें इन्सानियत के क़ानून पर अमल करना पड़ेगा।

‘कैसे इन्सानियत के क़ानून ? स्तीपान ने अविश्वास से मुसकराते हुए पूछा। जब से उसने युद्ध का समाचार सुना था उसने हाठों पर मुसकान सौट घाई थी। युद्ध ने उसे आवाज लगाई और इस पुकार में

उसका अपना दुःख और अपनी चिन्ता डूब गई ।

मानी यह कि दूसरे के सामान पर नजर न रखो । यह हुई पहली बात । दूसरी बात यह कि ईश्वर से डरो और किसी औरत को इज्जत न लो । इसके साथ ही तुम्हें कुछ प्रायनाएँ माद होनी चाहिए ।

सब बज्जाक उठकर बैठ गए और एक साथ बोल उठे दूसरे का सामान वहाँ से मिलगा कहीं अपना ही न खा जाए ।

लेकिन हम औरत से दूर क्या रहें ?

मान लीजिए कि आप राजी न हों पर वह खुद ही राजी हो जाए तो ?

उनकी ओर बठोर दृष्टि से देखकर बूढ़ा बोला औरत का हाथ से न छूना चाहिए, कभी नहीं । अगर तुम नहीं मानोगे तो या तो तुम नहीं बचाओ या फिर चाट खाओगे । पीछे पछताओगे लेकिन तब तक चिड़ियाँ खत घुग चुकी होंगी । मैं तुम्हें प्रायनाएँ बतलाऊंगा । मैं पूरी तुर्की को सड़ाई में मार्चें पर रहा और मौत बराबर मेरे सिर पर मडराती रही लेकिन इन्हीं प्रायनाओं के सहारों में जिनका बचकर घा गया ।

यह दूसरे कमरे में गया और मूर्ति के नीचे से भूरे-से रंग के कागज का एक मुड़ा मुड़ाया टुकड़ा निकाल लाया ।

उठा और तिल डालो । उसने घाट्टे गिया तुम साग सुबह तबक ही यहाँ से बल दाग है न ?

उसने मज पर कागज खालकर रख दिया । सबसे पहला अपनी कुत्ता उठा । उसका चिक्कन जनान चेहर पर टिमटिमाती लौ की प्रकाश रेखाएँ खिंची । स्नापान के अनायाषाकी सभी उठकर प्रायनाएँ निलने लगे । अपनी कुत्ता न कागज को सह करके सोन पर लटकत प्रॉस की बोरी में बाँध लिया । स्तीपान ने भ्यग्य कसा जुमा के लिए शानदार घासला बना लिया तुमन ।

दखा अगर तुम्हें विश्वास नहीं तो अपनी जवान पर पानू क्यों नहीं रखते ? बूढ़े ने बीच में हाँ बठोरता में उसकी बात काटत हुए कहा दूसरा भी राट्ट के पत्थर न बनो और धम की खिल्ली न उड़ाओ । यह पाप है ।

स्तीपान मुसकराया विन्तु छुप रहा ।

कृञ्जाका द्वारा लिनी गई प्रायनामा की सख्या तीन रही । प्रत्येक न अपनी इच्छानुसार एक-एक प्रार्थना लिखी ।

प्रायमा—शस्त्रों के विरुद्ध

प्रभु न्या करो ! पहाड़ पर एक सफ़ पत्थर पड़ा है जस घाटा । जसे पानी उस पत्थर पर असर नहीं करता वसे ही तीर और गोलियाँ न मुझ पर असर करें न मेरे साथिया पर और न मेरे घोड़े पर । जसे ह्यौदा निहाई से पलट जाता है वसे ही गोलियाँ दूर से हा पलट जाए । जस सूर्य और चंद्र म प्रकाश है वसे ही मुझम बल हा । इस पहाड़ के पीछे एक गली है । मैं इस गली म ताला जकड दूगा और ताली ममुद्र म फेंक दूंगा । म उम अलतोर' नाम के सफ़ेद पत्थर के नीचे रख दूगा कि न भूता को उमका पता चलेगा न चुडला को न सन्यासियों को और न सन्यासिनिया को । जमे महासागर का पानी कोई बहाकर कहा और नही ले जा सकता और जसे पीले रेत-कणा की गिनती कोई नही कर सकता वसे ही हे प्रभु मुझे कोईहानि न पहुँचा सख परमपिता पिता यीशु और पवित्र देवदूत के नाम पर आमीन ।

सवाई की प्रार्थना

एक महासागर है और इस महासागर म एक सफ़ पत्थर पड़ा है—अलतोर । उम पत्थर पर पत्थर का एक लम्बा चौड़ा आत्मी है । प्रभु मैं तुम्हारा शस हूँ मुझे और मेरे साथिया को पूव स पश्चिम तक घरता स आकाश तक पत्थरा से बक दो । मेरी रक्षा करो—तज कटारा और तलवारा से फरमा क फारा और भातों की नोका से कटारी कुल्हाडी और तोपा मे सौस की गालियों और घातक हथियारा से बाजा हूमो बतला सारमा और काले नौवा के परावाल तीरों से तुकों श्रीमिया के सागा आम्द्रिया क सागा तातारा लिशुप्रानिमाण्यों जमनों और कालमीवोम । पवित्र देवतामा और स्वग की शक्तियो मेरी रक्षा

करा मैं प्रभु का सबक हूँ 'धामीन' !

हमले के समय की प्रायना

सबदात्तिमान पावन माँ-मेरी घोर प्रभु ईसामसीह ! मैं घोर मेरे जा साथी युद्ध म जा रहे हैं उन सबको प्राणोर्कषि दो । हम सबको बादलों से ढक लो घोर अपने स्वर्ग के परपर स भोला से हमारी रक्षा करा । सालोनिका के पवित्र दिमित्री मुझे घोर मेरे साधिया का चारा घोर से बचाओ । दुष्ट न गोनी बनायें न माला घुसड़ न कुल्हाड़ी म मारें न तलवार स मारें या काटें न चाकू भाँकेँ न बूटे न जवान न भूरे न बाले न घाम्मा न जाङ्गर ! मैं प्रभु का सबक हूँ घनाय मेरे माग्य का नखा निश्चित है । सागर में महासागर मे क्यान न द्वीप म लोहे की एक चौकी है । चौकी पर लोहे का एक घादमी लोहे के लण्ड म टिका बिथाम कर रहा है । वह लोहा इत्यात सीमा जस्ता घोर मभी घातुमा के हथियारों पर टुकम चलाता है । लोहे मेरे भर साधिया घोर मेरे घोडे के पास से निकलकर माँ घरती म समा जाओ ! तीरो के फारो जगल म चले जाओ ! परो अपनी अपनी बिडिया को वापस लौट जाओ । प्रभु अपने सबक की रक्षा करग—साया की भाग से तोपों के गोमा से भाल से चाकू म । प्रभु मेरा गरीर बचव स अधिक तावतवर हो जाएँ ! धामीन !

घाय प्रायनाएँ भी लगभग एसी ही थी । इन्हें लिखकर कञ्जाको ने अपने दाग-नाँव की मिट्टी घोर छाया-छोटी देव-भूतियो के साथ ही बाँधा घोर अपनी-अपनी कमीजा के घन्दर रख लिया । पर मोत ने घातर नहीं किया—उमन जस प्रायना लिखन धाना की अपना घाल बनाया बस ही प्रायना न लिखनेवाला की । मानी जहाँ भी सडाई की भाग फली घोर कञ्जाको के पाड़ा के पुरो के निगान जहाँ भी घने वही मतोँ घोर मगना म उनकी लारों सडा—बया ग नीगिया घोर पूर्वी प्रतिपा बया कार्पेविया घोर टमानिया !

६

जुलाई १९१४ के चौथे सप्ताह में द्विविज्ञानल-स्टाफ न ग्रिगोरी मेलेखोव की रेजीमट को रोवनो नामक नगर में भेज दिया। एक पखवाड़े के बाद एक दिन ग्रिगोरी और चौथी कम्पनी के दूसरे कर्जाक राज-बरोज के काम से एक-एकाने अपने तम्बुओं में लेटे हुए थे कि कम्पनी-कमाण्डर लेफ्टिनेंट पालकोवनीकोव रेजीमटल-स्टाफ से घाटा दौड़ता हुआ वापस आया।

हम फिर यहाँ से नहीं जाना पड़ेगा 'गायल'। कहकर प्रोखोर जिकाव बिगुल की भावाञ्ज की प्रतीक्षा करने लगा।

टूप साजेंट पतलून की मरम्मत कर रहा था। उसने टोपी में सूई खोस ली और बोला 'मुझे लगता है ये लोग हम दम नहीं लेने देंगे।

दो मिनट बाद ही बिगुल बजा। कर्जाक उछलकर खड़े हो गये।

'मेरी तम्बाकू की थली क्या हुई?' पोखार ने हठबडोते हुए कहा।

'बूट पहना और घाटा पर सवार हो जाओ'।

गुम्हारी तम्बाकू की थली जाए भाड़ में ! ग्रिगोरा ने बाहर की ओर दौड़ते हुए चिल्लाकर कहा। निश्चित समय के भन्दर भन्दर घोड़े बस गए। ग्रिगोरी तम्बू के खूँटे उखाड़ रहा था कि साजेंट न घीरे से कहा 'इस बार तो लड़ाई होगी ही'।

बेवकूफ बनाते हैं आप ! ग्रिगोरी ने अविश्वास से कहा।

भगवान् बसम ! साजेंट-भजर ने मुझमें खुद कहा।

कम्पनी चल दी। आगे आगे कमाण्डर था।

गाँव से बाहर की बड़ी सड़क पर घाटा की टापों की टप-टप गूजी। पहली सप्ताह चौथी कम्पनी के छुटसवार सनिक पडोस के गाँव से निकलकर स्टेशन की ओर जाते देखे।

अगले दिन घास्ट्रिया की सीमा से लगभग पतीस बस्ट इयर के स्टेशन पर रेजीमट उतरती। बर्ष के बर्षों के पीछे से प्रभाव उभर रहा था। लगा कि मौसम सुहावना रहेगा। भोस से घमकती लाइना पर इजिन बोलाहल कर रहा था। चौथी कम्पनी के कर्जाकी न घोग की लगाम पकड़ उन्हें नीचे उतारा, और फिर उन पर सवार हो बस दिए।

उस गुलाबी पहले प्रयत्नकार म उनकी भावाजें भयानक सगी । जल्दी ही सोगो के बेहरा और घोड़ों की भावृतियों ने प्रयत्नकार भेदा ।

यह कौन-सी कम्पनी है ?

तुम कौन हो ? कहीं के हो ?

बतसाऊँ कि मैं कौन हूँ । प्रफसरो से इस तरह बात करने की हिम्मत ?

माफ कीजियेगा मैंने आपको पहचाना नहीं था ।

बड़े चलो बड़े चलो !

तुम इधर क्या कर रहे हो ? भाग नदो ।

तुम्हारी तीसरी दुकड़ी कहीं है साजेट-मेजर ?

कम्पनी पीछे के लोग भागे भाएँ ।

पीछे के लोग भागे भाएँ — भाट म जाए यह ! दो राता स हमन पनकें नहीं भपनाई है ।

एक सिगरेट तो पिला स्यामका ! कल से पी नहीं है ।

प्रपना घोडा पकडो

इसन साज था बन्द काट लिया है

मेर घोडे क भागे के एक पर की नाल गायब है ।

कुछ दूर भागे पहली कम्पनी ने चौथी कम्पनी को घोड़ी देर क लिए रोका । व सोग इनसे पहल गाडी स उतर ये । भासमान के नीलम भरे रग की पृष्ठभूमि म भाग घुडसवारा की काली भावृतियाँ या लौ देती रहीं जैसे कि उनको भारतीय स्याही स खीचा गया हा । उनके भासे मूरजमुखी के पूना के डठसो की तरह सटने सगे । ऐसे म कभी रकाव सटकी तो कभी साज खडका ।

प्रोस्तार डिक्कव विगारी की बगल म चल रहा था । उसन उसक पहरे की घोर देखवर धीर स कहा 'मैनेसोव तुम्हें डर तो नहीं सगता ?

डर की बात क्या ?

'गाय' हमको आज मार्चा सेना पड़े ।

ठा इसस क्या ?

लकिन मुझे तो डर लगता है। प्राखार ने स्वीकार किया। उसकी मगुलियाँ काँपने लगीं सारी रात मेरी पलक नहीं भपकी।

एक बार फिर कम्पनी घामे बढ़ी। नपे-खुले कम्म घोड़े खते चल। बल्लम एक लय-नाल मे हवा में लहराने लगे।

घिगारी के हाथ की लगामें ढीली हा गईं। वह ऊपन लगा।

वह भपना घाडा भी भूल गया और उसकी बाल भी। वह तो एक कानी सडक पर खुंग-खुश भूमता चलने लगा। उसकी बगल में चलता हुआ प्रोखार बालें करता रहा किन्तु उसकी भावाज साज की खडखडाहट और घाडे की टापा में डूब गईं। नतीजा यह कि उसकी विवकहीन तद्रा भग नहीं हो पाईं।

कम्पनी एक घोर को मुठी। चारो घोर सन्नाटा छाया हुआ था। सडक के दोना घोर पक्ने जो उग रहे थे। उनस भाप उठ रही थी। घोडा ने नान नीचे करने के लिए सवारा के हाथ में सधी लगामें ढीली की। मूरज की किरणें घिगारी की पलकें भूमने लगीं। उसने भपना सिर उठाया और गाढी के पहिये की चर चूँ की तरह प्रोखोर का भारी स्वर उसके बाना में पड़ा।

सहसा ही जई क खेता में घडका-सा हुआ और घिगारी की भालें खुल गईं।

गौली। जिन्कोव चिल्ला उठा और उसकी बछड़े की-सा भाँवा म भाँसू भर आए। घिगारी न भिर ऊँचा किया। सामने ही ट्रूप-साजेंट का पूरा भोवरकाट घाडे की पीठ क समान ही उठता गिरता रहा। दोना घोर कच्चे भन्न क खेत सडे दीखे। भासमान म एक बुनबुन बार-बार चक्कर बाटने लगी। सारी कम्पनी सजग हो गईं। गाली चलन की ध्वनि बिजनी क करेंट की तरह लगी। सफिन्नेट पौनबावनीकोव न कम्पनी को तेज रफ्तार स भाग बनाया। चौराह स घाग एक हटी-भूली सराय क पास स उन्हें धारखायिया की गाडियाँ मिलने लगीं। हूट-गुट सुन्दर धुइसवारा का एक दल निकला। बड़िया नस्त के घोडे पर सवार उनक कप्तान ने कज्जाका की घोर उपशा की दृष्टि स देखा और भपन घाडे की एड लगाईं। माग म उन्हें बहुत-म

३६ घीरे बह बोन रे

उस गुलाबी पढते प्राचकार में उनकी आवाजें भयानक लगी । जल्दी ही लोगो के चेहरा और घोड़ा की आकृतिया ने प्राचकार भेदा ।

यह कौन-सी कम्पनी है ?

तुम कौन हो ? वहाँ के हो ?

बतलाऊँ कि मैं कौन हूँ । अफसरा से इस तरह बात करने की हिम्मत ?

माफ कीजियेगा मैंने आपको पहचाना नहीं था ।

बड़े चलो बड़े चलो ।

तुम इधर क्या कर रहे हो ? भाग बड़ो ।

तुम्हारी तीसरी टुकड़ी वहाँ है साजेंट-मेजर ?

कम्पनी पीछे के लोग आगे आएँ ।

पीछे के लोग आगे आए — भाड़ म जाए यह । दो राता से हमने पलक नहीं भपकाई हैं ।

एक सिगरेट तो पिला स्योमका । बल स पी नहीं है ।

अपना घोड़ा पकडो

इसन साज का बन्द बाट लिया है

मेरे घाबे के आगे के एक पर की नान गायब है ।

रुका । वे लोग इनसे पहल गाडी से उतर ये । आसमान के नीलम भरे रंग की पृष्ठभूमि में आगे पुढसबारा की काली आकृतियाँ या सौ देती रही जस कि उनको भारतीय स्याही से छीचा गया हा । उनके आले गूरजमुत्ती के फूलो के डटलो की तरह सटके लगे । ऐस म कभी रकाब सटनी तो कभी साज खडका ।

प्रोछार डिक्वेष दिगोरी की बगल म घस रहा था । उसन उसने बेहरे की घोर देगबर घीरे स कहा 'मेलसोव तुम्ह डर तो नहीं सगता ?

डर की बात क्या ?

'गाय' हमको आज मोर्चा लेना पड़े ।

वा इसस क्या ?

लेकिन मुझे तो डर लगता है। प्राखोर ने स्वीकार किया। उसकी अगुलियाँ कौपने सगी सारी रात मेरी पलक नहीं झपकी।

एक बार फिर कम्पनी आगे बढ़ी। नपे-तुले कदम घोड़े रखते चल। बल्लम एक लय-ताल से हवा में लहराने लगे।

ग्रिगारी के हाथ की लगामें ढीली हो गई। वह ऊपन लगा।

यह अपना घोड़ा भी भूल गया और उसकी चाल भी। वह तो एक कानी सडक पर खुश-खुश भूमता चलन लगा। उसकी बगल में चलता हुआ प्रोखोर बातें करता रहा किन्तु उसकी आवाज साज की खडखडाहट और घोड़े की टापों में डूब गई। नतीजा यह कि उसकी विवेकहीन तद्रा भग नहीं हो पाई।

कम्पनी एक ओर को मुड़ी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। सडक के दोनों ओर पनके जौ उग रहे थे। उनसे भाप उठ रही थी। घोड़ा ने कान नीचे करन के लिए सवारों के हाथ में सधी लगामें ढीली की। सूरज की किरणें ग्रिगोरी की पलकें झूमने लगीं। उसने अपना सिर उठाया और गाड़ी के पहिये की चर-चूँ की तरह प्रोखार का भारी स्वर उसके काना में पड़ा।

सहसा ही जई के खेता में घडका-सा हुआ और ग्रिगोरी की आँखें मुस गई।

गाली। त्रिकोण चिल्ला उठा और उसकी बध्ने की-सी आँखा म धाँसू भर आए। ग्रिगारी न सिर ऊँचा किया। सामने ही टूप-साजेंट का पूरा मोवरकोट घोड़े की पीठ के समान ही उठता गिरता रहा। दोनों ओर बच्चे मन्न ब खेत खड़े दौखे। आसमान म एक बुलबुल बार-बार चक्कर काटने लगी। सारी कम्पनी सजग हो गई। गोली चलने की ध्वनि बिजली के करेंट की तरह लगी। सफिन्नेट पोलकावनीकोव ने कम्पनी को तेज रफ्तार म आगे बढ़ाया। चौराहे के भाग एक टूटी-फूटी सराय के पास स उह धरणाथिया की गादियाँ मिलने लगी। हृष्ट-मुष्ट सुन्दर घुडसवारों का एक दल निकला। बनिया नस्ल के घोड़े पर सवार उनके कप्तान न बज्जाका की ओर उपक्षा की दृष्टि से देखा और अपने पाठे को एह भगाई। माग म उन्हें बहुत-स

तकले ले जाता चेचक के दाग वाला एक तोपची मिला । ये तकले सराय का चहारदीवारी से उलाढे गए थे । कीचड़ और दन्तल के बीच उन्होंने छोटी तोपों की एक बटरी देखी । इसके घुड़सवार घोड़ों पर चाबुक सटकार रहे थे और बन्दूकची गाड़िया क पहिया स जूम रहे थे ।

कुछ भाग बढ़ने पर उन्होंने एक पत्थर रेजीमेंट जाता देखा । फौजी सज्जी से चल रहे थे । उनके मोहरकोट पीछे की ओर उड़ रहे थे । दमकते सिरस्त्रायों पर सूरज की किरणों पड़ रही थी और बन्दूकों धमकमा रही थी । आखिरी कम्पनी के कारपोल ने प्रिगोरी पर मिट्टी का एक डाला फेंका— 'तो पकड़ो आस्ट्रियनों को मारना इससे ।

खिलवाड़ न कर बखफोड़े ! प्रिगोरी ने कहा और मिट्टी के डाले को चाबुक स छोड़ दिया ।

उन्हें हमारा सलाम कह देना बज्जाको !

तुम्हें मौबा मिलेगा 'खु' कह देना !

यहाँ से भागे कम्पनी को बराबर राह में मिले पदली रेजीमेंट कटरपिलर बटरियाँ माल के डब्बे और रेट क्रॉस की गाड़ियाँ । बातावरण म मौत का सकेत था कि सड़ाई नजदीक ही हो रही है ।

कुछ ही देर बाद चौपी कम्पनी गाँव म प्रवेश करने लग रही थी कि रेजीमेंट-कमाण्डर सफिनेट-कनन कालेदिन अपने सहायक के साथ भा पहुँचा । वे पास स गुजर तो प्रिगोरी ने सहायक को कालेदिन से कहत मुना नरंग म मह गाँव नहीं दिखमाया गया है बसिनी मक्स मोविच ! वहीं हम फिर न जाएँ ।

बनल का उत्तर प्रिगोरी मुन नहीं पाया ।

रेजीमेंट की चाल बराबर सज हाती गई । घोड़ों का पसीना सूट चला । गहरे ढाल के नीचे बसे एक छाटे-से गाँव की आपड़ियाँ दूर से श्वितलाई दीं । गाँव के दूसरे छोर पर जगल था जिसके पेड़ों की ओटियाँ घासमान जूमती थीं । जगल के पार से गोलियों की आवाज आती रही थी । कभी-कभी राइफला की आवाज भी आ जाती । घोड़ों म पान पड़े कर लिए । आवाज म तोप के फटते हुए गोला का पुर्षा ऊँचा उठता रहा । राइफला की आवाजें हाते हाते कम्पनी की बायों

घोर से भ्राती गई ।

प्रिगोरी हर भावाज को ध्यान से सुनता । उसकी नसें तनती जाती । प्रोखोर जिकोव अपनी काठी पर जठ-सा बना बराबर घातें करता रहा प्रिगोरी गोलियाँ ऐसे चल रही हैं जस लटक रेनिंग पर ढट्टियाँ पीटते चले जात हैं । हैं न ?

छुप भी कर न, यार !

कम्पनी गाँव में प्रविष्ट हुई । फ्रीजी हाता में भागदौड़ करते मिले । गाँव के लोग भागकर जान के लिए अपना साजो-सामान बाँधत दीखे । उनके चेहरों पर डर और बेवसी उमड़ी । उधर से निकलते समय प्रिगोरी ने सनिको को एक झेड भी छन जलात देखा । पर उसका भूरे बालोंवाला बेला रुसी उधर से निमला ता बदकिस्मती से उधर उसका ध्यान ही नहीं गया । प्रिगोरी ने देखा कि उस व्यक्ति के परिवार के लोग साल गढ़ावानी गाड़ी में फरनीचर लाद रहे हैं और वह खुद टूटे पहिये के रिम का बड़ी होगियारी से उठाकर ले जा रहा है । रिम बेकार था और शायद बरसात के दिनों में प्रांगन में इसी तरह पड़ा रहा था । प्रिगोरी को औरतों की बकूफ़ी पर ता खुब हुआ । वे रगीन बतन और मूर्तियाँ गाड़ी पर लाद रही थीं और जहरी बेगकीमती चीजा को घर में ही छोड़े जा रही थीं । सबके डाल पर पत्तों के एक बिछौने से पत्त इस तरह उड़ रहे थे जस कि बर्फ का छाटा-मोटा तूफान चाखू हो गया हो ।

गाँव के सिरे पर एक यहूदी उह अपनी और घाता मिला । वह चिल्लाया करजाक भाई भाई करजाक ह भगवान् ।"

पर एक करजाक अपना चाबुक सटकारता उसकी बगल से निकल गया । उसने यहूदी की ओर ध्यान ही नहीं दिया ।

रुको ! दूमरा कम्पनी के एक जूनियर कप्तान ने करजाक को भावाज दकर कहा ।

करजाक अपनी काठी पर मुक्ता और बगन की एक गनी में मुह गया ।

रुको' किस रेजीमट के हो तुम ?

कञ्जाक का गोल सिर धोड़े की गर्दन में मिल गया। वह पागल की तरह नाच की ओर बढ़ता गया। वहाँ उसने घोड़ा रोका और वह सफाई से धोड़े की पीठ से उतरा। नर्वे रेजीमट का पठाय है यहाँ, यह कञ्जाक उसी रेजीमट का है साजेंट ने कहा।

भाद में भोकी उमकी। जूनियर कप्तान ने कहा और अपनी रकावा से सटे यहूदी की ओर मुँहा तुम्हारी क्या चीज छीन ले गया वह ?

कप्तान साहब 'मेरी पत्नी कप्तान साहब' यहूदी ने पास आते हुए कप्तानों की तरफ देखकर पलक भगनाई।

जूनियर कप्तान अपनी रकावा को मुक्त कराता हुआ आगे बढ़ा।

चौथी कम्पनी पास से गुजरती। घोड़ा की टाँपें टपाटप पड़ती रहीं और माज चरमराते रहे। कञ्जाकों ने परेगान यहूदी का मजाक बनाया और आपस में बातचीत की—

हमारी किम्म के नाग धोरी के नाम से बदनाम न हा यह तो नहीं हा मकता

'हर चीज किपक रटती है कञ्जाक व हाप में वेड है यहूदी !

कस बाद यामी उसने !

मीनी दोडो पहले इसक कि

यहूदी हाँकता हुआ दौड़ा। साजेंट मजूर पीछे दौड़ा और उसने उस पर चाबुक जमाया। यहूदी लड़खड़ाया और हथिनियों से बेहतर बँकते हुए साजेंट-मजूर की ओर मुँहा। उसकी पतली-पतली भंगुलियाँ क बीच से गून चुना रहा। मिमकत हुए बोना 'यह आखिर क्यों ?

साजेंट मजूर की बदन-जसी आँखें मुँहाकरती रहीं। वह घोड़ा आगे बढ़ाते हुए घोसा 'कस वहाँ जात हो तुम गधे !

गाँव के परे इसीनियरों का एक दल मज-पौषा और जलकुम्भिया में भरे एन लट्ट के चार-चार घोडा पुन बना रहा था। पुन समाप्त होने की ही था। पाम ही एन माटर मजबूत रही थी और झाड़वर धूँध इपर उपर कर रहा था। नूरे बासा और स्वेनी दाड़ीवाला एन भारी

भरकम जनरल पीछे की सीट में आधा बठा और आधा लेटा था। लेफ्टिनेंट-कनन कालेदिन और प्रधान इंजीनियर सामने एंटीशन की मुद्रा में खड थे। जनरल अपने नक्शे के बेस का बन्द भ्रुकते हुए बाला—

आपको बल तक यह काम खत्म कर देने का हुबध दिया गया था। नाई जवाब है? चीजा का इन्तजाम आपको पहल ही कर लेना चाहिए था। नाई जवाब दे सकते है आप इसका? भफसर ने नाई जवाब दिया हीनही। जनरल फिर गरजा भव कैसे पार जाऊगा भला मैं? जवाब दीजिए कैसे उस पार जाऊगा मैं?’

काली मूछी वाला एक कमउम्र जनरल मोटर में बठा सिगार पीता रहा। उसके होठों पर मुमकान दौड गई। इंजीनियरकप्तान आगे की ओर भुजा और पुल के एक सिरे की भार इदारा करन लगा।

पुल के पास सवार-पौजी खड्ड में उतरे तो घोडे घुटनों घुटनों तक गद में नहा गए

कम्पनी ने दोपहर को आस्ट्रिया की सीमा पार की। घाडों ने सीमा के काले सफ़द बांस को बूदकर पार किया। दाहिनी ओर राइफलें आग उगल रही थी। किमी फार्म की टाइलों की छन दिखलाई दे रही थी। सूरज की किरणें सीधी पड रही थीं। हर चीज पर धूल का बादल छा रहा था। रेजीमेटल कमाण्डर न फ़ौजियों को दला में बाँट कर आग जाने के आदेश दिये। चौथी कम्पनी से लेफ्टिनेंट सेम्योनोव के नेतृत्व में तीसरी टुकडी गई। लगभग बीस बरजाकी की टोली ने पगबंदी से होकर खेत पार किया।

अनुमानिक दल को कुछ दूर से जाकर लेफ्टिनेंट मानचित्र का अध्ययन करने को रजा। घुमाँ उडान के लिए बरजाक पास-पास आ गये। साज की पेटी बीनी करन के लिए प्रियारी घोडे से उतरा ही कि साजेंट चिल्लाया तुम यह कर क्या रहे हो? बठो घाडे पर!

भफसर ने सिगरेट जताइ और दूरबीन से आगे का इलाका देखा। दाया ओर भारी की भाँति जगल का रेखा थी। लगभग एक भील आग एक छोटा-सा गाँव था। उसके बाद गहरी नदी थी और

११२ पीरे बहे दोन रे

मूलाभल सतह थी। अधिवारी जान-बूझकर दूरबीन से देखता रहा। वह गाँव के वातावरण का अध्ययन करता रहा बिल्कुल गाँव समान की भाँति दान्त लगा सिर्फ पानी की नीली धारा ही बलकल करती चुनौती देती रही।

यह कोरोलिप्रोव का गाँव होगा। गाँव की तरफ घाँसो से दूसारा कर अधिवारी बोला।

साजेंट मेजर अपना घोडा भागे बढ़ापर उस अधिवारी क घौर भी पास आया बिल्कुल बोला कुछ नहीं। उसके चेहरे के भाव से स्पष्ट मलका आपको मुझ अधिन जानवारी है। मेरा सम्बन्ध तो नेवन छोटी-मोटी बातों से है।

मच्छा वही चलो। अधिवारी ने दूरबीन राम प्रतिबिम्ब भाव से कहा। उसने माये पर या बल पडे जस कि वह दौत के दर्द से पीडित हो।

साहब कही हम दुस्मना से न फिर जाय ?

हाणिमारी से चलेंगे।

प्राप्तर जिवाव प्रिपोरी के साथ ही साथ चलता रहा। वे उजाड सडक पर बड़े पर चौकन रहे। हर खिडकी से आगका होती कि इसके पीछे कही कोई छिपा न बठा हा हर कोठरी के खुल दरवाज से चोरानगी टपकती घोर भूरे वदन म बँपकपी दौड जाती। गबकी घाँसो बाइँ घोर ग्राइया की धार एम लगी रही जम कि कोई दुम्बक उन्हें घपनी घोर सोच रहा हा। वे बलि के वनरा की भाँति भागे बढ़ने गये या उन भेडिया की भाँति भागे बढ़त गये जा जाडे की नीली रात म बस्निया की घोर चलता चला जाता है। पर सडका पर आत्मी का नाम निगान तब न मिला। चोरानगी सांय-मांय करती रही। किसी मकान की गुनी खिडकी स घड़ी की स्वाभाविक टिक-टिक की आवाज आई। पर उस समय यह आवाज ऐसी नगी जैसे कि कही पिस्तौल की गालियाँ दग रही हा। प्रिपोरी ने दवा कि अधिवारी मय से मिहरा घोर उमका हाथ खमनकर रिवास्पर पर पहुँचा।

आत्मी की कौन बहे गाँव में मकमी भी नहीं थी। दन नदी

नौ पार करने नगा पानी घोड़ा के पट तक पहुँच गया। वे बड़े मन से नदी में पड़े और चलते चलते पानी पीने लगे। मवार लगाम खींचकर उह आगे बढ़ाने लगे। प्रिगोरी ने उस गन्दे पानी की और प्यासी नजर से देखा। पानी पास होने हुए भी उसकी पहुँच के बाहर था और पूरी ताकत से उस अपनी और खींच रहा था। यदि ही मकता तो प्रिगोरी छयाग नगाकर कपड़े पहन-ही-पहने धारा में हिल जाता और उसकी गीतलता से वह अपनी थकान मिटा लेता।

गाँव के पार के एक टीले से काफी दूर पर उन्हें एक कम्बू लिखाई दिया—मवाना की चौकोर पत्तियाँ इटा की इमारतों बगीचे और गिरज। मफसर उस टीले की चोटी पर गया और गाँवों पर दूरबीन घड़ाकर देखने लगा।

व रह के नाग! वह चिल्लाया। उसके बाएँ हाथ की मंगुलियाँ काँपने लगी।

कितने सार है? प्रोखोर ने कहा।

दूसरा के मन में भी यही बात आई। य चूप रह। प्रिगोरी ने अपने दिव की तेज घड़कन मुनी और इन विनेगिया को देखकर उस जसा नगा वसा दुःमन का खर नही लगा था। कुछ मजीब-भी अनुभूति हुई।

सार्जेंट मजर धूप से नहाई सोनी पर सडा। उमक पीछे-पीछे वज्जाक एक-एक की पक्ति में सड्रे। उन्होंने देखा कि सडकों पर लोग की भीड भाड है वगल की मडका पर वगनें सडी हैं और घुडमवार नेडी से घाडे दौडा रहे हैं। गाँवों सिक्कोड हपनी की घाड कर प्रिगोरी ने भी उवर निगाह दौडाई। उस भूरे रग की मनजानी वदियाँ लिखमाई दी। कस्वे के पहले ताजा खुदी साइयाँ थी और उनके चारों ओर लोग जमा थे।

सार्जेंट मेजर ने वज्जाका को तुरन्त ही टीले में नीध रवाना किया। मधिकारी ने अपनी मुड की नोटबुक में पेंसिल से कुछ लिखा और प्रिगोरी को बुलाया।

मलेगोब !

साह्य ।

प्रिगोरी घाटे से उतरकर अधिकारी व पास गया । इतनी सम्झी मबारी व बारण उसकी टाँगें पत्थर हा गई थी । अधिकारी ने उसे एक मुड़ा हुआ कागज दिया ।

तुम्हारा घोड़ा सबसे अच्छा है । इस कागज को रेजीमटल कमाण्डर को दे प्राप्ति । हवा की तरह जाना ! उसने आदेश दते हुए कहा ।

कागज को अपनी सामन वाली जव म रख प्रिगोरी अपने घाटे व पास वापस पहुँचा । अधिकारी की नजर उस पर जमी रही और प्रिगोरी के घोड़े की पीठ पर चढ़त ही उसने अपनी घड़ी देखी ।

जव तब प्रिगोरी रिपोर्ट सकर पहुँचा तब तब रेजीमट कारोलिम्बा गीव तब पहुँचा तब तब रेजीमट एडजुटेंट को कुछ आशा दिया और एडजुटेंट घाटे पर सवार होकर पहली कम्पनी की तरफ उड़ चला ।

चौथी कम्पनी कारोलिम्बा से हाकर निकली और परेड व म्यान की-मी घूर्णी स पार के खता म फैल गई । घाटे मन्त्रियों उद्घात व लिए अपने मिर हिलात और लगामों का बराबर भ्रमने रह । पहली कम्पनी गीव म हाकर निकली ता दापहर की गान्ति भग हो गई ।

रफिन्ट पोलकावनीकाव अपने घाटे पर मघार होकर सबसे आग पहुँचा । एक हाथ से कमपर लगाम साथ उमन डूमरा हाथ अपनी तनवार की मूँ पर रखा । प्रिगोरी सँस रोक्कर आशा की प्रतीक्षा करन लगा । पहली कम्पनी न पोडीगन सा ता घाटे की पटापट स बायीं तिरा गूज गया ।

अधिकारी न म्यान स अपनी कन्ार निकाली । धार न नीलम ली दी ।

कम्पनी ! तनवार दाया धार घूमो फिर बाया धार और फलत म मामन आशा घाटे के बाना व ऊपर बीबाबीच सघी । प्रिगोरी मन ही-मन अपने आशा की कल्पना करन लगा । 'बदियों सावधान ! कन्ारें बमाने म बाहर ! हमना बाना चाल तड़ ! अधिकारी न

आदम देकर अपना घाडे को एट दी ।

हजारों टापों की टपाटप से घरसा कराह उठी । प्रिगोरी अग्रिम दन म था । वह अपनी बर्छीं सभाल भी न पाया कि दूसरे घोड़ों की सरपट चान से चौंक उसका घोड़ा मिचका और भरपूर वेग से दौड पडा । खेत की भूरी पृष्ठभूमि म कर्माण्डिग अधिकारी भागे-भागे चमकता रहा । जुती हुई जमीन का एक ढला उछनकर तब्दी से उसकी भार घाया । पहली कम्पनी ने कांपते हुए स्वर म तीव्र कोलाहल किया । चौथी कम्पनी न स्वर-म-स्वर मिलाया । उस हो-हल्ले म भी प्रिगोरी को दूर का गोलिया की आवाज सुनाई दी । इमी बीच एक बम आया और उनके ऊपर स निमल आकाश के गुम्बज म लकीर-सी खीचता निवस गया । प्रिगोरी ने अपनी बर्छीं का गरम ढडा वगल म दबा लिया । इससे उस तकलीफ हुई और उसकी हथलिया म पसीना आ गया । सिर दन करते बम-भर-बम गिरने लगे । प्रिगोरी न अपना सिर घोडे की गन्त तक झुका लिया । घोडे के पसीने की तीखी गंध उसकी नाक म भर गई । उसे लगा कि यह दूरवीन के धुंधल पीछे से देख रहा है । आइया की लाल जमीनों और भूर लिबास म लोग वापिस नगर को भागते दिखाई दिए । एक मंगोतगन कब्जाको क ऊपर गालियां बरसाने लगी । मामने ने और आहा के परा के नीचे स धूल क बादल उडत रहे ।

प्रिगोरी क खून की रफ्तार पहले तो तब हो गई थी पर अब वहा उन जस परभर का तरह जम गया । अब उस कवल दा बाता का अनुभव हुआ—एक काना म सनसनाहट का और दूसरा बाएँ पर के खना क दद का । दर से उसका मस्तिष्क जड हो गया । सारे विचार पीम का बस दर बनकर रह गए ।

सबसे पहले ध्वज-आह्व घोडे से गिरा । प्रोखोर उससे भागे निकल गया । प्रिगोरी ने मुडकर पीछे दृष्टि डालने ही जो कुछ देखा वह ज्वक निमाग म ऐसी बठी जमे काँच म हीरे की काट । गिरे हुए ध्वज को फाँकर पार करते ही प्रोखोर के घोडे ने दान निकाले और लडलडा गया । प्रोखोर काटी से उछनकर दूर जा पडा और सिर के बम गिरन ही पीछे से भाते हुए घोडे की टापों न नीचे आ गया । प्रिगोरी

की चीख तो मुनाई नहीं दा किन्तु प्रोखोर के बेहरे उमके एंठे मुह घोर बछड़े की घ्राँखों-जत निर्दोष नेत्रों से ऐसा लगा जैसे कि वह पूरी ताकत से चीख रहा है। दूसरे बज्जाक भी जमीन से लगे घोर उनक घोड़े भी। हवा की तज़ी स प्रिगोरी की घ्राँखें भर याद। इस पर भी उसने उत्त जित घ्रास्ट्रियनो को घ्राण्यो स भागले देखा।

गाँव से तो कम्पनी एक बधी हुई घारा की भाँति निकली थी पर अब वह बट गई घोर इधर-उधर फल गयी थी। सामने वाले बज्जाक घ्राण्यो तक पहुँच गये थे प्रिगोरी सबसे घ्राण था।

एक लम्ब सफ़्त भौंहो घाले घ्रास्ट्रियन ने घ्राँखें तक अपनी टोपी मुका रली थी उसने प्रिगोरी के ऊपर जिना निगाना साथे गोली चलाई। गोमी की गर्मी स उसका गाल भुमस गया। उसने पूरी ताकत स रास लीची घोर घ्रास्ट्रियन पर बर्छी चलाई। बर्छी इतने जोर से बठी कि घ्रास्ट्रियन का सीना पीरली पीठ के पार हो गई। प्रिगोरी ने उसे लीचना चाहा लेकिन फिर वह निबल न सकी। उमका हाथ काँप गया। घ्रास्ट्रियन का सिर पीछे की घोर मुका घोर केवन उसकी छोड़ी दिखाई दी। वह बर्छी के डटे को भगुनियो स खरोचने लगा। प्रिगोरी ने बड़ा छोटा घोर अपनी मुन्ब भगुनियो बटार की मूँ पर जमाई।

घ्रास्ट्रियन नगर की सड़को पर भाग दिए।

बर्छी भीचे छाहते ही पता नहीं क्या प्रिगोरी ने घोडा मोड़ा। उसने माजेट-मेजर का बगल स गुजरत देखा। प्रिगोरी ने सभवार की मूठ घोड़े पर जमाई। गदम टेढ़ी कर घोडा गली म दौट चमा। एक बगीचे के सोहू के जगत के सहारे एक निगलन घ्रास्ट्रियन हाथ म टोपी साथे इधर उधर इगमगाना भाग रहा था। प्रिगोरी को उसके सिर का पिछला हिस्सा घोर उमके छोटे कोट के गल का काँसर दिखाई दिया। प्रिगोरी ने घोड़े पर भुजवर अपनी सभवार निरखी की घोर घ्रास्ट्रियन के मस्तक पर जमाई। घ्रास्ट्रियन के मुँह स एक टक न निकली। चोट को हाथ म दबा वह बकबक धाकर जगले पर जा गिरा। प्रिगोरी ने घोडा नहीं रोका। वह घूमा घोर तेज़ी स भागम मोट पडा। घ्रास्ट्रियन का भय स विरुत भौंकोर बेहरे का रग बन

सोहे क समान वाला पढ़ने लगा। उसकी बाँहें पतलून के सिरा पर झूल गई। उसके राग के रंग के होंठ कांपने लगे। कटार उसके माथे से फिसल गई थी। कटा हुआ मांस उसके गाल पर लाल चीपड़े की तरह लटक आया था। खून उसकी बर्सी पर बहा आ रहा था। प्रिगोरी की धाँखें उस आस्ट्रियन की भय में डूबी धाँखों से जा मिलीं। व्यक्ति धीरे धीरे दोहरा हुआ। प्रिगोरी ने अपनी तलवार धुमाड़ और उसके मस्तक को बीच से दो कर लिया। भादमी दब पड़ा उसका सिर बड़ जोर से सड़क के पत्थर से जा टकराया। धावाज सुन प्रिगोरी का घोड़ा विदक और बीच सड़क में आ गया।

बीच-बीच में सड़क पर गोलिया की धाँप धाँप सुन पड़ी। भाग देता एक घोड़ा किसी मृत कज्जाक को सड़क पर धसीटता प्रिगोरी से भाग निकल गया। कज्जाक का एक पर रज्जाव से बाहर निकला हुआ था। प्रिगोरी ने उसके पतलून की लाल पट्टी और उलटी हुई हथोड़ी धमीज देखी। पतलून और नमीज का पुलिंदा कज्जाक के सिर पर आ गया।

प्रिगोरी का सिर सीस की तरह भारी हो उठा। घाँव से उठकर उसने बड़े जोर से उसे झटक दिया। तीसरी कम्पनी के कुछ कज्जाक अपने भोवरकोटो में लपटे किमी घायन को ले जात देखे। उनके भागे भागे आस्ट्रियन-बल्गिया का एक दल था। वे उस हॉन्ट हुए प्रिगोरी के सामने से गुजरें। बड़ी गहरे भूरे रंग के कपड़े पहन दौड़-दौड़ कर चल रहे थे। पत्थरों पर उनका झूत खट-खट कर रह था। प्रिगोरी को उनका चेहरा का रंग ऐसा खिलाई लिया जस कि गीली मिट्टी के टुकड़ों का। उसने घोड़े की रास डोली की और अपने आस्ट्रियन निकार के पास गया। आस्ट्रियन जहाँ गिरा था वही जगह के पास पड़ा हुआ था। उसकी गन्दी हथेलियाँ इस तरह फनी हुई थी जस कि भीख माँग रहा हो। प्रिगोरी ने उसका बहरे पर निगाह डाली। बट उससे छोटा और दब्बा-जसा था यद्यपि उसका मूँछे भी और चेहरे पर दुख की गहरी रेखाएँ थी—शायद शारीरिक दण्ड के कारण—शायद हसी-खानी से भर प्रतीत की याद के कारण।

'घरे मुम' घोड़े पर सवार एक विचित्र-भा बज्जाक-घपिकारी सबक के बीच स गुजरते हुए बोला ।

प्रिगोरी ने उसकी घोर देखा घोर लडखडाना हुमा अपने घोड़े के पास सोटा । उसके कर्म मन मन के हो रहे थे मानो उसकी पीठ पर सामर्थ्य स अधिक् बोझ हो । अफरत घोर पखतावे ने उसका उरसाह भग कर दिया । उसने रबाव में संजा तो गया पर कई क्षणों तक उसी तरह विस्मय स पडा रहा घोर उबककर घोड़े की पीठ पर सवार न हो सका ।

७

श्वेकान्स्काया-सहित ऊपरी दान के इलाका के कज्जाक सदा स ग्यारहवीं बारहवीं बज्जाक रेजीमट घोर प्रतापानके लाइफ-गाइडों स भरती किय जात थे । किन्तु १९१४ के युद्ध स किसी विशेष कारण से उनका तीसरी दोन-बज्जाक रेजीमट स भी भरती होने का श्रवणर लिया गया । वस इस रेजीमट में खास तौर पर उस्त-भेदकान्स्काया के बज्जाक भरती किये जाते थे । पर इस बार जिन लागों को नया मौका मिला उनमें भीत्का कारगूनोव भी था ।

तीसरी दोन बज्जाक रेजीमट ने विनता स्टेपल पर पडाव डाला । उसके साथ तीसरी युद्धसवार द्वितीयजन की भी कुछ टुकड़ियां थीं । इन स एक दिन भलग भलग कम्पनियां नगर स गाँवों में रहने को चली । धूप तो नहीं थी लेकिन गर्मी उरर थी । होते-होत तरत हुए वादना के दल आनाग स धा गां घोर उन्हाने मूरज का ढँक लिया । रेजीमट का बड दल स भाग-भाग चला । अफसर गर्मी की हलकी टोपियां लगाए द्विल की बर्नियां पहने पाहे हवा स उडाने चले । सिगरेट का आदन हवा स उडता रहा ।

सडक के दोनों तिनारों पर किसान घोर रग बिरगे कपडे पहन घोरतों पास जाट रही थीं । ये लाग अपने पाग स निबलकर जात हुए बज्जाकों के दल को देखकर बास करते-करते खं जाते । गर्मी के कारण ये पमीन स ठर थ । दक्षिण-पूर्व स चाली हुई हमकी बयार स गर्मी

कम नहीं हुई उलटे उससे उमम और बनी ।

खर उहाने घाघा रास्ता पार किया और गाँव के पास पहुँचे ही थ कि बाट के पार से एक बछेड़ा दुलकी चाल से निकला । वह इतने मार घोडा को एक साथ देखकर हिनहिनान लगा और कुलाँचें भरता पाँचवी कम्पनी के ठीक सामने आ गया । उसकी गमिन दुम एक धार को लहरी और उसके खुरा न उठती हुई धूम घास पर बिल्लर गई । वह पहली कम्पनी के पामे घाघा और साजेंट मेजर के स्टलियन को मूघने लगा । स्टलियन न लीक तो लिखलाई पर बछेड़े पर तरम खाकर लात नही फटकारी ।

हट थ ओ साजेंट मेजर ने चाबुक नचात हुग चित्लाकर कहा पर बछेड़ा इतने इत्मीनान से खडा रहा कि हमरे कजजाका को हमी आ गई । उसी समय एक अप्रत्यागित घटना घटी । बछेड़ा जो पत्तिया के बीच घसा ता सधी हुई व्यवस्था गडबडा गई । घोडे अपने मालिका का हुकम मानने से जमे इकार करने लग । बछेड़े ने अपने पास के घोडे का दाँत में काटना चाहा ।

कम्पनी का कमाण्डर घोडा लौटाता हुआ घाघा क्या हो रहा है यहाँ ?

घोडे उस बछेड़े पर तिरछी नजरें डालते और हीसते रहे । दूसरा धार कजजाक चाबुक में बछेड़े को भगाने की कोशिश करते रहे । ड्रूप पूरी तरह गडबडा गया ।

क्या हा रहा है आन्विर ? कम्पनी के कमाण्डर ने भीड़ के बीच अपना घोडा खाने हुए चीगकर कहा ।

यह बछेड़ा

यह यहाँ आ कसा है

तुम इस भगा नहीं सवत ?

चाबुक जमाओ इस पर इस परचाओ नहीं

कजजाक दाँत निकालते हुए अपने घोडों को साधने की कोशिश करने लग ।

साजेंट मेजर ! आन्विर यह तूफान क्या है ? अपने ड्रूप क्राप

म साधो ! मन एसा तो कभी न दखा न मुना ।

कम्पनी-कमाण्डर इम परेगानी स चलग हुषा ता उसके घोडे के पिछल पर सडक के किनारे की एक साईं म फिमल गए । उमन एड भगाई और घटा बसला के परा के निगानों और डेजी के पीले फूजास भरे किनारे की आर बढ़ा । इम बांच दूर पर अफसर की टोनी ठिठका । सपिटनेट कनल सिर पोछे की आर कर अपने फनाम्क म पानी पीने लगा ।

सार्जेंट मजर ट्रूप से अलग हुमा और चुरी-चुरी गानियां बकते हुए बछड़े का भगाने लगा । ट्रूप फिर टोक हा गया और डेड सो जोड़ी मौसो न सार्जेंट मजर का खावा पर गड़े होकर बछड़े को वहाँ से दूर बरत देखा । पर बछेडा टिठकता लम्बे चौड़े स्टलियन क किनारे नर माता और फिर कुत्तों भस्ता घाग बढ जाता । नतीजा यह कि सार्जेंट मजर उसकी पूछ पर ही घाट कर पाना । पूछ बार हान पर नीची हा जाती पर दूसरे हा दण हिम्मत से हुवा म सहरान भगती ।

यह दृश्य देखकर कम्पनी क लाग ता हमे हा अफसर भी ठहाक लगात लगे । मस्तान के कुटिम चहर पर भी मुसकान खर गई ।

मीत्का मोरगूनोव भागे के ट्रूप की तीसरी पक्ति मे था । उसके साथ मिन्हाइल इवानोव और वाज्रमा त्रचकोव थ । दोना ही दान प्रदग के थे ।

चौड़े धहरे और चौड़े कपावाला इवानोव ता गान्क रहता सेकिन चेषक क दागा स भर चहर और गाल कपावाला त्रचकोव मीत्का के मामन म काई-न-चौफ पाव निगालता रहता । या त्रचकोव का लाग ऊट क नाम म पुकारत । वह पुराना कज्झाक था पानी यह उसकी फीजी मबा का धागिरी मान था । इमके मानी यह कि बेलित्वे कानूना क नाम पर उस भी मुझे कज्झाक का अधिकार प्राप्प था पानी यह भी कम उन्न फीजिमा का पीछा करता उन पर हूषम बसाता और छाटे-स अफराप के लिए पेटियां जमाता । मरुा तथ की—१९१३ म भरती हुए सागा क लिए १३ पटियां और १९१४ म भरती हुए कज्झाक के लिए १४ पटियां । सार्जेंट और अफसर उम अकम्पा का बडावा दन कनाति

इसमें बरजाफ पत्र के साथ-साथ उअर का भी इज्जत करना सीखत

क्रुचकोव अभी घाडे समय पहल नारपागल बना था । वह अपने घाडे की काठी पर चिडिया की तरह जमा बटा रहा । उसने एक भूर बाल का दखकर आँखें मिकाडा और कम्पनी-कमाण्डर कप्तान पोपोव क लहजे ममीत्वा से पूछा आ वन साभा तो आ कोरूनाद हम अपने कम्पनी-कमाण्डर की किस नाम से बुलात हैं ?

मीत्वा ने अपनी हठधर्मी और हुकम न मानने के लिए अक्सर ही पटियाँ तानी पड़ती थी । ना उनमें बडे अन्व म उत्तर लिया कप्तान पापोव साहब बहादुर !

क्या ?

कप्तान पोपोव साहब !

मैं यह जानना नहीं चाहता तुम मुझे यह बतलाओ कि हम बरजाफ अपने बीच उमे किस नाम से पुकारत हैं ?

इवानकोव न मीत्वा का आगाह करत हुए आँख मारी और खीसे बान लगा । मीत्वा ने पीछे मुड़कर देखा ता कप्तान आता नजर आया ।

'ता जवाब दा न !

'कप्तान पापोव कहत हैं हम सब !

'चौन्ह पटियाँ लगेगी तुम्हे जवाब द दागला कही का !

मैं नहीं जानता साहब !

क्रुचकोव साधारण स्वर म बोला कम्प पहुँचन ही मैं तुम्हारा सान खीषकर रख दूगा । सवाल का जवाब दा !

'मैं नहा जानता साहब !

मीत्वा ने कप्तान के घोडे का टाप मुनी और चुप हा गया ।

पीछे की पत्तियाँ म कुछ हसी के फधारे छूटे । क्रुचकोव हसी का कारण नहीं समझा । उसे लोग अपने ऊपर हँसत लग । वह गरजा—
होनिपात्र रहना कोरूनाद कम्प पहुँचत हा मैं तुम्हें पचास पटियाँ एम जमाऊगा कि जितनी नर यात्र रहेंगी !

मीत्वा ने बोले भन्व ।

पाला बलहम है यह !

म लाघो ! मन एसा ता कभी न ख्वा न मुना ।

कम्पनी-वमाण्डर इस परगानी से भ्रमग हुआ तो उसने घाडे क विखन पर सठक के किनारे की एक खाई में फिमाव गए । उसन एड लगई घोर घाटा वत्तलो के परा के निगाना घोर डेजा के पीने फूला स भर किनारे को धार बढ़ा । इस बीच दूर पर भफमरो की टोनी ठिठकी । सपिटनेट बनस सिर पीछ की घोर कर अपने पनाख स पानी पीन सगा ।

माजेट मेजर ट्रुप स भ्रमग हुआ घोर बुरा-बुरी गानिया वक्त हुए बछडे का भगान सगा । ट्रुप फिर ठीक हा गया घोर टू सौ जाडी भ्रांशो न माजेट-मेजर का रकावा पर खड़े हाकर बछडे का वहाँ में दूर बख देला । पर बछडा ठिठकता सम्ब चौडे स्टलियन क किनारे तक धाना भोर फिर बुलाचें भरता भाग बढ़ जाता । नतीजा यह कि साजेट मेजर उमकी पृष्ठ पर ही चोट कर पाता । पूछ बार हान पर नीची हो जानी पर दूमर ही क्षण हिम्मत से हवा में लहरान लगती ।

यह दृश्य देखकर कम्पनी क लाग ता हूँसे ही भफमर भी टहाके लगान लगे । कप्तान क फुटिल चहर पर भी मुसकान चल गई ।

मीत्ता कोरगूनाव भाग के ट्रुप की तीसरी पक्ति में था । उसके साथ मिग्गाल इवानकाव घोर काजमा ब्रुचकाव थ । दोना ही दान प्रदंग क थ ।

चौडे बहने घोर चौडे कघावाला इवानकाव सा गान्त रहता सकिन बेचक क दागा स भर चहर भोर गान कघावाला ब्रुचकाव मीत्ता क मामक में बार्ड-न-बोर्ड पत्र निवापना रहता । या ब्रुचकोव का सोग ऊट क नाम स पुकारत । वह पुराना बरजान था याना यह उसनी फौजी मवा का घागिरी माल था । हमने मानी य कि येसिल कानूना क नाम पर उस भी 'बूडे क-डाकों का अधिवार प्राप्त था यानी यह भी कम उम्र फौजिया का पीछा करता उन पर हुकम चलाना घोर छाटे-म फरराथ क लिए पटिया जमाना । मजा तय थी—१९१३ में भरती हुए सागों क लिए १३ पटिया घोर १९१४ में भरती हुए कजडाका के लिए १४ पटिया । साजेट घोर भफमर उम श्यक्था का बडावा न्त नयानि

इससे कज्जाक पत्र के साथ-साथ उम्र की भी इज्जत करना सीखते

क्रुचकोव अभी घाबे समय पहल कारपोरल बना था। वह अपने घाबे की काठी पर चिड़िया की तरह जमा बठा रहा। उसने एक भूरे बादल का देखकर आँवें सिंकाड़ी और कम्पनी-कमाण्डर कप्तान पोपोव के सहज ममीत्का सपूछा 'ओ बत लाभा तो ओ कोरगुनाव हम अपने कम्पनी-कमाण्डर को किस नाम से बुलाते हैं ?

मीत्का को अपनी हठधर्मी और हुक्म न मानने के लिए भक्तर ही पटिया खानी पडती थी। ओ उसने बड़े अदब म उत्तर दिया 'कप्तान पापाव साहब बहादुर !

क्या ?

कप्तान पोपाव साहब !

मैं यह जानना नहीं चाहता तुम मुझे यह बतलाओ कि हम कज्जाक अपने बीच उसे किस नाम से पुकारते हैं ?

इवानकोव न मीत्का को आगाह करते हुए भाँव मारी और खीसें बान लगा। मीत्का ने पीछे मुड़कर देखा ता कप्तान भाता नजर आया। ता जवाब दो न !

'कप्तान पोपोव कहते हैं हम सब !

चीन्ह पटिया लगेगी तुम्हें जवाब द दागला कही का !

मैं नहीं जानता साहब !

क्रुचकोव साधारण स्वर म बोला 'कम्प पहुँचन ही मैं तुम्हारी मान सीचकर रख दूंगा। सबान का जवाब दा !

'मैं नहीं जानता साहब !

मीत्का ने कप्तान के घोबे की टाप मुनी और चुप हो गया।

पीछ की पत्तिया म बुछ हसी व फधारे छूटे। क्रुचकोव हमी का कारण नी मभभा। उमे सोग अपने ऊपर हेमत नग। वर गरजा— होगियार रहना कोरगुनाव कम्प पहुँचते ही मैं तुम्हें पचास पटियाँ एस जमाऊगा कि बिन्गी भर मान रहेगी !

मीत्का न कचे भटक !

काना बलहम है य !

"तो तो है"

क्रुचकोव ! पीछे से घावाज भाई ।

बूढ़ा बरजाव क्रुचकाव चौककर एटेशन की हासत में हो गया ।

क्या नाम है तुम्हारा वन्माघ कही के ? क्रुचकोव के बराबर भात हुए बप्पान ने कहा 'इस जवान बरजाव' को क्या समझ रहे हो तुम ?

क्रुचकोव ने पलक झपकाई । उमका चहुरा साल हा उठा । पीछ की पत्तियों स हसा के लहर भाए ।

पिछल साल किस सबक दिया था मैंने ? किसके बदन म नामून मैंने इस तरह गडामा था कि यह टूट गया था ? बप्पान ने अपनी धगुनिया का नाखून क्रुचकाव की नाक म नीचे सात हुए पूछा कभी दुबारा मुनाई न पड़े एसा 'ममक म भाई बात ?

जी हुबूर !

क्रुचकोव ने कंधे मींभे किय घोर पीछ मुडकर देता । बप्पान धापम जाना दीसा । मा क्रुचकोव न अपनी कर्मी मींभी की घोर सिर हिखाते हुए कहा यह बूढ़ा कनहूस यहाँ टपक कहीं ग पडा ?

हँसी म पनीन-यमीन हाते हुए इवानकोव बोला वह हम लागा क पीछे-पीछ ता था ही रहा था बात का घन्टावा रागा निमा होगा उगन ।

काट क उरलू हो निर मुमे घाँव मार दनी चाहिण थी ।

घाँव मार दनी चाहिण थी ?

तुम्हारा ग्याम है कि घाँव नही मारनी चाहिण थी ? 'धीन्ह पत्तियाँ जमा हुइ '

मडिन पर पट्टेचन पर रेजीमट बम्पनिया म बँट गई घोर बम्पनियाँ डिले के भसग भसग इलाको म भेज गी गई । गिन म बरजाव अपने जमीन के भालिका के लिय घास घोर तिनपतिया भास काटने ; रात म निश्चिन मदाना म अपने घोडे चरान घोर बम्पकी घास के घुर्गे के बीच घान सेसत या किस्म-बहानियाँ कहते-मुनते । छठी बम्पनी गोर्लंड के रहनेवात एक जमीदार के टपाके म ठहरी थी । घफसर

मकान में रहते ताग बसते गगन पीत और कारिन्द की लडकी से नज़रें लडाते । कर्जडाका ने अपना डर घर में काफ़ी पासले पर डाले । कारिन्दा डर मुबह डोजकी में सवार हाकर कर्जडाको के पास जाता और अपनी सफ़ेद चमकीली निकोनी टोपी हिला हिलाकर उनक प्रति स्नेह और ममता दितलाता ।

आइय जनाब ! हमारे साथ धाम काटिय । थोड़ी चर्बी घट जाएगी । कर्जडाक उससे कहत । कारिन्दा धीमे धीमे मुसकराता रूमाल से अपना गजा सिर पाछला और फिर साजेंट मञ्जर के पास जानर बतसाता कि घब घास कहीं से काटनी है ।

दोपहर को खाना खा जाता । कर्जडाक मुह-हाय घोने और खाने में लिए जाते ।

उस समय तो वे चुप रहते जबकि बाकी समय उस चुप्पी की भी कमी पूरी कर लन ।

यहाँ भी कोई घास है भला हमारी स्तनी की घास में इसका क्या मुकाबला !

घर पर तो अब तक लोगों ने बटाई खत्म कर दी हागी जल्दी ही खत्म हो जाएगी कन चाँद निकला घा पानी बरसेगा”

अपना यह पोल बढा ही कजर है हमारी माककत के बन्स में एक बातल पिना द तो क्या बिगड जाए उसका ?

जा ही वह पिलायगा आपका” घर उसका बग चले तो बह खुश अपना निर बोटल गिरजे की बदी से उठा लाए ।

देना भाई तुम्हारी बहम बेकार है” आत्मी क पास जितनी ही रकम होनी है उतना ही उमका साजच बढना जाता है समझे न ?

जानर मैं जाकर पूछा जग

‘मालिक की लडकी का दावा है किमी ने ?

कयो क्या हुआ ?

कहन हैं रडी है बिलकुल बन्स पर माँस हा-माँस है ।

‘खर’

३२४ धीरे धीरे दोन रे

पता नहा बात सही है या गलत पर लोग कहत है कि याही
खानदान से उसकी पानी की बात भाई है ।
उसका जसा रमीला भाल किसी मामूली भादमी का नही
मिलेगा

धर लडको मुना है कि हमारा नय सिरे से मुभाइना होने वाला
है और तो भी जल्दी ही हांगा ।

मैने क्या कहा था विल्ले का कुछ और करने को न मिल तो
ता वह मौजूब चढाएगा परो म
उरा एक मिगरेट ता पिनामा यार ।

तुम शतान की और हो और तुम्हारा हाय उतना सम्बा है जितना
गिरज क फाटक पर बठे भिखारी का होता है ।
उरा देखो केदोत देवने म बुजुग है पर का कसा सीचता है

मारी मिगरेट एक फूक म ही राख कर दी ।
धरे उरा फिर दखो सिगरेट औरत की तरह भगार हा
रही है ।

थ पटा कवल लेटे मिगरेटो के का सते रहत । उनकी नगी पीठे धूप
मे जसने लगती । एम ही एक निन मत के सिरे पर पाँच करडाको
ने एक नौमिनिय को घेरा कहां क हो ?

देसान्बाया था ।
नमक की खाना के ?
जो ही ।

तुम्हारी सबन म नमक की गाडियाँ कस स जाते हैं ले जाने
वाने ?
पाम ही दो चार घालावानी घपनी मूँछा क मिर एँटना बुचकाव
मटा रहा ।

पादा क सहारे ।
'और किसके सहारे ?
बला क सहारे'
और नीमिया म मछनियाँ कम सतत है ? तुम जानते हा एक

तरह का बल एसा होना है कि उसका पीठ पर झूबड़ हाता है' काँटे खाता है वह

'ऊट कहते हैं उसे ।

सब ठठाकर हूँस पड़े ।

शुचकोव भ्रलसात हुए उठा और नौमिनिय की भार बना । उम बीच उसने अपन कच गझाय और माटी गन्न भाग की भार बनाई ।

भुको ! अपनी पटी हाथ म लने हुए उसने हुकम दिया ।

जून क महोन म एक तिन दोना समय मिन रह थे कि कड़वाक कम्म-फायर क चारों ओर इकट्ठे हुए और गाने लगे—लाम पर जान वाल सिपहिया' के

'दुभा घोड़े पर सवार ।

बसा छोड घरवार ॥

फिर पलट क नही दखा

उमन गाँव घर को ।

एक स्महली आवाज ऊची उठी गिरा और गहरी कहुणा उमठी

'भव कभी भी नहा भाना उस गाँव घर को

स्वर भव पहने म भी ऊँचे उठे

नार उसकी रतनार

बठी करक मिगार ।

उठनी हिया मे पुवार

भावेँ घर भरतार ॥

पर सिपहिया कहाँ

सौटता है गाँव घर का ।

गान में और भी सोगों न स्वर मिलाय और वह घर की बनी शराब की तरह तीखा और तज हा उठा

'ऊँचे पहाडा क पार

जहाँ बफ एवमार ।

मेवदार भी चिनार

इस पार उस पार ॥

भगवान बसम ! लकिन मुँह मे साँस न निकल इस बारे म ।

अगले दिन मुबह रेजीमंट को बम्पनिया के क्रम से बरक के बाहर खडा किया गया । बमाण्डर का प्रतीक्षा होने लगी । बरका के जाने को पार कर बमाण्डर न रेजीमंट के सामन आकर घपन घोडे का एक तरफ मोडा । एडजुटेंट ने अपनी नाक पोछने को रूमाज निकाला किन्तु उमे इसके लिए समय हा नही मिला । तनाव से भर सन्नाटे को बनस ब गला ने बेधा—

बरकाको !

अब मुनीबन भाई ! हरेक क हृदय म विचार उठा । नमा के तनाव क कारण सब इस्पाल की बमानी-से हा रहे । इस बीच मीत्का कौग्गुनोब क घाब ने कभा यह टाँग बदली तो कभी वह टाँग । मीत्का न बाग-बार उसवे बाजू म एढी लगाई ।

अमनी ने हमारे खिलाफ सडाई छेड दी है

दलों मे बानाफूमी हाने लगी जम कि बडो यानो वाली पयरी जई के मत म हवा का लहरा सहर जाता है । फटी फटी-सी घाँसा धीर खुने मुहा मे सब लोग पहली बम्पनी की घोर दगने लग । यहाँ एक घोडा महसा ही हिनहिना उठा था ।

बनस ने बहुत बृद्ध कहा । उसने राष्ट्रीय गौरव की भावना उत्पन्न करन क लिए मायघानी से श्रुत चुनकर बरका का प्रयोग किया । लेकिन बरकाकी बहना के सामन रेगमी विशेषी भंडे बदमा पर सरसराने माकार नही हुए बलि साकार हुए उनकी अपनी तार-तार हो गई जिल्लियाँ उनकी बलियाँ उनके बच्चे उनकी प्रमियाँ खलिहाना मे पना पडा घनाज धीर मरन म पड़े घनाय गाँव ।

'घटे-दो घटे म ही हम सवार होना पड़ेगा रेल पर' तब यही विचार सबसे निमागा म नाबन लगा ।

रेजीमंट क साग घाडों पर सवार होकर गाने हुए स्टेशन की घार बढ । बरकाकी की भावाज न बैड की भावाज को दबा दिया । अधिकांशिया की पन्निया डोडकियो' म जा रही थी । पगडडियों

पर रग विरग कपड़ा स सजी भीड़ जमा हा गई थी । घाटा क सुरा स धून का बादल उठन गग था । सबके प्राग के गायक न अपने धीरे बाकी लागे के तुल्य की खिल्ली उठान बाए कंधे को त्त तरह मटका कि उसक कंध की नीली पट्टी गिरत गिरत बची । फिर उसने एक फूहड़-मा गीत गाना शुरू किया । गीत स्टेज पर खड़े गाना क नाल डिब्बा तक चला । वहाँ कज्जाक को बिना देने क लिए म्रिया की भीड़ लगे गई । किनी कज्जाक न धीरे की धीरे दबकर भांव मारी ।

पट्टी पर इजिन ने भाप गाना शुरू की धीरे सीटी दी कि लोग तयार हो जाएँ ।

गाड़ियाँ गाड़ियाँ धीरे धनगिनत गाड़ियाँ ।

दग के न्नायु जाल स लौटाया जा रहा था धनमन रुम का खून—
इस खून पर भूरे धोवरकोटा की घाड़ थी धीरे रन की पटरिया के महार यह खून जा रहा था पश्चिम की सीमा की धार ।

७

उमी ताइत पर स्थित एक छोटे-स नगर स रंजीमेंट कम्पनिया स बाँट लिया गया । डिविजनल-स्टाफ के घाट्टे पर छुट्टी कम्पनी तीसरी पदल टुकड़िया की कोर के साथ लगा दी गई । लाग निरन्तर मात्र कग्ने हुए पत्नीकालिय पश्चि ।

सीमा पर धव भी सरहनी ट्रूप का पहरा था । पत्नी पौत्रिया धीरे घडसबाग का नद टुकड़िया वहाँ पहुँचाई जा रही थी ।

२७ जुलाई का कम्पनी-कमाण्डर ने पहल ट्रूप स मार्जेट-मेजर धीरे अस्ताखोव नाम के एक कज्जाक को बुला भेजा । अस्ताखोव दोनहर के काफी बान ट्रूप स लौटा । उन समय मौत्का कोरनूवोव घोडा का पानी दिलाकर लौट रहा था ।

मोटा-नाजा साँवला कज्जाक अस्ताखोव अपनी भोंद्री स पों बाँके दबारर प्राया जग्ने कि कुछ त्त ही न रहा हो । मेजर के पान बटा निवोत्कोव बलावान लम्प की गेशनी स टट्टी लगाम भी रहा था । कुवकोव हाथ बाँधे स्टोव के पाछे गग न्दानकोव स बाँके कर

रहा था। भापड़ी का मालिक एक पौन था और जलदर के कारण पसल पर पडा था। उसका बदन सूजा हुआ था।

अभी अभी उन्होंने एक मजदूर किया था और इवानकाव के गाल में हमारे के कारण गडग पड रहे थे।

'तबका बल सुबह तबक ही हम लिपूवाव की चौका पर पहुँचना है।

खोन गायगा ? उसी क्षण घड़े का दरवाजा पर रखकर भापड़ी में प्रवेश करते हुए मौका न पूछा।

गिचेगात्कोव अचकोव रवाचव पोपाव और इवानकाव।

और मैं ? मौत्वा न पूछा।

तुम यही टहोगे मौत्वा !

अगर एमा है तो गठान उठा ल जाए तुम सबका !

अचकोव स्टोव के पास में हटा और मजदान में पूछन लगा जगह यहाँ से कितना दूर है ?

मही कोई चार घण्टे।

पास ही है। अम्नाखोव ने कहा और बेंच पर बैठन हुए दूर उठार।

साथ दूसरे दिन तबक हा खाना हो गए। गाँव के सिरे पर एक लड़की कुर्से से पानी लावती दीखी। अचकोव ने लगाम खींची धारा पानी कितना दोगा ?

अपने घर के बने स्लट का सिगा पकड़े लड़की ने पानी छपछपाया। 'अरी भूरी घाँसे मुमकराने लगी। उमन बालटी भाग बढ़ाने। अचकोव ने मिरा सापन हुए पाना पिमा ता बालटी के बाक में उमना हाथ दूँ बगन लगा। पीनी की बूँ उद्यम उद्यपतर उमका पतखन की मान पट्टिया पर पडन लगा।

प्रमु मौगु तुम्हारी रखा कर भूरी घाँसा वाली !

अबक हुआ करेगा

लड़की ने याचता की और मुमकरानर साथ घोर नजरें दीखती हूँ घन गी।

दांत क्या निकाल रहे हैं ? बड़ाभो घाड़ा घ्राग ।

रुचकाव नाठी पर इस तरह एक और गिमका जम कि लडकी के लिए जगह कर रहा हो ।

'बड़ो न भ्राग' भ्रन्ताश्राव न भ्रावाज देकर खुं भ्रनना घाड़ा घ्राग बनाया ।

श्रावेव रुचकाव स वाला निगाह हटाय नहीं हटनी है न 'लडकी के पर कबूतर के परा की तरह गुलाबी हैं रुचकाव न हमत हुए कहा तो बाड़ी सभी लोग यत्रवत् मुठकर दबन ना ।

लडकी नुएँ पर नुकी हुई थी । उनके गुलाबी पर फल हुए थ ।

कास कि हम ब्याह कर सकने । पोगाव के मुह स भ्राह निकली ।

भ्रगर मैं भ्रनने चावुक स तुम्हारा ब्याह रचा दु ता ? भ्रन्ताश्राव बना ।

इससे कुछ बात नहीं बनेगा'

हम उस पकडकर बल की तरह बधिया करना पड़ेगा ।

इस तरह भ्रापस में हमत-हमत कज्झाक भ्राग बहन गय । याही दूर बनन के बाद उन्होंने टाल पर स नया की घागी म बसा हुआ बडा गाँव लुबाव देखा । मूरज पीछे स उगा । पास हा टलीफान के सन्ने पर बठी एक लवा चिडिया गानी मिला ।

भ्रन्ताश्राव ने गाँव का सबसे भ्रन्तिम खेत निराभरण-बोका के लिए चुना क्योंकि वह सीना के विनकुल पास था । उसका सफावर मूछों वाला मानिक पालेड का रहनवाना था । ना फेल्ले का मफ्र टाप नगाय-ही-नगाय उनमें कज्झाका का घाड बाँधन के लिए एक शट ग्विलाया । शड के पीछे तिनपतिया धान का हग मगन था । धान के दूमर छोर पर जगल था । भ्रन्ताज के कपूरापनार का एव मडकवाचम कायता था । भ्राग धान उगी थी । वे मुडे कि शड के पीछे का खाड म पहुँचकर दूरक्षाना में सब-कुछ देखेंगे । बाबा लाग शड का गीतन छाया में उट रहे । यह जेन बर्यो से भ्रन्ताज रगने के काम में धा रहा था । उसम भ्रग दृभा था भ्राज धूलसे भरे भूम और पूजा म पग हान वाला बू । धरगा कानमी का मकेत यहाँ भ्रलग से मिलता था ।

३३० धीरे बहे दोन रे

रहा था। भोपडी का मालिक एक पोन या घीर जलोत्तर के कारण पलग पर पडा था। उसका बदन सूजा हुआ था।

भभी भभी उहान एक मजान किया था घीर इवानकाव के गाल म हूँगी के कारण गड्ड पड रहे थ। सडका बल सुबह तक ही हम लिपूवोव की चौकी पर पहुँचना है।

कौन गायगा ? उसी क्षण घडे का दरवाज पर रखकर भापडी म प्रवेग करत हुए मीला न पूछा।

निचगाखोव ऋचबाव खाचव पोपोव घीर इवानकाव। घीर में ? मीला न पूछा।

तुम यहा ठहराग मात्वा। अगर एमा है तो मतान उठा ल जाए तुम सबका।

ऋचबाव स्टोव क पास म हटा घीर मजदान स पूछत लगा जगह यहाँ स जिननी दूर है ?

यही कोद घार वस्त।

पाम ही है। मस्ताखोव न यहा घीर बेंच पर बठन हुए बूट उनार।

साग दूसर तिन तडके हा खाना हा गए। गौव क सिर पर एक नडकी कुण स पानी गीचनी दासी। ऋचकोव ने लगाम खीची धाडा पानी पिना दागी ?

अपन घर क बने स्कट का मिरा पकडे लटका न पानी छपछपाया। उसका भूरी घाँवें मुमनरान लगी। उमन वालग भाग बढाइ। ऋचकोव न मिरा माघत हुए पानी पिना ता घालटी क वाम न उमका हाथ दू करने लगा। पीनी की बूँ उछन उछलनर उमका पतपून की मान पट्टिया पर पन्न लगा।

प्रभु यीनु तुम्हारी रक्षा कर भूरी भोग्य वाली।

स्वर् वृणा करेगा

मदनी न जानगी सा घीर मुमनराकर बाग घीर नडर दीडानी हू चम री।

'दाँत क्या निकाल रहे हो ? बन्नाभा घाँस घाग !
 क्रुचकोव काठी पर इन तरह एक घोर विसका जम कि लडकी व
 लिए जगह कर रहा हो ।
 बने न भाा ! मस्नाखोव न धायाज कर खु मनना घोडा घाग
 बनाया ।

खावेव क्रुचनाव स बाला निगाह हटाय नही टटती है न
 'लडकी व पर नवूनर व परा की तरह गुलावा है क्रुचकाव न
 हसन हुए कहा तो बाकी नमी योग यत्रवत् मुडकर दखन लग ।
 नडकी कुण पर भुकी हुई थी । उसक गुलावा पर फन हुए थे ।
 बास कि हम ब्याह कर सकते ! पोनाव क मुह स भाट निकला ।
 अगर मैं मरने चाबुक स तुम्हारा ब्याह रचा दू तो ? मस्नाभाव
 बाला ।

'इसस कुछ बात नहा बनेगी

हम उस पकडकर बल की तरह बधिया करना पडेगा ।

इस तरह आपम म हसते-हसते कजडाक घाग बदन गय । घाठी
 दूर चलन क बाउ उन्होंने टान पर स नया की घागी म बना हुआ
 बडा गाँव ल्युबोव दखा । सूरज पीछे म उगा । पाम हा टलीजान के
 खम्भ पर बठी एक लवा चिडिया गाती मिला ।

मस्नाखाव ने गाँव का सबसे मन्तिम सत निरीक्षण-बोका क लिए
 चुना क्योंकि यह सीमा क विलकुल पाम था । उसका मपावत् मूछा

बाना मालिक पालेड का रहनवासा था । सा फल का सफ़्ट टाप
 नगाय-हा-लगाय जमन कजडाका का घाड बाँधन क लिए एग शड
 थिलताया । शड क पीछे निनपनिया घाम का हरा मदान था । टाल क दूर
 छार पर जगल था । मनाज क कपूरी पसार का एग सडक बीचम बापता
 थी । घाग घान उगी थी । व मुडे कि शड क पीछे का सार्ई म पहुँचकर
 दूरवाना म सब-कुछ देखेगे । बाबा नाग गट का गीतल छाया म सट
 रू । यह शड वर्षों में मनाज रमन क काम म धा रहा था । उसम मग
 हुआ था घाज धून स भरे भूस घोर पूटा स पना हान बाला दू । धरता
 कीनमी का सनेत यहाँ मलग स मिलता था ।

३३२ थोरे बड़े बोन रे

इवानवाव एक झपरे काने म पडे हल के पास भाराम म सो गया ।
मूरज हूवन क समय कुचबाव वही भाया और उसकी गनन म चुटकी
काटत हुए वाला मूरर सो रहा है पीज की हराम की राटी मे
फूलता जा रहा है । उठ और जावर पहरदारी रर—जमना पर निगाह
रख ।

बेवभूप घनाना बल करा काजमा ।
तू उठकर तो वठ ।

चुप भी रह मैं अभी उठता हू ।

इवानकोव उठा और उसन अपनी गरलन इधर उधर हिलाई हुमाई
इस बीच उस छोके भाइ । नम जमीन पर खटने के कारण जुकाम हो
गया था उस । अब उसने अपनी कारतूसो वाली पेटी ठीक की और
राइफल का जमीन पर घसीटता बाहर भाया । उसन गिबेगाल्कोव की
जगह सी । उस पहर मे मुक्त किया ।

गिबेगोल्वाव दोपहर क बाद म बराबर डपूटी पर रहा था ।
इवानकोव न स्वय दूरबीन लगाकर उत्तर-पश्चिम क जगन की ओर
दखा तो हवा म मूमनी भन्न की बालियाँ गिलाई दी और साली म हवा
दक्कनर का पूरा-का-पूरा जगल । गाँव क पार दानदार नीले मोड पर
मियत पानी की धारा म कुछ बन्चे छप-छप करत और सोरगुन करत
नजर धाए । कई औरत भावाज दनी मुन पडो स्तास्मया । स्तास्मया ।
यहाँ था । गिबेगाल्कोव न एक मिगरेट जलाई और भेड म बापिम
सौटवर वाला मूरज हूव गया है जग भाममान के रगा की छू तो
दखो । हवा चरगी भाज

है दायर चलगी । इवानकाव न दान का ममयन किया ।
उस रात घाटा पर साज नहीं बन गए । गाँव म नाम का भी
रागनी नहीं का गई । एक भावाज वहीं मुनाई नहा पठी ।
दूमरे तिन गुबह चुचकोव न इवानकोव का शब्द से बुलाया । बोला
भायो नहर चला जाए ।
भागिर क्या ?
रात क माप-माप कुछ पीन का भी दायर मित जाए यहाँ ।

मिल जायेगा इवानकाव के मन म सन्दह रहा ।

जबूर मिलेगा । मैंने अपन मेजवान से पूछा था । उसने वहाँ उस घर का पता बताया—देखते हा वह खपरली छत ? क्रुचकोव न अपने काल नाखून वाली अगुली से इशारा किया वहाँ वीयर मिलगी आभा चलें !

दाना बाहर निकल । अस्ताखाव ने पीछे म आवाज दी कहीं जा रह हो तुम लोग ?

क्रुचकोव प्रौजो पद की दृष्टि से अस्ताखाव से बढा था । उसने उम टरकाया हम अभी आत है ।

मा जाना वापस !

भूँसना बन्द कर !

इसी समय घुघराल वाला घाने एक यहूदी न भुक्कर उनका अभि वादन किया ।

' वीयर है ?

यी ता लेकिन बची नहीं साहब ।

हम उसकी कीमत अदा करेंगे ।

अभु यीशु माँ मेरी ! साहब मैं ईमानदार यहूनी हूँ । मरी बात का यकीन कीजिय । अब वीयर नहीं है ।'

तुम झूठ बोन रहे हो !

बग्डाक साहब मैं आपस कह रहा हू

यह देखो क्रुचकोव एक गल्ली-मी घली अपनी पतलून नी जब स निकालते हुए बोना चाहे जहाँ से लामो चाडी-मी वीयर लामा नहीं तो मैं नाराज हो जाऊगा ।

यहूदी ने सिक्का हथेली म दबाया अपना ऐंटा हुभा हाठ नीचा किया और गलिया म गया ।

एक क्षण बाद ही वह जो क भूम म लिपटी एक बोनन बोदना निय हुए आटा ।

धीरे तुमन तो कहा था कि तुम्हार यहाँ गरब है ही नहीं ?

मैंने कहा था कि वीयर नहीं बची ।

बुद्ध खाने को भी लाओ ।
 ऋचकोव ने डाट आसानी से खोलने क लिए बोटल के पेंदे पर
 हथेलियाँ जमाईं और प्याले म घोद्धा उठेली । वे लौटे तो माधे नशे में
 पूर । ऋचकोव लखड़ाते हुए भागे बढा । वह खिडकिया ब खानी
 काले चौकटे की ओर हाप उठा-उठाकर मुट्ठियाँ दिखाता रहा ।
 गड म प्रस्ताखोव जम्हाइयाँ लेने लगा । दीवार की उस तरफ घोड़े
 गीली घास खाते रहे ।

भगला दिन घालस म बीता । दोपहर ब बाद पोपोव को एक रिपोर
 देकर कम्पनी वापस भेजा गया ।

शाम हुई । रात माई नय चाँ का पीसा घेरा गाँव के ऊपर उठा ।
 भगीचे स जय-नय पके सेय ब गिरने की आवाज माई ।
 इवानकोव पहरा रता रहा कि कोई मायी रात के लगभग गाँव की
 सब्ब स उस घोडा की टापें मुताई दी । वह खाई से रेंगवर बाहर
 भाया । लकिन चाँद वापला म छिप गया तो उस घुप भँधरे मे उसे कुछ
 भी लिखलाई न लिया । उसने जाकर दरवाजे पर मोने ऋचकोव को
 जगाया ।

कोबमा ! घुडसवार आ रहे हैं । उठो ।

वहाँ स ?

गाँव म मालम होन है ।

व दोना घानर भाय । टापा की आवाजे कोई सौ गज के फासन पर
 सड़क की ओर न आती रही ।

वाग म चलें वहाँ स और माफ मुताई देगा ।

व भावडी पार पर दौड़ते हुए सामने के छोटे बगीच म गय और
 और माजा की चरमर पाम आती गई थी । फिर उग्ह घुडमवारो के
 पुंपले डीच लिवाई दन लग । व चार व और चारों भगल-बगल से ।
 कौन लोग हो ? ऋचकोव ने डौटकर कहा ।
 और मुम क्या चाहत हो ? किमी नरमी म मवान के चरम
 मवान बिजा ।

कौन है ? मैं गोली मार दूंगा । क्रुचकोव ने अपनी राइफल का कुन्दा खटकाया ।

एक घुड़सवार ने अपना घोड़ा रोका और उसे बहारलीवारी की ओर मोड़ा । वोना हम सीमारक्षक ह । क्या तुम चौकी के पहरेदार हो ?

जी हाँ ।

किस रेजीमेंट के ?

तीसरी बज्जाक

त्रिगीत किमसे बातें कर रह हो ? भवकार खीरना हुआ एक स्वर धाया ।

बहारलीवारी के पास खड़े व्यक्ति ने उत्तर दिया यहाँ बज्जाका की चौकी है हजूर ।

अब दूसरा घुड़सवार बहारलीवारी के पास अपना घोड़ा लाया ।

हलो बज्जाको

हो नवानकोव ने नये-नूने डग स जवाब दिया ।

क्या तुम लोगो को यहाँ बहुत दिन हो गए ?

नहीं मिफ बल स हैं हम यहाँ । दूसरे घुड़सवार न न्यासलाह की भीली स सिगरेट जनाइ । दायिब प्रकाश म क्रुचकोव न सीमारक्षक दल के अधिवारा को न्वा । अफसर बोला हमारा रेजीमेंट वापस बुलाया जा रहा है । तुम्हें यह भ्रनना नहीं चाहिये कि तुम्हारी चौकी सबसे धाग की है । हा सकता है कि दुश्मन बल आगे बडे । अब वह मुडा और उनन अपने धान्मिया को आगे बदन ना आदेश दिया ।

‘आप कौन बडे जा रहे हैं हजूर ? क्रुचकोव न अपनी राइफल के धाड़े पर अगेनी रखकर पूछा ।

हम अपनी कम्पनी म जा रह हैं कम्पनी यहाँ से दो यस्ट के फामने पर है । अचद्धा साधियो धलो अचद्धा बज्जाको अलविदा ।

उसा दाय हवा न चद्रमा को छिपानेवाला बादल बेरहमी म धीर दिया । अब गाँव पर बागा पर भाजडियों के पानी स तर छप्परा पर और पहाड़ी पर चढ़त सीमारक्षक न न्न पर मौन की-भी पीली रोगनी

द्या गई ।

अगल दिन रिपोर् लनर साधेव कम्पनी लौटा । रातमर घोड़े कस खड़े रह । कज्जाव भयभीत रहे कि अत्र शत्रु का सामना करन क लिए अकन व ही रह गए हैं । जब तक उह यह विवास रहा कि हमारे आगे सीमारक्षक है तब तक उहे कटाव और अवेसापन अनुभव नही हुपा । लकिन जब उह पता लगा कि सीमा पर अब कोई नहा रहा वे विचरित हो उठे ।

अस्ताखोव की पोलडवासी किसान स बातें हूइ और उसन घोड़े स पसा म ही घोड़ेके लिए तिनपतिया काट सने की अनुमति दे सा । चरागाह भट स दूर नही थी । अस्ताखोव ने इवानबाव और शिचेगो रोव को घास काटन क लिए भजा । वहाँ शिचेगास्कोव ने घाम काटी और इवानकोव ने हूगी से बटारकर गटठर बाँधे ।

व दोनो घास काटने म लगे रहे कि अस्ताखोव ने दूरबीन उठाई और सीमाको जाने वाली सडक पर निगाह दौड़ाई । सहसा ही उसे कोई सडका दक्षिण-पश्चिम क सतो को पार कर भागता नजर आया । लडका पहाड से नीचे की आर साल खरगोण की तरह दौड रहा था । जब आसना थोडा ही रह गया तो वह चिल्लाकर कुछ बोला और अपने कोट की सम्बी आस्तीन हिनाने लगा । लडका अस्ताखोव क पास आया और अपनी आँखों को नधाते और हाँपते हुए बोला

कज्जाव ! जमन कज्जाव ! जमन आ रह है ।

उसन अपन हाथ स इंगित किया । अस्ताखोव न अपनी आँखा पर दूरबीन अढ़ाकर देला तो दूर त घुडमबारा का एव दन आता दीला । दूरबीन हटाप बिना ही वह चीखा कचकोव दौडपर साथिया का बुलाआ । एव जमन दस्ता आ रहा है ।

कचकोव भागा भागा घास क मदान म गया ।

अब अस्ताखोव को घास क मदानों की भूरी पट्टिया क पीछे घुडमबारा का दन स्पष्ट दील पडने लगा । उसे घोडा का नाल रंग तथा पीरिया की बलिया का हलना नीला रंग भी साफ नजर आन लगा । उनही सख्या बीम से अर्धिक थी और व घोडा पर सवार घाम-घाम थ ।

उसका विश्वास था कि जमन उत्तर पश्चिम स आयेंगे किन्तु व आ रह व दक्षिण-पश्चिम स । सडक पारकर व ढलवाँ टील व सहारे-सहारे घाटी म उतरे । वही तो गाँव था ।

हाँफते हुए इवानकाव घन मे घास ठूम-ठूसकर भर रहा था । पोन अपना पाइप चूसता पास ही खड़ा था और अपनी पेटी मे हाथ स्वाम अपने टोप व छज्जे स गिचेगोल्कोव का एकटक देखना जा रहा था । गिचेगोल्कोव घास काट रहा था ।

इसी को हसिया कहत है ? गिचेगोल्काव न हसिय को हाथ म लत हुए पूछा इसस घाम कटती है ?

मैं तुम्हे इसी से घास काटकर खिला दूँ । पान न जवाब दिया और एक भगुली अपनी पेटा स बाहर निकाली ।

यह हसिया तुम्हारा वस इस लायन है कि इसस भोग्त की सही जगह की घास साफ की जा सके ।

हाँ भा मा तो है पान जससहमत हुआ ।

इवानकोव हसा और कुछ कहने ही जा रहा था कि पीछे मुन्न पर उस ऋचनोव ऊवड-खावड सेत पार करना और अपना हाथ बटार पर रम दौड़ता नजर आया । पास भात हुए चौवा छोडा यह काम ।

यात क्या है ? गिचेगोल्काव न हसिय की नोक जमीन म गड़ाई ।

जमन आ गए है

यह मुनत ही इवानकाव क हाथ स घाम व गट्टर छूट पडे । पान दोहरा होने हुए इस तरह अपने घर की घोर भागा जस कि गोलियाँ उसने मिर व ऊपर सनसना रही हा । व शं म पहुँचे और हूँकर घाडा की पीठी पर सवार हुए कि पेलिकानिय की घोर स लमी गाँव म घुमन दीन । बज्जाक उनसे मिनन को लपक । घस्ताखाव न बम्पनी व कमाण्डर का सूचना दी कि जमना का एक टुकड़ी पहाडी की तरफ स गाँव की घार बढ रही है । कप्तान न उसके जूनो व धून म नहाय पजा ना आर दया घोर मरन खावाड म पूछा किनन हैं गिनती म ?

दीम स क्याना

मुझे और ठार की तरफ हमला करने बड़े। इवानकोव ने अपना घोड़ा मारवा। इस समय उसने जर्मन अधिकारी को देखा तो सफासफ मूँछोवाला उसका चिंता में हूँवा चेहरा तथा काठी में मूर्खित्व जमा उसका स्वरूप उसका दिमाग में जम गया। उसकी पीठ में ऐसा दृढ़ होने लगा जैसे कि मौत आ जाएगी। बिना उपर किये उसने अपना घोड़ा अपने साथियों की ओर बढ़ाया।

अस्ताखोव को शतनी साँस भी नहीं मिली कि वह तम्याकू की पत्नी ता अपनी जब मरने लगी। जर्मन की इवानकोव का पीछा करते देख क्रुचकोव ने सबसे पहले उनकी ओर अपना घोड़ा बढ़ाया। दाहिनी ओर के जर्मन बुद्धसवार इवानकोव पर धार करने के लिए बराबर उसके पास आते जा रहे थे। इवानकोव चाबुक-पर चाबुक जमात हुए घोड़े को मगाए सा रहा था। उसके चहरे पर भय प्रकृत था और आँखें निकली पड़ रही थी। अपनी काठी पर झुका अस्ताखोव सबसे आगे पहुँचा।

जिसा भी क्षण उनके हाथ पड़ सकता है मैं। उस एक घड़ी छपाल या इवानकोव के दिमाग में। दुश्मन का सामना करने की बात सामन आइ ही नहीं। उसने अपने लम्बे-चोड़े शरीर को गद की तरह समेट लिया। उसका सिर घोड़े की घायल के बराबर आ गया।

एक लम्बे-चोड़े ताल, चेहरा वाला जर्मन ने इवानकोव के पास पहुँच कर उसकी पीठ में अपनी बर्छी घुसेट दी। बर्छी बदन में एक इंच गहराई तक घुसनी चली गई।

'सौतेले भाइयो' पागला की तरह चीखकर उसने अपनी तलवार गायी घात हुए वार को रोका और बाह ओर में आते हुए एक जर्मन की गन्ध उड़ा दी। बिल्टु धर सुन फिर चुका था। एक जर्मन घोड़ा उसके घोड़े में आ टकराया। उसका घाटा सहनशायी पर फिर सम्हल गया। सामन ही एक दुश्मन का चहारा भ्रमरा।

मदन पत्तन अस्ताखोव उस दन तर पहुँचा। उसे लम्बे लिया गया। उसने अपनी तलवार गायी ओर माँप का धक्का की मछली की तरह अपनी काठी में लेंटा। उसकी दाँती मिथ गई हो पड़क उठे और उसका चहारा मौत का तरह भयानक हो गया। इवानकोव की गन्ध में तलवार

की नाक गडा । बाइ घोर म एक जमन घुइसवार मक ऊपर चटना बना
 घाया घोर इस्पात की चमक म उसकी आँखा म चकाचौंध पग हो गई ।
 उमन तनवार न हमल का जवाब हमन न दिया । ताहा ताहे सटकगदा ।
 किसीन पीछे म उसने क घा की पग म उबरलम्नी बर्छी घुसडी । पटी पग
 गई । सामन स पसीन म तर एक बीमार-म प्रीन जमन न इवानकाव
 क बस म अपनी तनवार घुमठनी चाही किन्तु अमफल रहा । तनवार
 उमन पटक दा घोर काठी का थली सध्यात बन्दूक निकाला । इम बीच
 इवानकाव क चेहर स उमन एक बार भी मपकनी आँखें नहा टगाई । वह
 अपनी बन्दूक निकालने म भी अमफल रहा क्यकि किसी जमन का बर्छी
 छीनकर घाडा दौडाता क्रुचकोव पास आ पहुँचा और उम पर मपट पडा ।
 अपन मोने स बर्छी को निकालकर जमन डर और अचरज म बगहना हुआ
 पीछे की आर लुटक गया ।

आठ घुइमवारा न क्रुचकोव का जीता-जागता पकड लन क दिग
 उस चारा घार से घेर लिया । किन्तु उसन अपन घोडे को पिछली टाँगा
 पर लफा कर एसा तोहा लिया कि दुमन न इमक टुकडे-टुकडे कर
 डानन को नमर कम ली । उमन छीना हुइ बर्छी का इन तरह प्रसाग
 किया जस कि वह जमीन पर हो । पीछे हटे हुए जमन अपनी तनवारों
 से उमकी घोर बट्टे । व जमान के एक जुन हुए टुकड पर चकटठ हो ग
 और एस इघर-उघर करन लग जस कि हवा उन्ह रुकमार रही स ।

बज्जाक और जमन दोना ही मय म बौगला उठे । जो नी दुमन
 भाग घाता व उमका जो भी अग पात नाट डानन—पीठ बाँट, घोडा
 हथियार, कुछ भी । मौत की आगका से पागल घाडे एक-दूसरे का घक्का
 देने और आपस म टकरा जात । इवानकोव न मम्हलने ही सम्बे चेन्ने
 सन क-स बालावाल एक पास क जमन पर नितनी ही बार बार किया
 किन्तु उमकी तनवार उमके गिरम्बाए पर पडकर बार-बार फिमनना
 गई ।

अम्नाखोव उन झूह म निकलकर रक्त का घार बहाता हुआ भाग
 लडा हुआ । जमन अपमर न उमका पीछे किया । अस्तास्ताव न कपे स
 राफन उतारकर ठीक भीष म निगाना नाथ गोली बना स । अघिकागी

मुझे और डात की तरफ हमला करने को बड़े । इवानकोव न अपना घाटा भोटा । इस समय उसने जमन अधिवारी को देखा तो सकाचट मूँछोवाला उसका चिता म हूवा चेहरा तथा बाठी में मूर्तिपत् अमा उसका स्वरूप उसके निमाग म जम गया । उसकी पीठ म ऐसा दद होने लगा जैसे कि मीत आ जाणगी । बिना उप क्रिय उसन अपना घाटा अपने साधिया की घोर बढ़ाया ।

अस्ताखोव को इतनी साँस भी नहीं मिली कि वह तम्बाकू की धली तो अपनी जेब में रख सता । जमना को इवानकोव का पीछा करने देख क्रूचकोव न सबसे पहले उनकी आर अपना घाटा बनाया । दाहिनी आर क जमन पुङ्गवाक इवानकोव पर बार करने के लिए बराबर उसके पास आते जा रहे थ । इवानकोव चायुक पर चायुक जमात हुए घोड़े को भगाए ला रहा था । उसने चेहरे पर मय अर्चित था और आँसू निकला पड़ रही थीं । अपनी बाठी पर मुजा अस्ताखोव सबसे आगे पहुँचा ।

बिस्सी भी क्षण उनके हाम पड़ सनता हूँ मैं । वस एक यही खयाल था इवानकोव के निमाग म । दुःमन का सामना करने की बात मामन आई ही नहीं । उसन अपने लम्ब चौड़े शरीर को गल की तरह समेट लिया । उसका सिर घोंडे की अघाल के बराबर था गया ।

एक लम्बे-चौड़े लान, चेहरे वाले जमन न इवानकोव क पास पहुँच कर उसकी पीठ म अपनी बर्छी घुसेड दी । बर्छी बदन में एक इव गहराई तक घुसनी चली गई ।

सोने भाइयो ! पागला की तरह चीखकर उसन अपनी तलवार पीची आने हुए वार को रोका और बाहूँ और में आते हुए एक जमन की गल उठा दी । बिन्दु वह कुछ धिर मुजा था । एक जमन घोडा उसके घोड़े न आ टकराया । उसका घोडा लटपटाया पर धिर सगहन गया । सामने ही एक दुःमन का चहारा अमना ।

सबन पहले अस्ताखोव उस दल तक पहुँचा । उसे सग्रेड लिया गया । उसने अपनी तलवार पीची और साँप की शकन की मयनी की तरह अपनी बागी म तेंटा । उसकी दाँनी निच गई होंठ फटक उडे और उसका बहुरा मौन की तरह भयातक हा गया । इवानकोव की गदन म तलवार

को नोक गडी । बाइ और से एक जमन घुडसवार उसके ऊपर चला चला आया और इस्पात की चमक से उसकी आँखा में चकाचौंध पदा हो गई । उसने तलवार से हमले का जवाब हमले से दिया । सोहा लोहे से टकराया । किसी ने पीछे स उसके कंधो की पेटो म जबरदस्ती बर्छी घुसेडी । पटी पट गई । मामन से पसीने में तर एक धीमार-से प्रो जमन ने इवानकोव के बक्ष में अपनी तलवार घुसडनी चाही किन्तु असफल रहा । तनवार उसन पटक दी और काठीकी धली से छोटी बन्दूक निकाली । इस बीच इवानकोव ने चेहरे से उसने एक बार भी भपकती धाँसैं नही हटाई । वह अपनी बन्दूक निकालने में भी असफल रहा क्योंकि किसी जमन की बर्छी छीनकर घोडा दौडाता क्रुचकोव पास आ पहुँचा और उस पर भपट पडा । अपने सीन से बर्छी को निकालकर जमन डर और धक्कर स बगहता हुआ पीछे की ओर लुडक गया ।

आठ घुडसवारो ने क्रुचकोव को जीता-जागता पकड लेने के लिए उसे चारो ओर से घेर लिया । किन्तु उसने अपने घोडे को पिछनी गगा पर लडा कर ऐसा सोहा लिया कि दुश्मन ने उसके टुकड-टुकडे कर डालने को कसर कस नी । उसने छीनी हुई बर्छी का उस तरह प्रयोग किया जैसे कि यह जमीन पर हो । पीछे हटे हुए जमन अपनी तनवारों से उसकी आर वने । वे जमान के एक जुव हुए टुकड पर इनटठे हो गए और ऐसे इधर उधर करने लगे जैसे कि हवा उह झुकझोर रही हो ।

कज्जाक और जमन दोनो ही मय में वीखना उठ । जो भी दुश्मन आगे आता वे उसका जा भी भग पाते काट डालते—पीठ बाँह घोडा हथियार कुछ भी । मौत की आगका से पागल घाडे एक-दूसरे को धक्का देते और आपस में टकरा जाते । इवानकोव ने सम्हनत ही लम्बे चेहरे सन के-से बालाबाले एक पाम के जमन पर कितनी ही बार बार किया किन्तु उसकी तलवार उसका गिरग्राण पर पत्कर बार बार फिमरना गई ।

अस्ताखोव उस ब्यूह में निकलकर रक्त की धार बहाता हुआ भाग लडा हुआ । जमन अपने मरने से उसका पीछ किया । अस्ताखोव ने कंधे से राइफल उतारकर तीन सीध में निगाना साथ गोली चला दी । अधिकारी

८

वाट म इस घटना का वीर-नाथा का रूप द लिया गया । कृचकाव कम्पनी कमाण्डर का बहूत प्रिय था । उमन इस घटना का खूब बड़ा चढ़ा कर सुनाया और उस सेंट-जाज का क्राम भिन्न गया । उसक मापी मामन भा हा न पाण । दूर का नियुक्ति डिप्टी-इन्सपेक्शन-ऑफ-द-प्रधान कार्यालय म हा गई । वहाँ युद्ध की समाप्ति तक वह सुख-सुविधाओं स घिरा रहा । उम तीन काम और भिन्न क्याकि पीतमवुग और मास्का स प्रभावशाली अफसर और औरतें उम देखन चाहि । महिशाघना ने उम दान प्रार्थन क करवाक का बेगकीमती सिगरटें और चावलें भेंट किय । पहल तो वह उहें कोमता रहा लेकिन वाट म अविहारिया की वस्तियाँ पहन चापलूम स्टाफ क असर स उसन अच्छा घना खाज निकाला । वह अपने वारोचिन काय का खूब बग चढ़ाकर वगुन करता । इसम उम आत्मा कचाटता वचिन उसन इस प्रकार रती भर भी ध्यान नही लिया । औरतें उस करवाक पगक्रमी का देखकर प्रमदना स भर उठती । उसक चेहर भर म चंचक के दाग थ और वह रखने में डाकू-मा लगता था ।

जाग न प्रधान कार्यालय का दौरा किया । कृचकाव का जागर क मामन पण किया गया । निष्ठा म सम्राट न कृचकाव की आर इस तरह दवा जस कि वह आत्मा न होकर पाडा हा । अपनी भारी पलकें अफसान हुए सम्राट ने करवाक की पीठ ठोंकी ।

'शाबाश करवाक !' वह वाता और अपने साथ के सागा की आर देखकर उमन कृद्ध मल्लज्वर पाना मीगा ।

कृचकाव का चित्र समाचारपत्रा और पत्रिकाघना म बराबर छता । उसके नाम म सिगरटें निकली । निजनातोवोगारण क सापागिया न उम मान स मनी एक कटाग भेंट की ।

अस्तामत्र न त्रिम जमन अफसर का मारा था उनका बर्ण प्लाइवुड बाड का भेज दा गन । फिर जनरल वान रल्लनबाम्फ न उन घाना मानी पर रखा इवानकाव और एड्युटेण्ट न उस साथ और सवारी नडाट पर जानेवासे टू पा क सामन म निकली । साथ ही भाषण या लिया गाया गया प्राण उगती गइ ।

पर मन्त्रमुच वान क्या थी ? वान यह थी जि जिन इमाना का दूसरे इसानों का तलवार क घाट उतारन का धम्यास न घा मौत के मन्त्रन म एक दूसरे म गूथ गए थ । मरन का डर उनक लिखा म जड पकड़ गया था । नतीजा यह कि वे श्रम्य हा गए थ । उनक सामन जा भी घाया था उसीको उन्नि हलान कर डाला था । न आदमी का ख्यान था न घाटा का । पर उसी वाच एक आदमी जा गानो खाकर गिर गया था ता क बोखनाकर भाग खडे हुए थ । यानी व आत्मा म पूर पूर हाकर गीटे थ ।

घोर म घटना का बीर-गाथा की मजा दी गई थी ।

मोचें क नाग ने फन तो बाद म ताना था अभी क्या था । पर सीमा पर धुम्वारा क बीच छाटी-मोटी मुठभेड़ें और लडाइयाँ बराबर हानी रही । लडाई की थोपणा क कुछ जिना याद ही जमन कमान न पुडमवारों की छाटी छोटी दुकियाँ भजी । य दुकियाँ रूसी चौकिया क पास से निकनी ना उनम धवराहट पल गई । भाय ही उठाने जामूसी कर धुमन की फौज की दुकिया की गिनती भा मानूम कर ला । जनरल कालिन की कमान स धुम्वारा क बारहवें डिविजन ने घाटवी रूसी फौज का मुघाना किया । इस बीच पुडमवारा का ग्याह्रवाँ डिविजन आस्ट्रिया की सीमा तक बढ़ गया था पर सेसुनुब घोर कानी क अधिभार क वा म्मका भाग वटना रोक लिया गया था क्याकि आस्ट्रिया की हगरी के धुम्वार मिन गए थ । हगरी पुट मवार रूसी मूनिटों पर टू पडे थ और उन्नि उर्ब्रोनी तर खड़े दिया था ।

। ६

प्रिमोगी मन्त्रवाच अपनी पन्नी लडाई के वा म बगवर एक भयानर आन्तरिक वेपना म पाहित रहा था । यह बतून दुवना हो गया था । उगवा बजन घट गया था । क्म त्रागता हाना या माना हाना उस बराबर उम आस्ट्रियन का ध्यान रहता जिने जगते के पाग उसन जान मे मार डाला था । मोता तो वह निरन्तर अपनी पहनी लडाई मपने म देखता । कभी-कभी उगवा दायाँ हाथ भय म फक्कन मगता । रूसी हाथ स तो

उसन उस समय वर्यीं साधी थी। वह जाग उठता। उसके माथे पर बल पड़ जान। वह भाँसा पर हाथ रखता और सपना भुलाने की चेष्टा करता।

घुड़सवारा न पके भनाज को रौंद डाना। खेतों मर म घोडा के बुरों के निगान उस तरह वन गए नानो सारे गलिगिया पर भोले पड़े हा। फौजिया के भारा वृत्त की सटाखट से सबके गूँज उठी। उन्होंने गिट्टियाँ उखाड़ डानी भगस्त की कीचड़ रौंद डाली। धरती का उदास मुख बमा से दाग-रंगीना हो गया। मानव रक्त के प्यास लाहे और इस्पात के टुकड़े धरती को वेधत चल गये। रात में क्षितिज पर भूरी आग टिम टिमान लगी। पेड़ गाँव और नगर गरमी के दिना की बिजली की तरह दहकने लगे। भगस्त में यो तो फल पक जाते हैं और भनाज कटाई के लिए तयार हो जाता है पर इस धार भासमान उगान और भूरा रहा। हवा उस रहे रहकर भूकभोरती रही।

भगस्त सत्तम हान का भाया। बाग-बगीचा में पत्तियाँ पीली पड़ी और डठनें बगनी हा चली। दूर से ऐसा लगता जैसे कि पड़ा के बदन में घाव हो गए हैं और उनका खून वह रहा है—मौत के सक्त-मा।

प्रिगोरी ने अपने साथियों में होनेवाले परिवर्तना को बड़ी दिलचस्पी से लेता-समझा। प्राखोर डिक्कीव अस्पताल से लौटा तो गाल पर धोड़े की नाल का निगान लेकर। उसके हाठा के सिरों पर घनात आनुलता और बगना करवटें बंदलती। उसकी पलकें पहल से ब्याप्त भूपतीं। येगोर भारकोव गालियाँ देन और इसमें खान का कोई भी मौका हाथ में निकलकर जान नहीं देता। वह पहले से अधिज फूहड़ हो गया था और धूप में बठा हर चीज को शोभता रहता था। यमेल्यान प्रागेव प्रिगोरी के ही गाँव का गम्भीर और होगियार बड़शाक था। उसका चेहरा काला पन गया था जैसे कि जलकर कोयला हो गया हो। उसकी हूँसी मही हो उठी थी। उसमें उगसी नजर आती थी। कोई चहरा ऐसा न था जो बस्त न गया हा। हर धन्तर में युद्ध में जमा बगना के बाज फूल फल रहे थे।

रेजीमट को तीन दिन के आराम के लिए भोचेंसे हटा लिया गया। उसकी बनी दोन प्रश्न के जवानों की भरती से पूरी की गई। प्रिगोरी

३४६ घोरे बहे दोन र

की कम्पनी के कञ्जाक पास की एक भील म नहाने के लिए तयार हुए कि लगभग तीन बस्ट दूर के एक वेद्र से घुड़सवारो का एक बहुत बड़ा दल गाँव में दाखिल हुआ। कञ्जाक भील के बाँध तक ही पहुँच पाए कि घुड़सवार टुकड़ी पहाड़ी से नीचे उतरी। कमीज उतारते समय प्रोखोर जिंकोव ने मुँह ऊपर कर सामने देखा तो चीख उठा अरे ये तो कञ्जाक है—दान के कञ्जाक।

प्रिगोरी ने देखा कि साँप की तरह रँगता हुआ दल चौथी कम्पनी के पड़ाव वाली सड़क पर बढ़ा चला आ रहा है।

मेरे खयाल से नई भरती हुई है।

देखो वह तो स्तीपान अस्ताखोव ही मालूम पड़ता है सामने तीसरी पक्ति म। प्रोगव ने चित्लाकर कहा और ठठाकर हुआ।

और वह प्रनीकुञ्जा है।

प्रिगोरी तुम्हारा भाई भी तो है। सुमने देखा ?

प्रिगोरी ने भाँवें सिकोड़कर प्योत्र के घोड़े को पहचानने की कोशिश की। नया घोड़ा लामा होगा उमन सोचा और अपने भाई को देखने लगा। इस बीच वह बहुत बदल गया था। उसका रंग और साँवला पड़ गया था। मुँहें बाकायदा बटी हुई थी।

टोपी उतारकर हिलाता हुआ मगीन की तरह प्रिगोरी उससे मिलने का बड़ा। उसके पीछे-पीछे आधी दर्जन अचानके कञ्जाक भी हो लिए। एनेतिवा और मुरदाव के पीछे उनके परो के नीचे रौंद उठे।

आगे-आगे था एक बुजुग-मा बप्तान। उसक बेहरे और सफाबट मूँछा से लगता था कि वह है तो अफसर पर बड़ा ही ठस निमाग का आन्मी है। उमने पीछे पीछे आ रही थी झूमती झूमती टुकड़ी। टुकड़ी बगीच स घूमकर जागोर म दाखिल हुई। प्रिगोरी ने बप्तान पर निगाह डाली तो वह उमने पूरव के किसी इलाक का लगा। प्रिगोरी अपने भाई को देखकर हृय स विह्वल हा उठा।

'हलो प्योत्र। उमने मुँह म बाफ़ी डार म निवला।

इन्वर दया कर। अघ हम दाना साथ रह्ये मजे में तो हो ?

हाँ बिलबुल मजे म हूँ।

'ता तुम अभी सही-सलामत हा ?

अभी तक ता ह ।

घर न लोगो न तुम्हें स्नह भेजा है ।

'सब ठीक तो है ?

'बहुत ठीक है ।

अपन घोड़े न पुष्टे पर हथला टेनकर प्योन न घोड़े पर बटे-ही-बटे अपना पूरा शरीर बुभाया और मुसकरात हुए भिगारी नो सिर स पर तक दख गया । फिर यह भागे बडा तो पीछ भानेवाल जान मनजाने बज्जाकों क दला क बीच ला गया ।

हलो भलेखोव सारे गाँव के सागा न तुम्हें याद किया है ।

तुम हम लोगों के परिवार में शामिल हा रहे हो ?

भिगारीने मुनहरे वालों के लच्छा से मिखाइल कोशबोइ को पहचाना ।

'हाँ अब हम साथ रहेंगे—अनाज के दानों क छितराये जाने क बाण पूजों की तरह ।

देखना कहा काई घाब न मार द ।

'दस्ता जाएगा ।

पगार भारकोव नेवन कमीज म आया और एन पर स खडा हाकर दूसर पाँच म पर डालने लगा ।

अच्छा भारकाव भी आया है ! निमी ने चिल्लाकर कहा ।

'हलो स्टलियन ! तो तुम्हारी ता पिछाडी बांधी गई होगी ?

'भरो माँ की तबोपत कसी है ?

अभी जिन्दा है । उमन तुम्हें प्यार भेजा है उपहार हम माए नहीं । अपना ही सामान बहुत था ।

उत्तर मुनहर यगोरबहुत गम्भीर हो गया । उमन अपना दुखी चेहरा छिपा लिया और काँपती टाँग का ब्यथ ही पाजामे म धुमडने लगा ।

नये बूनडा न ही पास पर बठगया और अपना चहरा छिपान की धांगि करने लगा । काँपत पर पाँच म जान स इन्कार करन लग ।

अधनग बज्जाक नील जगल क पार सडे रह । दान प्रत्ये क नद रगस्टों की कम्पनी सडक स हात में धाती रही ।

३४८ धीरे धीरे दोन रे

भच्छा भलेसादर यह तुम हो ?
हाँ मैं हूँ।

भद्रपेन भच्छा तुम मुझे नहीं पहचानते ?
भपनी बीवी का प्यार ला यह है फौज की जिन्गी समझे।

'प्रभु योतु तुम्हारी रखा करें।
बारिस बालेब कहाँ है ?

किस कम्पनी म था यह ?
मेरा पयास है कि चौथी कम्पनी म।

कहाँ का था यह ?
व्यशन्काया के जातोन का।

क्या जखरत भा पड़ी तुम्हें उसकी ? एक तीसरी भावाज
बातचीत के बीच म टपकी।

उसने लिए एक चिट्ठी लाया हूँ मैं।
'बह तो कुछ दिन पहल मारा गया—रायगानी म।

रावमुज ?
यज्ञीन करो मैंन तो सारा-कुछ भपनी घाला मे देता है गोली

सीने में लगी थी'
नोई चोरनया-येववा का है यहाँ ?
'नहीं भागे पूछ लना।

दस हाते म लाया गया। बाकी कजबाक नहाने को लोटे। बाद म
नये लोग भी बही भा गए। गिगारी अपने भाई के पास चना गया।
बाँव की नम मिट्टी से बंदबू-मी भा रही थी। किनारे का पानी हरा था
और उसमें चमक थी। गिगारी अपनी बनीज की सिलवटा और सिलार्ड
से जूँ बीन-बीनकर मारत हुए भाई म बातें करने लगा।

'प्यात्र मैं दूट चुका हूँ। मैं भात्र उस घादमी की तरह हूँ जिसे
मोत के गड़े म गिरने के लिए मिक एक घबने की जरूरत है। मैं तो
जैसे चक्की के दा पाटों के बीच भा पड़ा हूँ। सागों ने मुझे पूर पूर कर
मुँह के बुचले हुए और की तरह पूर दिया है। उसकी भावाज दद से
पटने-सी लगी। माथे पर बल पड़ गए। प्योत्र को चिन्ता हुई। लगा

कि इस बीच प्रिगोरी बहुत ही बदल गया है और खासा परेगान है।

क्यों क्या बात है ? प्योत्र न कमीज उतारते हुए पूछा। उसका सारा वस्त्र गारा था सिफ गर्दन के पास का हिस्सा धूप से साँवला पड़ गया था।

बात यह है प्रिगोरी तुरन्त ही वाला। उसने स्वर में अधिक बढ़ता धुल गई हम लोगों का आपस में मिठा दिया है। हम भेड़िया स भी गए-बीते हो गए हैं। हर जगह नफरत का बोलबाला है। हम सबम शहर बुरू चुका है। मेरा खयाल है कि अगर मैं किसी को दाँत स काट नू तो बन् पागल हा जाएगा।

क्यों तुम्हें क्या किसी को मारना पडा ?

हाँ ! लगभग चीखते हुए प्रिगोरी न कमीज मोड़-भाड़कर नीचे पटक दी। फिर वह दूसरी ओर देखता अपने गले को भ्रैगुलिया से दबाता इस तरह बठा रहा जस कि कोई गाल उसका गला घाटे द रहा हो और वह उसे निहालकर बाहर कर लेना चाहता हो। उसने आँखें फर ली।

कहो कहो ! अपने भाई की नजर बचात हुए प्योत्र ने आदनात्मक स्वर में कहा।

मेरी आरमा काट रही है मुझ। मन बर्छी धुसेड दी एक आदमी के बदन में गरम-गरम खून मैं किसी भी ज़ीमत पर ऐसा नहीं कर पाता लकिन मैंने किसी दूसरे की जान ली आखिर क्यों ?

सर

सर नहीं है। मैंने उसका मार डाला और आज उसी सूभर के कारण ही मेरा दिल दुखी है। वह दोगना मुझे सपना में दिखाई देता है। क्या गलती थी मेरी ?

अभी तुम उसने आदी नहीं हुआ हा जाओग।

क्या तुम हमारी बम्पनी के साथ रहोगे ? अचानक ही प्रिगोरी ने पूछा।

'नहीं मेरा रेजीमेंट सत्ताइसवाँ है।

मैं तो समझा कि तुम्हीं हमें मरने दोगे।

हमारी बम्पनी तो पदन या एमी ही किसी और डिवीजन के

साथ नत्पी की जा रही है । लेकिन हमारे साथ तुम्हारे कुछ एवजी साथे हैं

कम उम्र हैं अभी ।

अच्छा आओ थोड़ा सरा जाए ।

प्रिगोरी तुरन्त ही अपना पाजामा उतारकर बाँध के पानी में हिल गया । शरीर धूप से साँवला और मुँह के चोंचों के बावजूद बसा हुआ । प्योत्र का पहने की तुलना में वह अधिक मोठे लगा । उसने हाथों को ऊपर उठाकर पानी में गाता लगाया तो एक हरी सहर उसके ऊपर से सहरती निकल गई । वह बीच में नहाते बरजावों की धोर तरन लगा तो उसकी हथेलियाँ ने जैसे पानी को दुलराया । उसके चोंचे एक गति से धीरे धीरे हिले ।

प्योत्र को प्रायना वाले क्रॉस को गन्ध से उतारने में देर लगी । उसने क्रॉस अपने कपड़ों के ढेर में रखा । वह मावधानी से पानी में घसा और बदन भिगोते हुए प्रिगोरी को पकड़ने के लिए हाथ-पर चलाने लगा । दोनों भाई दूसरे किनारे की ओर बढ़े । वहाँ रेत और भाँटियाँ थी । तरने से प्रिगोरी के चित्त की परेशानी कम हुई और उसे कुछ गान्ति मिली । अब वह अधिक सपम से बाँधे करन लगा । बोला मैं तो ऐसा डूब गया कि जुए मुझे खाती रही और मैं देखता रहा कि किमी तरह घर पहुँच सकता । मेरे पल होने तो उठकर पहुँच जाता वहाँ । बस सिर्फ एक भयक देवना खाता हूँ कि कैसे हैं सब लोग ।

नताल्या अपने यहाँ ही रहती है ।

पापा और माँ कैसे हैं ?

मरे में हैं लेकिन नताल्या अब भी तुम्हारी राह देखती रही है । उसको भरासा है कि तुम उनकी बाँहा में लौट जाओगे ।

प्रिगोरी ने मुँह में भरा पानी बुल्ला कर लिया । मुँह से कुछ नहीं कहा । प्योत्र ने गिरधुमाकर अपने भाई की आँसों में आँसों डालनी चाही ।

तुम्हें अपनी चिट्ठी में दो पत्र उमरे लिए भी लिख देने चाहिएँ । वह सिर्फ तुम्हारे लिए जी रही है ।

क्या अब भी वह दृष्टे पागे को जाड़न के अपने देखती है ?

मई वह उम्मीद के सहारे है बड़ी मली लटकी है । अपने मामले
में मूढ भी । किसी को पास फटकने नहीं देती ।

उसकी दूसरी गादी हो जानी चाहिए ।

तुम्हारे मुँह से यह बात बड़ी ही भजीब लगती है

इसमें भजीब बात क्या है ? सही तरीका तो मही है ।

खर यह तुम्हारा मामला है । मैं बीच में नहीं पड़ता ।

और दूया के क्या हाल चाल हैं ?

दूया सयानी हो गई है । इस साल तो इतनी बढ़ी है कि तुम उस
पहचान नहीं पाओगे ।

भण्डा ! ग्रिगोरी ने भचग्ज से वहाँ पर उस चुन्नी भी हुई ।

भगवान् वसम ! भगल साल उसकी गादी हो जाएगी और हम
बादका चक्क तक न पाएँगे । हो सकता है कि तब तक हम लोग मर-खप
भी जाएँ । भाड में जाए यह सारा तूफान ।

व भगल-वगन लटे हुए सहती-सहती घूप का मजा लेते रह ।

इसी बीच भोगा कोशवोई वगल से तरता हुआ निकना ग्रीना
पानी में धाओ !

'नहीं मैं जरा सुस्ता रहा हूँ ।

एक गुबरस को रेत में दवाते हुए ग्रिगोरी ने पूछा भकसानिया का
कोई खबर मिली ?

सडाई दिग्गन के जरा पहल मेंने उसे गाँव में देखा था ।

'वह वहाँ क्या करने आई थी ?

'वह आई थी अपनी चीजें अपने धान्मी के यहाँ से लेने ।

तुम्हारी बात हुई उसमें ?

'सिर्फ दिनभर ही रही वह वहाँ । देखन में ठीक और खुश लगी ।
लगता है कि इलाके पर उसके जिन ऐंग से गुजर रहे हैं ।

और स्तीपान का क्या हाल चाल है ?

उसने भकसानिया का सारा मामला बायदे से दे दिया । काफी
भसभनसाहत बरती । कबिन तुम होगियार रहना । सुना है कि एक
न पहली सडाई में वह तुम्हें गोली

से न उड़ा दे तो कोई बात नहीं। वह तुम्हें माफ नहीं कर सकता।

‘मैं जानता हूँ।’

‘मैं नया घोड़ा लाया हूँ। प्यात्र ने बात बदली।

बल बेच दिए ?

एक सौ अस्सी म। घोड़ा एक सौ पचास म आया। अच्छा है।

अनाज कसा हुआ ?

मज का हुआ। अनाज के घर में आने से पहले ही हमारी भरती हा गई।

भव बातचीत घरेलू समस्याओं पर आई और तनाव समाप्त हो गया। पिगोरी ने घर के समाचार बड़ी उत्सुकता से सुने। थोड़ी देर की तो ऐसा लगा जैसे कि वह घर पर ही हो।

वे बरखाको भी भीड़ के साथ हाने में लौटे। बगीचे की चहारदीवारी पर स्तीपान उससे आ मित्रा। वह अपने बाल काँता आ रहा था। पिगोरी के पास आकर बोला हलो दास्त !

हलो ! पिगोरी ने रुककर कहा और उससे चहर की आर थोड़ी परेशानी और थोड़े अपराध की भावना से भरकर देखा।

‘तुम मुझे भूल गए न ?’

करीब करीब।

लेकिन मैं तुम्हें नहीं भूला। स्तीपान मुमकराया और आगे जाने कारपोरल की बगल में हाथ देकर बिना रुक आगे बढ़ गया।

मूरज हूबने एक बार डिवीजनल-स्टॉफ ने टेलीफोन से पिगोरी की रेजीमट की मोर्चे पर जाने का आदेश दिया। पन्द्रह मिनट में कम्पनियाँ इकट्ठी हो गई और घोड़ा पर सवार होकर लोग चल दिए।

शायद एक-दूसरे से बिना लन लगे कि प्यात्र ने अपने भाई के हाथ में एक मुड़ा हुआ पागल दिया।

यह क्या है ? पिगोरी ने पूछा।

मैंने तुम्हारे लिए एक प्रायना निम्नी है। साथ लने जाओ इस

क्या प्रायना हागा इसमें ?

हलो न उदाओ पिगोरी !

मैं हसी नहीं उदा रहा ।

अच्छा भया विदा । मोर्चे पर सबसे भागे तुम्हीं न बढ जाना । गरम खून के लागा को मौत बहुत पसन्द करनी है । होशियारी से खूना । प्यात्र न चिल्लाकर नहा ।

तो फिर प्रायना किसलिए है ?

प्योत्र ने हाथ हिनाया ।

बुद्ध देर तक तो बम्पनियाँ बिना सावधानी वरत बढ़ती रही । फिर साजेंटा ने आदेश दिय कि चुपचाप चना जाए और सिगरेटें बुझा दी जाएँ ।

दूर क जगल म धुरें की दुमबाली तपटें लौ दनी रही ।

१०

मारुका की निल की एक छोटी भूरी नोटबुक—कोने फटे और कट हुए—गायद एन लम्ब असें तक जब म पडे रहने क कारण—पन्ने टेढ़ी शानदार निष्पाद से भरे हुए

जान कब म अपने मन क भाव दाला म वाँघने की बात सोचता रहा हूँ । मैं कॉनिज-हायरी क्रिस्म की चीज अपने पाम रखना चाहता हूँ । सबसे पहल उस लडकी की चर्चा करूँ । मेरी जान-पहचान उममे फरबरी म हुई—तारीख याद नहीं । जान-पहचान कराई उसने पढोम के बोयारिन्किन नाम क एक विशार्थी ने । उन दानो से मुलाकात हुई सिनेमा के बाहर । बोयारिन्किन ने उसका परिचय मुझसे करात हुए कहा लीजा अग्नेन्वाया क्षेत्र की है । इनके साथ मधुर व्यवहार करना तिमोफड । बड़ी अच्छी लडकी है । इस पर मैंन कुछ मो ही-से दाल बहे और उसका कामल पमीन स तर हाथ अपने हाथ म ले लिया । इस तरह मैं मिला इस थलिजावता भोग्योवा स । लडकी मुझे पहन नि ही विगनी हुई लगी । इस तरह की धीरता की आँखा म कुछ-न-कुछ ऐसा हाजा है जो जान कितनी बातें सहज ही बता जाता है । मुझ यह मानन म कोई मकोब नहीं कि उसन मेर चित्त पर कोई अच्छा असर नहा जला । हा सकता है कि इसका कारण रहा हा उसक हाथ का

गीतापन । मैं कभी ऐस किसी ब्यक्ति से नहीं मिला जिसका हाथ एतना पसीना छोटता हो । फिर उसकी वे आँखें सचमुच खूबसूरत होने पर भी घोर मुहाने-मुहाने हलक-हलक ढग से चमकती रहन पर भी कुछ अजीब सी था' कुछ खटकता था उनम ।

बास्पा मेरे पुराने गहरे गोस्त मैं यह डायरी जान-बूझकर एक पास ढग स लिए रखा हूँ' कही-कही रूपका का भी महारा लेता हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि यह तुम्ह मिल तो तुम चीजा को पूरी तरह जान समझ सको । इस मैं भेजूंगा तुम्हारे पास सेमीपलातिन्स्क पर ये निजावेता मोखाया की इस मोहब्बत के रूपान के बाद—अभी नहीं अभी तो मोहब्बत की यह दास्तान शुरू ही हुई है । मेरा खयाल है कि डायरी स तुम्हारा खासा मनबहलाव होगा । म घटनाओं का उसी क्रम स बरणन करूंगा खर मैंने तुम्ह बतनाया कि मेरा उससे परिचय हुआ और हम तीनों ही रद्दी-नी फिल्म देखन गये । बोयारिन्किन चुप रहा । उमने अपने दाँतों के दद की गिवायत की । और मरी समझ मे ही न आया कि मैं बात करू तो क्या करू । हम पढोम क ही निकले यानी पाम क इलाको क । सो कुछ देर तक ता स्तपो यदान के दया घाति की कहानियाँ बसती रहीं पर फिर गाडी ठप हो गई । मैं चुप होकर बात का विषय खोजता रहा और वह अडकी चुप्पी सहती रही—विना किमी खास तकलीफ के ।

पता चला कि वह डॉक्टरों पढ रही है और दूसरे माल की छात्रा है उसके परिवार के लोग व्यापार करते हैं और उसे तेज खाम और अम्मो सोव की संपत्ती का शौक है । तुम खुद झोवो जिस लड़की की आँखें हलके पीले रंग की भाइ मारती हो उस कगीब स जानने के लिए इनती मो बातें कुछ भी ता नहीं हैं । ता हम उमे ट्राम के अहूँ तक पहुँचाने गये । यहाँ हमन बिना ली ता उमन मुम्मे कहा—कभी मरे यहाँ आना । मैंने उमका पना नोट कर लिया ।

२६ अप्रैल

घात्र मैं उमक यहाँ गया । उमने चाय पीर हन्वे से मेरी छातिर की । मय तो यह है कि उमम कुछ बात है । उवान तेज है मामूली रंग से हाथिपार है । लकिन उम पूरा अविजार प्राप्त है आर्नसिवागव के जो

मन चाहें वह करो बाल सिद्धान्त पर। दूर से ही भ्रात्र्या की गन्ध मिल जाती है इसका। घर दर से लौटा और सिगरेटें रोल कर एसी बातों के बारे में मोचता रहा जिनका उससे किसी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं। खास तौर से साचता रहा रुबन-कोपक के बारे में। मरना मूट बिलकुल जवाब दे चला है पर जेब खाली है यानी यह कि कुल मिलाकर हारमल पतली है।

१ मई

आज एक महत्त्व की घटना घटी। हम साकालिकी-भाक में मजदूरों के समय गुजार रहे थे कि एक उलझन में फँस गए। वहाँ हो रही थी मजदूरों की मई दिवस की मीटिंग। लेकिन प्रचारक ही आ गए पुलिस के लोग और कुछ कर्जाक और नग मीटिंग भंग करने। इतने में ही एक शराबी ने कर्जाक के एक घोड़े को बँध छुड़ा दिया। हम कर्जाक उबल पड़ा और लगा चाबुक बरसान। मैंने धीमे-धीमे करने का निश्चय किया और उस धार बटा। विन्वाम करो बिलकुल ऊँचे विचार में बड़ा। मने कर्जाक को उजड़ और जाने क्या-क्या कहा। उसने मुझ पर चाबुक उठाया तो मैंने उससे जोरदार गालियाँ मारी कही मैं भी कर्जाक हूँ और कामन्काया प्रदेश का हूँ। अगर तुमने मुझ पर हाथ उठाया तो तुम्हारी हड्डी-पसला एक भी साबुत न छोड़ूँगा कर्जाक स्वभाव का मर्दाना था—कम उम्र था—फौज में अभी था ही निरा रहा था इसलिए निमाग्न खराब न हुआ था। उसने जवाब दिया मैंने उस्ता खानस्काया का हूँ और मुट्टियाँ मजे में जमाना हूँ खर' हम शान्ति से ही एक-दूसरे से बिना हुए। अगर वह मेरे खिलाफ मगुला भी उठा लेता तो भगड़ा हुए बिना न रहता और उस हालत में मरी कुद भी नीवत हा सकती थी

अब पूछोने कि तुम बीच में पढ़ने क्यों चल गये? याद दान यह है कि लीला मर साथ थी और जब वह मरे साथ जाती है तो मुझमें एक बड़ी ही बचकानी-सी इच्छा जगती है। इच्छा यह जानी है कि कुछ-न-कुछ बहादुरी कर लिये जाऊँ। मच मानो ऐसा लगता है कि मैं भ्रात्र्या नहीं छोटा-सा मुर्गा हूँ और मर मिट पर एक साज भी बलगी जगती चली

भा रही है घाँवर मुझे यह हो क्या रहा है !

३ मई

भाजवन जँसा दिल भीर त्रिमाण रहता है उसे देखते हुए कराव पीन क धलावा मेरे सामने कोई भीर धारा ही नहीं । भीर उस पर मजा यह है कि टका पाम एक नहीं है । पतझून बहुत नाजुक जगह से फट गया है । रफू भी बड़ा ही करा पाऊगा । उस सिलवाने की कोणिग करने क मानी होने तरबूझ की सिनवाने की कोणिग करना' बोलोद्वा स्त्रेजनेव इधर भाया था । कल मैं लखर म हाजिर रहूँगा ।

४ मई

पापा से रुवन मिन गए हैं । बड़ी सम्यी पौड़ी चिटठी भी मिली है मुझे राई बगबर भी राम महमूम नहीं होती । क्या हो धनर उन्हें पता लग कि उनक बटे के धरित्र का जोड-जोड इन तरह खुस रहा है ? मैंने एक सूत्र खरी लिया है मेरी टाई की तरफ बग्गी क कोच यानों तक का ध्यान लिख जाना है भाज राहर की सबसे गानदार गाल काटने की दूकान से दाड़ी बनयाकर निकला तो बजाज के सहायक की तरह ताजगी का अनुभव हुआ । बुलवार के नुक्कड़ पर सदा पुलिस का निपाहा मुझे देखकर सहज ही मुसकरा पड़ा । पुराना हगमजादा है । खर जो बीन गई सा बीत गई उसका जिक्र क्या ! बिलकुल मौक़े की ही बात कहो कि भाज सीजा नजर भा गई । नजर उस पर पड़ी दाम की पिझरी से । उमो धपना दस्ताना हवा में लहराया भीर मुसकराई । क्या लगा तुम्हें यह मुनजर ?

८ मई

‘ध्यार के सामने हर जमाने ने हथियार डाल है धव भी है तापाना के पनि रा बेहरा मेरी कलना की धाँवो के सामन—मुह गुमा हुआ मेरी धार तनी धन्दूक की गती की तरह । मरा बड़ा जी चाहा कि धनी जगह यै-नी-बट उमक मैंह में धूक दूँ । जब भी मुझे ‘हूँ’ पि गान’ डाले हैं राणों का ध्यान धाना है तो मुझे जमुहाई-वर-जमुहाई धानी धनी जाती है गायन नना की खराबी के बागण ऐमा होता है

मगर मसला तो यह है कि जरा मुझे देखिए जरा मरी उम्र देखिए और जरा यह देखिए कि मैं मोहब्बत परमाना हूँ। वैसे यह बात लिखन बठता हूँ तो मेरे रोगटे सबे हो जात है लीजा के यहाँ गया। बड़ी लम्बी-चाड़ी भूमिका बाँधी गुरू गुरू म। वह ऐसी बनी जस कि कुछ समझनी ही नहीं और बात बदनन लगी। क्या अभी बहुत जल्दी है? शतान ल जाण इसो इस नय सूट ने तो सब-कुछ गढ़ मढ़ कर दिया है। मैं शीघे मे अपना चेहरा देखता हू तो जगता है कि बिजली गिरकर रहेगी। मैं तो साबता हूँ कि यही वक्त है। सब पूछो तो सीधा-साटा दा-टुक हिसाव अपने से सघता है और इसी से अपनी जीत होगी है। अगर मैं अभी दो महीने के अन्दर अन्दर प्रस्ताव नहीं करूंगा तो बहुत देर हो जायगी। मेरा पतनून घिस जाएगा और तब प्रस्ताव प्रस्ताव ही रह जाएगा

य बातें लिखते समय मैं अपनी तारीफ भाष करते थक नहीं रहा। घमण्ड से तना जा रहा हूँ। कसा शानदार धोलमेल है मुझमें अपने जमान के अच्छे-से अच्छे लोगो के अच्छे-से-अच्छ गुणो का। तुम्ह भाग-सा दहनता आवेश मिलेगा तो वह भी प्यारा लगगा। और उसके साथ मिलगी जमे हुए तब की धावाज। सारे सद्गुणा का रूसी-सलाट समझो। बाकी गुणा की चर्चा यहाँ नहीं करता। एक स एक हैं कि तारीफ को लफण न मिस।

छर तो जहाँ तक लीजा का मामला है मामूला परिचय के भाग बात अभी तक नहीं बट पाई। हमारी बातचीत के वाच म हृद पठी मवान मामकिन। वह उस गलियार म न गई और रुदल उधार माँगने लगी। पर लीजा ने इन्कार कर दिया। वस रुदल उसके पास थे और यह बात मैं पक्की तरह जानता था। इसीलिए ना करते समय उसने धावाज म जिस तरह सचाई भरी और हलक-थीले रग की भाइ मारती अपनी धावा म जिस तरह ईमानदारी धाली उसकी एव तसवीर सी लिख गई मेर सामने। इसके बाद तबीयत उसठ गइ और प्यार की बातें करने को मेरा जी ही न हुआ।

१३ मइ

मैं सचमुच उतार म धा गया हूँ। मुझे सचमुच प्यार हो गया है।

इसमें सन्देह और शक की कोई गुंजाइश नहीं। हर चीज मुझमें मोहब्बत का अपमाना बहती है। कल मैं प्रस्ताव सामने रखूंगा। अभी तक मैं अपना मसाला तयार नहीं किया है।

१४ मई

सारा-कुछ बहुत ही अप्रत्याशित ढंग से सामने आया। पानी की कुहार पट रही थी कुहार बड़ी प्यारी प्यारी-सी लग रही थी। हम मसखोशामा के बिनारे बिनारे चल जा रहे थे। हवा पानी की बूंदों को पटरी तक उड़ाए ला रही थी। ऐसा मैं थात कर रहा था और वह जो चुप थी जस कि सोच में डूबी हो। पानी का एक सहारा उसके टोप के छत्रों से वह बन गाला पर आ गया। यह बड़ी ही हमीन लगी। अब यहाँ अपने और उसकी बीच की बातें लिखे देता हूँ—*ज्यों-की-स्यों*—

यलिढाबता सगवना मैं अपने मन की भावना तुम्हारे सामने रख दीं अब अपनी बात तुम जानो

मुझे तुम्हारी ईमानदारी में सन्देह है

मैंने बखशूफ की तरह अपने कन्धे भरके और बुझी हुई तबीयत से कहा तुम कहो तो मैं कसम खाऊँ या जो कहो सो करूँ ?

वह वाली सुनो तुम तो तुमने व उपन्यास के चरित्र की तरह बातें करती हो अपनी बात और आसान बनाकर और साफ ढंग में नहीं कह सकती ?

इसमें आसान और साफ और क्या हो सकता है ? मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।

और अब भागे क्या होगा ?

भागे सब-कुछ तुम पर निभार करता है।

'तुम चाहते हो कि मैं चूँ— मैं भी तुम्हें प्यार करती हूँ

मैं चाहता हूँ कि तुम कुछ ता कहो ही—

जानते हो निमोउड मैं क्या कहना चाहती हूँ। मैं कहना चाहती हूँ कि मुझे तुम पसन्द हो लेकिन चाहे पसन्द हो तुम बदल सकते बहुत हो।

अभी तो और ब्रूँ बड़ेगा मेरा

लकिन हम एक-दूसरे को जानते ही कितना हैं ? बहुत ही कम जानत हैं हम

दस साल साथ रह्य तो हम एक-दूसरे का ढरो जान जाएंगे

उसने गुलाबी हथली से अपना पसीने से भीगा गान रगडा और वाली 'खर तो ठीक है हम लोग साथ रहेग भाग की बात भागे से है लेकिन तुम मुझे थोडा समय दो मुझ अपना पिछला लगाव तोडना पड़ेगा'

किमसे लगाव है तुम्हें ? मैंने पूछा ।

तुम उसे नहीं जानते वह डॉक्टर है भौगता और मदों की गुप्त बीमारिया ना

'तो तुम कब तक खानी हो जाभागी ?

भागा है 'गुक्रवार तक'

तो हम एक साथ रहेंगे मेरा मतलब है उसी पलट म ?

हाँ मेरा खयाल है कि इस तरह आसानी ख्याल होगी तुम मेरे पलट म चल भाओ—

पर क्या ?

मेरा कमरा बडा आरामदेह है साफ-सुखरा है और मालकिन बहुत ही बढ़िया औरत है ।

मैंने कोई आपत्ति नहीं की । त्वरस्वाया क मोड पर हम एक दूसरे से भलग हो गए । भलग होन के पहले हमने एक-दूसरे को घूमा तो उधर से निकलती एक औरत ताज्जुब से ठिठक रही ।

भविष्य के गम म आविर नमा है ?

२२ मई

जिन्दगी नहीं जी रहा हूँ रम की धारा म बह रहा हूँ । पर आज मेरे रम' पर सद्मा ही बाटल घिर आए । लीजा ने कहा— तुम अपना जापिया बदल डाला वस इसम काई शक नहीं कि मेरा जापिया है बहुत ही पुराना और अस्ताहाम लकिन अबल अबल तो चाहिये मेरे पास ओ कुछ है उसी स हम जा रह हैं और उसम भी अब ख्याल कुछ बाकी नहीं है काई कामकाज ढूँढना पड़ेगा

२४ मई

भाज मीन नया जाँघिया खरीदने का फ़सला किया पर उम्मीद नहीं थी कि लीजा ने एक दूसरा ही ख़ाब निकाल दिया। उसके मन में हसरत का तूफ़ान-ना उठा कि किसी अच्छे रस्तरों में खाना खाया जाए और उसके लिए रसमी मांजे खरीने जाए। सा हमने रस्तरों में खाना खाया और मित्र व मोह खरीने। पर मरी तो हानत पतनी है। मेर पास जाँघिया बिलकुल नहीं है।

२७ मई

लीजा मुझे बूते डान रही है। मेरा बदन ऐसा हो गया है जसा सूत्रमुली के पून का गुवा डण्डल। यह औरत नहीं है पयवती हुई भाग है।

२ जून

हम आज सुबह नौ बज साकर उठे। मुझे अपने अगूठे एँठने की सम्बल ऐसी भादत है कि हद है। पर आज उसी अगूठ ने नय गुन खिलाय। लीजा ने पलग की चार बगरह खीच ली और देर तक मेरे परको दया-समझा। फिर अपना फनसा दती हुई बानी—

तुम्हारा पर है कि घोड़े का सुर। उससे भी बुरा है। और, तुम्हारे अगूठे पर बाल है छि। उसने बहुत ही परशानी से अपने कंधे के पलग के कपडों में अपना मुँह छिपा लिया और दीवार की तरफ मुँह कर लट रही।

मैं बिलतून हैरान हो गया। मैंने अपना अगूठा बिलकुल छिपा लिया और उमक कंधे पर हाथ रखा लीजा, मुनी।

तुम मुझे घरेना छोड़ दो

लीजा इससे क्या फ़ायदा होगा? मैं अपने पर का अगूठा बदल नहीं सकता। तुम समझो कि कोई आदर स्वर तो बनवाया नहीं है। और जहाँ तक धाना का सवाल है कोई नहीं जानता कि बाल कब वहाँ उगेंगे। वे तो हर जगह उग पाते हैं। तुम तो डॉक्टरों पढ़ रही हो। तुम्हें प्रकृति के नियमों की जानकारी होनी चाहिए।

यह मुझी। पीले रंग की भाई देती उसकी धाँसी में भयानक-सी

चमक भाई । बोली भगवान् क लिए बंदबू खीचन वाला थोडा-सा पाउडर ल घामो । तुम्हारे परा मे ऐसी बू धानी है जस भादमी की साग स ।

मैने तब वा सहारा लेने हुए कठा और तुम्हारे हाथ जा हमगा पसीने स तर रहत है सा ? वह छुप हा गइ । या कहें कि हम तगह मरी आत्मा पर एक काला बादल धिर घाया ।

४ जून

आज हम मास्को नगर की मर करने गये—नाव पर बठकर । दान के गाँव-गवई के इलाको की महज ही याद हो आई । खीजा का व्यवहार बडा ही भ्रष्टा होता है । उसे गोमा नहीं देता । यह भुक्त पर किकरे बसती रहती है और ये फिकरे कभी-कभी बड़े खे हात है । उसकी एसी हर क्षण का जबाब बाल स लिया जा सस्ता है पर इसस हमारे सम्बन्ध न्त जाएँगे और यह मैं चाहता नहीं । तमाम बातों के बावजूद उमके प्रति मरा माह दिन-पर-दिन बढ़ता ही जाता है । बात सिफ इतनी है कि वह बिगडी हुई लडकी है । तकिन मुके डर है । शायद ही मेर भसर स इतनी ताकत हो कि उसके चरित्र स कोई बडा फर-बदल ला सके । वडी प्यारी-प्यारी-सी है । हाथ मे बे-हाथ हा गइ है । दान स प्रभा लडना है पर दन्त बनना खुबी है जितना अभी मैं नुना ही है ।

सा हम घर सीटे तो रास स वह मुके एक बेमिम्न की दूकान स घसीट स गई और मुमकरात हुए टल्कम पाउडर और जाने क्या-क्या फइ-बइ खरीन लिया । कहने लगी इसमें धाबू दबी रहणी ।

मैं शानदार ढंग स आर स भुजा और बोना धन्दवा !

गथापन है यह सब लेकिन है ।

७ जून

निगाह उमके पास थोडा है पर बाकी तमाम बातें जानती है ।

हर दिन रात का सान मे पहल में पर गरम पानी स घाना हूँ उन पर यू डि शोमोन छिडकता हूँ और जाने क्या-क्या बसतखब की चीजें लगाता हूँ । उबचाई सान सगती है ।

१६ जून

उसके साथ रहना दिन पर दिन मुश्किल ही होता जाता है। कल उम मिरगी भा गई। मना कसे रखा जाए ऐसी औरत के साथ।

१८ जून

हम दाना के बीच कुछ भी एक-सा नहीं है। हमारी तो जयानें भी भलग भलग हैं।

भाज मुबह वह बदलरोटी खरीदन चली तो खबला के लिए उसन मेरी जब म हाथ डाला। उसके हाथ लग गई यह डायरी। उसने इस देखा उलटा-पलटा। बोली यह क्या चक्कर है ?

मेरे गरीब का भग भग जलने-सा लगा— कहीं वह इसे पढ़न लगी ता ? मैं बहुत ही स्वाभाविक स्वर में उत्तर दिया हिमाव किताब लिखा है इसमें 'मामूली नोटबुक है। मुझे अपने जवाब पर खुश ही ताज्जुब हुआ।

उसने बहुत ही भयमनस्क भाव से डायरी मेरी जब म डाल दी और राटी सन खली गई। मुझे इस मामले में और हांगियाती बरतनी चाहिये। इस तरह की भीषी बातों का धमर तभी पड़ता है जब हमारा आदमी उनके बारे में कुछ भी नहीं जानता।

खर इन बातों से मेरे मित्र वास्या का जलबहाव होगा।

२१ जून

सीडा का देगकर तो मैं आश्चर्य से ठगा रह जाता हू। वह इतनीस मान की है। इस तरह बिगड़न और हाथ से बेहाथ होने का समय उसे जब और कसे मिला ? कस हैं उसके परिवार के लोग और किसका हाथ है उमक विकास में ? ये सारे सवाल हैं जिनके जवाब का मुझे बहुत ही जलबहाव है। लड़की जयामत की हसीन है और अपने नाम-नकश की हर तरह ठीक रखने में गौरव का अनुभव करती है। धन का पूजने का नगा है उमकी। दुनिया में उसे और कुछ उमक लिए है ही नहीं। मैं कई बार उमक गम्भीरता से बातें करने की कोशिश की पर मुझे लगता है कि पुरान-म-पुरान आम्पावान का ईश्वर का अस्तित्व में विश्वास उठवा देना कहीं आसान है पर सीडा

को नय सिर से खींचें देना और एक नय सचि म डालना वही मुश्किल ।

हमारा साथ इतना बेहूदा हो गया है कि एक साथ रह पाना अब सम्भव नहीं दीखता । इस पर भी तार तोड़ने में मेरा मन हिचकता है । मुझे यज्ञ मानने में कोई सकोच नहीं कि सामान बातों के वावजूद मैं उसे पसन्द करता हूँ ।

२४ जून

सब-कुछ तड़पड़ हा गया । आज हमन एक-दूसरे से तिल खोलकर बात की । लीजा की शिकायत है कि मैं उसके शरीर की भूम मिटा नहीं पाता सम्बन्ध टूट रहे हैं इस बात को अभी तक नियमित रूप नहीं लिया जा सका है शायद कुछ ही दिनों में द दिया जाएगा ।

२६ जून

उस तो स्टलियन घोडा चाहिये असली स्लियन ।

२८ जून

उसे छोड़ना बहुत ही कठिन है मेरे लिए । वह तो मुझ पर मचिपके कीचड़ की तरह घसीटती जाती है । आज हम सवारी से चारोबयोषी पहाडिया पर गय । वह हाटल की खिडकी के पास जा बठी । धूप टेढ़ी छन से छनकर उसके बाला के छल्लो पर आने लगी । उसके बाल पकने सोने के रंग के हैं तुम हो तो एक कविता गढ़ दो उन पर ।

४ जुलाई

मैंने अपना नाम छाड़ दिया है । लीजा न मुझे छोड़ दिया है । आज मैंने योपर पी—स्त्रेडनेव के साथ । वन हमन बोदना पी थी । लीजा और मैं यानी हम पडे लिसे लागा की तरह एक-दूसरे से अलग हुए—जसे होना चाहिये । कुछ भी बेमतनब की बान नहीं हुई । आज मैंने उसे एक जवान के साथ दिमीत्रोव माग पर देला । जवान ने धुडसवारी के बूट पहन रखे थे । लीजा न मेरा अभिवादन स्वीकारा पर जरा रोना-धाम के साथ ।

अब मुझे डायरी लिखनी बन्द कर देनी चाहिये । मूल-आत ही मूल जा गया है ।

३० जुलाई

भांगा नहीं थी कि ऐसा मौका दुबारा आएगा। पर मैं करूँ क्या मैं अपनी कलम उठाने पर मजबूर हूँ लड़ाई लड़ाई—जानबरा का-सा जाग फूटा पड रहा है हर तरफ। हर बड़ा धार्मिक दंगभक्ति के मुँह कुत्त की तरह सड और गया रहा है। दूसरे लोगो के मन निन्हा स भरे हुए हैं पर मुझे गौरव का अनुभव हा रहा है मेरा मन कतप रहा है मेरा विगत-स्वग अन्तर म टीस रहा है कल मैंने लीजा को सपने म देखा सपना गान्ति से घुला रहा।

सडकी भरे मन म बड़ा कलरख छोड गई है बडी खगी हा मुझे मेरा मन कलन तो

१ अगस्त

इस शोरगुन और बकवास से ऊब गया हूँ मैं। पुरानी कामना की प्यास लौट आई है मैं उससे इस तरह चिपटा हुआ हूँ जस कोई बच्चा किसी बबुए म।

३ अगस्त

एक रास्ता है मैं लड़ाई पर चला जाऊगा। बेवकूफी है यह। हाँ बड़ा बेवकूफी है शम की बात है है न ?

पर और मैं कर भी क्या सकता हूँ ? उफ प्यास है कि कही और स रम मिल। इस पर भी एक तरह का अन्ताप है मन म और दो मान पहल सन्तोष की एमी कोई रेखा मेर मन म न थी। कही मैं अन्तर से बूडा तो नहीं हो रहा ?

७ अगस्त

गाडी चनी जा रही है और मैं लिख रहा हूँ। हम अभी अभी बारोनड से खाना हुए हैं। कल मैं घर पहुँच जाऊँगा। मैं निश्चय कर लिया है। मैं आस्था जा र और पितृभूमि के लिए लड़ाई के मोर्चे पर जाऊँगा।

१२ अगस्त

क्या शान्तिर विनाई दी जागा न मुझे ! अनामान ने दो-एक गिताम

बढान के बाद बहा जाशभरा भापण लिया । पीछे मैंने उससे कहा कि तुम बेवकूफ हा । इस पर वह उलट गया और उसन ऐसा बुरा माना कि उसका सारा चेहरा काला पड गया । फिर वह नफरत से फुफकारने लगा— और तुम अपने को निखा-पटा कहने हा । तुम उनम तो नहीं हो न जिनकी सन् १९०५ म खाल उधेडी गइ थी ? मैंन कहा— भफसोस की बात है कि मेरी गिनती उनम नही रही है

भर पिता रोय । भ्राँसू उनकी नाक की नोक तक बह गया । उहोने मुमे घूमन की कोशिश की । बेचारे मेर पिता ! नाग कि वह मेरी जगह हात ! मैंन उनस कहा— भाइय भरे साथ चलिय । वह धवरा गए । कहने लग और इस फ्राम का क्या हागा ?

कल में स्टेगन के लिए खाना हा जाऊगा ।

१३ भगस्त

जहाँ-तहाँ कटाई के लिए तयार फमलें टोलों पर दीइती हुई चमकदार गिलहरियाँ जस काजमा क्लुचकोव के बर्छे स छिन्न गए जमन । एक जमाने म मैं गणित और दूसरे उपयोगी विज्ञाना का विद्यार्थी था उस समय शायद ही कभी भाया हा मेरे दिमाग म कि यह दिन भी देखना पड़े । मुझे । रेजीमट म पहुँचन क बाद कजबाको से बातें करू गा ।

२२ भगस्त

एक स्टेगन पर मैंने कदियों का पहला गन देखा । एक बिनाबी किस्म का खूबसूरत-सा आस्ट्रियन भफसर पहले म स्टेगन की इमारत की तरफ ल जाया जा रहा था । प्लम्फॉम पर चलनकामी करती दो घोरलें उस देखकर मुमकरोइ । बिना रके उसने जस-तम मुक्कर उनका परिवादन किया और एक घुम्मी उनक नाम पर हवा की सहरोँ पर सहारा दी ।

कनी होन पर भी उसकी दाढ़ी साफ बनी हुई थी और भूर जून चमाचम कर रह थ । जवान-सा प्यारा-प्यारा-सा आत्मी था । बहुरा बहा ही मोहक था—एमा कि भगर लडाई क मगान म तुम्ह पिन जाए ता उम पर हाय उगान न बन ।

२४ अगस्त

शरणाधी शरणाधी और शरणाधी रेलव की हर लाइन पर शरणाधियों और फौजिया से भरी गाडिया पर गाडिया घनी आ रही हैं। कहीं साँस नहीं मिलती।

पहली अस्पताली गाड़ी अभी अभी गुजरी है। वह रुकी तो एक जवान फौजी नीचे बूद गया। उसके चेहरे पर पट्टियाँ बँधी हुई थी। हम बातें करने लगे। गोली धार-धार हो गई थी। उस बड़ी खुशी थी। उसका ख्याल था कि अब शायद फौज में न जाना पड़ेगा। उसकी आँख भी छोटीसी हो गई थी। सब तो यह कि इस पर भी यह हंस रहा था।

२७ अगस्त

मैं अपने रेजीमट में हूँ। रेजीमट का कमाण्डर सयाना-सा बड़ा ही बढ़िया आत्मी है। बरजाक है दोन प्रदंग के निचले हिस्से का। यहाँ हर तरफ खून की बू धाती है। अफवाह है कि परसों हम लोग भागे की पंक्ति में पहुँच जाएँगे। मैं तीसरी कम्पनी के तीसरे ड्रूप में हूँ। तीसरी कम्पनी कॉन्स्टीनोब्रवाया इलाके के बरजाका की है। नीरम लोग हैं। सिर्फ एक भादमी ऐसा है जो जरा खुशामिजाज है और थोड़ा गुनगुनाता रहता है।

२८ अगस्त

हम यहाँ में जा रहे हैं। आज बाहर बड़ा घोरगुन है। दूर से बिजली के बड़बुने की-सी आवाजें आ रही हैं। मुझे तो हवा से लगा कि पानी बरसेगा पर आसमान है कि नीले साटन की तरह नीला है। पल मेरे घोड़े की एक टाँग खराब हो गई। उगका एक पर फौजी खाने की गाड़ी के नीचे आ गया। यहाँ हर चीज नई और अजीब है। मेरी समझ में नहीं आता कि किस चीज से शुरू करूँ और किस चीज से खत्म करूँ।

३० अगस्त

आ निगल को समय ही न मिला। नम समय में घाँटे पर गवार है और बाठी पर जमे ही-जमे मिगला जा रहा है। हिचकोलों के बारण पमिन से ऐमी-ऐमी तमघारें निच जानी हैं कि क्या कहिए। हम तीन

घुठसवार एक साथ चन जा रहे है । घाम की एक गाठी हमारे साथ है । साफ है कि घास घाहा ये निण है ।

धव बाकी दोना जवान बाकू बांध रहे हैं घोर में पट के बल लटा कन की घटनाए शान्त म बांध रहा हैं । कल साजेंट तोलोकोन्निबोव ने हम ध नोगो को फौजी ममक-बूक के लिए भेजा । यह साजेंट मुझे नफरत स विद्यार्थी कहकर बुलाता है । एक बार कहने लगा ए विद्यार्थी देखते नही तुम्हार घोडे के एक पर की नाल निकली जा रही है ।

तो हम छहा जलकर राख हो गए एक गांव से गुजर । गरमी बहुत थी । घोडे भी पसीने-पसीने हुए जा रहे थ घोर हम भी । कज्जाको का गरमी म सज के पतलून पहनने का हुकम नही होना चाहिए गांव के बाहर की खाई म मैंने एक लादा देखी । इस तरह की लाग मैंने जीवन म पहनी बार देखी थी । एक जमन पीठ के बल मरा पडा था । उसके पर खाई म ये । एक हाथ नीचे दवा हुआ था । दूसरे म राइफल थी । घास-पास कोई राइफल न थी । भयानक दृश्य था । इस समय भी उस दृश्य की कल्पना कर मेरे रागटे खड़े हो गए हैं एसा लगता था जैसे कि वह जमन खाई म पर लटकाय बठा रहा बठा रहा कि भाराम करन को लट गया । भूरी वर्नी घोर सिर पर लाहे का टोप चमडे का भस्तर दूर स झलक रहा था । यह सब देखकर मेरी भानिं एसी घाँघियाइ कि उसका चेहरा मुझे याद ही न रहा । उसवे पील माये पर बड़ी-बड़ी पीली-पीली चीटियाँ रँग रही थी घोर भनाभल भानिं घाधी खुनी हुई थी । कज्जाक उसकी बगल स गुजरे तो जन्टाने क्रॉस बनाया । मैंन उसकी वर्नी की दायी ओर के खून के छाटे घबब का देला । गान्नी दायी ओर लगी थी घोर उस छेपती हुई चनी गई थी । मैं पास स निकला तो मैंन गौर किया कि जहाँ से गाली निकली थी वहाँ बर्दी में निगान पडा था घोर जमीन पर पडा खून भी काफी था । वर्नी तार-तार हा गई थी । मैं कौपन उगा । ता यह सब होता है यहाँ ।

हमार साजेंट-भजर का नाम टीजर है । उसने हम देखा ता मन्दी कहानी सुनाकर हमम जान शान्त की कोणिग की । पर उसवे धपन

हाठ धरधराने लगे थे ।

गाँव से कोई भाग्ये वस्तु की दूरी पर हम एक तटस-नहम फक्करी मिली । सिर्फ इटा की दीवारें बच रही थी । उनका ऊपरी हिस्सा धुप से बाला था । राज के भग्नारा की बगल की सड़क से गुजरने में हमारा दिल दहला । इसलिए हमन धूम जाने का फैसला किया । पर हम ज्यों ही सड़क से कटे फक्करी से कोई गानियाँ बरसान लगा हम पर । यह लिखते हुए मुझे लज्जा का अनुभव हो रहा है पर यह सही है कि पहली गोली दगा ता मैं साज से गिरकर नीचे भात भात बचा । मैंने काठी कमकर पकड़ ली और अन्नर के संकेत पर एकदम मुक गया । रामें मैं जकड़ ला । हम पाछे दौडात हुए उस गाँव की बगल से गुजरे जहाँ खाई में जमन भरा पथा था । नतीजा यह कि जय तक गाँव एकदम पीछे छूट नहीं गया हाथ ठिकान नहीं आए । फिर हम मुठे और घोडा से नीचे उतरे । हमने दा सायिया का घोडा बं साथ यहाँ छोडा और बाकी हम चारा फिर उसी सड़क पर बडे । पील बूटा में बसे उस जमनके पर हम दूर से भयकत नजर आए । उधर से निवल जान बं वाए ही मैंन साँग ली जैसे कि वह सा रहा हो और मुझे डर हो कि वह कही उठकर बठ न जाए । उसक नीष की घास नम और हरी थी ।

हम खाई में छिपकर सट रहे कि जग देर बाद राज हो गई फक्करी के पीछे से सात जमन घाडो पर सवार निकले । मैंने उनकी बर्दी से उन्हें पहचान लिया । उनमें से एक अफसर था । उसने चित्लाकर कुछ बन्ना और पूरी टुकड़ी हमारी घोर बनी

सड़क मुझे आवाज दे रह है । मुझे जाकर घास के सातन के काम में उनकी मन्त करनी चाहिए । जाना ही है । जाना है

० अगस्त

मैं बयान करना चाहता हू कि पहल-मन्त निमी घातमी का गोली मैंने कम मारी । व जमन हमारी और बढ़ने छाए । उनकी छिपवना के रग की बर्दियाँ उनके कमवमान हुए लोहे बं टोप उनके बर्छे और बर्छों के गिरा पर फरारता हुई भडियाँ हम समय भी मेरी निगाहा के आगे हैं ।

व गहर भूरे रग बं घाडा पर सवार थ । मैं नहा जानता था

पर खाई के सिर तक मेरी निगाह दौड़ ही तो गई और मैंने बने रंग का एक हरा गुबरला देखा। मर देवते-श्वेतन गुबरला अपना आकार बढ़ाता गया। होते-हाने बहुत बड़ा हो गया। गतान की तरह घास की पत्तियों को राह से काटते हुए वह मेरी तरफ आया और मेरी टयूनिब की आस्तीन पर चढ़ आया। फिर रानफल पर पहुँच गया। घोंग में उसकी उड़ान दाब ही रहा था कि टीडर की चीख काना में पड़ी—
गोली दागा" आखिर सुन्ठ हुआ क्या है ?

मैंने अपनी बृहती बमकर जमाइ और अपना बायीं आँसू सिक्की। मरा श्लि धड़कन लगा। भूरी-हरी बर्णों की पृष्भूमि से टकराकर मेरी नजरें लड़खड़ा गई। मैं राइफन का घोड़ा दबाया और अपनी गोपी को आहूत मारी सर्राट्टि सुनी। मर बाद टीडर ने गोली दागी। मैं निगाना गापद नीचे से साधा था क्योंकि मेरी गाली से गद्द का बादल सा उमड़ा। इस तरह यह पहली गोली थी जो मैं किसी इन्मान पर दागी थी। मैं बिना निगाना साध सारी गालियाँ खानी कर दी और घोड़ा दबान पर कोई धमर न हान के बाव ही जमना की ओर निगाह दौड़ा। वह अपने पिछले त्रम से घाड़े दौड़ाए बने जा रहे थे अफसर पछ था। जमन गिनती में नौ थ। उनके अफसर के गहरे भूरे घोड़े का कूल्हा और लाहे के टोप के मिरे की घातु की प्लट साफ़ नजर आ रही थी।

२ सितम्बर

गुड और गान्नि नाम के अपने उपन्यास में तात्मतायि न एक जगह विराघो मनामा के बाब की एक रेखा की पर्चा की है। यह धनजानी रखा जिनका लागा का मुर्ते में अलगाती है निगाई रोम्नोव की कम्पनी हुम्ना करती है ता घने रेखा उनकी बल्पना के मामन साकार हा उठनी है। आज के पत्तियाँ मुझ याँ आ रहा हैं और बिलकुल माफ-माफ याँ आ रही हैं क्योंकि आज मुबह हमने जमन हुम्नारा की एन टुकड़ी पर हमला बारा। तबक म हा उनकें टूप गान्गार तोपा का मन्त म हमारी पत्तन दुबडिया के आंगा के सता रहे थ। मैं अपनी तरफ के बृद्ध लागा का मग अमान है कि ४१वें और २७ वें पैदनी

रजामटा के सागा बा हडबडारर भागते देखा । उनक पीछे तोपों की मन्द न थी और सब तो यह है कि उनकी हिम्मत मचमुच जवाब दे गई थी । दुःखाने भाग बरसाकर उनसे एक निहाई को भूनकर रख दिया था और बाकी का पीछा जमन-हुस्मार कर रहे थे । सिर्फ इस हालत में जगन के माफ़ किये हिस्से में सही हमारी रेजीमेंट को मोर्चा सम्हालने का हुकम दिया गया । मुझे याद है—घटना कुछ इस तरह घटी

तिरिचची नामक गाँव से हम मुबह दा-तीन बज के बीच खाना हुए । तड़का होने का समय हो रहा था पर अंधेरा बड़ा गहरा था । हवा जई और देवदार की भाकों की मटक से भारी थी । रेजीमेंट कम्पनिया में बटकर भाग बड़ रही थी । हम सब से कटे और सेता के बीच से गुजरने लगे । घोड़ों के पर जई के पीछे पर पड़े तो उनके छुरा से घास की बूँदें अपनी जगह से उठकर इधर-उधर बरसने लगी । घोड़े हँसते ।

भोवरकोटा में भी सर्तें लगनी रही । रेजीमेंट बहुत दूर तक छता पर गत पार करती गई कि एक घण्टे बाद एक अफसर घोड़ा दौड़ाता घावा और उसने रेजीमेंटल कमाण्डर को एक आदेश सौंपा । हमारे सरदार ने आदेश अमनाप की भावना में भरकर हमें दिया । हमारी रेजीमेंट मुड़कर समकोण बनाती हुई जंगल की ओर मुड़ी । सबके रास्ते पर पत्तियाँ एक-दूसरी में बिनबुस सटकर चलने लगी । लड़ाई कहीं बगन में चल रही थी और घाहट की आवाज पर जमन-तोपची भाग बरसा रहे थे । तापा की आवाज हवा में दूर तक गूँजनी और एसा लगता जैसे कि देवदार के महमह बरतें पूरे-पूरे जगल में भाग लगी हुई हैं । सूरज निकलने तक हमने देखा कुछ नहीं केवल आवाजें मुनी । सूरज निकला तो अपने साथ थोड़ा उल्नास लाया पर उम उल्नास के तन्तु मड़ें-मल और बीने भगे । यह उल्नास थोड़ी दूर तक चला । उसके बाद फिर सब-कुछ जमकर रह गया और मनीनगना की आवाजें साफ सुनाई पड़ने लगी । इस समय मेरा निमाश खबरर गान लगा बबन एक विचार मेरे निमाश में आया । मुझे भाग बढ़ती अपनी पन्नी प्रोत्रा के

लागा का खमान भ्राया घोर मरी घ्रांवा के भाग उनकी तमवीरों-मी विच गइ ।

मैन काना का दृष्टि न देख घोरम प्रीजी टापिया लगाए मई टॉप-बूट पहन गरदू की घरनी रौन्त व पानी फौजा । साय हा मर कान म सनमनाहट पना करन नगा जमन मगानगने जा जुटी हुई धी जात जागते पमीना म तर प्राणिया का लागा म बल्लन में ।

दो रजीमटें गाजर-मूला की तरह बटन लगी । खाग हथियार छोड-छोडकर भागे । इसा समय जमन-दुस्मार की रजीमट उन पर टूट पडी । हम उनस कोइ सात सौ गड या डमम भा कम फासल पर रह गए कि हम घाडर मिला । हम दूमर ही क्षण व्यवस्थित हा गए । भाग्ना कानो म पढा— 'फारवड भाग बना' । इस पर एक क्षण तक ता हम टिटके परन्तु फिर भागे की भाग न्वा की रफ्तार म लपके । मेरे घोडे न अपन कान नीच कर गिर म इस तरह चिपका निय कि भाप भगुनी लगात ता भी उन काना का उठा न पात । मैने चारा घोर नजर दीहाई तो अपन पीछे रेजीमटल कमाण्डर और दो सत्रमग को दखा ।

हाँ यहीं वह रेखा दीखी वह रखा जो हमत-चापते मौस लत डिन्ना मोगा को मुर्दा मोगा म चलग करती है । यहीं वह क्षण घाया जब भाग्मी बीषरता उठा पागल हो गया ।

दुस्मार डगमगाए घोर पीछे नीट । मर नेवने-श्वत हमार कम्पनी कमाण्डर बेरनस्वोव न एक जमन दुस्मार का काटकर फेंक दिया । मरी घ्रांवा के भागे छटी कम्पनी के एक बरबदाद न एक जमन की दीगया घोर पागलों की तरह उसका घोडे के पुठे टुकड़े-टुकड़े कर डाल । तलवार उठी घोर गिरी तो खान क फौज इधर उधर उड़े । जा दगा उमकी कम काना भी नहा की जा मक्की उम काइ नाम नहीं दिया जा मक्का ।

सौटत समय मैन उन्हीं चनेस्वोव का चहंग दखा ता खाना म निला हुआ पाया जम कि कहा कुछ हुआ ही न हा जम कि मर के बिनागे जमे व मिक ताग मक्क रहहा जम कि घनी घनी ग जमन का

३७२ धीरे बहे बोन रे

तनवार के घाट उतार देने में उनका किसी तरह का कार्रवाई सम्बन्ध ही
न हा।

कम्पनी कमाण्डर चेरनेरमोव बड़ी तरफकी करेंगे प्राइमी लायक
हैं।

४ मिनम्बर

हम प्राराम कर रह है। दूसरी पौजी कोर की चौधी कम्पनी मार्च
पर लाई जा रही है। हमन भाविलिना के छाटे गाँव में पडाव डाल
रखा है। आज मुवह म्यारहवें पुइसवार डिबीजन के लोग और ऊराल
क करजाक तज रफार म करवे से गुजरे। एक तूफान है जो एक क्षण का
भी रुकता ही नहीं। पान के बाद मैं मार्च क अस्पताल में गया। घायल
पौजिया की एक गाड़ी प्रभी प्रभी घाई थी। स्ट्रुधरवाले एक बड़े डिब्बे
के घायल नीच उतार रहे थे और हँस रहे थे। मैं उनसे पाम तक गया।
एक हल्के भूरे बालवाला पौजी एक भाली के सहार प्रभी प्रभी कूदकर
नीच आया था। सा मुझे सम्बाधित करत हुए बाला करजाक क्या
खयान है तुम्हारा इस सबके बारे में ? उन्होंने मटर की एक बोरी मा
दा मुझ पर उममे बन्दूक की गोलियाँ थी।

प्रदनी न पूछा आपके पीछे बम फटा था क्या ?

पौछ की बात छोडा प्राग लग उसको मैं तो खुद उम पीछे के
टिम्प के ठीक पीछे था। एक भापडी स नस निकली मैंने उस
पर नजर डाली तो मेरे हाथ पर एवाएक हम तरहकील हुए कि मुझे
एक गाड़ी का सहारा सना पडा 'उम नम की शकल लीजा की शकल
स इस तरह मिनती थी कि कुछ हद हिमाव नहीं। बसी ही घायल बसा
ही घण्टाघार बहटा बसी ही नाप घोर बम ही पान प्रावाज भी
विलकुल बसो ही बही ऐसा ता नहीं कि मुझे सिफ सगा हो ऐसा ?
मरा मयाल है कि प्रय जा भी प्राग मरे मामन प्रायोगी बही मुझे लीजा

५ मिनम्बर

प्राहा को एक दिन प्राराम और प्रायने था बारा-दाना मिला।
प्रद हम फिर मार्च क निगा रवाना हा गए। जहाँ तक मरा मयाल

में फलता चला गया।

स्टाफ के प्रधान कार्यालय में बड़े हमल की योजना बनाई गई। जनरल नक्का में जुट गए। हरकारे लड़ाई का हुकूम लेकर इधर उधर दौड़ने लग। लासो फौजी जानें हथेली पर रखकर घाग बड़े।

अनुमानितक दना ने सूचना दी कि दुश्मन की घुड़सवार पीज बाहर की ओर बढ़ती चली आ रही है। जंगल में बज्जाका की टुकड़िया घोर गनुमा के अग्रिम रखवा व बीच जहाँ-तहाँ मुठभेड़ें हुई।

प्रिगोरी ने भाई से मिलने व बात हमेंगा अंपन दुवभरे विचारा को दूर रखने और पहल की तरह गान् रहने का प्रयत्न किया। किन्तु इसमें वह असफल रहा। स्थायी सेना की दूरी पक्ति से भरती हुए लोगो में से अलबगेई उरयूपिन नामक बज्जाक प्रिगोरी के दल में आया। उरयूपिन व म लम्बा था। कचे गान धे निचला जबड़ा आगे की ओर उमरा हुआ था। गलमुच्छे कात्मिक ढग से मुके हुए थ। उसकी निडर भाँव हमेंगा खुशी से चमकती रहती। वह गजा था। बस नुवीनी खोपड़ी में थोड़े-से भूरा बाल थ। आने के साथ ही उमका नाम कलगीगाह रख लिया गया।

बात के चारा घोर लड़ने व बाद रेजीमट को एक दिन की साँस मिली। प्रिगोरी और उरयूपिन एक ही खोपड़ी में रहे। दाना में बात चीन छिनी—

भेमेबाव तुम्हार तो जम रायें गिर रह है ? उरयूपिन बोला।
तोय गिरने से तुम्हाग मनमव ? प्रिगोरी ने त्योरी चढ़ात हुए पूछा।

तुम एम डील हा जम कि तुम्ह काई बोमाग हा।
व घाडा को मिला पिनावर काँ म मत्री चहारदीवारी के सहारे पीठ टेके मीगरेँ पी रह थे। मडक पर चार चार की पक्तियों में पाइँ पर मवार हुस्माग जा रह थ। ताँ चारो घोर पढी थी कि घॉँस्ट्रियना व पीछ हटने समय गली-मडकों पर सटाई हुई। एक यहुना मन्त्रि के मण्डहर में जलानथ घा रही थी। साग बाहर तबाह हो गया था। घाम के रग बिरगे घाममान के नीव थी वहाँ अरवादी घोर निन दहनान घाली

बरवादी ।

मैं विलकुल ठीक हूँ प्रिगारी ने अपने साथी की ओर बिना देखे धुक्ते हुए कहा ।

भूठ वागते हो मरी भी भाँख है ।

भयाना ता तुम्हें क्या दीसता है ?

तुम सहमे हुए हो मुझे मौत स डर लगता है ।

बेवकूफ हो तुम ! प्रिगारी ने अपनी अशुक्तियों के नाखूनो की ओर ताकते हुए नफरत से कहा ।

यह बतलाओ कि तुमने कभी किसी को मारा है ?

हाँ । ता इससे क्या हुआ ?

तुम्हारे दिमाग पर उस घटना का तो बोझ नहीं ?

मेरे दिमाग पर तो बोझ नहीं प्रिगारी बड़ता से मुसकराया ।

उरयूपिन न म्यान स तलवार निकाली ।

घट से अलग कर दू ? उसने पूछा ।

क्या होगा कह दू तो ?

मुह स बिना उफ निकाले मैं तुम्हें तलवार क घाट उतार दूँगा ।

मेरे हृदय स दया नहीं है । उरयूपिन की भाँखें चमकने लगी । किन्तु उसके स्वर और उसने नष्टुनो की फटकन से प्रिगारी ने समझा कि यह

दोरखी बात नहीं कर रहा । उसने उसक चेहरे का गहराई से अध्ययन किया और बोला तुम अजीब भादमी हो तुम जगली हो ।

घोडो भी तुम्हारा दिल पानी का है । यह बोला तुम्हें यह वार भाता है ? देखा । उसन बय का एक पुराना पड छुना और उसको

निगाहा से नापता सीधा उघर ही बढ़ा । उसकी उभरी नसा यानी लम्बी बाँहें और उसकी गर-भाभूली ढग की चौडी कलाइयाँ जड-सी भूलती रहीं । पेड क पास पहुँचकर बोला देखना ।

उसन धीरे-धीरे बटार उठाई और पूरी ताकत से उस पड पर तिरछा वार किया । धरती स चार फुट की ऊँचाई स पेड बटकर गिर पडा । उसकी डालिया स भोपडी की दावार और तिडकी घाटर गई ।

दसा तुमने ? इसको सीखो । बकतानोव नाम के एक अतामान

७६ घोर बड़े दोन रे

का नाम सुना है तुमने ? उसकी कटार की धार में चीनी भरी हुई थी लेकिन वह एक हाथ में ही पाठे के दो टुकड़े कर सकता था—विमकुल इनी तरह !

नये वार का बला सीखन में प्रिगारी को बहुत समय लगा । तुम तगड़े ज़रूर हो लेकिन कटार के मामल में गधे हो । तरीका यह है । उरयूपिन ने उसकी कटार को तेजी से निरछा साधन हुए उन ममभाया हिम्मत से आदमी का बाट ढालो । आत्मी ता मन्वन की तरह मुलायम हाता है । उसकी आँखा में मुसकान तर गई— यह मत साँको कि क्या घोर किमनिए ! तुम करझाक हो । तुम्हारा काम नबाल करना नहीं है । तुम जिन लोगो को मारोग भगवान् तुम्हारे उतने ही पाप वम ही बाटेगा जम किमी सौप को मारन से बाटता है । यह अघामिक है अपवित्र है । यह धरती में जहर पालता है । उसकी जिन्दगी घुटुरघुते की तरह है ।

दम पर प्रिगोरी ने उसका विरोध किया तो वह आघित हो गया और चुप्पी साध गया ।

प्रिगारी का यह देखकर आदचय हुआ कि उरयूपिन से सारे घोड़े डरते थे । वह उनके पास पहुँचता तो वे घपन मान खड़े कर लते जस कि उनके पास मानव नहा दानव जा पहुँचा हो । एक बार कम्पनी का जगन और दानव वान जिले पर पदली हमला करना पडा । घोड़े एक छोटी-सी घाटी में अलग बाँध लिय गए । उरयूपिन का भी पाडा की रखा बन वान दल में रखा जा रहा था लेकिन उसने साफ मना कर लिया ।

'उरयूपिन आघित घोडा का हाँवकर ल क्यों नहीं जाना ? डूप मात्रो उम पर बरमा ।

व डरत है मुमम भगवान् इमम डरत है । उमने उत्तर लिया । पाडों में काम की किमी भा पारी पर वह नहा गया । घपन पाड पर यह बहुत मेहरबान था पर प्रिगारी ने दगा कि जब कभी वह उपर जाना पाडे की पीठ की नम बाँधन लगनीं घोर वह विन्वन लगता ।

एक दिन प्रिगारा ने उमम पूछा वन चलाया कि घारे तुमन
घबरान क्या है ?

मुझे नहीं मालूम । वध भटवकर वह वाना मुझे उन पर बहुत
स्या साती है ।

घाट शराबिया ने डरते हैं वे उन्हें पन्चानन हैं मकिन तुम ता
गराभी भी नहीं हा ।

मरा लिन मछन है घोर गायन व यह यान ममभन है ।

तुम्हारा लिन भडिय बा-भा है । हा मकना है कि तुम्हारा लिन ना
ही नहीं पत्यर हा लिन की जगह ।

हो सकता है । उरपूपिन न विरोध नहीं किया ।

दन को धानुम-धानिव वाय के लिए भजा गया । गाम का घास्तिद्वपन
मता स भागे चकोम्नोवाकिया के एक भगाडे ने रूमी ममान का दुमन
की फौज की स्थिति बननाई घोर प्रत्याक्रमण करने की मलाह ना ।
उमने कहा कि लिन सहकों मे दुमन की रजीमटें गुडरगी उन पर बरा
बर नजर रखी जानी चाहिए ।

दूप धधिवारो न एक जगल के किनार पर मार्जेट के साथ चार
करजाक छाड लिए घोर बाकी तागा का साथ लेकर अगती पहाडी पर
बसे नगर की धार बड लिया । मार्जेट के साथ ध प्रिगारी उरपूपिन
मांगा बागवाड घोर एक दूमरा करजाक ।

मार्जेट न घोडा न उत्तरन का दूमर लिया घोर बागवाड म वाना
घोडा का दमनाक व मुग्मुट व पीछे न जाओ धार इनका ध्यान रखा ।

करजाक एक गिरे हुए देवदार के महार सटकर मिगरन पान लग
घोर मार्जेट दूरबीन म सामन के विस्तृत प्रदेश को देखन-समभन लगा ।
दायी घोर वही मे ब-दूखें धवन की भावाड बराबर साती रही । कुछ
क्रम घाग एक सत सन्ना रहा था । सत की राइ इकट्टी न की गई थी ।
बाला म दान मही ध । प्रिगारी रेंगकर राई म घुम गया घोर कुछ नान
दाग वाला का घुन दान निकाल मान लगा ।

दो घुटसवारा का एक नम दूर के बगीचे मे निवना । रजर उन्ति
फले हुए इलाक का सर्वेक्षण किया घोर फिर करजाक की मरफ यदे ।

प्रास्ट्रियना के भलावा घोर बाई नहीं हो सकता । साजेंट दब-
स्वर मबाना, पाम माने दो फिर मजा चलायेंगे हम उन्हें । तुम सबकी
राइफल्स ता तयार हैं न ? उसने उत्तेजित होकर पूछा ।

घुटमवार स्थिर गति से पास आय । वे हगरी के छ ह्रस्वार व ।
उठाने किनारी घोर ढारी लगे शानदार श्रुवमूरत को पहन रखे थ ।
उनका नता एक बड़े काल घोड़े पर सवार रामें साथे शान्त भाव से हमता
बना भा रहा था ।

फायर ! काशेवोई की चौक से भरी चीख दबलार के पडा के
पीछे म थाइ ऐ गतानो ! तुम जहाँ-क-तहाँ खंड हा जाओ ! ह्रस्वार
एक के पीछे एक भनाज के सत म घस गए । उनम से एक न यानी उनके
नता न हवाई गाली घलाई । घाखिरी ह्रस्वार पीछे रह गया । वह भपन
घाडे की गरदन से लग गया और उसन भपनी टापी बाए हाथ से साथ ली ।

सबसे पहल उरयूपिन भपन परा के बन् धुला और भपना राइफल का
मीन से लगाए राई के बीच से गिरता-पड़ता भागा । सगमग मौ गज
दूर जान पर उस टांगें पटनता और सघप करता एक घोडा गिरा
लियाई दिया । घोड़े के पाम ही घुनीनी टांग के घुटन का मसला एक
ह्रस्वार गडा था । उसन उरयूपिन से चिल्लाकर कुछ कहा और भपने
भागत हुए साथिया की ओर दबकर हाथ ऊँचे कर भात्मममपण कर
लिया ।

यह सब इस तरह देखते-सुनते हुआ कि जब तक उरयूपिन भपन
बन्दी का साथ लेकर लौटा तब तक प्रिगोरी समझ हा न पाया कि यह
सब हो क्या रहा है ।

छाह इस ! उरयूपिन जगरियन के हाथ म तनवार भटकता हुआ
चिल्लाकर बोला ।

बंदी हानी की बलपना के मुमनगया धार भपना पटी पर भगुलियाँ
फग्न मगा । यह तलवार दन का बिन्दुल तयार था पर उत्तम हाथ
बाँध रहे थे और बन्दी की मान नग पाया । प्रिगोरी न सावधानी न
उमकी राहायता की । नम पर पूर्य हुए गाता और ऊपर के हाड के गिर
पर निजवान उम के उम्र ह्रस्वार न मुगकराकर सिर हिलाकर महामता



क लिए उसे घबराव दिया। हथियार छिन जान पर वह प्रसन्न ही हुआ। उसने अपनी जेब खसोरकर चमड़े की एक छोटी पत्ती निकाली और कज्जाका वो तम्बाकू भेंट करता हुआ कुछ बुन्दुदाया।

'हमारी खानिग कर रहा है। साजेंट ने मुसकराकर कहा और सिगरेट के वायज डूँढने लगा। कज्जाको ने हुस्सार की तम्बाकू से सिगरेट बनाइ और घुमा उठाया। नाला तज तम्बाकू उन्हें लग गई।

इसकी राइफल नहीं है? सिगरेट के कग खीचते हुए साजेंट न पूछा।

'यह रही राइफल। उरयूपिन ने अपनी पीठकी झार हगारा किया। भ्रच्छा हो कि इसे कम्पनी पहुँचा लिया जाए। इसे जा कहना होगा वहाँ कहेगा।

'कौन ले जाएगा इसे? साजेंट न अपनी सनिका पर दष्टि डालते हुए पूछा।

'मैं ले जाऊंगा। उरयूपिन न तुरन्त ही जवाब दिया।

'ठीक है ले जाओ।

कभी समझ गया कि मरा भविष्य क्या है। उसकी मुसबान म चिन्ता भनकी। उसने अपनी जेबें उमट दी और कज्जाका का कुछ दूँट्टे हुए चॉकलेट भेंट किए।

रसिन इच रसिन नन आस्त्रिगे ! वह भइ डग म मुगए बनान और चाकलट भागे की ओर बगते हुए हकलाया।

कोइ हथियार है? साजेंट बोला वक-वक न करो हमारी समझ म कुछ नहीं आता। रियाल्वर है तुम्हारे पाम? बम है? साजेंट न कलिलत घोण देवाया। कभी न भयानक डग से सिर हिनयाया।

उसने अपनी तलाशी राजी-राजी द दी। उसके फूले गान कांपन रह। घायल घुटने म खून बहता रहा। लगातार बाँते करत-करते उसने उस पर अपना रुमान बाँचा। वह पोडे क पास अपनी टापा छाट भाया था। सा उसने जानर टापी कम्बस और नोटबुक जान की भागा माँगी। नोटबुक म उसके परिवार के फोटो थे। साजेंट न उसकी बात समझन की भरपक कागिग की और भन्त म निरागा से हाथ हिलाकर

वाला ल जामो इधे ।

उरयूपिन अपने घाड़े पर सवार हुआ और पीठ पर राइफल बांध कर उसने कदी का इगारा किया । उसकी मुसकान से बटावा पाकर हेगेरियन भी मुसकराया और उसके घोड़े की भ्रमल-भंगन चलने लगा । घनिष्ठता बढ़ाने की दृष्टि से उसने उरयूपिन का घुटना थपथपाया पर कज्जाब न सस्ती से उसका हाथ भटक दिया और घोड़े की रास खींच ली ।

घमो इधर से तुम्हारी जानाकियाँ यहाँ नहीं चलनी ।

कदी अपनी भी भौंति छोड़ से असल हट गया और गम्भीरता में लम्बे डग भरता हुआ चलने लगा । वह कभी-कभी मुड़कर कज्जाका की तरफ देख लेता । उसके बाल उसके सिर पर चिपके से हुए थे । इसी रूप में वह प्रिगोरी की कल्पना में भक्ति हो गया—रथ पर पड़ा छोटा कोट सन के-से बाल और आत्मविश्वास और विनय से भरी चान ।

मेसेलाव आया उसके घोड़े का साइ उतार लो ! साजेंट ने अपनी सिगरेट के बचे हुए टुकड़े का धूकने हुए आदेश दिया । यह सिगरेट उसने इस तरह पी थी कि उसकी धगुलियाँ जलने लगी थी प्रिगोरी उस गिरे हुए घोड़े के पास गया काठी खोनी और जान क्या उसने पाम पड़ी टोपी उठा ली । उसने कपड़े को सूखा । उसमें से सस्ने साबुन और पसीन की बास आई । वह घोड़े के भात्र को लेकर पेडा के बीच वापस पहुँचा और हुस्मार की टोपी होगियारी में अपने हाथ में लिये रहा । कज्जाको ने जमीन पर बैठकर घला को खतरा और नये किस्म की काठी के ममूने का लिलचम्पी में देखा ।

'उसके पाम तम्बाकू बढ़िया था । हमे उसमें और ल खना चाहिए था । साजेंट तम्बाकू का खयाल भर पछताया और धून त्रिगत गया ।

मुद्द दारणा बाल ही देवदार के बीच एक घोड़े का गिर चमका और उरयूपिन घोड़े पर सवार होकर मुड़ दिया ।

क्या आस्ट्रियन कहीं है ? भगा तो नहीं दिया ? साजेंट ने पबराबर काठी से उछलने हुए पूछा । उरयूपिन साबुन नखाता आया और नीचे उतरा ।

वह घ्रास्ट्रियन क्या हुआ ? साजेंट न उसका पाम पहुँचत हुए फिर पूछा ।

‘उसने भागन की बागिन की । उरयूपिन गुराया ।

धीर तुमन उस जाने दिया ?

‘हम एक खुल मदान म पहुँचे नि उमन इमलिए मैंन उमक दा टुवडे कर हाले ।

तुम मूठे हो । प्रिगारी चिन्नाया तुमन उम बेकार ही मार डाला ।

तुम चीख क्या रहे हा ? प्रिगारी थीला तुमस क्या मतलब है ? उरयूपिन ने प्रिगारी पर बर्फीली नजर अमा दी ।

क्या कहा ? प्रिगारी धीरे धीरे उठा ।

जहाँ उररत न हा वहाँ टाँग न घडाया समझे ? उरयूपिन न कडाइ स जवाब दिया । प्रिगारी ने झुके स अपनी राइफल छीन धीर साथ ली । पर अगुली घाडे पर जाने ही अग्यरा उठी धीर बेहग त्रोध स बाँपन लगा ।

‘ता । साजेंट ने घमकात हुए त्ग स तौदनर उसका पाम घाकर रूना । उसके घक्क स निगाना चूक गया धीर पेठ की डाल को छेन्ती हुई गोनी सन्न से निवन्न गई ।

‘यह सब क्या हा रहा है ? बोरोवाई न हाँफते हुए पूछा । सिलान्तयव ना जबडा नीचे आ गया धीर वह अब भी मुह खोव बठा रहा ।

साजेंट न प्रिगारी का भीन स घक्का दिया धीर राइफल उमके हाथ म छीन ली । उरयूपिन पर फनाय पेनी पर बायी हाथ रम उमा तरह खडा रहा ।

फिर अलाया गानी । यह वाला ।

मैं तुम्ह जान स मार डालूंगा । प्रिगारी उमकी तरफ झपटा ।

घ्रात्रिय यह सब हा क्या रहा है ? क्या तुम बाट-भागल चाहत हा नि तुम्ह गानी मार दी जाए ? हथियार नीचे रगा । साजेंट न चीखतर कहा ।

त्रिगोरी को पीछे की ओर धबियात बहि फलावर यह दोना के बीच म
धा लडा हुआ ।

तुम झूठ बोलते हा तुम मुझे मार नहीं सप्त । उरयूपिन मुमवशया ।
दोनों वक्त मिनन पर ब घाटा पर सवार घापस जा रहे थे कि सबसे
पहले त्रिगोरी की ही निगाह रास्त में पडी उस हुस्सार की लांग पर
पडी । यह सबसे घागे घागे था । उसने झरने डर हुए घोडे को राना
ओर एक्टन नीच नजर गढाई । मृतक सवार की मरमती मतह पर
हाथ फलाय पडा था । उसका धहरा नीच की ओर था । पतझड की
पतिया की तरह पीनी ह्यतिया सुली हुई थी । उम पर पीछे से चार कर
कमर स उसने दा टुकडे कर दिय गए थे ।

‘उमये दो टुकडे कर लिए साजेंट न बगन मे गुजरने पर बु
बुनात हुए कहा ।

घाहों पर मयाग वजडाक लांग ब पाग मे गुजरने हुए चुपचाप चम्पती
की प्रयान कार्यालय पहुँचे । अब तब शाम के राय गहरे हा गए थे ।
पश्चिम के घुघरात बाल बालत को ठडी हवा का भाका उठाय जा रहा
था । पास ब दलदन से पास ओर सीतल की मढाय-मी बराबर भा रहा
थी । एक नितलीया बोन रही थी । चान्ति उनीदी हो रही थी । गोर
गुन ब नाम पर घोडा के साज म्मनमला रू ब खाना पर ननबारा
की टाकरें लग रही थी ओर घोडा की टापों के नीचे दबदार के दुपरा
क बुचलन की भावाड हो रही थी—ओर बम । हूबत गूरज की मारी
देबनार के पेहों की टन्निया पर पड रही थी । उरयूपिन मिगरेट-मर
मिगरेट पीता जा रहा था ओर मिगरेट की चिनधारिया स बान नाम्ना
बानी उमकी मोटी अगुतिया बमव रही थी ।

जगन के ऊपर बानन महरा रहा था । यह धरती पर पदनवान
गाम ब दम्भरे रगीन मायों का ओर गन्ग बना रहा था । गाय एक
एक कर उडे जा रह थे ।

दुःखिया से धिरेकर पदम सुना का तडके ही जगन स भाग वतना था । पर कही किमी स बूक हो गई और पदल रजीमट समय मे नहा थाइ । २११वा राइफन रेजीमण्ट का घायी और वतन की भागा हुई और किनी दूसरी रजीमट द्वारा किय गए हमल म पडवर वह अपनी वटरिया का भाग स भाप जनकर राख हो गई । इस वट्टी गडवडी स मारी बाजनाएँ चौपट हा गई । हमला अगर बरवानी की नहीं ता असफलता की घमकी तो देने ही नगा पदल दुःखियाँ इस तरह धिसटती रहा कि ग्याहटा घुडसवार डिबीजन का भागे वतन का हुकम दे दिया गया । पत्न प्रौत्री जगली दलनी जमीन म तयार खडे थे । वहाँ इतन बडे अभियान का सम्भावना नहा थी । कई बार ता कज्जाका को दल बनाकर बटना पडा । बारहवी रजीमट की चौथी और पाँचवी कम्पनिया की जगल म ही रिजव रख लिया गया । कुछ ही क्षणा म नडाइ के हाहाकार स माना के पर्दे फटन गे ।

नागा म उत्साह की नम्बी सहर सहराई । बाइ-न-कोई कज्जाक जद-तर न वाल पडता यह बार हमारा है ।

'गुरू कर लिया उन नागों न

कसा गोर हाता है इम मनीनगन स ।

'हम धनन जवानों को भाखिर क्यों ?

धर व खुग नहीं नडर धाते हैं न ?

अभी क्या नहीं पढ़े ?

'एबाध मिनट म पहुँच हा जायेंगे ।

हाता कम्पनियाँ जगल के भगन म पहुँचा । देखना क माट नना न घाट का काम किया और भागे बड़ने स रोव लिया ।

ए पत्न कम्पनी बहुत ही तड रपजार म बगन स गुजर गई । एक घुल्ल-च नान रमीगन घजगर न पीछे म चिन्कार कहा कोई नगा बान न कर ।

कम्पनी गुजरी ता उनव माज-सामान म नतनता-की हुई । पग्लु धानर व कुम्भु क पीछे जान पर बट जल्नी ही घटाय हो गई ।

पडा के बाब स अब भी अर-नय दूर की भावाइँ धानी और फिर

बुझ जाती ।

घर के लोग पहुँच गए शायद वहाँ

हाँ व वहाँ है शायद एक-दूसरे को मार रहे हैं ।

करबाका ने बान सगाकर घाहट सेने की कोणिका की पर कुछ घोर मुनाई न पडा । दाएँ किनारे पर घॉस्त्रिया के तोपची हमला करने वाला पर भाग चरमाते रहे । तोसों की गरज के बीच-बीच म मगीनगने खड मडानी रहीं ।

शिगोरी ने घपन टुप क चारों घोर देखा । करबाक परेगान घोर चचन लगे । घोड़े डारों स परगान दीव । उरयूफिन न काठी पर टापी रगवर घपन गर मिर पर हाथ फेरा । शिगोरी की बगल म मीणा कागबोई न घर की बनी तम्बाडू का गिगरेट स लम्बा बन लीचा । धारा धार जा वृद्ध भी था साफ था घोर जहरत स क्यादा सच्चा था ।

कम्पनियाँ तीन घण्टे तक रिजब रवी गई । इस बीच मशीनगना घोर तोपा का आकाशभी गरज कभी एकदम खत्म हा गया ता कभा घोर तब हा गया । सहमा ही एक हवाई जहाज ऊपर घहराया घोर कुछ चकरार काटकर पूरब की धार बना गया—घोर ऊँचाई पर उडते हुए । हवा जहाज से ऐंटी-एयर प्राफटगना ने भाग बरसाइ ना घाममान क नीतम म जहाँ-नहीं घब्वे-म पड गए । तम्बाडू का माग स्टॉर समाप्त हा गया था घोर मनिब घाम लगाये बडे थ कि कही म तम्बाडू मिलगा । पर दोपहर म वृद्ध ही दर पहल एक अस्ली हुकम लगर घोटा शौडारा घावा । चौथा कम्पनी का कमाण्डर घपन मनिबा का एक धार म गया । शिगोरी को लगा कि हम लग भाग नहीं बढ रहे बल्कि पीछलीट रहे हैं । उसकी कम्पनी चल सी घोर सगभय धीस भिन्न तर जगर ममानो रही । सवाई की आवाजें ज्वाला-जे-ज्वाला पाम घानी गई । कुछ तोपें उनसे बहुत पास नहीं ता बहुत दूर भी नहीं भाग उगजनी लगी । मिर क ऊपर स घाममान कपान कम निकले । जगल क मँडर रास्ता क शारंग कम्पनी का क्रम त्रिगट गया । फिर कम्पनी खुभ म निरभी ता घम्ववस्थित रूप म निकली । काइ घावा वस्ट क फामल पर हुगरी क हुस्मार कम क एक सारगान के सागों का तखार क घाट उतारन लग पड़े ।

कम्पनी सावधान ! कम्पाउन्ड न खाकर घादा दिया ।
 और बरबाद पूरी तरह व्यवस्थित भी नहीं हो पाय कि
 भगना घादा मिला कम्पनी तलवार निवाला । भाग बना हमना
 करो ।

तलवार की घातें विजयी की तरफ चमकी । कुरबावा न तब दुलकी
 चसन घाडा को मरपट दोडा दिया ।
 बटरा की ठीक दायीं ओर छ हूम्मार फील-गन के घाडा म उलम
 ग थ । एक् उत्तेजित घोडा की लगाम पकडकर घमात् रहा था हूमर
 उन पर अपना तलवार की मूठ पर मूठ जमा रहा था और दाकी
 पहिये के घातों का नाच रह थ । पूछ करी घाडा की पाठ पर मवार
 एक अधिकारा की दख-रख म दू नाग काम हा रहा था । कुरबावा का
 दावत ही उन बुद्ध घापा दी जिन मुनत ही हूम्मार हूकर अपने घाडा
 की पाठ पर सवार हा गा ।

और पाम और पाम
 प्रियोरी न उधर हा अपना घाडा दौड़ाया कि उसका एक पाँव स
 रकाव निबन्धन ग । अपने का खतर म पाठ ही वह मुक्ता और पाँव के
 मगूठे स उन भूखत हुए साहू का पकडन की चपटा की । रकाव के पाँव
 म अपने ही उन मिन उठाया ता फ्रीड-गन के छटा घाडा ना उसन
 अपने सामन पाया । सब म भाग के घाडे का मवार घाडे का गन का पकडे
 उनम चिन्ता हुआ था । उसकी समाज मून म तरपी । महमा हा एक मुर्ती
 ताका के ऊपर प्रियारी के घाडे ना पाँव पडा । वमा के साला के ऊपर
 दा मुँह और पडे हुए थ । चौपाताप की गाडा के ऊपर घाँघ मुह पडा
 हुआ था । प्रियारी के सामन उसका बनना मा एक करदार खडा था ।
 हगने के अधिकारा न ठीक सामन म गाना बनार्ह । कुरबाव हवा म
 गय मुनाना हुआ महंग पडा । प्रियारी न घाडे का गन खींची और
 दायीं ओर न अधिकारा के पाम पहुँचन की काँगिस बा । उन तलवार
 म बार बनना हा चांग किन्तु अधिकारा न उन दख लिया और गाना
 बना नी । कि प्रिन्सील का गोविपी ममाप हा गद ता उनने अपना
 तलवार निशानी । उनने यही दाना म धान ऊपर म तीन जानववा

वार गवे । फिर भी रक्तावा म खह श्वेतर प्रिगारी उम पर चौधी वार भपटा । उनवे घोडे तगभग भगन-बगल भागने रहे कि अब आस्ट्रिमन क हल्क भूरे गान के साथ ही उमकी वभाज के धौतर पर सिली रेजीमन की सख्या लिपाई दी । उसन चरवा दवर अधिकारी का ध्यान बटाया और वारकी दिगा घटनकर तनवार की नोन हगरियन के बघा म घुमन दी । दूसरा वार उमन गहन पर किया । अधिकारी के हाथ म लगाम और तनवार छूट पडी और एक बार मुछ सीधा होन क बाद वह घोडे की बाठी पर झून गया । प्रिगारी न आपन न छुटवाग पाकर अपना सिर हिलाया और उमके मान के ऊपर की हड्डी पर पडी तनवार की घोर दगी ।

सहमा हा पाद स किमी ने प्रिगारी पर वार किया और वह बहो ग हा गया । उसे गरम नमकीन गून की अनुभूति हुई और उस लगा कि मैं गिर रहा हूँ । उमका सिर चक्कर मान लगा और लगा कि ठूँठा से भरी जमीन नाघनी उसकी घोर बढी आ रही है । जमीन पर घडाम से गिरने पर उन धाडा हो ग थाया । उमने धीमें सोली ता उनम ब-बहवर गून घान लगा । उसवे पाम से काई पाँव पटवता निरता । घाड़ा की तेजी म चरनी नासों भी उमे मुनाई दा । उमन आगिरी वार आँख सोनी तो किमी पाम क पूने हुए नपुन और उमब सवार के पर रक्ताव म निरता लिग । ममापन ! उमक मस्तिष्क म साँप की तरह रगनी हुई शान्ति छा गई । एक गरज हुई और फिर पाना छोपेग फिर थाया ।

१३

अगला क मध्य म यवोनी लिस्ननिस्की न घनामान की लाइफगाइ रजीमन म अगनी बानी बराबर बरजाक फीजी रेजीमन म जान पा निरचय दिया । उसन आयतन-पत्र भजा और तीन हफ्ते म उमरी मनमानी नियुक्ति हा गई । मत पीटगबुग म चलन दे पहन उमन अरन गिग क एक पत्र किया

पापा मैं घनामान के रेजीमन म नियमित मना म तबान की धर्ती दी था । ना धर्ती मझर हा गई और आज नियुक्ति मिल गई ।

मैं मोर्चे के लिए रवाना हो रहा हूँ। वहाँ दूसरी कोर के कमाण्डर की मेवा में उपस्थित होना है। शायद आपको मेर फमल से ताज्जुब होगा लेकिन मैं आपका कारण बतलाना चाहूँगा। मैं अपने चारों ओर के वातावरण से ऊब गया हूँ—परेहें रक्षण-यात्राएँ पहले की इमृटियाँ इस सारे लूफान से मेरी जान परेशान हो गई है। मेरी तबीयत उखड़ गई है। मैं शानदार काम करना चाहता हूँ। कहने को कह नीजिय कुछ बहादुरी के कर्मिने दिखलाना चाहता हूँ। शायद यह निस्तनित्स्वी परिवार का खून की पुकार है। शायद यह उस प्रतिष्ठित परिवार के खून की पुकार है जिसने १८१२ की लड़ाई से अब तक बराबर रूसी पराक्रम का यश के इतिहास में चार चाँद लगाये हैं। मैं मोर्चे पर जा रहा हूँ। आशीर्वाद दीजिये।

पिछले सप्ताह सम्राट के प्रधान न्यायालय के लिए रवाना जान से पहले मैंने उनके दगन किये। मैं उस व्यक्ति की पूजा करता हूँ। मैं महान क अन्दर पहले पर था कि मी वगन से गुजरते हुए वह मुमकराए और गैन्जियाको से अग्रजी में थोल—मेरा नामी गाड़ है यह मैं बिल्हम का हाथ मिलवा सकता हूँ। इमक हाथ में। मैं तो उनकी सूली लकरी की तरह पूजता हूँ। मुझे यह मानने में कोई सन्देह नहीं यद्यपि आज मरी उम्र अट्टाईस वर्ष से अधिक है। मुझे महान के अन्दर की बेसिर-पर की बातों में बड़ी तबलीफ होती है। वहाँ लोग सम्राट के उज्ज्वल नाम को बलवित करना चाहते हैं। मैं उनकी बातों का यकीन नहीं करता कर नहीं सकता। अभी उस दिन कप्तान प्रोमोव न साम्राज्य की दान के खिलाफ मुँह खोला तो मैंने उस गाली से उझते-उझते छोड़ा। बात नीचता की थी और मैंने उनसे कहा कि जिन लोगों की रगा में सेतिहर मजदूरा का खून बहता है सिर्फ वे ही अपने मुँह से ऐस बर्मीनेपन की बातें निकाल सकते हैं। घटना कई दूसरे अग्रमरा का मामल घटी। मैं आपसे बाहर हो गया और मैंने अपना रिवाल्वर खान लिया। मैं तो उस गधे पर अपनी एक गाली बरघाएँ बन देना परन्तु हुआ यह रिमोगा ने रिवाल्वर मेरे हाथ से छीन लिया। हम नरक में दिन-ब-दिन मेरी जिलगी बर म बदतर होती जा रही है। गार रेजीमेंट में—

यतलाया कि हम भोग दक्षिण-पश्चिम क मार्च स प्राय हैं। प्रस्पताल यवौनी की रजिस्ट्रर क इलाक म ही जा रहा था। डाक्टर ने अपन ऊपर क अधिचारियों की बहुत टीका-टिप्पणा की बिबीजन के ऊपर स नीच तन के स्टॉफ अधिचारियों को जी भरपर बोसा और अपनी दाबी पर अगुनियाँ फरत हुए चम क अन्दर स घाँवें चमकाते हुए नय परिचित क सामन सारा गुम्सा उठेन दिया।

क्या आप मुम बेरेज-यागी तक ल चलेंगे ? यवानी न उसकी बात कान्ते हुए पूछा।

हाँ सेफिन्ट ! आप हमारी टोली म शामिल हो जाइये। उसन कहा और परिचिता की भाँति यवानी क कान क बटन ना धुमाते हुए अपनी गिरायतें उगलना रहा।

सेफिन्ट माहक जरा सोचिय हम जानवरा स खिचनवाली मवारियों पर दा भी घस्ट का कामला तय कग्के यहाँ प्राय हैं धावारागदी करन। हमारे पास यहाँ काइ काम नही है और जिस इलाक स हम प्राये हैं उसम दो दिन स खून की नर्तियाँ बह रही हैं। यहाँ सक्को लोग एम हैं जिन्हें हमारी मरु की जरूरत है।

डॉक्टर न खून की नर्तियाँ नफरत स भरपर शहराया।

इस बेहूदगी की क्या और कम सफाइ द सकते हैं आप ? सेफिन्ट ने विनय म पूछा।

'क्या और कम ? डॉक्टर ने व्यग्न स भरी निगाह ऊपर की और गरजा प्रव्यवस्था उपद्रव और कमान के कमचारियों का गया पन यह है इन कम और कम का जबाब। बदमाग बड़ी-बड़ी जगहा पर जम हुए साग गाउमान बरन हैं। कुशल तो क्या हगिे उनम ता फवन का भी टाग है। आपका बरभावव क रूगी-जापानी युद्ध के मस्मरणा का ध्यान है ? वग कनी तब-मुज्ज दावारा घट ग्ना है और कोद म भाव ऊपर म हा गर्द है।

निम्ननिम्नी डॉक्टर का सस्पूट बरगाहिया का धार बडा। डॉक्टर क मान कम ही ठमतमाय रह। खाना सडा म हमारी हार होकर रूग्ना सेफिन्ट ! हम जापानिया म लड और हार पर प्रकत हम न

माइ । हम लम्बी-लम्बी डाँगे भर मात्र सकत हँ घोर बस । घोर डाक्ट-
निरागा स गिर हिलाता पत्रिया की घोर चत शिया । राह क गढ़-गढ़पा
म तल घोर पाना क धान-मल म इद्रबनुप बनत रह ।

फौजी अस्पताल के रागा क बरज-यागो पहुँचन-पहुँचत दाना समय
मिलन लग । इवा अनाज क पीषा का छड़ती रहा । बाल पश्चिम में
जमा होन रह । जा बाल उचाइ पर थ व गहरे बगनी रग क थ । प
जा बाल नीच थ उनका रग घुर्ने के समान हवा नील था । बीच में
व आकारहीन थ और नगी क बाँव क पानी में एक किनार पढे बफ्र क
तूना-स जमा थ । बीच की सवा सछनता हवा नारगा रग प्रवाग स पुन
मिलकर तरह-तरह क रग बुन रहा था ।

सडक के किनार का गाड़ क पास एक मरा हुआ घोड़ा पड़ा मिला ।
उसका एक पर अजीब ढंग स ऊपर की भाग उठा हुआ था और उसका
नाल चमक रही थी । बगनी बगन स गुजरी ता विस्तारितकी न लाग का
गौर से दगा । उसकी बाधा हीकन बाल न घाड़ पर घूफा और बाला—
यह ज्यादा खाने म मरा है खेता में घुम गया हागा' 'बह सम्हला ।
बह दोबारा घूमन जा रहा था पर बन्तमीजी का मयाल थाया ता
थूक निगल गया और आस्तान स घपना मुँह पाउन लगा अत्र मर गया
है तो इस जमीन में गाड़ भा ता कौन गाड़ । यह हमी है जमन नहा ।

तुम इस बार में क्या जानत हो ? यवानी अवारण हा क्रापित
हानर वाला । उस समय उमे चपरामा के घहर क बडप्पन और
निरस्कार क भाव क प्रति पृष्ठा हा भाइ । चपरामा का चहरा सितम्बर
क मूग डठला त भर सता की तरह भूग और भयानक लग रहा था ।
उसमें और उा हजारा किमान फौजिया में उस कोई अन्तर न लग ।
एग हजाग लाग उन रास्त में मिल थ । सभी के चर तर और
भुरभ्राय हुए थ । सभी की भूरा नीली या हरा धाँवा म उदामा था ।
उन्ह दक्कर वपों पहेल त्त तबि के पिम पिनाथ मिनकों का तमवीर
गह्व हा नामने आ जाती था ।

मैं नडाई म पल्ल तान मान जमनी में रहा हू । चपरामा न सहज
उतर दिया । उसकी आवाज में भी उसक घहर का बन्पन और

विरस्वार भनवा ।

जवान बग दरो । लिस्तनित्स्वी न मन्वी न बग धीर मुट पर तिया । उमन फिर मरे हुए घाटे पर नजर छानी । घाटे क बाज उमकी धाँया पर आ गए थे धीर उमक दान धूप म पीले लगन थ । घाडा दयन म कमउम्र धीर अन्धी नस्त का मानूम हाता था ।

गाडियाँ ऊँची-नीची सडक पर बढती रहा । पश्चिम म रग हल्के पडने लग हवा पली । हवा था भाका यागना का उडाने लगा । गमे म उनके पीछे मर पडे घाट की उठी हुई टाँग सडक क किनारे क टूटे हुए ज्ञान-सी लगी । यवोनीन पीछे मुडकर दखा तो अकम्भान् ही घोट पर विरला का नारगी रग छना । इन-गिन बाला वाली उमकी टाँग किनी पीरागिन बया की बिना पनिया की गानदार गाख सी लगी ।

फौजी अस्पताल बरजयागा पहुँचा ता उम गह म घायल फौजिया वाली गाडियाँ मिला । पहली गाडा का मालिक एक बुजुग गा बेमा रूमी था । पटमन की गमें उमके हाथ म धी धीर बह घाटे क मिर क पाम चल रहा था । गाडी म एक बरजाक लेटा हुआ था । उमक मिर पर पट्टी बधी हुई थी धीर बह बुहनिया के सहार सटा आँखें बंद किय गेती या रहा था । उमकी यगन म एक दूमरा सनिक सटा हुआ था । जूनडा पर म फटा उमका मिकुडा हुआ पाजामा गादेरून मे तर था । बिना मिर उठाए ही वह बहुत चुरी तरह गालियाँ बर रहा था । उमक सहज म लिस्तनित्स्वी घबरा गया क्वाकि एमा सगा जन कि काई ईश्वरवादी उस्ताह म प्राथनाए दाहरा रहा है ।

दूमरी गाडी म पाँच-छ फौजी अगल-बगल सटे थ । उनमें न एक बडा ही गगमिजान था । उसकी धाँया में अमाधारण अमक धीर भाग थी । रग समय बह एक कहानी सुना रहा था

सगता है कि उनके सम्राट न अयना गत्रदून अजा धीर उसने गममीन का प्रस्ताव रखा बाज यह है कि यग धान मुक्तम एक र्मान पार धाग्मीन कही है मैं नहीं समझता कि उसने दून की ली होगी

धीर मैं समझता हूँ कि उसने दून की ली है । एक ब्यक्तिने मन्दह भरे दिन स उत्तर दिया धीर मिर हिलाया । उमके मिर पर दाग थ ।

य दाग इधर कटमाना क प्रकाप के बाद पड़े थे ।

'पर गायन वह सचमुच ही भाया हो । घोडा की तरफ पीठ कर बैठे हुए एक तीसर भाग्मान बोल्ना प्रदग के लोगा क-न कामन स्वर में कहा ।

पाँचवी बगन में तीन कज्जाक भाराम मे बैठे हुए थे । उन्हाने पाम म गुजरत लिस्तनित्स्की को मौन भाव स देवा । उनके सस्त चट्टरा पर अधिकारी के प्रति सम्मान का किसी तरह का कोई चिह्न नही भगना ।

'गव्रयद्येन' कज्जाको । सपिन्नेट ने उनका अभिवादन किया ।

'गव्रयद्येन साहब । कोचवान क पाम बठे मुन्दर-स्त रुपहली मूँछा वाले कज्जाक न अनमन भाव स जवाब दिया ।

किस रजिमेंट क हो तुम ? निस्तनित्स्की न फिर पूछा और कज्जाक क कप की नीली पट्टी पर भक्ति सख्या पन्नी चाही ।

बारहवा रजिमेंट का

भव तुम्हारा रजामेंट कहीं है ?

पता नहा मानव ।"

सकित तुम जम्मी कहीं हुए ?

गाँव क पाम यहाँ से दूर नहीं है वह जगह ।

कज्जाक आपस म कुछ पुमफुमाये कि अपने स्वस्य हाथ मे अपना जटमी हाथ मायत हुए एक कज्जाक गाडी म नीच हूँ गया । उसके हाथ की पट्टा कायने स बधी न थी ।

एक मिनट साहब । गाली म पट गग अपने हाथ की होगियारी म फिर करता वह नग परों सडक पार करने लगा । उसका हाथ या भी मूजन-मा लगा था ।

आप व्यगन्स्वाया क हैं क्या ? आप लिस्तनित्स्की ता नही हैं ?

मैं निस्तनित्स्की ही हू ।

यही हम लगा आपके पाम कोई सिगरट है ? हो तो प्रमु पीगु

के नाम पर द दीजिए तलब से जान निकली जा रही है ।

वह गाड़ी का रगा हुआ बाजू धाम घसता रहा । लिस्तेनित्स्वी ने अपना मिगरेट-बैग निकाला ।

क्या एक दर्जन सिगरेटें हम द सकत हैं भाप ? हम तीन ह ।
कचड़ाक की मुसकान में धनुराय घुन उठा ।

लिस्तेनित्स्वी ने सारी सिगरेटें उमकी हथेली पर उलट दी और पूछा तुम्हारी रज्जिमट क बहुत लोग घायल हुए हैं ?

कोई दो दर्जन

जानें बहुत गई हैं ?

हमम स बहुत लोग मार गए हैं क्षमा कीजिय जरा कृपा कर दियासलाई जला दीजिय घपवा । कचड़ाक ने सिगरेट जलाई और पीछे रह गया । पर बात का जबाब चित्लाकर दिया भापकी जागीर क पाम क तातारम्बी के तीन कचड़ाक मार गए ह । दुश्मना न हमम से बहुतो को मून डाना है ।

उमन अपना स्वस्थ हाथ हिलाया और अपनी गाड़ी पकड़न के लिए तलब कम्म बढ़ाय । उसका ट्यूनिक् हवा म फड़फड़ाता रहा । पटी बधी न थी ।

लिस्तेनित्स्वी की नई रज्जिमट क कमाण्डर का प्रधान नायालय एक पान्सी क मकान म था । सा चौक म पहुँचने पर लिस्तेनित्स्वी ने अपने ऊपर दया दिवलाकर साय लान वाल डॉक्टर स दिना लो और अपने ट्यूनिक् का धूल भाइता हुआ अपने दफ्तर की खोज म निकला । जगह उस मिल गई । युद्धस्थल से दूर स्थित अन्य सभी प्रधान कार्यालयों की भाँति व स्थान भी शान्त और वैज्ञानिक-मा था । सार-के-सार के कचड़े पर भुने हुए थे । एक बड़े कप्तान फ्रील्ड-टेलीफोन के खोले म अपनी हसी उँडिन रहा था । गिठनिया क पास मस्किमों भिन्नभिन्न रही थी और दूर क टेलीफोनकी घण्टियाँ मन्डरा की तरह मन मन कर रही थी । एम म एक खरामी बवोनी का रज्जिमट के कमाण्डर के निजी कमरे म लिया न गया । दरवाजे पर ही सम्बा बनल मिल गया । वह बवोनी म उन्मादीन, माव म मिना और इगारा कर उस घन्ट बुलाया ।

घनर पहुँचकर दरवाजा बन्द करत हा बनल ने भयपनीय थकान ना दिलावा कर भपने वाला पर हाथ फेरा और घामी नीरस भावाज म बाता सिगड स्टॉप ने मुझे कत भापके रवाना होने की सूचना दी थी बठ जाइये ।”

उमन यवाना म उमका पिछली सवाभा की जानकारी प्राप्त करनी चानी राजधानी की ताजा खबर पूछा और उमक सफ़र के बारे म पूछताछ की । पर बातचीत क सिलसिल म एक बार भी उसक बहने की धार घाँव उठाकर नहा दला ।

गायन मोर्चे पर बहुत खटना पडा है । थकान से छूर छूर लगता है । यवानी न सहानुभूति से साबा । जस जान-बूझकर सुमारी दूर करने क लिए बनल न तनवार की मूठ से अपनी नाक खुजलाई और बाला मच्छा सेपिटमेंट आपकी धपन बंधु-मधिकारिया से जान-बहचान कर तना चाहिए । क्षमा कीत्रियगा में लगातार तीन रातो से नही सोया हू । इन बात-काठरी म तांग सेलने और गराब पीन क घलावा और कोई काम ही नही है ।

लिस्तनित्स्की न भमिवाचन किया और सनादर की भावना पर मुसकान का पर्दा डालते हुए दरवाजे की ओर मुड़ा । पहल परिचय में कमान अधिकारी ने उम पर कुछ मच्छा भमर नही डाला । बनर की धकी भाकृति और टाडी क तिल म उल्यन्न घानर क प्रति व्यग्य म मन ही-मन मुसकराता हुआ वह बाहर चला गया ।

१४

यवानी का रजोमट का काम मिला मीत्र नहा की घेराबन्दा करन और दुःमन पर पीछे म हमता करन का । कुछ दिना म ही लिस्तनित्स्की की रेजोमेट के सफ़ारा न जान-बहचान हो गई और वह सड़ाई क वातावरण म डल गया । इससे उमकी धात्मा म प्रविष्ट धाराम तनवा और मुस्ता पटा ।

धेगयना का काम तत्पन्ता मे किया गया । डिवाजन दुःमन का सना क पिछले हिस्स म जा पहुँचा । दुःमन की सना भायी धार से

बढ़ती रही। आस्ट्रिया के लोगों ने मग्यार के धुइसवारा की सहायता से हमल का जवाब देना चाहा कि कज्जाक बटरिया ने बम बरसाने शुरू कर लिए। उधर बायी घोर से जो मंगीतगनें धली तो मग्यार सेना के पर उसठ गए। वह भाग दी। कज्जाक धुइसवारो ने उनका पीछा किया तो ऊपर स।

लिस्तनिस्की अपनी रेजिमेंट ले प्रत्याक्रमण के लिए बढ़ा। उसके धार सनिक घामल हुए और एव खेत रहा। उनमें से एक कज्जाक तो अपने मुर्दा पाड़े के नीचे कुचल गया। उधर से गुजरते समय लेफ्टिनेंट बाहर से ऐसे जम शान्त बना रहा जैसे कि कज्जाक की आह-बराह उसके कानों में पड़ ही न रही हो। दूसरी ओर जल्मी कंधा लिए कज्जाक उधर से गुजरनेवाले तमाम लोगों से मिनत करता रहा।

माइया मुझे इस तरह मत छाडा। माइया मुझे घोड़े के नीचे न निकासो।

उसका धीमा दुःख से भरा स्वर इतना धीमा रहा कि किसी भी कज्जाक के कानों में पड़ा ही नहीं। पर कज्जाकों के उछलते हुए लिला में नाम को भी कहरण नहा उपजी। धगर उपजी भी तो शायद इच्छा शक्ति ने कुचल दी। वह इच्छा शक्ति उन्हें बराबर आगे-ही आगे बढ़ने को प्रेरित करती रही और उनसे पाडा से उतरने के नाम पर ना को घगुनी दितलाती रही। दल अपने घोडा के पाँच मिनट तक दुलकी पाल चलाना रहा ताकि घोड़े पाडी मांस ले सें। आधे घस्ट के पासने पर तितर बितर मग्यार सेना दम छोडकर भागती रही। उनमें इपर उधर बीच-बीच में दुमन की पदल सेना के लोग फँस रहे। पहाडी की ओटी पर आस्ट्रिया की एक मालगाडी धीरे धीरे बढ़ती रही और सिर पर महराते बम के गाल उन्हें विनाई देते रहे। बायी घोर से एक बटरी उग पाडी पर बम बरसानी रही और तोपा की गरज मता पर सुदकती रही और जंगल के बीच गूँजती रही।

मार्नेट-मजर ने टुकडी के आगे आगे चलन हुए हुकम दिया कदम पास। धीरे तीनों कम्पनियाँ उनी तरह आग बढ़ धलीं। सवारा के घोड़े महराने सगे और उनक मुँह से भयग उछल-उछलकर इपर उधर

उठन लग ।

रेजीमेंट न रात में एक छाटे-स गाँव में पड़ाव डाला । बाहर अधिकारी एक ही भापड़ी में ठहरे । थकान और भूख से पूर व सोने के लिए लट गए । कौजी बावर्चीवाना सगभग घापी रात को घाया । बोरनत चुवाव गोम्बे की एक पतीला सकर घाया । महक से सपनर जाग गए खान पर टूट पड़े और पिछल दो दिन की बमी पूरी करने लग । बहुत देर से खान के कारण उनकी नीन् उठ गई और व सपन सबानों पर सत्कर बातें करने और तिसरटें पीन लग ।

प्रयम लफिनेन् काल्मीकोव का म छोटा और गोलमटोल था—सहरे और नाम दोना से ही मगानियन । यह भयकर मुटाए बनाता हुआ वाला यह सदर्फ मेर त्रिए नहीं है । मैं चार सत्नी पहन पन्ना हुआ हूँ और तुम्हें मासूम हाना चाहिए कि इन लडाईं के खत्म होने से पहल-ही पहल सेन बसूगा ।

घाह छाया भी किस्मत का गाना ।

यह किस्मत का गाना नहा है । मेर भाग्य म इनी तरह मरना निखा है । मेरा गल मेर पुरखा से मिनती है और मैं यहाँ बिलकुल बकार हूँ । घाज जब हम लागा पर गाल बरस ता मैं काप से काँप उठा । दुमन घाखा के मामन न हो मैं यह बगान्त नहीं कर सकता । एन म मुम्बे डर-जना लगता है । दुमन बस्टों दूर से गाल बरमात हैं और हम घायल बिडियो की तरह स्तपी मगन में घाट पर दीबत सेन जात हैं । मैंने कुपातका म घास्ट्रियार्ड हाविन्जर तापें दखी तुमम से किसी न दग्वा हैं ? कपान घतामान चुकोव न पूछा ।

क्या घानदार चीज हाती है पर मामन म पुछा कारनेत चुबोव न जाग से बहा । इस बीच उनन एक बटारा धारवा और सात्र कर लिया ।

मैं भी देगा है पर मरी घानी काइ राय नहा है । तापों के मामल में मैं बिलकुल गया हूँ । मुम्बे तो यह बन्दूक-जमी लगती है निबाप इसक कि उनकी नली और बडी हापी है ।

निस्तानित्का की धार मुहकर काल्मीकोव कहता गया मुम्बे को

पुराने जमाने के लड़नेवाला से ईर्ष्या होती है। बराबर की तड़ाई हो दुश्मन सामने ही तलवार से चीरकर उमके दा टुकड़े कर दो—यह तो हुई तड़ाई। पर आज की तड़ाई तो शतान की ही समझ में आएगी।

भविष्य में लड़ाई में घुड़सवारा के लिए कोई गुजाइश नहीं रहेगी। इसका नाम निगान मिट जाएगा।

यह तो मैं नहीं कह सकता।

लेकिन भ्राम्मी का नाम मगोन नहीं बन सकती। मुझ बहुत धागे निकल गए।

मैं भ्राम्मी की नहा घोड़ा की बातें कर रहा हूँ। मोटर-साइकिलें या मोटरों का आएगी इनकी जगह।

मेरी भ्राम्मी के सामने तो माटरा की बम्पनी की तसवीर आ रही है।

य मय बखरूकी की बातें हैं। काल्मीकोव ने उत्तजित होकर बात बाटी भक्तकीपन की बातें हैं। मैंने कह सकता ह कि दो-तीन सौ साल बाद लड़ाइयाँ बँसी हागी लेकिन आज तो घुड़सवार-फौजें हैं ही।

सारे मार्ग पर त्राइयाँ-ही-त्राइयाँ खुल जाएगी तो आप इन घुड़सवारों का क्या करेंगे यह यतलाइय मुझे ?

त्राइया की लाइबर उनके पार निकल जाना घोर मना के पृष्ठ भाग से घावा बोनना यह काम हागा घुड़सवार फौज का।

बनवाम ह।

घरुदा बंद परा बातें अब थोड़ा सा ला। किमी ने कहा।

यहम समाप्त हो गई और बन्म की जगह सुरंगि न ल गी। सडे भूग की पुमान पर बिद्य सवाद पर पीठ के बन् सटा तिस्तनिस्की तीगी गच का अनुभव करता रण। उगकी बगल में सटा हुमा था काल्मीकोव।

मुझे बपुर नामक स्वयसवक में बातें करनी चाहिए। उगन यवोनी से धीरे से कहा यह मुंहार रण में है। बड़े मजे का भ्राम्मी है।

किन मान म ? काल्मीकाव का धार पाठ करत हुए यवानी न पूछा ।

वह कथान का रुमी रूप है । भास्वा म एक धाम महानगर की तरह रहता था तकिन उस मणीना में त्तिचस्था है । खुद मणीनगनें कथान में मज है ।

माभा मा जानें । निम्ननित्की न वण ।

हैं गायन भव साना ही चाहिए । कामाकाव न कृष्ण माधन हुए कहा और त्यागियां चढ़ाए ।

भाप मुझे माऊ करें नष्टिनैत माह्व मरे पर यन्त्र कर रह है भाप जानत हैं मैंने पण्ट तिन से मात्र नहीं बल पमान म मड गए हैं वितकुन बहन ही मन्त है एक जाड़ी किमी सतन चाहिए

निम्न नगों । निम्ननित्की न सान व त्रिए लटत हुए कहा ।

यवानी का काल्माकाव की यन्त्र न विषय में बनलाई गई बाता का ध्यान हा नहीं रहा तकिन धगल तिन धरम्मात हा वह स्वयसवक उमे मिल गया । ग्जामन क समाण्डन न उम लडक ही धनुषधान-नाथ क त्रिए दाडे पर जान की भाषा दी और कहा कि यदि मम्भव हा तो मायी धार म बगवर भाग हा बड़नी पण्ड मना म मम्भक स्थापिन कर यता । भुन्पुटे में लडगधाना तथा सान हुए करबाकों क ऊर गिरता पडता यवानी द्रुप-भाजेंत क पाम जा पहुँचा और दम उगाकर बाना धनुषधान-नाथ क त्रिए धपन माय त जान को मुझे पाँच धाम्यी चाहिए । मरा धाम्यी तयार करा दा चुरा जल्दी ।

वह धाम्यिया क धान की प्रतीका में बठा रहा कि एक मय-ना करडाक भीपडा क दरवार पर धाया ।

हूँकर ! यन् बाता नाजेंत मुझे धाम्य माय नहीं जान न रह क्याकि मात्र भरी धारा नहा है । क्या भाप मुन्ड स पनेले ?

तुम तकररी चाहत हा ? तुनन कृष्ण गम्बडतो नहा की यवानी न धेपेर में उन ध्यति का चहग दयन को काण्ण करत हुए कहा ।

मैंने कृष्ण भी एमा नहा किया ।

ठीक है तब तुम चल मवन हा । यवानी न प्रमसा त्रिया । मौने क

निग कज्जाक न पीठ फेरी ही थी कि यवानी ने उस पुनारा ऐ साजेट स कह देना

मेरा नाम बचुक ह । कज्जाक न उमका वान वाटत हूण कहा ।
स्वयसवक हो ?

जी हाँ ।

परेगानी स उभरत हुए लिस्तनित्स्की न वान करन का भपना उग मुधारा अन्धा बचुक कृपा कर साजेट स कह देना कि अच्छा रहने दा मैं स्वय कह दूंगा ।

सुबह का अंधेरा बटा कि लिस्तनित्स्की अपने भ्रातृमियो को लेकर गाँव स बाहर घाया । घाडी दूर चलन के बाद यवानी ने भावाज दी स्वयसवन बचुक ।

दूरूर !

कृपा भपना घोडा भर घोडे की बगल म से भायो ।

बचुक भपना मामूली-सा घोडा यवानी के अच्छी नम्ल क घाडे की बगल म ल घाया ।

निम गाँव के हो ? लिस्तनित्स्की ने उमकी भावृति का ध्यान स देगत हुए पूछा ।

नोवाचरकास्मवाया का ।

क्या तुम मतला मतत हो कि तुम्हें स्वयसेवक क रूप म प्रीज म क्यों घाना पडा ?

येगक । बचुक ने हलने हसवे मुमनराते हुए उत्तर दिया । उमकी हरी स्मिर घालो म कठोरता थी— मुझे लडाई की बला म निश्चस्ती है । मैं उमम माहिर होना चाहता हूँ ।

इम काय के लिए तो मनिज विद्यालय हैं ।

मैं पहल म्मावहारिक गान प्राप्त करना चाहता हूँ । मिठान्त पीछ सोग भूंगा ।

'लडाई शुरू हान स पहल तुम क्या करते थ ?

कामगार था ।

कहाँ काम करते थ ?

पीटसबुग रोस्तोव म धीर तुला ने हथियारा के कारखाने म ।
 में मगीनगन की दुकडी में अपनी बदली करान के लिए धर्जी देना
 चाहता हूँ ।

मगीनगना के बारे में कुछ जानकारी है तुम्ह ?
 मैं बरतायर मदसन मेक्मिम हॉचकिच बिक्स लविस धीर
 कइ दूसरी कम्पनिया की बनी मगीनगन चला सकता ह ।
 आछा मैं इसके बार म रेजीमट के कमाण्डर स बात करू गा ।
 बडी मेहरवानी हागी ।

लिस्तनित्स्की ने बचुक के हूष्ट-मुष्ट तगडे धरीर पर एक बार फिर
 दृष्टि डाली । उमे देखकर उसको दोन किनार के काक एल्म के पेठ की
 याद हो घाई । उस शक्ति म कोई खास बात न थी । केवल मजबूती स
 भिचे हाठ धीर निगाह को चुनौती देती हइ उसकी घाँसे ही एसी थी जा
 उस बाकी कइजाका की भीड स भलग करती थी । वह मुसकराता सकिन
 बहुत कम धीर मुसकराता तो हाठा-ही-हाठों म मुसकराता । किन्तु उसक
 नेत्रो की कठोरता कम नहीं हाती । उनम एक झलगाय बना ही रहता ।
 उस दोन की बीली मिट्टी म उगनवाला काक एल्म ही समभिए । यह
 एल्म सबकी तरफ स विमुख धीर उगसीन रहता है ।

योही दर तर घाडो पर सवार क घातिन स चलने रह । बचुक ने
 काठी पर अपनी चौडी हथिनियाँ टेक ली । लिस्तनित्स्की ने एक सिगरेट
 निकानी धीर उस बचुक की तीली स जलाया । जलात समय बचुक क
 हायो स उसे घाडे क पसीन की तीली बास घाई । उसके हाप पर पोडे
 की छान के समान धन भूरे वात शिवताई दिए । यवोनी को बलान्
 आछा हुई कि उमे भटक दे ।

तेज तम्याहू का घुर्मा निगलत हुए वह बाना जगन म पहुँचत
 ही तुम दूसर करवाक के साथ बायीं धीर क रास्त पर मुड़ जाना
 समझे ?

जी

भगर घाये बस्ट तक हमारी पन्त दुकडा तुम्ह न मिले तो वापस
 या जाना

'बहुत अच्छा !

उन्गने घाडा का दुनकी ढोडा दिया ।

जगल म सडक के माड पर नय बचों का फुरमुट था । उनमे भाग रवतार क छोटा पीने मूवे पेड के भीर घास्ट्रिया की सना स बुचमी हुई भाडियाँ भीर छोटे पीध थ । दाहिनी भीर दूरी पर तापवाना जमीन हिना रहा था सकिन यहाँ बचों के पास बिलकुल गान्ति थी । जहाँ-तहाँ घनी घोम पडी हुई थी । गरद की घास गुनाबी पडती जा रही थी भीर घपना रग उड जाने का सम्भावना म दुखी थी । एस म बचों क पास लिस्ननित्स्की न घाडा रोका दूरबीन निवानी भीर जगल के भागे की पहाडा की भीर गया । उसकी तलवार की मूठ पर एक शह की मखवी था बटी ।

बेवकूफ ! बचुक ने दान्त भाव स हमदर्दी दिवाते हुए कहा ।

क्या बात है ? येथोनी न उसकी भीर मुडकर पूछा ।

बचुक ने गह की मखवी की भीर घाँवों स गारा किया । लिस्ननित्स्की मुगधरा उठा ।

इमने गह म तजी भा जाएगी यह नही सोचा ? घह वाला ।

बचुक ने तो उम कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु उत्तर दिया दूर क देवतारों क समूह की गान्ति भग कर एक नीलबठ न भीर बच-पहा क बीच मे भाई गालिया की वोद्वार न । एक गान्ती से एक डाल दूटकर लिस्ननित्स्की के घोड की गटन पर भा गिरी ।

व सौदकर घाडा पर चीमन चिलनात भीर काबे घरसान तजी म गाँव की भीर घल दिए । घास्ट्रियन मनीनगन न घपनी बाकी गानियाँ घरमाइ ।

इम पटन हमस क घा लिस्ननित्स्की न स्वयमेवक बचुक स क वारवानबीत की । ह्य बार उन बचुक की घाँवों म दड़ दिवाग की भनक मिनी । यह नहीं जान सका कि इम व्यक्ति क इनन मापारण त्रियाई दन वाय धन्रे की बीन-भी धनजानी गूढना न घेर गया है । बचुक मना हगा म भिच हाग पर मुगवान सजाकर ही बातें मग्ना भीर मवानी क मन पर मना यती घाप घाणा कि मैं कुन्ति माग की साज क लिए

एक निश्चित नियम का प्रयोग करता है। उसकी इच्छानुसार उमका नियुक्ति मशीनगन की टुकड़ी में हो गई। कुछ दिन बाद रेजीमट मोर्चे के पीछे आराम कर रही थी कि जल हुए शब्द की दीवार ने पाम लिस्तनित्स्की उससे मिना।

ओह ! स्वयमवक बचुक ! उसने पुकारा।

करवाक ने मुड़कर उसका अभिवादन किया।

वहाँ जा रहे हा ? येवोनी न पूछा।

अपने कमाण्डर के पास।

तो हमारा रास्ता एक ही है।

घोड़ी देर तक वे दोनों उम बरबाद गाँव की गलिया में चुपचाप चलते रहे।

सोग बाहर की इमारतों के पास जा रहे थे। वे इमारतों में सब सुरक्षित थी। बगल से धुँधसवार गुजर रहे थे। गली के बीच फौजियों का वावर्चीखाना घुमा उगल रहा था। सामन करवाक की एक लम्बी कतार था। सब अपनी अपनी पारी का इन्तजार कर रहे थे। हवा में बूदा के छीटे थे

ता मुड़कला सीख रहे हो ? लिस्तनित्स्की ने बचुक की ओर कनखी में टखत हुए पूछा। बचुक उसमें जरा पीछे था।

जी सीप रहा हूँ।

लडाई के बाद क्या करने का इरादा है ? लिस्तनित्स्की ने किसी कारण उसके हाथ पर निगाह डालने हुए पूछा।

'कुछ सागलों जा बोपेंगे मो काटेंगे लेकिन जहाँ तक मेरा मतलब है देखा जाएगा। बचुक न जवाब दिया।

इस बात का क्या मतलब लगाऊँ मैं ?

प्रापन मुना है कि जो हवा बाता है वह अचट पाटना है वम यही मतलब लगाइए।

पहलियाँ मन बुझाया।

'बात विलकुल साफ है। कामा कीजाणा मैं यहाँ ग बायी घोर मुद्रूगा।

मैं घ्रापका सूचित करता हूँ उसने पढ़ना शुरू किया फिर सहसा ही बेंच से नीचे उतगकर दहाड़ मार-मारकर रोने लगी ।

पापा ! माँ उफ माँ हमारा प्रीशका हाय हाय ! प्रीशका मारा गया ।

जिरनियम पीध की घ्राघी मुरभाई पत्तिया म पसी हुई एक बर रह रहकर गिबकी मे टकराती रही । हात म मुर्गी सन्तोप से कुकड़-बू करती रही । खुले हुए दरवाज से किमी वन्च की हमी की खिनखिलाहट मन्त्र भाई ।

नताल्या का चेहरा कौन उठा किन्तु उसके हाठा पर अब भी धर धराती हुई मुसकान धिरकती रही । लकव की तरह एँठा हुआ चेहरा उठाकर पन्नेली न परेगाना और बौमलाहट म दून्या की घ्रा देखा ।

पत्र इस प्रकार था

घ्रापका सूचना दी जाती है कि घ्रापका पुत्र बारहवीं दोन कसबाक रजीमट का प्रिगोरी पतेविएविच मलखोव १६ सितम्बर का कामेन्वा स्त्रुमिलोवो नामक नगर के पास सडाई म रहत रहा । घ्रापके पुत्र ने वीर गति पाई । भगवान् बरे कि इस समाचार से घ्रापको घ्रा सन्ताप का घनुभव हा हाल कि जा शक्ति घ्रापको पहुची है उसकी पूर्ति घसम्मव है । उसकी चीजें और बाकी सामान उसके भाई ध्योत्र मेनेखोव को सीप लिया जाएगा । उसका घाटा रोजीमट क साथ रहेगा ।

—गोलाकोवनीकोव जूनियर कप्टेन कामाण्डर चौथी टुकड़ी—

१० मिनम्बर १९१४ ।

पन्नेली बटे की मोन की मबर मे टूट गया । हर नया दिन घ्रापर उमक बूडे केन्द्रे म घौर बुझाता घोरन लगा । उमका स्मरण-शक्ति नष्ट हान नगी और मस्तिष्क का ज्ञान लुप्त होने लगा । मबर भुग ग । चहरा साह-सा बाला पड गया । उसकी घमचमाता घाया से घमहा केन्ना टपकन लगी ।

पत्र उसने स्वेमूर्ति के नीचे छिपा लिया । अब दिन में कितनी ही बार बहू बरमानी म जाकर दूध का डगारे म बुनाता और दूया घ्रा जाती ता उध बही म पत्र निकालकर मुनान का घ्राण मना । पर मोन

क कमर क दरवाज का भीर भागका स दलता जाता क्यकि वही पढी उमका पली दिन रात गती-वनपती रहता । इसलिए भीत मारत हुए कहता धीर-वार एम पड जत कि मन-हां-मन पड रही हो । भांगुमा को घोगती हुइ दून्पा पहना बाक्य पडती भीर फिर पन्तसा एडिया क बन बठकर भपना भूरा हाय उठाक रहता टीर है टीर है । बाक्य मुके मालूम है । चिटटा बहा ल जाकर रत द जही स लाई था । धीर स रचना—नही तातरी माँ धीर बार-बार पनके भनवाना । मारा बहरा पड का तनी हूँ छान का तरह ऐँठ उज्जा ।

उमक बाल पधने लग धीर फिर गिरन लग कि घाट-म यहीं रह गए ता बाडे-स वही । दाडा क बाल बट-म उठे । वह पग हा गया । धव खान पर बठता ता घीके निगलना चमा जाता ।

भृशक प्रायना क नौ दिन बाद मलखान-भगिवार न मृत विगारा क स्मृति मात्र म फान्दर विमारिघान भीर भपन सम्बन्धियों का योना । इस भवमर पर पैनली खाता हा चला गया । लानी क जहाँ-उहाँ भू जान म दाडी क बाला म छल्ल-म बन उठ । इनीनीचिना बहुत दिना स उमका इम भवम्या पर विन्नित थी । वह फूट पढी तुम्ह भागिर हो क्या गया है ?

क्या है ? दूडे न भपनी घुषनी भाँसे प्लट स हटाइ भीर लाभ उठा । इनीनीचिना न हाय हिनान हुए उबर स मुह पर लिया भीर भाँगा मे रुमाल लगा लिया ।

“पापा तुन इम तरह बात हा जस कि तीन दिन क भूय हा । दारना न प्राय स कहा । उमकी भाँसे प्राय म भमवन लगा ।

भै माता हूँ चञ्ज नगी गाऊगा । भपन मन की परगाना पर कात्र पान हुए पल्लनी न जवाब दिया । उमन मड क धारा भाग निगाह टानी हॉठ बीच भाँहे चगाइ भाग छुप हा रहा । कि सबासा क जवाब भी नहा गि ।

प्रायःकिरविच, हिम्मन स काम ता । इतना दुखी हान म प्रायश ? मात्रन मनापन होने पर फान्दर विमारिघान न उमको पय बधाना पाग रिगेरी की मृत्यु पावन पन्त है । प्रनु क बीच मात्रन न बना । तुम्हारे

पुत्र न जार के लिए अपने दग के लिए काँटा का ताज पहना धीर तुम—यह पाप है प्रभु तुम्हें क्षमा नहीं करेगे ।

ठीक कहल हो पादर ! वीर-भक्ति पाई यही बात ता [उसके कमाण्डर न वही ।

बूढ़े ने पान्नी का हाथ धूमा धीर दरवाजे पर झुककर दुरी तरह फूट पडा । उसका शरीर पत्ती की तरह काँपन लगा । पत्र घाने क समय स आज तक ऐसा कभी न हुआ था ।

उस दिन से वह अपनी सम्हाल म रहने लगा । धीर धीरे आघात स थोडा उभरा

सभी को चोट पहुँची थी पर अलग-अलग ढग स । नताल्या न दूया को पिगारी की मौत की खबर पर रोत-चिल्लात मुना तो वह भागकर घटाने म चली गई । मैं भी भर जाऊगी । अब मेरे लिए दुनिया म रहा ही क्या ? इस विचार के साथ वह भाग की तरह भागे ही भागे बतनी गई । वह दार्या की बाँहों म बह पड़ी धीर जैसे कि वह उस क्षण का मुलाने धीर टालन के लिए बहाना हा गई । या लगा जैसे कि उन कुछ आराम मिला कि अभी न हांग आएगा न हांग के साथ प्रियतम की मृत्यु का ध्यान । दुखद विस्मृति म ही एक सप्ताह व्यतीत हा गया । यथाय जगन् म वह लौटी तो बहुत बढ़ती हुई—गान्त कसकित जड़ता स आहत अन्तर लिय ।

मेलखोद-भरिवार के घर पर प्रत मडरान लगा धीर परिवार का हर सदस्य उसकी पुत्रन धीर सहाय क बीच पवन लगा ।

१६

पिगोरी की मृत्यु का समाचार मिन बाऊल दिन धीत कि प्यात्र क दो पत्र एक साथ डाक म आए । दूया न उन्हें डाकखान म ही पढ़ लिया धीर वहाँ स ऐसी भागी जम किमी मूग निनके को तऊ हवा क पत्र लग जाएँ । फिर वह ठिठकी धीर एक पहारदीवारी क महार लड़ी हा गई । उनने गाँव म उपल-मुयल पत्र कर दी धीर अपने घर में अक्षयनीय उत्तरना ।

घींका जिन्या है । हमार प्यार घींका जिन्या है । घोड़ी दूर स ही सिसकिया स गील स्वर स वह बोली प्यात्र न लिया है घींका पायल हो गया है पर मरा नहीं है । वह जिन्या है जिन्या है ।

प्यात्र न घपन २० मिनम्बर न पत्र स लिखा था

श्रद्धेय पापा प्यारी माँ घात्र । मैं आपको सूचित कर दू कि हमार घींका मौत न मूह स घला गया था किन्तु भगवान् की कृपा स भव सही-सनामत है । हम सब-गलिमान् स आपकी कुश्रता और स्वास्थ्य को कामना करते हैं । उसको रेजीमेंट को कामन्का-स्त्रुमिनोबो तगर के पास मार्चा बना पडा और उनक दन न करडाका न एक हगगिनन हुस्सार का उम पर तलवार चलात दया । प्रिगारी घाडे स मोच गिर पडा और फिर क्या कृपा यह किमी को पला नहीं चला । मैंने उनस पूछा ता कुछ भी बतला न सक । किन्तु बात्र स मांगा कोगेवाई न मुझे बनलाया कि प्रिगारी रात तक बहा पडा रहा । फिर उमन रेंगते हुए घाग बढ़ने की कागिग की । उसने मिताग की रोगनी स रास्ता तय किया और रेंगन रेंगन हमार एक घायल अधिकारी न पास था पहुँचा । उस अधिकारी का पट और पर जम्मा स । प्रिगारी न उस ग्यावा और छ बन्ध का फामिला उस सात्रकर तय किया । इसक निण प्रिगारी को मन-जात्र का पदक प्रदान किया गया और उस बर्रदारल बना दिया गया है । जग सोचो कि यह किमनी गान की बात है । उमका बात्र जयादा नहीं घाई है । उमकी मापडी की गान भर जम्मी हुई है । पर कृपा यह कि वत्र घाडे से गिरा तो उम सग्मा यामा पहुँचा । मांगा कहता है कि घट मार्चे पर वापस परैच भी गया । मात्र करना इस पत्र में अधिन कुछ नहीं लिख सका क्यकि मैं घोड़े पर सवार ह और इस निम रह ह ।

दुसरे पत्र स प्यात्र न घपन परिवार न बाग की सूची बगिया की माँग का भी और दिया था— बाग माग मुझे भूने नहीं पत्र जन्ने जल्दी लिखें । उमी पत्र स उमन प्रिगारी को बुराई की थी क्यकि उस पता चला था कि वह घपन घाडे का टोक स नहीं गगता । प्यात्र को गुम्मा था क्यकि घाहा तो दरघमन उमका था । उमन बापू का

तिला तुम पिगारी को लिये दा। वस मैं पिगारी को सत्संग भज दिया है कि अगर तुम घोड़े की देखभाल ठीक से नहीं करोगे तो मैं तुम्हारी नाक ताड़ दूंगा—इसकी जरा भी परवाह न करूंगा कि तुम्हें मन-जाज का पञ्चमिन श्रुता है।

बूढ़े पन्तली की दगा दयनीय हा उठी। लगा कि वह प्रसन्नता का ज्वार मम्हाल नहीं पा रहा है। शोना पत्रों को हाथ में लेकर वह गाँव में गया और पञ्च लिख लोगों का गह में रोक रोककर जबरदस्ती पढवाने लगा। मिथ्याभिमान नहीं सुधी उद्यानता फिरा वह गाँव भर में।

क्या कहने हैं! क्या समझने हो तुम मेरे प्रीक्षा का! पत्र पढ़ने वाला जब प्योत्र द्वारा बलिष्ठ प्रीक्षा के पराक्रम पर आता तो वह हाथ उठा सता। अपने गाँव में सबसे पहले उभी को सत जाँज का पदक मिला है। वह गव से कहता पत्र अपनी टापी की बाँड में छिपा नेता और दूसरे पाठक की ग्राज में घाग बड़ जाता।

गर्भेई मोखाव न उम अपनी दूवान की गिठकी से दखा ता कभी अपनी टापी उतारत हुए बाहर आया।

‘प्राक्काफिगविच! एक मिनट को अन्तर खलो।

अन्तर जाकर बूढ़े की मुट्टियाँ अपने माटे गोर शायद स कमकर बाला बयाद दना हूँ मैं तुम्हें बघाई! तुम्हें अपने बटे पर गव हाना चाहिए। मैं अभी अगवारों में उसकी बहादुरी की गाथा पढो है।

क्या अगवार में दया है बुद्ध? पन्तेनी का बट सूय गया और पूर गव में अटप गया।

हाँ मैं अभी अभी पडा है।’

माखाव न आलमारी में अष्टौ-ग अष्टौ तुर्की तम्बाकू का एक पकट उतारा और एक थल में बिना तौल ही बकिया बिस्म की अगनीमनी मिगार्या भर दी। फिर मर पीठ धूँते का अमान हुए बोता पिगारी पन्तिकाविच का बुद्ध भजा ता मरी अर म व चीजें भज तना। साथ ही मग मन भी मिय तना।

ह नगवान् बिनना अरडा मिमी हे अगना का। मारा गाँव उमी का अर्वा कर रहा है। यहाँ अिन दगन को जीता रहा हूँ मैं आज

तब दूकान की साजिषा म नाच उतरत समय बूना बढवडाया ।
 चलन अपनी नाक छिनकी और अपने गालों पर बहन हुए धानुषा का
 कमाउ की मास्तीन स पादन हुए माचा

मैं बूडा हा रण हूँ । धाँसू धानानी स निकल मान हूँ । चाह
 पत्नी प्रोकाफिएविच । तनी विन्गा न कमा करवत बानी है । कभी
 तू चकमक परसर का तरह बठार था भाठ पूरवानक पीठ पर लाद तथा
 या और उस चिटिया का पत्र ममभता था लेकिन अब अब धीका क
 गाग्गध न कमार माठा भुका दा है ।

मिठाइया क पत्र का साने न मटाए वह मचरता हुआ गला में बदा
 कि कि उनक विचार प्रिगारी क चांग और चकरर कानन लग और
 एस चकरर बाटन सग उस टिन्हरी दस्तल क इन्-गिण महराता है ।
 सामन स प्रिगारी का समुर कानूनाव घाता दीखा । उसन पन्तेनी का
 आवाउ नी घर पन्तेला एव मिनट रकना उरा ।

सडाह गुम् हाते क बाद मात्र पहली बार व एक-दूनर न मिन थ ।
 प्रिगारी क घर छाहन क बाट इन दोना क बीच एक विभाव-सा
 अपने घर आ गया था । मिरान का बडा गुम्मा था कि नडात्या न
 प्रिगारी क सामन अपनी गन्त नीची की थी और उन भी अपनी गन्त
 नीची करने पर मजबूर किया था ।

मिरान साधा पन्तला क पास पहुँचा और अपने गहबतून क रग
 क हाथ उमरे हाथों में ठूनन हुए बाना कहा मत्र म ता हा ?

भगवान् की रूपा है

'कुछ मगदन मय थ

पन्तला न अपना मिर जिनाया मार मूरमा का साहज मिले
 है म । मगद प्नातानाविच न मयराग म उनरा यहादुरा का कारनामा
 पना और मक निण धानी-सा तम्मात और मिराईया दी है । तुम्ह महा
 मालूम उनका घोषा म धाँसू आ गा । बूड न मिरान के बहर पर
 दृष्टि गला गन्ती मारन हुए कहा । उसन मिरान क बहर पर आण
 भाव का पटना थाहा ।

मिरान का घोषा क नीच बान्त जमा हा गए । उनक बहर पर

निन्दा से भरी मुसकान खिल उठी ।

यह बात है ! यह बोला और सडक पार करन के लिए मुड़ा । क्रोध से काँपता और घस को खोलता हुआ पन्तेली तेजी से उसके पीछे हो लिया ।

मह लो देखो य चाकलेट सहद की तरह मीठी है । उसने घृणा से कहा खाकर देखो मैं अपना सडक के नाम पर यह तुम्ह नजर करता हू । तुम्हारी जिन्दगी में कोई मिठास नहीं है इसलिए तुम इस चाकलेट से अपनी जिन्दगी में मिठास ढोल सकते हो । तुम्हारा सडक भी किसी दिन इतनी ही इच्छत पंग कर सकता है खिन हो सकता है कि न भी करे ।

भरी खिलगी के राजा में न पठो मुझमें ज्यादा उह कोई नहीं समझ सकता ।

लो एक चखकर तो देखा मुझ पर कृपा करो । अत्यन्त विनम्रता से भागते हुए पन्तेली ने मिरोन के सामने आकर घसे में हाथ डाला ।

हम लोग मिठाइयाँ खान के घादी नहीं । मिरोन ने उसका हाथ झटक दिया, फिर यह भी है कि अजनबिया की भेंटा से हमारे दाँत सराव और हात हैं । तुम्हारे लिए यह घोमा की बात नहीं कि तुम अपने सडक के लिए भीतर मोगते फिरो । अगर तुम्हें किसी बात की तकनीक हो तो तुम कभी भी मेरे पास आ सकते हो । हमारी नताल्या तुम्हारी रोटियाँ तोड़ रही है । तुम्हारी गरीबी में हम तुम्हारी मदद कर सकते हैं ।

ऐसी बेमिस्तर की बातें मुह से न निकालो हमारे गानगान में आज तक किसी ने किसी के सामने हाथ नहीं फलाया । तुम्हें बहुत घमण्ड हा गया है बहुत ज्वाला घमण्ड हो गया है । हा सरता है कि तुम्हारी सडकी के हमारे यहाँ आ जाने में तुम्हारे यहाँ खनम बड़ गई हो ।

दहरो ! मिरान ने अघिकार भरे स्वर में कहा, 'हमारा इस लड़ाई का क्या मतलब ? मैंने तुम्हें इसलिए नहीं गाना कि तुममें भगडा कः । मुझे तुममें कुछ काम की बातें करनी हैं ।

हमारे बीच काम की बातें नहीं हो सकती ।

लेकिन है सुना सा ।

उमन पन्तली की झालीन पकड़ी और उस पसीटकर एक गलियारे
 म स गया । व गाँव मे बाहर निकलकर मगन म झा गए ।

खर बात बना है ? पन्तली न कुछ तरीक स पूछा । उमने
 तिरछी दृष्टि स कोरगुनाव का झार दया । अपने लम्बे कोट का पिछला
 सिंग दबाकर मिरान एक चार्ज क बिनार बठ गया और उसन तम्बाहु
 की अपनी पुगनी यती जब स निकाली ।

मगवान् ही जान कि तुम भगडामू मुगों की तरह मर पीछ बना
 पठ गए ? वान यह ह कि हालत जा और जमा कुछ भी ह अच्छा नहीं
 ह—ठीक ह न ? उसका स्वर कठोर और रखा हा उठा 'ये यह जानना
 चाहता ह कि तुम्हारा नडका कब तक दुनिया क नामन मरा ननात्या
 की हमी उठवाना रहगा यह बनसा दा मुझे ।

इन वारे म तुम्हें उसस पूछना चाहिए मुमन नहीं ।

मुझ उसम कुछ नहीं पूछना तुम पर क बड हा और मैं तुमन
 बातें करना चाहता ह ।

चाकलट पन्तली क हाथ म झव भी सधा रहा । उमक पिघलन म
 उसनी हयती बिपबिपी हा गई । हयली उमन बिनार की तान जमान
 स पाया और तुकी तम्बाहु का पकट गान उनम स टुकी नर तम्बाहु
 निकालकर छुपचाप मिगरेट बनान सगा । फिर उमन पकट मिरान की
 धार बढाया । कोरगुनाव न बिना हिचकिचाहट क उन ल लिया और
 प्रिगोरी क लिए माखोत्र द्वारा उगारता म दो गई तम्बाहु स उमन भी
 मिगरेट बना ली । उमक ऊपर वापन का कपूर छाया रहा कि एक
 नाजुक-सा तार हवा में लहराना वापन म जुट गया ।

लिन सनन सगा । वितम्बर की स्थिरता का मधुरिमा और गानि
 टुनरान सगी । मानमान स गर्मी की मनानन सनन बिमा न छान सा
 और वह धुप म नहाया-सा पठ की क रग का हा उठा । सबका गतिपा
 मगवान् जाने कहीं म धाकर गार्ड पर बगनी रग छिटक गई । मटक
 पहाडिया की लहरदार चोटियों पर जाकर घटाय हो गई और गतित्र
 पन की तरह हरी सपन की तरह घुसली रमा को पार करने की बेकार

बोणित करन गगा। अपनी भापडिया घोर रोज़मर्रा ने घर मे बंधे लोग
मगकत म टूटन रहे घोर खलियान म थकान से भूर होन रह। रास्ता
दिलिज पार कर अनात जगत में डमता रहा। हवा उम रास्ते पर मरति
भरती घोर धूल क बादल उडाती रही।

तम्बाऊ तब नही है। घास जसी है। मिरान ने धुए का बानस
उड़ात हुए कहा।

तब नही ह मगर अच्छी है। पन्तली न अथ-स्वीकृति दी।

पन्तली मेरे एक सवाल का जवाब दा। बोरानूत न अपनी
सिगरेट बुझाते हुए शान्त स्वर म कहा।

मिगोरी अपनी चिटिठियों म हस वात की कोई चचा नही करता।

मग वक्त वह जखमी है।

हाँ मैंने गुना है।

वाद म क्या होगा मैं नही जानता। हो सकता है कि यह मर
जाए फिर भला क्या होगा ?

सजिन इस तरह कंस अनेगा ? मिरान ने ब्यप्रता एक दुप म
आंग भावार्थ मेरी नताल्या है कि न तो क्वारी है न बीबी है
घोर न अमल म विषया है घोर मह बडे अपमान की बात है। मुझे
पहने स तेमा मायूम हाता तो मैं ब्याह की बात पक्की करारोवाला को
अपनी टपोड़ी म पात्र न रखने दता। उप पन्तली पन्तली को
तेमा न रे जिग अपनी घोला का दुप न ब्यारता हा। खून आविर खून
होता है।

तुम बनसाया इसम मैं क्या करू ? पन्तली न त्रिय का दवान
हए जवाब निया बनसायो मुझे तुम्हारा खयाल है कि अपने सहर
क पर म चल जान म मुझे खुशी है ? इसम मरा कोई फायदा हुआ है ?
तुम लोग भो गय हो !

‘उमकी निशा मिरान वाला घोर उमक हाथ क नीच म छा
में गिरती हुई धूल न उमक गला की गति का साधनिया एक बार का
मुंह खानकर जवाब ता द द !

उम घोरन मे उमक एक बचची है

धीरे धीरे उसका एक बच्चा हो जाएगा। बोरगू नाव खीसा क्या किसी इन्सान के साथ ऐसा बताव किया जाता है? एक बार उसका अपना जान देने की कोशिश की थी और अब जिन्दगी भर के लिए मजबूर हो गई? तुम उसे क्या म दफनाता चाहते हो? प्रिगोरी का दिल प्रिगोरी का दिल मिरान न एक हाथ से अपनी छाती पीटते और दूसरे से पन्तली के बोट को खींचते हुए कहा प्रिगोरी को भेड़िए का दिल मिला है।

पन्तली बटवहाता हुआ मुठ गया।

सबकी उम्र पर जान देती है। उसका बिना उसका जीना मुमकिन नहीं। कोई तुम्हारा गुलाम बनकर भाड़े है क्या वह? मिरान न पूछा।

‘वह हमारे लिए बटी में ज्यादा है। अपनी जवान गम्हालो।’

पन्तली धीमे उठा और उठकर खड़ा हो गया।

विदा का एक शब्द भी मुँह में वह बिना के लोको प्रसंग प्रस्तुत दिगामा में चला गया।

१७

जिन्हां अपना स्वाभाविक प्रभाव से बट जाती है तो प्रलय प्रलय धाराभा में बट जाता है। फिर यह कहना बठिन हो जाता है कि जिसका यह अपनी भयानक बपट में ल लेगी और जिस नहीं गतीत बिनाग पर बहने वाले सोना के समान जहाँ आज कुछ बूँद भर नजर आता है वही बल प्रगरम्पार पानी की बाढ़ में सबती है।

अकस्मात् ही नताल्या न पागादनाए जाकर अकसीनिया में मिलन का निश्चय किया। उसका सोचा मैं उसका मिन्नत करूँगी कि प्रिगोरी का मुझे लोटा द। न जान क्या उस लगा कि सब कुछ अकसीनिया की मर्जी पर निर्भर है। यदि मैं उसका बहूँगी तो प्रिगोरी लोट आणगा और उसका साथ हो लोटा आणगी मरी पन्न का हसी-मुगी। इसका बात उमने यह भी न सोचा कि यह बात ही मन्ती है या नहीं या मर इस तरह के अनुरोध पर अकसीनिया क्या करेगा और क्या नही। अपने अन्तमन के उद्देश्यों में परिचित होकर उसका जन्म-म-जन्मी अपने फसल पर

धमल करने की सोची ।

महीने के आखिर में त्रिगोरी का एक पत्र आया । पिता और माँ के लिए आदर निखाने के बाद उसने नताल्या के लिए शुभवामनाएँ और स्नेह भेजा । इन शुभवामनाओं और स्नेह के भजे जाने का कारण कुछ भी क्या न रहा हो पर नताल्या का इससे दिल बड़ा और भगले रविवार को ही वह यागादनोए जान के लिए तयार हो गई ।

कहाँ जा रही हो नताल्या ? नताल्या को शीश के टुकड़े में गल निहारत देगकर दार्या न पूछा ।

मैं पापा माँ वगैरह से भिन्नने मायक जा रही हूँ । नताल्या साफ़ झूठ बोन गई । उस पहली बार अनुभव हुआ कि मैं घोर अपमान की स्थिति में अपन को डाल रही हूँ और मेरे चरित्र की गहरी और बड़ी परीक्षा हागी यह । उसका चेहरा आरक्त हो उठा ।

आज शाम को मेरे साथ घूमन फिरन सलो—एक बार ता चनो । दार्या न प्रस्ताव किया बोलो तो आज चल गी हान ।

बह नहीं सकती पर गायन चसुंगी नहीं ।

वेवकूफ़ हा तुम भरे मर याहर होते हैं तभी तो मीका भिन्नता है हम । आँसु मारकर दार्या अपने नए पील-नीने गरारे की बामनार गोट पर हाथ फेरने लगा । प्योत्र के जान के बाद दार्या बहुत बन्त गई थी । उसकी आँसु चाल-गान और पूरे तौर-तरीकों में एक बचनी-सी सहर्षे सन लगी थी । अब वह इनबारा को अपन लिवास और मजाबट की धार विनाप ध्यान देती बाफी रात गण घर सौत्ती घोर सौटती तो उसकी आँसु बुझी-बुझी-सी रहती तबीयत में बिडबिडाहट पुली रहती । वह नताल्या में विवायत-नी करती पनली है मधमुन हालत पतली है । अर्ध आँसु सभी करजाक नाम पर चल गए हैं । गाँव में रह गए हैं बूढ़े और सडक और बस ।

ता इसस सुम्हारे लिए क्या पत पडता है ?

क्या अब शाम विगाने के लिए कोई नहा मिलता । पाग कि एक दिन मिस तक जान का मोरा मिस जाता । यहाँ इस बूढ़े समुर के साथ

क्या रखा है / और सनकिया की तरह नवाल्या स साफ-साफ पूछ बठा,
समझ म नहा आता कि तुम रहती कम हा । इन दिन हो गए हैं
बिना किसी करजाक के सोन स लग ।

'गम करा । तुम्हारे पास आत्मा जना काई चीज है ना नहा ।
नवाल्या का घहरा ओष म समनना उठा ।

'तुम्हारा नवापित कमा नहा मचलती ?

साफ है कि तुम्हारी तबीयत मचलती है ।

'हाँ मइ मरी तबीयत ता मचलती है

दार्या के चेहरे पर लाली गेड गइ । वह हम पडा और उमका
मौहा की कमाने कपकपान लगी ।

मैं छिशाऊ क्या ? मैं ता एसा कर सकता हू कि काइ मूंग भी हो
ता बोलता जाए और घबकती भड्डी हा जाए । उरा माचा ता सही
प्यास का यहाँ म गाण पूर दा मदान हा थाण ।

गार्या तुम भपन लिए काटे वा रही हा ।

मुँह बन्द कर ! बडी इरजत वाली बनी है बुडिया । मैं स्वयं
पहचानती हूँ तुम्हारे जम दुप्य सोगों का । तुम कभी कुछ मानकर
थोडे ही दार्गी

'मेरे पास मानन को एना कुछ हो भी तो ।

दार्या न उमकी धार मुमकरान टूण बनधी म ग्या और धपन
हाठ काटे । धना उम तिन अतामान का लहरा तिमोरी मानित्मव
मर पास धाकर बठ गया । मुझ माउ-नाक लगा कि वह धपनी और
म पहन करन म डर रहा है । फिर उमन खुपकाप अपना हाथ उठाना
और मरी बगल म गिसरा गिया । हाथ बाँध रहा था । मैं मुँह मे वाला
कुछ नहा कि दानू धव क्या करसा है यह । नकिन मुझे गुम्मा घाना
गया । थाण कि वह एक जबान पढया होता—नकिन नहीं समीतोव
घाकरा है—माला सात का । सोलह साल म एक दिन उपर महा । मा
मैं खुप बठा रही पर वर हाथ बलाना गहा समाना रहा । फिर धीरे
मबोला धामा, गड म धते । इन पर मैंन जमा गिया एक । वह
तित्तगिमाकर हम पडा । हवा उमका श्मश्रुती पनकों म धनकरन

धमल करने की सोची ।

महीने के आखिर में प्रिगोरी का एक पत्र आया । पिता धीरे माँ के लिए आदर लिखन के बाद उसने नताल्या के लिए शुभकामनाएँ और स्नेह भेजा । इन शुभकामनाओं और स्नेह के भजन जाने का कारण कुछ भी क्या न रहा हो पर नताल्या का इससे दिल बढ़ा और अगले रविवार को ही वह यागादनीए जान के लिए तयार हो गई ।

कहाँ जा रही हो नताल्या ? नताल्या को शींग के टुकड़े भंगन निहारते देखकर दारूया न पूछा ।

मैं पापा माँ वगैरह सब मिलने मायब जा रही हूँ । नताल्या साफ झूठ बोल गई । उस पहली बार अनुभव हुआ कि मैं धीरे अपमान की स्थिति में अपन को बान रही हूँ और मेरे अरिज की गहरी धीरे बड़ी परीक्षा हागी यह । उसका चेहरा आरक्त हो उठा ।

भाज गाम को मेरे साथ घूमन फिरन चलो—एक बार ता चला । दारूया ने प्रस्ताव किया बोला तो भाज चल रही हान ।

वह नहीं सबनी पर शायद चलूंगी नहीं ।

बकरूप हो तुम धरे मर बाहर होन है तभी तो मोषा मिलता है हम । भाँव मारकर दारूया अपन नए पीने-नीन गरार की कामगार गाट पर हाथ फेरने लगी । प्योत्र के जान के बाएँ दारूया बहुत बल गर्न थी । उसकी आँखा चाल-आल और पूरे तौर-तरीकों में एक बेचनी-सी लहरें सन लगी थी । अब यह इनबारा को अपने लिवाम धीरे सजायट की आर विगप ध्यान देती काफी रात गए घर सोटती धीरे सोटती तो उसकी आँखें बुझी-बुझी-सी रहती तबीयत में निडबिबाहट धुती रहती । यह नताया स गिषायन-नी करती पतली है सधमुब हासत पतली है । अण्डे पाद मनी कयजाह साम पर घन गा है । गाँव में रह गए हैं बूढ़े धीरे लख और बस ।

तो इसमें तुम्हारे लिए क्या पत्र पढ़ता है ?

क्या अब गाम बिताने के लिए कोई नहीं मिलता । पाप विणन निन मिस तब जान का मोषा मिल जाता । यहाँ इस बूढ़े समुद्र के साथ

क्या रखा है ? और सनकिया की तरह नताल्या से साफ-साफ पूछ बठा समझ म नही आता कि तुम रहती कस हो ! इतने दिन हो गए हैं बिना किसी कज़ाक के सीन से लग !

शम करो ! तुम्हारे पास आत्मा जसी कोई चीज़ है या नहा ! नताल्या का चेहरा क्रोध से समतमा उठा ।

तुम्हारा तबीयत कभी नही मचलती ?

साफ है कि तुम्हारी तबीयत मचलती है ।

“हाँ, भई मेरी तबीयत ता मचलती है

दार्या के चेहरे पर लाली दौड़ गई । वह हँस पडा और उसकी भौहा का कमानें कपकपान लगा ।

“मैं छिपाऊँ क्यों ? मैं तो ऐसा कर सकती हूँ कि फाइ घूटा मां हां तो वीसता जाए और धक्कती भट्टी हो जाए । जरा सोचो तो सही प्यात्र को यहाँ से गए पूरे दो महाने हां आए ।

“दार्या तुम अपने लिए कटि बो रही हो ।

मुँह बन्द कर ! बड़ी इज्जत वाली बनी है बुढ़िया ! मैं खूब पहचानती हूँ तुम्हारे जस चुप्य लोगा को । तुम कभी कुछ मानकर थाडे ही दोगी

मरे पाम मानन को ऐसा कुछ हो भी तो !

दार्या ने उसकी आर मुमकरात हुए बनम्बी से दवा और अपने हाट काटे । अभी उम दिन अठाभान का उडवा तिमोपी मानित्सव मरे पास धाकर बठ गया । मुझे साफ-साफ लगा कि वह अपनी आर स पहल करने म डर रहा है । फिर उमन चुपचाप अपना हाप उठाया और मरी बगल म खिमका दिया । हाथ बाँप रहा था । मैं मुँह स बोली कुछ नहा कि देखू भव क्या करता है यह ! लेकिन, मुझे गुम्मा आता गया । बाप कि यह एक जवान भडवा होता—लेकिन नहीं अभीतोमह आररा है—सोलह साल का । सोलह साल स एक दिन ऊपर नही । सा मैं चुप बठी रही, पर वह हाप चसाता रहा चसाता रहा । फिर धीरे स बोला ‘आघा घड म चलें । इस पर मैंन जमा दिया एक ! वह निलधिलाकर हस पडी । हमी उमकी छपमुत्ती पलका स दमकन

लगी। मैं उछल पड़ी— घर तू कमीना कठी का ! युक्त का बच्चा ! तू मुझे फसा तगा इस तरह ? कितन तिन हूँ तुझे आखिरी बार बिल्लरा गीना किए ? यह समझो कि मैंने उसका बुझार उतार दिया।

इधर नतालया के प्रति दार्या का व्यवहार बल गया था। उसके सम्बन्ध में सहजता और मित्रता पुन गढ़ थी। दार्या अब उसे पहले की तरह नापसन्द न करती थी और हर दृष्टि में एक-दूसरे से अलग-अलग दोना धीरतों अब स्नह से रहन लगी थी।

सा नतालया कपड़ पहनकर बाहर निकली कि दार्या न उस बरमाती में था पकडा। पूछा आज रात को दरवाजा खोल दोगी मेरे लिए ?

गार्य मैं रात में मायब में ही रहूँ।

दार्या विचारा मगो गई। उसने कपड़े से अपनी नाक महलाई धीर फिर हिलाकर कानी खर कोइ धान नहीं। मैं दूया में कहना नहीं चाहती थी लेकिन दूसरा कोइ धारा दीखता नहीं।

नतालया ग्लीनीचिना का पीठर जान की सूचना देकर चल दी। चोक में धारर उसने दिया कि गाड़ियां पट-पट करती बाजार से चोट रनी हैं धीर तग गिरजाधर में लौट रहे हैं। यह बगल की एक गली में मुली धीर जल्दी पनाश पर चढ़ गईं। चाटी पर उसने धूमकर पाछ निगाह डानी। गाँव धूप में नहा रहा था धून से पुन मवान कमब रह थ धीर मिन की टनवाँ छत धाँवा में चनाबींध पना कर रही थी। छत की लाटे की चदर लसो तग रनी थी जस पिपसा हुआ सोहा।

१८

लडाई में जान क कारण यागोर्नोए में भी पुरप कम हा गए थ। बनयामिन धीर तिनान जा चव थ। जगत् पन्त में कनी ज्याला गान्त गुनमान धीर बीरान हा गई थी। बनयामिन की जगह धनमीनिया जनरन की गवा में रहनी था। भारी धूनमाना नूदेरिया माना बनान धीर मुर्गी को शाना बुगाने का भार धा पटा था। बूडा गारा पाडा की शग रोग करन धीर बशाच क रग रपाव की बिना

करने लगा था। एक घातमी बनी नया था। यह था बूढ़ा बज्जाक
निकुनिच। उस शोचवाना का काम सोंपा गया था।

इस वष बूढ़ा निस्तुनित्स्की न वायाइ कम कराइ थी। वीमक घाड़े नना
क हाया बंध लिए थ। वम तीन चार इनाक की उरस्ता क लिए रग
लिए थ। वह पछिया का निगाना बनात धीर गिगारी बुना को माय
लेकर गिगार सलन म अपना सारा समन ब्यतीन करता था।

धकसानिया क पाम भून मटक गिगारा का छाटा-भा पत्र धा जाना
कि भव तक मैं सकुगल हू धीर चक्का म वाकामना पित्त रहा हू। उमन
कभी गिनायत नहीं की कि माबे का नौररी जानमार है। याता मा
ता इस बीच बहुतगडा हा गया था या फिर अपनी कमजागी धकसानिया
क सामन धान नना नहीं चाहता था। उमक पत्रा म जान धकमर
ननी हानी जमे रि सिफ तिखन क लिए ही उमन पत्र लिम हा।
बबल एक ही पत्र गया था जियम उमन तिगा था मुयह स लेकर
रात तक सारा समन मोबे पर ही बीतता है। मैं लडाई स उबता गया
हू। मोत का पाठ पर तात-दान थक गया हूँ। पर हर पत्र म बह
बना क बारे म पूछनाछ करता धीर धकसानिया म उसन विषय म
निगन का धाप्रह करता।

धकसानिया बहा हिम्मन म वियाग महन करती। गिगारी क
प्रति अपने धनर का सारा प्रम वह लटका क ऊपर उठेतनी। जब
म उम इस बात का विवाम हुआ था कि बटी गिगारी की है तब
स ता बह उम धीर भी अधिक स्नट दन रगी थी। स्नक उम कितन हा
प्रमाण मिन थ लटका क गहर लाल बाना का रग काला पड़ गया
था धीर क धुपरात हो सभ थ। उसकी धाँके शामी धीर बहा नगने
मगा। यह स्नि-ब-स्नि धान गिता पर पना जा रही थी यहाँ तक कि
उसरी मुनकान भी गिगारी की मुनकान म मिलता था। भव बिना रिमा
गह क धकसानिया का उमसे गिगारा का प्रतिजिम्ब भनवना था धीर
उमक लिए उमक मन का प्यार गहरना चना जा रहा था।

पर स्नि गर-गर कर बीतत जा रह थ धीर हर स्नि डूबन समय
धकसानिया के धनर में बटुता धान नना था। प्रियनन क जीवन की चिन्ता

उसके दिमाग में दिन रात सूई-सी चुभौनी रहती थी। दिन में काम करते समय तो मन बधा रहता पर रात में सार बाँध टूट जात। वह बिल्वर पर पड़ी कण्ठटे बनती सिसकती बच्ची के जाग जान के डर में अपने हाथ में रह रहकर दाँत काटती, धीर शरीर के बप्ट में दिमाग की परगानी डवाना चाहती। फिर भी यदि भ्रूसू निकलत ही चल घात ता उन्हें बच्ची के तौलिय से पाछ नसा धीर अपने बच्चा के-म माल भाले ढग से सोचती यह बच्ची प्रीता की है वह भी बलप रहा होगा धीर समझ रहा हागा कि मैं किस तरह तडप रही हूँ उसके लिए।

ऐसी रात के बाद वह मारुत उठती ता मुबह एसा लगता कि जस रात में किसी ने उस बहुत ही बेरहमी से मारा हो। उसका सारा यत्न दुगना तसो में चानी की हथौटियाँ-सी बनती हाठा के बानी से धीर भाँकती। बानी होत-भरत बलप की इन अनगिन रातों में अकसीनिया को बूढ़ा-सा कर दिया।

इतवार का अकसीनिया बनस का नाश्ता कराकर सीढ़ी पर खड़ी थी कि उसने एक धीरत को फाटव के पास घात देखा। सफ़्त रुमात के नाप की धूमि जानी-पहचानी लगी। धीरत फाटक खोलकर हाते में दाखिल हुई। नताल्या को सामने पाकर अकसीनिया पीनी पड़ गई। भारी बंदमा से उसकी धार बढ़ी। नताल्या के जूता पर धूल की मोटी परत जमी दीखी। वह छिपा। उसने लम्बे मगकत से बड़े हाथ धगल में बेजान-म भूवन रह। उसने हाँफत हुए अपनी टेढ़ी मगन का सीधा बगन का कोणा की पर वह मीधी हुई नहा तो एसा लगा जम कि वह निरखी नडरा न देत रहा हा।

'अकसीनिया मुझे तुमसे कुछ काम है। मुझे जीम का अपने हाग पर फिरानी हुई वर वाली।

अकसीनिया ने पर की विडबिया पर तेड़ी से निगाह डाली धीर नताल्या को घुरबाप अपने कमरे की धीर से बली। नताल्या पीछ हा ली। उमरे मनमनाहट से भरे बाना का अकसीनिया के स्वप की मरसराहट बहुत ही तेड भावाड करली लगी। अनेकानेक विचारों से भर उमके परेघान दिमाग ने कहा तुम्हारे बानों में कुछ खराबी है। सामन

गरमी के कारण ऐसा हो रहा है।

कमर में पहुँचने के बाद अकस्मीनिया न दरवाजा बंद किया एगन के अन्दर हाथ डालकर खड़ी हुई और स्थिति को हाथों में लेते हुए बहुत धीरे से बोली 'कहो किस घाना हुआ ?'

यागन्ता पानी दो मुझे पीने को। नताल्या ने कमरे के चारों ओर दुबधरी दृष्टि डालते हुए कहा।

अकस्मीनिया प्रतीक्षा करती रही तो नताल्या ने बड़ी कठिनाई में अपनी घावाज ऊँची कर कहना प्रारम्भ किया 'तुमने मेरा भादमी छीन लिया है मुझसे मेरा पिगोरी बापम कर दो मुझे। तुमने मेरी जिन्दा बरबाद कर दी है। देसो मेरा क्या शान है'

तुम अपना भादमी चाहती हो ? अकस्मीनिया ने दाँत कटिक्टाए और उसके मुँह में गन्ध एन निकलते लग जस पानी की बूँदें पटापट पतल पर पड़ें। तुम अपना भादमी चाहती हो ? किसको माँग रही हो तुम ? क्यों भाई हा तुम महीं ? बहुत दर में हाग आया है तुम्हें सचमुच बहुत दर में हाग आया है !

अप्य स हँसते हुए अकस्मीनिया सीधी नताल्या की ओर बढ़ी। उसका माग बन्द कौपन लगा। अपने दुःखन के चेहर की ओर दगकर वह उसका मजाक उड़ाने लगा। नताल्या अमली पलने थी पर ऐसीग्ला थी जिसे उसका पति त्याग चुका था। वह अपमान में तार-तार और पीना में बुरी तरह कुचली हुआ वहाँ गड़ी थी। अकस्मीनिया की लग रहा था कि यही है वह औरत जो मेरे और पिगोरी के बीच आ गई थी जिसने मेरी जिन्दगी में दद का रूपान उगा लिया था जा पिगोरी का दुलागनी और मुझ पर हँसती रही थी और जिसने मुझे भटक मुटुकराया हुआ मान लिया था—पर मैं किस तरह बचपनी रही थी उन दिना—संभना गी थी उन जिना !

मा अकस्मीनिया घावण स कौपन लगी और तुमने मेरे पान यह कहने बाद हा कि मैं उस छोड़ दूँ ? काली नागिन पहन लून मुझमें छीना था पिगोरी का ! मुझे उनका मर साप रहने का जानकारी थी। फिर भी लून उसमें ब्याह क्यों रचाया ? मैं तो गिन अपनी बीब बापम सी है।

बह मरा है। मुझे ता उमस एव झोलाद भी है लेकिन तू

भस्तीम शूणा स उसन नताल्मा की घोर घूरकर दसा और बहूदगी म हाथ नचा-नचाकर जहर उगलन लगी प्रीक्षा मेरा है और मैं उस किसी का द नहीं सजती। बह मरा है और निफ मेरा है। मुना तून ? मेरा है प्रीक्षा। निरल जा यहाँ से बेगम कुतिया यही की। तू उसकी घोरन नहीं है। तू एक बच्च स उसका बाप छीनना चाहता है। और भाना ही या तो पहल क्या नहीं भाई ? हाँ-हाँ पहल क्या नहीं भाई ?

नताल्या बेंच क बिनार जानर बठ गई सिर मुका निमा और हयनियो म अपना मुट छिया निमा।

तुम अपना मद छोड़ चुकी हो। इस तरह चाचा मत।

प्रीक्षा क सिषाय मेरा और कोई मन् नहीं कोई नहीं दुनिया म बही नहीं। अन्दर उमड़ने हुए शोष का जब बही निवतन की जगह नहीं मिली ता अकसीनिया रुमान मे भौकत हुए नताया ने बाल वाला न छासा की एकटक घूरन लगी। पूछा 'बद चाहता है तुम्हें ? डरा अपना टेरी गदन ता दग। और तू साजती है कि वह जान दता है तुम्ह पर क्या ? घर उसन ता मुझे तय छाट दिया जब तू ठीक-ठाक थी। अब तरी इस मुझ गन्न पर ता वह निगाह उठाकर देगगा भी नहा तेरी तरफ समझी। मैं शिगारी का छाट नहा सजती। बम यही मुझे तुमन बाना है। धय जा निकल जा यही स।

अकसीनिया अपने घामत की बचाने का कागिन म अपना सारा हाग-हवान गो बटी। अनीन म उमन जो कुछ धीर जितना कुछ सहा या उमन जम गिन गिनकर बन्न निय। बम उमकी नहरा ने उसम बराबर कहा कि गन्न घादी-भी टेरी है ता क्या पर नताल्या पहली-सी शो मुन्तर मय भी है। नताल्या क गाता और हाठा पर ताजगी है। कात की जहर कुभी अगुनिया म व विलकुम सष्टन है। पर, दूमरी घर तुम्हारी भांगा न बाग भार भुरिया पद गई है। भाँवें गवा म घन गद है और यह सब इमी नताल्या क कारण हुआ है।

गुष्टारा मयात है कि मैं यह उम्मा सजर भाई धी कि मैं भाँगूंगा और तुम शिगाग का मुझ बापन न दागी ? दुग म पीहित

नताल्या न भपनी घाँव ऊपर उठारव कहा ।

तब फिर घाई क्या थी ? भकसीनिया न पूछा ।

मेरी बत्तप मुझे घसीट नाई यनी ।

धारगुल स भकसीनिया का बटा जाग उठी और गोन भया । माँ न बेटा का उठा लिया और गिहरी की धार मुह करव बठ गई । नताल्या का भग-भग काँप रहा था । उसन बच्ची की धार दया । उरावा बठ सूत गभा भावाज कम गई । बच्ची न चहर पर जड़े प्रियागी न नेत्री ने उम पर प्रनामक हृष्टि झाँपी ।

नताल्या गौली उगमगाली बरमानो म घाई । भकमानिया उम पहुँचान तक नही गई । दा-एव धरण बाद पाँवा घाया ।

कौन थी यः धौरत ? प्रबट रूप म घाधी नाममभा कर उसन पूछा ।

गाँव की एक धौरत था ।

नताल्या तातारस्की गाँव का चौटी । उमन जस-तम तीन बरु तय किए । पर फिर यह एक जगली भाड़ी न नाच पड रही । मन की बन्ता न ऐसा कुचना कि उम किमा धीज का ध्यान नया रहा । बच्ची न चहर पर जड़ी प्रियागी की उगानी म भगी कानाँ घाँव प्रतिपन उगन सामन रहा भाइ ।

१८

दः न जस भया बना दिया उस । लडाइ न बाँव का रात सग सग का प्रियागी न भक्तिपर भक्ति हा गई । नहका हान म थाहा पटल उमे होग घाया । बगौन भाडा म पड़े उमन हाथा म हावन हूँ और बहू फिर क दः स कराह उग । उमन बग भक्तिनाद म भपना हाथ उठाया और एन म लक्षणय बाव टाल । धाय पर घटुनी पयो ता एमा मालूम हुमा जग किमा न घषकना भगारा ग्यः दिया हा यनी । फिर दान रिन्डितात हुए बः उठ गमा । मित्र न ऊपर पार म जहा पटा की पत्तियाँ मरमराइ और पतिया म बूँटें टप-टप कर टपरी ता जस काँव गनरा । नील धाममान न गाव म पेठा का कानाँ घाँव नहकर घाइ

भग इस प्रकार था—

पृष्ठसचारा की नवी रजीमट क कमाण्डर लफिनेट-जनन गुस्ताफ प्राञ्जवग की जान बचान के लिए बारहवीं दान परञ्चाक रजीमट के मेकगोथ प्रिगोरी को कारपोरल क पद पर नियुक्त किया जाता है। इससे भलावा सिएरिंग की जाती है कि उसे चौथे दर्जे का मत जॉज-पत्र भी प्रदान किया जाए।

प्रिगोरी की कम्पनी का दिन स कामेन्वा-स्त्रुमिनोवा म डटी थी और अर लोग फिर आये उबन की तयारी कर रहे थ। सा प्रिगोरी का यह मवान भा मिन गया जिमम दन क ताग ठहरे हुए थ। वह यहाँ अपना घाटा देगन गया। बागी क थला स कुछ तीनिय और कुछ नीच पहनने क कपडे पावथ मिले।

मेरे देखत-एकन य चीजें उठा ली लोगा न प्रिगोरी ! मीणा कोणसाइ ने अपराध-सा स्वीकार किया पदल सनायनी ठहरी थी उन्ही लोगा न का है यह हरकत।

खर के चीजें उह मुबारक रह मुझे परवाह नहीं। मुझे ता सिफ अपन सिर की मरहमपट्टी की चिंता है।

तुम मरा तीगिया से ला।

क दोनो सट म लडे रह कि उरसूपिन थाया और उगन घात ही भरना हाय इत तरह बड़ाया जस कि उमम और प्रिगोरी म कभी कोई मगड़ा रहा ही न हो।

हसा मतगाव ता तुम कभा जिंदा हा।

ही कहन का ता हूँ ही।

तुम्हारा सिर मरहमपट्टी ही रग है। गून पाधा।

'पाछुंगा समय स।

जरा देखू तो कि तुम्हारा सिर की कमी हाउन कर दी है कुमता ने।

उगन प्रिगोरी का सिर पीछे किया और पीछा तुम उहें अपन बाव बना बाउन गिा ? कमा शकन बन गई है तुम्हारी। ऐसे म शॉकर खुद न कर सकेगे तापो मीगुद क मरहमपट्टी

प्रिगोरी की स्वीकृति की प्रतीक्षा किय बिना ही उसन अपनी पेटी से एक कारतूम खीचा उसम स गानी बाहर निकाली और काला पाउडर अपनी हथेली पर उठेना । बोला मोगा मकड़ी का एक जाला लाओ नही से ।

मोगाबोई ने अपनी तलवार की नोक स मकड़ी का एक जाला खीचा और उरसूपिन का दे लिया । उरसूपिन न उमी तनवार स धाडी-नी मिट्टी खोनी और उसे मकड़ा ने जाल और पाउडर स मिलाकर दौना से षवा डाला । अर वह लिसलिसा प्लास्टर उसन खून की जगह पर चिपका लिया और हस पडा ।

जदम तीन दिन म बिलकुल ठीक हो जाएगा । उसने घोषणा की पर जरा दखो कि मैं मुम्हारी इननी सेवा कर रहा हूँ और तुम हो कि तुमन मुझे मार डालना हाता ।

सवा न लिए घयवात् । नकिन अगर मैं तुम्हें मार डालता तो मेरी आत्मा न ऊपर स एक पाप का वारु और हट जाता ।

तुम बुद्ध हो ।

हो मकता है कितना जन्म हुआ है सिर म ?

भाषा इच गहरा धाव है । आस्ट्रियना की यात्रागर समझो । मैं उन्हें भूलूगा नहीं ।

भूलना चाहोग तब भी भूल नहीं पायागे ।

आस्ट्रियन अपनी तल वारा म सान कापटे स नही रखवात इसलिए इस जन्म का निगान जिल्लगी भर बना रहगा ।

किस्मत के निबन्धर हा प्रिगोरी तनवार नहीं सीपी बठ जानी ता दूसर देग की जमीन म दफन होन । मोगाबोई न मुमकराने हुए कहा ।

मैं अपनी इन टापी का क्या करूँ ? प्रिगोरी न कटी पत्ती खून म लपपथ टापी परगानी स मराडी ।

फँक दो कुत्त खा जाएँगे इस ।

खाना घा गया जवाना घामा और से तो । पर न एक दरवाज स धावाज भाई ।

कञ्जाक शोध से बाहर भाप । प्रिगोरी का कुम्भन पाटा उसे देखकर प्रसन्नता से हिनहिनाते लगा ।

'यह तुम्हारे पीछे बड़ा दुखी रहा प्रिगारी !' कोनेकोई ने धोड़े की धार तिर हिलाते हुए कहा, खाना नहीं खाता था—सारे दिन हिनहिनाता रहता था । मुझे तो बड़ा ही ताज्जुब हुआ ।

रेंगते रेंगते भी मैं इसका आवाज देता रहा । प्रिगोरी ने भारी स्वर में कहा मुझे पूरा यकीन था कि यह मुझे छाड़कर नहीं जायेगा और भाई अजनबी इस आसानी से पकड़ नहीं पायेगा ।

सच है ! हमका जबदस्ती खाना पटा इस । फन्दा डाला हमने ।

अच्छा धोखा है । मेरे भाई व्यापक का है । अपनी गीली झालाकी छिपाने के लिए प्रिगारी ने पीठ मोड़ ली ।

व लोग घर में गये । बेगोर झरकोव सामने के कमरे में स्थिरदार घटाई पर पटा सो रहा था । वहाँ की हर चीज जिस तरह अस्त-व्यस्त पड़ी थी उससे पता चलता था कि घर के मालिक बहुत ही हड़बड़ी में पार खाइकर भागे थे । जहाँ-तहाँ विंगर पड़े थे—टूटे हुए बतन पटे कागज किताबों सामानों के टुकड़े कञ्जा के गिलोने पुराने जूने और भाटा ।

मयेन्यान प्रोगव और प्रोखोर जिकोव ने कमरे के कोष की जगह साफ कर ली थी । वे वहाँ बैठे खाना खा रहे थे । प्रिगोरी को देखते ही शम्भार की भाँति भाँचें भाँचम से फटन-सा लगी खीटका ! घर तो वहाँ से घा टपका ?

दूसरी दुनिया में ।

'जामो भागकर इनके लिए कुछ खाना लाओ । इस तरह घूर कर मैं देखो !' उरयूयिन बोला ।

अनी लाया ! खाना ठस बोन में बँट रहा है ।

प्रोगोर मुह खसलाना हुआ उठकर दरवाजा की धार गया । यथाहुथा प्रिगारा बठ गया मुझे याद नहीं कि आज से पहल खाना क्या खाया था । वह अचरणी की भाँति मुमकराया ।

तीसरी कोर की मुनितें गहर से गुठर रही थीं । सँकरी सड़का में पंचतना के लोग रमा की गाड़ियाँ और प्रौबी पुस्तकार समाने

न य ।

घोराहों पर निकसने का रास्ता न था घोर धान-जानवाला की धावाओं वन्द दरवाज भंकर भन्दर पहुँच रही थी । ऐस म बतन भर पारवा घोर पन भर माथी निय प्रोखोर दग्धत-दग्धते लौट भाया ।

'यह चीज किसम डालू ?

प्रोगव न बिना साच-समके ही एक वनन उठाकर दठ हुए पहा इस हल्के-भर बतन म डाला ।

तुम्हारे वनन स बदलू मानी है । प्राखार न त्वारा चढ़ात हुए कहा ।

कोई बात नहीं । इसम भर ला । बाद म हिस्सा-बाँट हा जाएगा ।

जिकोव न कडिया वनन स ऊरर उलट दी घोर गालगार मोटे माँह वाला दलिया उसमें भर गया । नाल-लान खर्वी उसक चारा धोरठरती रही । स बातें करते घोर खान रहे ।

'बगत म घुडमवार शोपचिया का एक बगलियन टहरा हुआ है । अपन पाठामे पर पडी एक बूँद का घाटकर बटबडाते हुए वह बोला वे अपने घोरा की मिला रहे हैं । उनवे वारट मफसर ने कहीं पड़ा है कि जमनों स साथी जगह खाती कर रहे हैं ।

मेलखाव काग कि तुम धात्र मुवह यहाँ हाउ ! उरपूपिन ने मँह खलात्र हुए कहा हम सोगा की स्वय ठिवीजनत-कमाँडर न घजवाँ दिया । उसने हमारा निरीक्षण किया घोर हगरी के हुस्वारों को भारकर अपन तोपखाने की रक्षा करन स लिए हमारा धामार माना । वह जाना कजडाका ! जार और घापकी पितृभूमि कम स तिन म घानगी याँ मगा ताडा रहेगी ।

उसकी बात पूरी भी नहीं हा पाई कि बाहर बन्दूक दान की धावाज सुनाई दा घोर मगीनगन सतने लगी । सभका का पटककर कजडाक बाहर नागे । एक हयाई जटाज नीच उतरकर उनक मिरा स ऊरर चक्कर लगा रहा था । जहाज की मध्यटाट्ट रोगा का जम घमका रही थी ।

बाग की घाट में सेट जाओ। बम गिरा ही चाहता है। भगन घर में तोपघाने के लोग हैं। उरयूफिन चिल्लाकर बोला कोई जानर यगार को जगा द नही तो मुलायम घटाई पर ही उसरा वाम तमाम हो जाएगा।

राइफलें निकालो।

उरयूफिन ने निगाना साघनर सीढ़िया पर से गोती बनाई। घुटना के बन रंगने हुए सनिक गलियो में भागे। भगल प्रांगन स घोडा की हिनहिनाट और एक भादेग के स्वर मुनाई दिए। प्रिगोरी न चहारदीवारी की ओर देगा। तोपची फुरती स तोप को छप्पर के नीचे से जात दीखे। उसन नीलागा पर घाँटे गढाइ तो सराटा भरते हुए उस पक्षी को भटक स नीचे की ओर भाते रेगा। इसी क्षण को पीछ धूप में चमचमाती हुई तेखी स सहसा ही नीचे गिरी।

दुकड़े दुकड़े कर देने वाली गरज स पूरा मकान नाँप गया। बगल क हाते में एक घोडा मौत को सामन देखकर हिनहिनाया। बारूद का जहरीला घुमाँ पूरी बाड पर सहर गया।

पट सेट जाओ! उरयूफिन सीढ़िया स भागकर उतरा। प्रिगोरी उसक पीछ सपका और दोनों ही बूँकर भाते में जानर लेट गए। मुकते ही हवाई जहाज का एक पल चमका। गली में बीच-बीच में गोली चनवी मुनाइ दी। प्रिगोरी न अपनी राइफल में कारतूम भर ही थे कि जोर क एक पडान ने उम उटाकर बाड स छ पृष्ठ दूर फेंक दिया। मिट्टी का एक टाका उसके तिर में भानर तगा और उसकी भाँखें पूल स भर गईं।

उरयूफिन न उस उठानर सहा किया। प्रिगोरी की बायीं भाँख में तब दू घुंरु हो गया। इसके कारण नजर ने काम करना बन्द कर दिया। यही मुन्नित न दायीं भाँख गालनर उसने दखा कि मरान का पाया हिस्सा बह गया है। इटा का उनटा सीचा धम्बार लगा है और उनक ऊपर गन का गुलाबी बादल मडरा रहा है।

प्रिगोरी गढा घूरता रहा कि यगोर भाखोव सीढ़िया के नीचे स रेंगा हुआ बाहर निकला। उसका गारा चेतगा रमाँना-रमाँना

गया। उनका मोचा स खून की वृद्धि होती जाती। व जन्म बाहर निकल आइ थी। वह कच्चा क बीच मिट घनाए रेंगता रहा। वह मुटू बन्द किय धातनाए करता रहा। उमर नाउकान पड गए थ।

उमका एए टांग पीछे घिसट रहा थी। वह जीध स समग हा गइ थी और मुनव हूए पनखून का पाँचवा उमक ऊपर था। दूसरा टांग बिनकुल हा शायब थी। वह हाया क बन धार धार रेंग गया था। उमक मह स पतनी बच्चा जनी चीखें निकल रही था। फिर पीछे एक गइ और वह चुपन गया। उमका चहुरा कडी ग्या और लीद म नरी जमीन म जा टरामा। जाइ उमक पान नगी फटका।

उमको उठा मा। गिगारी बिल्लानर बाला। उमक अपनी बाया पाँव न हाय नहीं टटाया।

पत्न नना हात का धार भागा। इनी समय टेलीफोन-बमचारिया की एए गाढा धाकर दरवाजे पर रयी। 'कहाँ सड मुह क्या फला रह हो?' दो धाकते और काला सन्धा काए पहन एए बूना ऊपर आया। मान्काव क पाम दमन-एवठ नीड जमा हा गई। गिगारा न नीड म घनकाए दवा कि एए घना भा नाँन उ रहा है। रा रहा है और कौन रहा है। उमकी पीनी भौहा पर पमान का वृद्धि था। चहर पर मौन की छाप थी।

उठा ला उमका। मुन नाग इन्नाए हा मा हिवान।

कना बान फाडे हालत हो? एए सन्धा-ना पदन सैनिक बाला, 'उठा मा उठा ना उमका। लेकिन मकर कहीं जाँगे हम एन? दल कहा रह, यह ता दन ताड रहा है।

'दाना पर घन गन

मुन ता दमा जरा।

'दुधरवाले कहीं हैं?

'उनम जीन-ना नना हा जाएगा घब।

घोर घब नी हाग है उम

एरुसित न पाँदे न गिगारा क पाँव पर हाय गया 'उय गिगारा टुपामा नहीं वह धार म बाना ग्यना हा ता दूसरा तगप स

घाबर देता ।

उसने प्रिगोरी की भास्तीन पकड़कर घमीटा और भीड़ को एक धार डकल दिया । प्रिगोरी ने एक नजर टगा फिर बर्घों को झटका और खीटकर दगवाजे की ओर घना गया । नीली और गुलाबी अतडियाँ भारबाव के पट से बाहर निकलकर लटक आईं और धुआँ द रहो थी । एक हिस्सा रत और लीद पर निजला पडा था । दम तोड़ रहे फौजा का हाथ बगन में एस पडा था जस कि जमीन को जहाँ-तहाँ से टपाल रहा हो ।

‘ मुँह ठक दो । किसी ने अपनी ओर से कहा ।

घबस्यात् ही भारकाव अपने हाथा पर बल देकर धाडा सघा और अपनी ओर पीछे झटकर मोटे अस्त्राभाविष्य समानवाय स्वरा में बिलनाया ‘भाइया मार डाला मुझे ! धाड भाइयो मुझे मार डाला !

२०

गाडा का कम्पाटमन् धीरे-धीरे हिलता हुआ रहा । उसका पहियों की गडमगडहट जस सोरियाँ मुताकर मान बुनाती रही । नागटेन से प्रथान का पीनी धारी फूट रही था । गगन में झूत उतारकर पाँवा को धाडाद कर अपनी सारी बिस्मेशारियाँ मुताकर भट रतना बून अच्यदा सगता साथ ही जस यह मासूम हुआ कि जीवन पर भय और मोत के काल साथ भर नहीं तो धानल और भी बढ़ गया ।

पहिया की तरह-तुह की गटर-गटर को मुनकर खाम खानी हुई कपारि इजिन के हर भटक से लडाइ का भारी पीछे और पीछे घुंता गया । प्रिगोरी लगे हुआ अपने नग पाँव के अगुड का ऐंझा उस गटर-गटर में प्रथन हाना और ताड साक लिनन का मुग सेता रहा । उस ऐसा लगा जस कि उसने गली खान उतार फेंकी हा वह एवमम नियत हा गया हा और नव जीवन में प्रवण कर रहा हा ।

उस समय उसका गिए हर धार मानल ही मानल था । यदि कार्ड फल था ता वह था उसकी बायीं ओर का दन् । कभी दन् एक जाता,

घौर कभी अचानक ही फिर उठ जाता। उसकी आँख जलन लगनी और पट्टी के नीचे से आँसू बहने लगते। भाँके के अस्पताल में कम उम्र युद्धा डॉक्टर उमक नशों का परीक्षा कर रहा था। तुम्हें वापस जाना पड़ेगा। तुम्हारी आँख की हातत बहुत खराब है।

डॉक्टर आँख चला तो कहा जाएगा।

एसा क्या साधत हा। प्रियागी की घबराहट न भगी आवाज सुनकर डॉक्टर न मुमकराकर कहा। लेकिन इसका इनाज तुम्हें कराना पड़ेगा। हा सकता है कि आपरेशन भा कराना पड़े। हम तुम्हें पीटमदु या मास्का भन्न देगे। उरन की बात नहीं आँख ठीक हा जायगा। उसन प्रियारी का क्या अपनपाया और उन तरीक से गलियारेस बाहर पहुँचा दिया। लौकर उमन अँवरगान का तमारी का और अपनी मास्कीनेँ ऊँची की।

काफी छत्र उधर के बाद प्रियारा न अपन का प्रमनालीटन म बठा पाया। वह रितन की टिना तक सटा उम आनदूपण गानि का उपभाग करता रहू। रम के दिव्यों की लम्बी इतार को पुराना इजिन पूरी ताइन जाकर सावसा रटा। रात का गाहा मास्का पहुँच गई। गम्भीर रूप न घायल सागा का स्ट्रधरा म साग गया। खतन की स्थिति म जा साग रहू उहँ प्लटफ़ाम पर जमा किया गया। रतगाडी के साथ आण डाक्टर न प्रियागी का पुकारा और फना टिकाना बताकर उम एक नम के ह्वाण कर दिया।

सामान साध है ?

करदाक के पान क्या सामान हा सकता है भला ? एर भावर काए एक प्रीजी दना और वस ?

‘भने पीछे-पीछे आया।’

नम अपनी कुन सम्मरता स्पेगन के सागर घाट। प्रियारी अतिवृत्तना उमक पाछ हो निदा। बाहर भाकर उरनि एक पोशाकरी सा। उन विगान नगर के बीनाहत ट्राम का परघराहट और विजना के नाच प्रकाश न जस प्रियारी का कुचन जाता। वह दग्दी की मीट से पीठ मटानर बठ गया और सडक की भीरबाह की घाट कोरुहन म

४३४ ; धीरे बह सोन रे

दसन गया। पास बठी धीरत के उत्तजित गरीर के कारण उन था
बिचित्र बिचित्र-सा गया। नास्नो म शरत का प्रागमन ने सुखा था।
उम्पा की रागनी म बुनवारा क पडा की पत्तियाँ पीली-पीली-सी लग
रही थी रात की माँसा म जाहे की टिटुरन पुन धली थी। पटरियाँ
धमक रही थी। आसमान क नीतन सिनार निमल थे। नगर के मध्य
म धाकर क योग दिनारे की एक बीगन गली की धार मुडे। नीच की
गिट्टिया पर घाटा क शुर था। ऊँची गद्दी पर बठा नील लम्बे कोट म
निपटा काचवान इधर-स-उधर हिना धीर उसन घोभी क सिर क ऊपर
घातुन नचाया। दूर पर रेन क इमिन न सीटी दी। गायद कोद
गाढा दान क इनाके की तरफ जा रही है। प्रिगारी न बडी हसरत
स साचा।

नीच धा रहा है ? नम न पूछा।
नहीं ता !

धर पहुँचत ही है हम लाग। लाहे के जगल क पार एव तागाव
का तरटा पानी धमका। प्रिगारी ने लाह की रेल्सिग-सहित एक घाट देखा
धीर घाट क धिनार बंधो दसो एक नाव। हया म नमो महभूम हुइ।
यहाँ दान की-सा वात नही है यहाँ ता पानी भी लाग लोहे म
जकडनर रमत है। प्रिगारी न मोचा। गाढी क खड क टायरा क
नीच पत्तियाँ धरमराइ।

गान्धी एव निमजिन मरान क सामन रुनी। प्रिगारी लनर
वापर धाया।

जरा धनना हाथ दीजिए। उमकी तरफ भुक्त हण नम योशी।
प्रिगारी न उमरा छाटा मुनापम हाथ माया धार उम नीच उलगन म
महापता दा।

घापक वरन म मनिसा क पगीन की बू धाना है। नम पान्त
भाज म हसी धीर उगत धटी बजाइ।

नस तुम धाए निन यनी रह मा ता तुम्हार वरन न बिसी धीर
धीर की बू धात लग। प्रिगारी न धपना प्रीय लजान हूए कदा।
दरवाजा दरवान न गाता। ध विनट की जगनगर मीठियाँ पर

चड़कर दूसरी मखिल पर पहुँचे । सामन क कमरे का पगडरू प्रिगारी एक माल मंड क पाम जाकर बठ गया और नम सफ्त चागवाला पत्र औरत स धीमे धीमे वातें करत लगी ।

अमग अमग रगा क चामे चडाए लोग दग्वाजा क आन-पाम नडरु घाए । दरवाजे पूरे गनियार म दाना घाग दीख पडे ।

धुछेन मिनटा म सफ्त सपडे पहन एक अन्नी घाया और प्रिगारी को एक बाथरूम म स गया ।

‘कपडे उतार दा ।

किसलिए ?

तुमको नाना पढेगा ।

इधर प्रिगारी कपडे उतारत हुए उस नहान क कमर का ताज्जुब म देखना रहा उदर अन्नी न टव म पानी भरपर पानी की गर्मी नापकर प्रिगारा का नहान का भादग टिमा ।

इस टव म मरु काम नहीं बनगा । प्रिगारी न घरना साँवरत पर ऊपर उठान हुए कहा । अन्नी न प्रिगारी को नहसान म भी मन्नी की घोर गरीर पाछन का तोरिपा कपडे धरलू डूत और एक भूरा सबाग दिया ।

‘और मर पपडे क्या डूए ? प्रिगारी न आचयचकित हानर गूछा ।

‘जब तक घाप यहीं रह्य आउका यहीं कपडे पन्नन हाए । अस्पताल म छुट्टी पान पर आपक कपडे आपकी लीग टिग जाएंगे ।

दीवार पर एक सीगा टगा हुआ था । प्रिगारी न उमम अपनी शक्त देखी तो वह अपन-आपका पहचान नहीं पाया । उमका चहरा सम्बा काला हा गया था । गाला पर मान चकत्त पड गए थ और गड्डी मूँछ बड़ भाइ थी । वह ड्रेसिंग गान्त पहन हुए था । उसक बाल बाना पर पट्टी बंधा हुए था । इस समय क और पहन क प्रिगारा म मनातता नाम भर का हा थी । मरी उच्च जम पत्र गर् है । वह मन नी-मन मुसबगया ।

‘बाइ छग’ तामरा दग्वाजा—दायी और अरपता का

देखने लगा। पान बड़ी घोरत से उत्तन्नित गरीर के कारण उन बड़ा
 विचित्र विचित्र-भा गया। नास्वो म घर का सामन हो चुका था।
 नमो की रातनी म बुलवारा के पढा की पतियाँ पीनी पीनी-सी लग
 रही थी रात की मौसा म जाठ की ठिठुरन पुन चली थी। पटरियाँ
 चमक रही था। भासमान के तीन सितारे निमन थे। नगर के मध्य
 म आकर के लोग किनारे की एक वीरान गली की धार मुड़े। नीचे की
 गिट्टिया पर घोड़े के खुर बज। ऊँची गद्दी पर बटा नील लम्ब कोट म
 निपटा कोबवान इधर-स-उधर हिला घोर उसने घाड़ी के गिर के ऊपर
 धातुन नचाया। दूर पर रेत के इजिन न सीटी दी। गायद को
 गाड़ी दान के इनाक की तरफ जा रही है। प्रिगारी न बड़ी हसगत
 से सोचा।

नीचे घा रही है ? नम न पूछा।
 कहा था।

घब-हूँबते ही हैं हम लाग। साह के जगन के पार एक तानाव
 का तलहा पानी चमका। प्रिगारी न साह की रनिग-महित एक घाट दगा
 घोर घाट के किनार बधी देखी एक नाव। हवा म नमी मटमूस हुई।
 यहाँ पान की-सा बात नहीं है यहाँ ना पाना भी नाग लोहे से
 जगदकर रखते हैं। प्रिगारी न सोचा। गाड़ी के खडक के टायरा के
 नीचे पतियाँ चरमराइ।
 गाने एक निमजिन नरान के सामने रुकी। प्रिगारी लम्बर
 वापर भाया।

जरा धनना हाथ दोजिए। उमड़ी तरफ मुकत हुए नम बोनी।
 प्रिगारी न उमता घाटा मुतापम हाथ माया घोर उम नीचे उतरने म
 न गायता दा।
 घायद वन म मनिवा के पमीन की पू घाता है। नम गाने
 भाव म हमी घोर उगने पनी बजाइ।

नसा नुम पाउ जिन यहाँ रह ला ता नुम्हार वन म दिगा घोर
 धाड़ के नुम घान मग। प्रिगारी न धपना शेष दगाउ हुए वन।
 दरवाजा दरवान ने गाता। घ गिनट की जातेपर गीदियों पर

चढ़कर दूसरी मजिल पर पहुँच । सामने क कमर का पारकर प्रिगोरी एक गोल मेज के पास जाकर बठ गया और नम सफेद चोगवाली एक औरत से धीम धीम बात करने लगी ।

अलग अलग रमा के अंदर चढ़ाए लोग दरवाजा के धाम-धाम नजर आए । दरवाजे पूरे गलियारे में दोना ओर दीख पड़े ।

कुछेरू मिनटा में सफ्त कपड़े पहन एक भन्ना भाषा और प्रिगोरी को एक बायस्कन में ले गया ।

'कपड़े उतार दो ।

किसलिए ?

तुमका नहाना पड़ेगा ।

इधर प्रिगोरी कपड़े उतारत हुए उस नहाने क कमर को ताजुब में देखता रहा । ठपेर अन्ना न टब में पानी भरकर पानी की गर्मी नापकर प्रिगोरी को नहाने का आदेश दिया ।

इस टब में मेरा काम नहीं चलगा । प्रिगोरी ने अपना माँवना पर ऊपर उठाने हुए कहा । अन्ना ने प्रिगोरी को नहाने में भी मन्ना दी और शरीर पोछने का तौनिया कपड़ धरलू डून और एक मूरा सवासा लिया ।

और मर पड़े क्या हुए ? प्रिगोरी ने आश्चर्यचकित शब्द बूझा ।

जब तक आप मर्दा रहग धानका मर्दा करके पन्नन होंगे । अस्पता में छुट्टी पान पर आपक कपड़े आपका लीग लिए जातेंगे ।

दोफार पर एर शीगा टगा हुआ था । प्रिगोरी ने न्यद अन्ना गबल देखी ता वह अफन-आनरी पन्वान नहीं पाया । नन्का चन्ना गन्वा काला हा गया था । गाने पर नाउ चरने पर गन्ना द्द हन्ना हन्ना मूछ बरि आइ थी । बरि कु मिंग गानन पहन हुआ था । मन्ना हन्ना हन्ना पर पट्टी बधी हुई थी । इस समय क और पन्न क मिनट ने अन्ना नाम भर की ही थी । मरी उम्र जस पन्न है । उन्ना मुसकराया ।

'बाद एग वीगरा अन्ना—हनी एग " अन्ना ह

मादमी बाला ।

धिगोरी बड़े मफद बमर म भुसा कि अस्पताली चागा पहने बाला चदमा लगाए एक पाटरी उठ खड़ा हुआ भाह पड़ोस मे रहोगे ? बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर, साथ रहेगा । मैं जरूर का हू । धिगोरी की आर भुमी उठान हुए वह बाला ।

थोड़ी देर बाद एक मोटी-सी नस न दरवाजा खाला ।

मेलेस्ताव ! हम तुम्हारी घाँसे दयना चाहते हैं । उसन धीर स कहा और उस निरनन का भाग दकर एक आर को हटकर खड़ी हा ग ।

२१

सतिका बमाण्डर न दक्षिण-पश्चिमी भाँसे पर एक बड़ा भानमण करन का निचय किया । सोचा गया कि शत्रु की पत्तियाँ ताड़न उसकी डाक-ठार बगैरह की ब्यवस्था गड़बड़ करन और उसकी फौजा को तितर बितर करने के लिए हमल बहसमात् पीछे स किए जाएँ । बमाण्डर ने बहूत-सा घनाज इकट्ठा किया और घुड़सवारा की बड़ी सनाधा की उस क्षेत्र में जगा कर लिया । इही घुड़मवाग म थी यवानी निस्तनित्स्वी की रबीम । थावा १० सितम्बर का बालना था, सतिका घाँसी-पानी के कारण बहू घणन तिन के लिए टाड दिया गया ।

सबसे द्विबीजन को हमल की तमारी के सितसिण म एक बड़े क्षेत्र म फसा दिया गया ।

घाठ बस्ट के फामल पर पदल मना न दाहिनी आर एक ऐसी गफलत का काम कर दिया कि दुश्मन चौकला हो गया । दूसरी आर एक घुंसपार द्विबीजन के घुड़ दन गसत तिन म भन्न तिय गए ।

निस्तनित्स्वी की रजामट के सामने दूर-दूर तक बही दुश्मन का मान निगान म था । बबाना ने दगा कि सगभग एक बस दूर बीरान गारया का पत्तियाँ हैं और उनक पाछे मधरे की नीनी मुष म नहाए हवा म सहरान गई के गत हैं । दुश्मन न तमारी स भानमण का अनुमान मगा दिया हागा क्योंकि राता गत म के लाग बार्द द बस्ट पीछे हट

गए थ और हमलावरा को ध्यान क लिए कबल मनीनगना क बहु धाढ गए थे ।

बरसाती बादना क पाछे स सूरज उग रहा था । सारी घाटी पीनी धुंध से नहा रही थी । ऐस म भाग बड़न का आदग मिला और रेजीमटें भाग बड़ चली । हजारों घोडा की टापों स पदा हुई गगनभेदी आवाज धरती क नाच म आती-सी गी । घाड़े को सज रपतार से न दौडन देने क लिए निस्तनिस्की न लगाम खीची । एक बस्ट तय करन के बाद आक्रामक सनामा की पत्तियाँ सनामा के सता क पान भा पहेँची । आसमी की कमर से ऊची पास और सतामा स लिपनी राइ क कारण घुडसवारों का भाग बड़ना दुखार हो गया । उनक सामने राई की भुरी वालें नहरानी रही और पीछे की राई खुरा से रीनी गई । इस तरह क चार बस्ट के सफर के बाद घोडे पसीन-पसीन हो गए और सड खडान लग फिर भी शत्रु का कोई चिह्न कहा न मिला । लिस्तनिस्की ने अपने कम्पनी-कमाण्डर पर नजर डाली । कप्तान क चहरे पर गहरी निराशा का भाव सतक आया ।

एक बस्ट की दुखार मजिल ने घाडा की सारी साजन लोड दी । कुछ अपने सवारा को लिए दिए गिर पड़े । साजनवर-सं-नाकनवर घोडे भी सडकटा गए और भागे बड़न से मुँह मोड गए । सब आसिद्रमा की मनीनगना ने गानिया की बौद्धारे धुर की । राइफनें भाग बग्तान सगी । हयारा भाग न भाग क दना का भून छाता । सबम पाने बर्छी वाली एक रेजीमट बौखनार पीछ मुडी । एक बडका रेजासट निगर बितर हो गई । मनीनगनों की कपा न उनक पर उग्राड लिए । इस तरह यह समाधारण बडा आक्रमण पूरी पराजय म बन्द गया । बुद्धे रेजीमटा म भाव सतिकों क घोडे मारे गए ता भाव घाडा क मतिक मार गए । असमी लिस्तनिस्की की रेजीमट क चार मी बरबाक और सानट अधिकारी बाल क गाल म ममा गए या आन्न हो गए ।

यवाना का घटना घोडा मर गया और स्वय उसक मिर और पर म चाने भाइ । एक सार्जेंट मजर अपने घाडे स बृत्त और उम उग कर घोडे पर सवार हाकर भाग लिया ।

उस डिवीजन के स्टाफ प्रमुख बनल घालावाचक न धात्रमण के नितन ही फाटो खीच और बाग प उन्हें बुद्ध अधिनारिया को दिखलाया । इस पर एक घायल लफिनट न उमक मुह पर घूमा मारा और रो पडा । फिर बरठाक उस पर दूट पडे और काटकर उमके टुकडे-टुकडे कर दिए उसकी लाग स खिलवाड किया और फिर उस सडक की वगल के एक गडड म डबेल दिया । इस भाँति अत हुआ एस घोर अपमानजनक धात्रमण का

बारमा के अस्पताल स यवोनी न अपन पिता को लिखा कि मुझे छुट्टी मिल गई है और मैं यागान्नाए आ रहा हूँ । बृद्ध कमरे का बन्द कर लिन भर पडा रहा और अग्न लिन जानर कही बाहर निकला । उसन निविनिच काचवान स ठग खतन बान घाडा को बग्धी म जातन को कहा फिर नाग्न किया और अग्नेस्वाया के लिए खाना हा गया । यहाँ न उमन अपन उडक के नाम तार मे चार सौ ख्यल भजे और साथ ही भजा एन छोटा-सा पत्र

प्यारे बेटे

मैं बहुत प्रमन हूँ कि तुमन अग्नि-श्रीक्षा ल ली है । बडे घरा के लडका की जगह वहा हैं महत्ता म नयी । तुम बहुत ही ईमानदार और समझार हा । तुम अपन आत्मा का गिगना कभी पसन्द न कराग । हमार परिवार म कभी किसान न बन नही किया । यही कारण है कि तुम्हारे बाबा सम्राट के कृपा पात्र नहीं रहे और यागान्नाए म मर गए । जीमे जी न उन्नि सम्राट का अनुग्रह चाहा न उसकी धागा रखी । यवोनी अपनी चिन्ता करा और जग्नी स-जल्दा अ-ध हा जाभा । याग रगना कि दुनिया म जो बुद्ध हा मर लिए तुम ही हा ! तुम्हारी चाची तुम्ह प्यार भजती है । यकी अक्छी है । जहाँ तक मरा सवान है मैं क्या निर्णू ? तुम जानत हा कि मैं कस रचना हूँ ! मार्च पर जमी भी हागत है कस क्या है घालिर ? क्या अवन म काम करन बाल लाग हमारे यहाँ है हा ननी ? मैं अगमारा का खबरा पर मर्डीन नहा करना । व सब भूट म मरी होनी हैं । मग पिछन बपों का अनुभव भी यही काना है । यवानी क्या हम सवाई हार जाणें ? मैं यही बेचनी स तुम्हारी राह

दल रहा हूँ ।

धीर सबमुच तिलनित्स्का क जावन म एनी का वात न धीजिमरी चर्चा की जाए । जिलंगी पहन की तरह घिमट रही थी । काई अन्तर नहा था । केवन मजदूरा की मजदूरी बड़ गद्द धी और गाराव की कमो हो गई थी । मालिन भव और क्याण पीना था वात-वात म और क्याण विगमना था और क्याण खुबुर निमानता था । एन तिन उसने प्रवसीनियस को बुनाया और गिवायन करल हुए बाना "तुम काम कायद म नहा करती । कन नाता ठा क्या किया ? गिनाम ठीक स माफ क्या नहीं किया ? दुवारा एमी गतती की ता मैं तुम्हें निमान दूँ । मुझे यह मय पसन् नहा समझी ?

प्रवसीनिया न हाठ नीच लिए । उसकी छाँटा स छाँसू यह बन । बोली निवाना प्रसप्तएविच मरी लहकी धीमार है । मुझे उमका देख मान करने का वक्त चाहिए । मैं उस छाँ नही मकती ।

बच्ची का क्या हा गया ?

उसक गल म कफ मर्य गया है ।

क्या ? क्या उस लाल बुगार है ? तून पहल क्या नहा बनाया बवहुफ कहा की । जा निबिनिच के पाम भाणकर जा नि यन थ्योतस्वासा म डाक्टर का बुनाकर साए । भागकर जा । जल्दी कर ।

प्रवसीनिया वहाँ म भागी । बूडा हम बीच अपना भारी धावाइ म उनी तरह बरमन्न रहा क्या बवहुफ औरत है नू ऐ ?

निबिनिच भगने तिन मुबह डॉक्टर का ल भाया । डॉक्टर न बुनार म बहाण पही बच्ची की परीक्षा का धीर प्रवसीनिया क सवापा का उत्तर दिए बिना सापा मालिन क पाम पड़ेवा । बुद्ध उनम मामन वाच कमर म मिला ।

'कन बच्ची का क्या सनलोप है ?' उमने डॉक्टर का अभिधान्न जापरवाही म मिर हिलानर स्वीकार करल हुए पूछा ।

तान बुगार है, मरवार ।

ठीक हा जाएगा ? को उम्मी है ?

मुनिर है । कोई उम्मी नही है ।

बबकूफ ! बड लाल हा गया तुम्हारी डॉक्टरों से पायदा ? ठाक करो उसको। डाक्टर के सामने ही उतने मदान से कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया और इधर-स-उधर टहनने लगा।

अकसीनिया न दरवाजा मटपटाया और अन्दर गलिन हुई। डॉक्टर अगन्त्याया लौटने के लिए घोडागाडी मंगिता है।

बृद्ध एडिया के बल धूम पडा कह दा उसम कि वह पाठ पा उल्लू ह। कहना कि जब तक बच्ची ठीक न हा जाएगी उम यही ठहरना पडेगा उसको एक कमरा ठहरन को दे दो और पेट भर खाना खिला दो। धूमा हिलाने हुए वह भीखकर बोला। फिर बिडकी के पास पहुँचा क्षण भर अगुलियाँ पटपटाता रहा और फिर अपने बेटे का फोटो देखन लगा। फोटो में बेटा आया की गोद में था और वह उमने यचपन में लिया गया था। फिर बूढ़ा दो नन्म पीछे हटा और नदरें जमाकर देखने लगा जैसे कि बच्चे को पहचान न पा रहा हो।

बच्ची के बीमार होते ही अकसीनिया को लगा कि भगवान् नम नताल्या को तग करने का दड द रहा है। बच्ची की डिङ्गी खतरे में दमकर वह आपे से बाहर हा गई और होग में नहीं रही। अब यह अघर उधर बमतलब धूमती और कोई भी काम न कर पाती। चाह कुछ हो भगवान इन घरली में उठायेगा नहीं—वह बार-बार सोचती। न यह माननी और न यह मानन की नोङ्ग करती कि बच्ची बचेगी नगी। पागला की तरह भगवान से प्रार्थना करती— ह प्रभु ! अन्तिम बार दया कर बच्ची की जान बचा लो।'

पर बुगार नन्ही-मुन्नी बच्ची को भूनता रहा। बच्ची पत्यर की तरफ बिन लटी रहा गया सूज गया और नाँस ह्रीफी बनकर घराटों में बन गई। डॉक्टर ने उमे दिन में चार चार बार देखा। नाम को नौकरों के बराबर के पाम जा खडा हुआ और शरद् के तारों की ओर दमकर निगमन पीता जा।

अकसीनिया मारी रात बनी के मिरहाने बठी रही। बच्ची की परपगहट में रहे खरर उसका बनजा मंह को आना रहा। वह माहें भर भरकर गाबती रही—

मेरा नन्ही-मुन्नी बेनी मेरी मुन्नी राती मेरी कभी अपनी माँ को छोड़कर जा मत मेरी तान्बोचका ! देख तो मुन्नी भाँखें तो खोल घा लौट घा मेरी काली भाँखा काली मुनिया उफ हे भगवान् क्या हो रहा है इसे ?

कभी-कभी बच्ची भाग-सा जलती पलकें खोलता धीरे खून की तरह जाल भाँखा स काँपती हुई नजर से देखती । माँ लीम से उमरी निगाह पकड़ने की कोशिश करती । पर निगाह उसे कि अपने घाप म खोती और डूबती खली जाती ।

बच्ची ने अपनी माँ की गोद म दम तोड़ दिया । उसका छोटा-सा मुह भाँखिरी बार खुला और साग बदन फेंक गया । नन्हा-सा मिर माँ की गोद म भून गया । मेसलाव की भाँखें अचरज और उदानी से भरकर एक्टक निहारती-की-निहारती रह गई ।

पृष्ठ पाँचका न भीन के किनारे के पुराने चिनार के नीचे एक छोटी सी कब्र खोदी ताबूत का ल जाकर उसम रखा उन काँपत हाथों से मिट्टी स डँका, धीरे-धीरे से देर तक मिट्टी के ढूँह स घनसीनिया के उठने की प्रतीक्षा करता रहा । अन्त म जब उससन रहा गया तो अपनी नाक जोर स बजाता हुमा अस्तबल म लौट आया । यहाँ उसन यू डी-क्वोलोन की एन सींगी और उतरी हुई स्प्रिट की एक मुगही निवानी धीरे दोना को एक बोतल में मिलाया । यह काकटेल गल के नीचे उतारने लगा तो बुन्बुनाया—

‘उस फूल-सी बच्ची की याद में । भगवान् कर कि स्वर्ग की राजधानी क द्वार उस बच्ची क लिए खुल जाए । दबडून भरती न उठ गया’ उसन बोतल खासी कर दी । अब टमाटर का अचार दान स काटा तो जोर-जोर से मिर हिलाया और बातन की भाँ ममत्रा म दरत हुए बोला दुखारी मरा मुझे भूलना मत मैं भी तुम्हे कभी नहा भूलूँगा और फूट पटा

तान हप्त बाँ यवानी तिमनित्तकी न एन सार दिया और निगा कि मैं घर भा रहा हूँ । तीन घण्टा की बग्गी उस सने स्टेशन गई । एनाक का हर भादमी उमने स्वागत क लिए उत्सुन हो उठा । मुर्वाबियाँ धीरे

कसहस काटे गए । वृद्ध गाँवा ने एक भेड हलास की । घानदार बाँल की पूरी तयारी हो गई । छाटे मालिक रात का घर पहुँचे ।

इस बीच ठिठुरन बढ़ गई और पानी बरसने लगा । पानी के गड़े गढ़या म लम्बो की रागनी की नही-नन्ही किरणों मिलमिलान लगी । गाड़ी सीढ़िया व पास धाकर हकी ता घोडा की घटियाँ बजी । यवानी गाँवा व ऊपर घपना गरम तवाण पटककर कुछ-कुछ लगड़ाता-सा बड़ी उतावली म सीढ़िया पर चढ़ा । पिता न भल्के स कुसियाँ इधर उधर का और बटे स मिनन क्हुलिए प्राग बढ़ा ।

घनसीनिया ने खान व पमर म खाना सजाया और उह बुलाने का पहुँची । उसने तासी के छत्र स बृद्ध की बटे के कथ भूमते देखा । बृद्ध की गरदन का मांस हिनता लगा । कुछ मिनट खन व बाद उसने फिर भँका । इस बार जमीन पर फन एक बड़े नका कसामन यबोनी घुटना व बन यटा दीखा । वृद्ध मुह स तम्बाकू व घुए के वादल उडाता कुसी व हत्या पर भगुसिया व जाड बजाता नफरत से धीखता गुन पढा—

मलक्सयव ! यह नहा हा सनता । मैं विवाम नहा करता ।

यबोनी न नका पर घपनी घगुलियाँ फिरात हुए बड़ी शान्ति स उत्तर दिया । वृद्ध भारी भावाज म बाता अगर ऐसा है तो प्रधान सनापति न गसता की है । दूरन्गी की बिनबुल कमी रही । देखा यवानी में रुमी जागानी-बृद्ध की एक एमी ही मिसान तुम्हारे सामन खता हँ । गुना गुना मरी बाल ।

घनसीनिया न त्रवाजा गटखटाया । उसाह और प्रसन्नता स परि पूण वृद्ध बाहर निजना । उमक नया म यौवन की-सी खमक थी । भवन सदन व साथ उमने १८७५ की घगूर की गराव थी । उनक खुशी स भरे चहरा को दखकर घनसीनिया का घपनी जिन्गी का प्रबलापन और भी गटका और गला । गहरा दन घन्तर काटने लगा पर घाँसों स घाँसू एक नही निकला । बकी की मोन के बाण उसने रोना जाहा था किन्तु घाँसू निबनन ही नही थ । उमकी हिचकी ता बेंघती थी पर घाँसू भूगी ही रहता थी । यह जमे परखर हो गई थी और इसस उसका दुख तुगुना हो उठा था । यह घपनता स चन पाना चाहती और बाकी

दर तक साता रहता । पर बच्ची की बिनकारी नौद म भी उसके काना म पढन लगती । उम लगता कि बच्चा उसकी बगल म है । बस वह तो करवत बदल लेती और बिस्तर का हाया म टटावन लगता । काइ उसक काना म बराबर फुमफुमाना रहता— माँ माँ ! बच्चे म कह रहती— मेरी राना मुन्नी ! और उसने हाटा पर बफ जम जाती । त्ति क यत्रगाभूग प्रजाग म भी बनी-बनी उस बच्ची पुत्रों पर बठी लगती । बस वह ता उमक युधराल बाला पर हाय परन की उमगती

यवाना का घाए तान त्ति हूए कि एक गाम का वह अस्तवत म गया घार वहाँ शाका म काफी दर ठर दान प्रदा के कज्जाका क स्वतंत्र जीवन की सहज बहानियाँ मुनता रहा । यह वहाँ स काइ नो बज उठा । महात म खेन्न हवा सरटि भर रही थी । काबड पावा क नीच चपचप कर रही थी । ऐस म पील चीन् न बादलों का भावरण थीग । यवानी न चीन्नी म धपनी घड़ी दला और नौकरा क बवाटरा की धार मुड गया । उसने सीडिया क पाम लडे होकर मिगरेट जलाइ एक दाए लडा बिसूरला रहा और फिर बापे भ्रवता ऊार चड गया । उसन गावघाना म मित्रकी खाली और धरसीनिया क मर म पहुँचकर नियाससाइ जलाई ।

कौन है ? कम्बल मोड़त हुए धरसीनिया बानी ।

मैं हू तिम्रनित्की ।

एक मिनट म कपडे पहनकर आती हू ।

तकनीक मत करा । मैं ता बस दा-एव नित्क टटूंगा ।

उमन अपना भावगोत्र उतारकर एक धार रवा और धारपाइ का पाटी पर बठ गया ।

तो तुम्हारा बच्चा जानी रही

जी हाँ धरसीनिया जरा बार स बाला ।

तुम बटून बच्चे गई हा । मैं ममक मकना हूँ कि बच्ची क जान म तुम्हें बिनना दुग हुआ होगा । मेकिन मरा अयान है कि तुम बजार ही धपन का मता रही हा । बच्चा सब यानम तो घा नहीं मकती । छिन् मुन्हागी उम्र भी काइ निकल नहीं गई है । अभी ता तुम खाल हा,

धोर बच्चे हो सकते हैं। मम्हलो धोर धपने धो साधो। आखिर तुम्हारा सब-कुछ तो छुट नहीं गया मारी जिन्दगी सामने पडी है।

येवोनी ने प्यार से उसका हाथ दबाया धोर उसे दुलराया निन्तु उसमें अधिकार की भावना भी रही। उसने बातों का स्वर नीचा कर दिया। फिर यह फुसफुसाहट में बदल गया धोर धक्कीनिया की दबी सिसकियो पर वह उसके धाँसुधो से भीगे गान धोर पलकें धूमने लगा।

नारी का हृदय सबदना धोर कछणा के हाथो म सहज ही धा जाता है। निरागा ने भार के नीच दबी धक्कीनिया कुछ न समभी धोर येवोनी की बाँहा में भर गई। उसके धन्तर की मुप्त वासना पूरे बग से जागी धोर धक्कीनिया न धपना बदन ढीला कर दिया। पर बौखलाकर तयाह करने धाल धानन्द का लहरा उतार पर धाया कि धक्कीनिया होश मे धाई धोर तजी से धीखी। उसे न उचित-धनुषित का ध्यान रहा धोर न सज्जा का खयाल रहा। वह धपनगी मिफ कुरती पहने सीढियो की धोर भागी। येवोनी तुरन्त ही उसके पीछे-पीछे बाहर धाया। बाहर धाते धाते उसने धपना कोट पहन लिया धोर दरवाजा खुना ध्योड लिया। धर की सीढियो पर धदन समय उसने सन्तोष धोर धानन्द की साँस ली।

यह विस्तरे म सेट गया धोर धपन कोमन सीन पर हाथ फेरते हुए सोधने लगा धगर ईमानदार धात्मी की नजर स देखा जाए तो मीने जो कुछ भी किया है वह लज्जाजनक है, धननिक है। धिगोरी को मीन धपन पडोसी का सूटा है। सेकिन इससे क्या मोर्चे पर मीने धपनी जिन्दगी भी तो दाव पर लगा दी थी। धगर गोली डरा धोर दायी पाट देती तो येरा गिर धिटा जाता धोर फिर इस समय कीडे येरा नाशना करते। इन तिना हनेक धो धानेवाल हर धण को दाँत मे पकडना चाहिए। मुमे इनाजन है मैं कुछ भी कर सकता हूँ। धण भर का वह धपने ही विधारा म भयभीन हो उठा निन्तु फिर उसकी कल्पना न पाक्रमण का भीषण धण उसक सामने धा उपस्थित किया। उस याद धाया कि वह धपन मुर्दा धोड़े मे उठा फिर गिर गया धोर फिर गोतिर्या बरगने लगी सोने मे पहल उमने निन्धय किया इस पर भी सिर धुनन को कन समय बहुत मिलगा फिलहान धाराम करना चाहिए।

अगल तिन सबेरे खान क कमरे म उसन अकसीनिया को अकना देखा तो अकपराधी की भाँति मुसकराता हुमा उसने पाम पहुँचा । निन्नु वह क्षीवार स सट गई और बचाव क लिए हाथ भाग बढ़ात हुए उस पर मानत बरसान लगी दूर रह शतान कही का !

पर जावन के अकन नियम होत हैं । य नियम कही लिखे नहा हैं । य इन्सान को अकने सँचे मे ठालत हैं । तीन तिन बाद येवोनी रात को फिर अकमीनिया के पास गया तो अकसीनियान कुछ नही कहा । इन्वार भी नहीं निपा ।

२२

एक छोटा-सा बड़ीचा धाँवो के अस्पताल स सगा हुमा था । मास्को के बाहर ऐसे कितने ही अटपटे बगीचे हैं जहाँ गहर की पयरीली बोनाहस मरी मनहूसियत से धाँवो को छुटकारा नहीं मिलता । उन पर दृष्टि पडती है तो खुले हुए जगनों की याद दिल को और गहराई स कचोटने उगता है । अस्पताल के बगीच म शरद की बहार थी । सन्तरा और श्राव के पेडा को पतियो स रास्ते भरे पडे थे । सुबह के पाल ने फूलो का मसम दिया और जहाँ-तहाँ का घास का नहला-सा दिया था । बिन तिनो मौसम अच्छा होता रोगी पगडण्डियो पर अहमकदमी करते अमनिष्ठ मास्को क अर्चो की अटियाँ मुनत । जब मौसम सराब हाता रोगी एक कमरे से दूसरे कमरे म जाने या अकने बिस्तरों पर छुपचाप सट रहत—ऊबत हुए या एक-दूसरे का उबात हुए । उस साल एम दिन अकसर ही आ जाने ।

अस्पताल म अकनिक रोगी अधिक थ । पापल डीजिया का एक अलग कमरे म रखा गया था । य कुल पाँच थ—नम्बा गुनाबी रग का नीली धाँवो वाला सातविपन जान वारीनिस अनादीसिर प्रदंग का सुन्दर-सा पुडसवार इवान अलेक्स्की साइबेरिया का तोरबी कासिय, एक पीना ठिगना अचल सनिअ बुदिन और पिगोरी । सितम्बर क अन्त म उनम एक और आ मिला ।

य पाँचा गान की पाप पा रह थ कि अष्टा की मम्बी आशाउ उनक

काना म पटी । प्रिगारी न गलियारे म भक्ति कर ग्वा । तीन लोग हाल म घाय—एक नम काकास का नम्बा कोट पहन एक धाम्मी और उसकी बगल स सधा एक तीसरा धादमी । फौजी की गन्ती टयुनिक और मीने पर पड खून व दागा स पता चला कि वह अभी अभी स्टेशन स भाया है ।

उमी निन घाम का उसका भावरेषन हो गया । भावरेषन थियटर म उमने जान के कुछ ही मिनटा बाद भय रोगिया को गाने की भर्राई हुई भावाज सुनाई दी । उस क्लोरोफाम सुधा दिया गया था और सजन उसकी बम से घायन एक भाँख का घचा हुआ हिस्सा निकाल रहा था कि वह गाना गा रहा था और गात्रियाँ दे रहा था । गालियाँ समझ में नहीं आ रही थी । भावरेषन व बाद उसे बाड म ल भाया गया जहाँ अन्य सनिक रम गए थे । जब क्लोरोफाम का असर खत्म हुआ ता उसने बतलाया कि मेरा नाम गाराभा है मैं जमनी के मार्च पर घायल हुआ हूँ चरनीगाव प्रान्त का उक्रानी हूँ और सेना म मर्गीनगन चलाता रहा हूँ । प्रिगारी म उसकी छास दोस्ती हा गई । प्रिगारी का बिस्तरा उमकी बगल म लगा था । गाम के मुधाइन व बाँ दोना बड़ी देर तक धीमे स्वरा म धाँ करत रह ।

कहो करबाय भाई क्या हाजचाल है ? पहल उसन बातचीत शुरू की ।

हालत पतला है

घाय जाती रहगी क्या ?

मुझे मुझी सगारि जा रही हैं ।

बिजनी लग चुका भव तब ?

घटारह ।

मूड सगत सगत तबमीफ हाती है क्या ?

नहीं मुझे ता भ्रद्धा लगता है ।

उनम कहा कि घाय नीधे-माधे बाट ?

घागिर क्या ? हर धादमी का काना होना जरूरी है क्या ? मो ता है ।

प्रियागवा का पीला शहरासा पहासा किमा भी वान म मन्नुए नही था । बट् मरवार उठाई किम्मत मस्यतान व खान बावचीं हाकरा घोर हर चाक का बुरा भना कहन लगा । जो मह म धाया ना बवन लगा ।

तुम भार में यानी हम लाग लाम पर धानिर गय क्या म ता यह जानना चाहता ह ? उनन क्या ।

हम वम ही गय जन घोर लाग गय ।

क्या क्यने है ! तुम बवकृष ओ ! मुम्ह तुम्हें एक मिर म सब-बुद्ध ममभाना पडगा । हम बुजधा नागा क निर लठ रह हैं । नउर नहा धाना तुम्हें ? जानत हा रि यह बुजधा लोग क्या बना है ? य फना के पेडा की चिडियां हैं ।

उमन कतिन गत्य क धर प्रियागवा का नमभाय घोर बाज-बीज म गानियां पिरौड । हनी जन्म न बाना । मरा ममक म तुम्हारी उशन्ती नहा धानी । धार-धार वाता । प्रियागी न उम दाता ।

ने एमी जल्मी-जल्मा नना वान रहा माहवडा । तुम मावन हा रि तुम जार के निर लडाद मड रह हा ! कतिन यह जार क्या है ? जार है मन्हाबाज घोर जारीना है बाजार घोरत घोर व दाता एमा पीठ पर बाक की तरह उता है । ममक तुम ? मिन-मानिर वादना गलना है मिपाहा बडा नू भागता है । कारगानगर मुताउर वमाना है मउदूर नाग रट जाना है । यह है हमार घटी की दूहन । कर जाया नीकरा करडाक कर जाया । एक प्रेम घोर मिन जायगा तुम्हें इस बाग माहबनुन का शान मिनगा ।

वह या ना उमना म बावें करना किन्तु जाग म धाना ना घुड क्या दानन मगडा घोर उम ना गाविया की भरमार गना ।

वह प्रियागवा का हृदि नर-मनर बावें बनाना । बट् उम बुद्ध क महाबागण ममभाना घोर गातागाहा का नबात बनता । प्रियागी उमरा प्रियाय करना चाहता किन्तु गाराभा उमम माध पचा मवान कर उमका मुह बन् कर दता । प्रियागी का उमर महमन जाना ही पडता ।

मक्स भयानक बात ता यह हुई कि प्रिगारी सोचने लगा कि गाराभा ठीक कहता है और उसके विरोध में कहने को मरे पाम कुछ नहीं है। यह अनुभव कर यह भय से सिहर उठा कि मर मन में जार दंग या बज्रबाण की हैसियत से अपना फौजी बतव्या के प्रति जो पुरान विचार हैं यह चतुर बटु उत्रइनी धीरे धीरे उन सभी की जठ खोद रहा है और जमकर खा रहा है। उत्रइनी के ध्यान के एग महीने के छन्दर-छन्दर प्रिगारी की जिन्दगी की नींव की सारी बुनियात हिल गई डह गई और धुंधा देन लगी। वह टाँचा ता लड़ाई की बेहूदगी से पहले ही सठ-मल चुका था। बस एक घमके की उमरत थी सा घक्का लग गया और प्रिगारी का सीधा-सादा दिमाग जस सात से जाग उठा। वह इस घम सवट से उभरन के लिए बेचन हा गया। उसका रास्ता खोजने लगा और वह रास्ता उस मिला गाराभा के जवाबा में।

एक दिन काफी रात गए प्रिगोरी उठा। उसने गाराभा का जगाया और उसके उत्रइनी विस्तर की एक ओर जा बठा। सितम्बर के घों की किरणों खिडकी से बमर में घाई। गाराभा के कपोल भुर्रियों के कारण साँवल लग। उसकी आँखा की काली पुतलियाँ नमी से चमकती लगी। उसने घगडाई सी ओर पाँवा पर कम्बल डाला।

तुम्ह नीं नही घाई ?

मैं सा नही पा रहा। प्रिगोरी ने जवाब दिया मुझे एक बात बतलाया क्या यह बात ठीक है कि लड़ाई एक घातमी के लिए घण्टी है ता दूसरे घातमी के लिए बुरी ?

'तो ? उत्रइनी ने घगडाई सी।

ठहरा। प्रिगारी ने गुम्म से गरम होकर धीमे स्वरा में कहा तुम बहुत हा कि हम घमोरा के पायद के लिए लड़ाई में भाग लिए गए हैं। लेकिन साया के धार में क्या बचना है तुम्हें ? क्या लोग यह नहीं समझते ? क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उन्हें बतलाए, उनके पाम जाकर कह भाइया हमलिये मौत के मुह में समान जा रहे हो तुम ? क्या समझ ?

कग काई कह सकता है यं सब ? तुम बतलाया मुझे ! घोड़ी दर

को मान लो कि तुमने यह सब कहा तो जानते हो क्या होगा ? मात समझो । हम यहाँ सरपत के बीच के बलहमो की तरह दबे स्वरो में बाँधे कर रहे हैं । जरा धावाज ऊँची करो । सटाक सँ गोली मार दी जाएगी । लोग बुद्ध नहीं जानते । गहरी नाद म पड है । सटाक उन्हें जगाने का काम करेगा । बादला की गरज क बाद बिजली की कड़व के बादतूफान आता है ।

तो फिर यह बताओ कि करना क्या चाहिए ? तुमने लो मेर अदर उयन-युयल पदा कर दी है ।

‘भौर तुम्हारा दिल क्या कहता है ?’

‘मैं तिल की उबान समझ नहीं पा रहा ।’

जा मुझे बगार स नीचे ढकेलने की कोशिश करेगा उस खुद बगार क नीचे भाक दिया जाएगा । हम अपने दुश्मना क खिलाफ राइफलें लाने में हिचकना नहीं चाहिए । मार्गों की तरफ म भजनवाला की गाला का निगाना बनाता हमारा फज है । गागाभा उठकर बठ गया और दाँव किन्किनात टूण हाप फसाकर बोला एक लम्बी-घोड़ी सहर उगी और उन सबको अपने साथ बहा स जाएगी ।

यानी तुम्हारे खयाल स हर चीज की उलट देना चाहिए ?

‘हाँ, हम सरकार को पुरान कम्यल की तरह उठाकर एक तरफ फेंक देना होगा । जमींदारों और रईसा का खाल खींच सनी होगी क्योंकि व जाने कब स लोगों का धून बजात चल आ रहे हैं ।’

‘घोर नई सरकार बन जाएगी तो सडार्ई का क्या होगा ? हम एक-दूसरे क खून क प्यास बन रहेंगे । हम मह पगा धाद देगे ता हमार बच्चे हाप मारेंगे । सडार्ई को जड स उगाड़कर कम फेंका जा सकता है ? लाग जान कब स सड़त चल आ रहे हैं !’

‘सच है कि सडार्ई शुरू स हा सनी आ रही है और तब तब असला रहनी जब तब कि निवम्पी सरकार का हम बदल नहा देंगे । मरिन जब हर सरकार महतककों की सरकार कामगारा की सरकार हा जाएगी तब लाग बिचकुन नहीं सडेंगे । थग यही करता है, हम लोग का और यद हारर रहगा । हमारे दुश्मना पर गाज गिरकर रहनी । जब जमनी

फामीसी घोर दूसरे लोग मजदूर किमाना की सरकारें बना लेंगे ता फिर
 नम नंगे ही क्या ? हम मार्चों से दूर हांग गुस्म से दूर होंगे । एक
 हमीन जित्ता का पगारा सारी दुनिया म हांगा । भाह ! गाराभा
 न पाप निश्वाम छाडा घोर गलमुच्छा क सिरा को ऐंठा । उसकी एक
 घाँस म सपना न ली दी— घीका में उम तिन को अपनी घाँस म देखन
 के लिए खून की एक एक यूँ दे दूगा ।

दोना तडका होन तक बातें करते रहे । परछाइयाँ भूरी पढी तो
 प्रिगारी की घाँस लग गई । पर उसका मन नौद म भी परेगान रहा ।

मुबह दूसरा की बातचीत घोर एक भात्मी के गान की आवाज ने
 उट जगया । उन्ने देखा कि दूधख्यी बिस्तर पर चहुरा आघाए
 मिसर रहा है घोर उसक पास खड़े हैं जान धारीकिस घोर कोसिय ।

क्या चीख-मुनार है यह ? बुदिन ने अपना चहुरा खम्बन से यान्त्र
 निवानने हुए भुनभुनाकर क्या ।

इमने अपनी घाँस फाड़ की यह घाँस गिलाम से निवाल रहा
 था कि वह हाथ से छूटकर जमीन पर घा गिरी । घामिख ने हमन्नी
 कम लिखनाइ बुन जयांग निवाना ।

नरनी आँग बचने घाने एक ख्यी जमन ने शक्ति की भावना म
 प्ररित हातर अपना मान फौज को मुफ्त गप्पा करने का फ्रमाया रिया
 था घोर अभी परमा ही द्र खनख्यी का पीने की जो घाँस लगा दी गद
 था वन तेमी सफाई म बनार् गई थी कि हट है ! कोई पाम म देखकर
 भी क्या मन्नेना कि यन् घाँस नरना है ! वही खूबमूरत वमी ही नीसी
 नीना । प्रखनख्यी उम नम-नयकर बच्चा की तरह खग हुमा घोर
 हंगारा रहा था । बाना धान्गा प्रणयक याम नहज म— में जाऊगा
 जिन महती का चान्गा नी का पाड लूंगा गानी कर लूंगा घोर नर
 बनना दूगा कि मरी घाँस बीच की है ।

घोर म बनना नी नगा गानन की घाँस ! बुदिन घड़यडाया ।

घोर मय घाँस आ हाथ म गिरकर पूर पूर हो गई ता सपना पूर
 पूर हा गया । गूधमूरत जवान को लगा कि मय यह धपन गाँव को
 जादगा ता उमय एक ही घाँस रहेगी ।

चाखी मत तुम्हें एक दूसरी घाँव मिन जाणा यहाँ न ।
 शिगारी न घीरज बैवाया ।

दूधनष्की न घाँवुआ म तर घपना चहृग तविय पर न उठाया ता
 घाँव की खाली जगह नजर घाने लगी ।

नही नही मिनगी । एक घाँव तीन सौ स्वना की घाली है ।
 अस्पतान वाले नई घाँव बिलकुल न लगे ।

उम पर कसौ गुरुबभूत घाँव थी वह एक-एक लगी न
 थी । कोमिल वाला ।

नाम क बाद दूधनष्की नम क साथ उम कसी जमन की दूजान म
 गया घौर उमन उम नई घाँव द ली ।

देवा जमन कमिया मे क्या अच्छ हात है दूधनष्की न
 गूनी म पागल होने हुए कहा नई कमी तिजारती हाता ता एक
 कोपक की खाज न ता घौर यह है कि इमन एक न घाँव ठाकर
 या ही द क्षी ।

मितलवर वाला । भयानक उम स भर एक-एक बर लिन बोलन गए ।
 रोगियो को सबेरे नी बज चाय मिनता घौर चाय क साथ मिनत फामीमी
 हवलगनी के दा भनाभन दुकड़े घौर हरक का घगुली के नामून के
 बराबर भवनन का एक टुकड़ा । रापहर क मान के बाद भी व भूम रई
 जाते । नाम का उम चाय मिनता ता एकरमता भग करन क त्रिण क
 चाय क साम थीच-थीच म पानी पीत । झौजी-भाड क रागी बन्दन पग ।
 पहने नामबगिन गया फिर गया लानवियन । अन्नूधर क अन्त म शिगोग
 की भी पागी घाई ।

अस्पतान क गजन न शिगारी की घाँवा की जीष की घौर हातन
 मन्तापजनक बतला । मिनू उम दूसर अस्पतान में भेज दिया गया
 क्याकि उमक मिर का पाव अरम्भान ही गुन गया था घौर उमम
 हलका-भा मवा भी था गया था । गाराभ्या म विना होन ममप शिगोगी
 बोना क्या कनी फिर भेट हागी ?

ता पहला घायल म कभी नही मिनत पर

अच्छा नामोन तुमन मगी घाँवों क ऊपर स क्या हयाया

फामीसी और दूसरे योग मजदूर-किमाना की मरकारें बना लेंगे तो फिर हम लगे ही क्या ? हम मारचों से दूर हंग गुम्म से दूर हंगे । एक हसीन डिङ्गी का पतारा सारी दुनिया में होगा । भाह ! गाराभा न शेष दिङ्गाम छाडी और गनमुच्छा के सिरा को लेंगे । उसकी एक घाँस में सपना ने ली दी— श्रीका में उम दिन वो अपनी घाँस से देखने के लिए गून की एक-एक बूद दे दूगा ।

दाना तका होने तक वारें करत रह । परदाइयाँ भूरी पढी तो प्रिगोरी की घाँस लग गई । पर उसका मन नोट में भी परेगान रहा ।

मुबह दूगरा की बातचीत और एक घाँसी व राने की आवाज ने उन्हें जगाया । उन्होंने दगा कि ब्रह्मन्की विम्बरे पर चहारा घाँसाण मिमर रहा है और उमक पास खडे हैं जान बारीकिस और कोसिय ।

क्या घोग-गुरार है यह ? बुद्धिन ने अपना चहारा कम्बल से बाहर निबालन हुए भुनभुनाकर कहा ।

इमने अपनी घाँस फाड़ ती यह घाँस गिनास में निबाल रहा था कि वह हाथ में छूटकर जमीन पर घा गिरी । कामिल न हमदर्दी कम शिवलाई युग्ज ख्याल निवाला ।

नकली घाँसें बेचने वाल एक न्सी जमन न शक्ति की भावना में प्रगित हाकर अपना माल फौज को मुफ्त गप्पाई करने का फसगा रिया था और अभी परगों ही ब्रह्मन्की वो शीत की जो घाँस लगा दी गई थी वह तेमी गपाई न घनाई गई थी कि हू है ! कार्प पास में देखकर भी क्या वह न्ना कि यह घाँस नकली है ! बडी गुरमूरत बसी ही नीली नीली । ब्रह्मन्की उम दग्द रूपकर बच्चा की तरह खग हुआ और हंगता रग था । बाना बाल्गा प्रगक लाम लहज में— मैं जाऊँगा जिय लहकी का घाँगा उमी को पण्ड लूँगा, गाने पर लूँगा और तब यन्ना दूगा कि भरी घाँस काँच की है ।

और यह बतना नी देगा दाना की घाँस ! बुद्धिन बटबटाया ।

और घव घाँस जा गप में गिरकर पूर-पूर हा गई ता सपना पूर पूर हा गया । सपनूरत जवान को लगा कि घव घट घाने गाँव का जायेगा ता "मक" एक ही घाँस रहगी ।

चीखी मत तुम्ह एक दूगरी घाँस मिस जाणी यहाँ न ।
 प्रिगारी ने घोर बचाया ।

घूमल्लवा न घाँसुओं म तर धाना बहूँ कड़िय पर स उठाया तो
 घाँस की खाली जगह नजर धाने नगी ।

नही नगी मिसगा । एक घाँस हीन जो रवनों की घाती है ।
 घस्यलास बाने न घाँस बिनकुन न देवे ।

उम पर कसी छवयून घाँस वा रू एक-एक लगीर माफ
 यी । कोमिल्ल वाला ।

नातन क बाद घूमल्लकी नय क कष घसी जमन की हूतान म
 गया घोर उसने उम नई घाँस दे ही ।

दवा जमन मिसिया म रूँ पाके हाने हूँ घूमल्लकी ने
 नगी स पागल होत हुए बहूँ घाँसो निजाती हावा तो एक

कोपक भी चाख न देता घोर, घाँसो घने एक नई घाँस उठावर
 या ही दे दा ।

मितम्बर बागा । मयानक जमन म एक कर नि बीवते गए ।
 गोगिया का सबरेनी बज घाँसो को बज के साथ मिलत फासीसी

हवलरानी क दा मनामन हुए को हक का भगुनी क नामून के
 बराबर मकयन का एक दुकान । घाँसो के बाद भी व भूषे रहु

जाते । गाम का उहे चाय नि घाँसो मग करने के निण वे
 चाय क माय बाव-बीच म पानी के घाँसो क रोगी बदलन लये ।

पहले मानवरिदन गया फिर गया घाँसो क रोगी बदलन लये ।
 की भी पारी घाँस ।

घमनाम क मजन न प्रिगारी क
 मनापजनक बयाद । किन्तु नय घाँसो की घोर नतत

क्याकि उनक मिर का पाद घने घाँसो म भेज दिया गया
 हनवाजा गवा भी मा गया घाँसो म भेज दिया गया

बोना बया कनी फिर भेट हागी घाँसो घोर उसम
 'दा पहाड घाँस म कभी घाँसो घने समय प्रिगारी

घाँस घामाम तुमन म

घन्यवाद । मेरी नजर के सामने सही नक्शा भा गया है अब ।

अपनी रजिमेंट में जाना ता मेरी बातलाई हुई बातें दूसरे नरजाका को भी बतला दना ।

जूर बतला दूंगा ।

धौर अगल नमी खरनीगाव जिले के गोरोखोवका गांव की तरफ जाने का मौका मिल तो वहाँ घाट्रई गाराभा लुहार का अता-मता पूछ लना । मुझे तुमसे मिलकर बहुत खुशी होगी । अच्छा तब तक के लिए दास्विन्निया । '

एक-दूसरे में गल मिले । प्रिगोरी के दिमाग में एक अल्लि यामे उकझनी की तसबीर बहुत दिना तक बनी रही । उसके गाला की झुरियों में प्रसन्नता की रेखाएँ भी ज्या-की-त्या खिंची रही

प्रिगोरी दस दिन दूसरे अस्पताल में रहा । वह मन-ही-मन बढ़ी-बढ़ी कल्पनाएँ करता रहता । गाराभा की गिदाभा का पीलिया उसके अन्दर अपना काम करता रहा । बाड में यह अपने पडोसिमा से बातें करता सकिन बहुत कम । उसकी बातचीत और व्यवहार से एक खास तरह की परेगानी और धबराहट का सबेत्त मिलता ।

कुछ दिनों तक तो प्रिगोरी यहाँ युत्तार में पडा रहा और उसके काम सनसनात रहे ।

बहुत घबल है मह अादमी! बड़े डॉक्टर ने पहनी परीक्षा के समय उसका घैर रूसी अहरा देमकर पतवा दिया ।

उसके बाद एक बिगप घटना घटी—

एक दिन पता चला कि गाही खानदान का एक उच्चाधिकारी सदस्य अस्पताल दखन के लिए आयागा । खबर मिलत ही अस्पताल के कामचारी दफर-उदर हम तरह उद्यत नडर आए जस गलिहान में बूहे । उन्होंने धावों पर नई पट्टियाँ अड़ाए और निश्चित समय के पहल ही रोगिया के विद्योत अन्न डाने । एक जवान डॉक्टर ने उन्हें उच्चाधिकारी से बात करने का डग तक मतमाया कि बिगप सवाल का जवाब किस तरह दिया जाए । यह ममाचार रोगिया को भी द दिया गया तो कुद्रेक घटा पहले

१ बिगप गुद-बाद ।

से ही आपस म बानाफूसी करल लग । दोपहर के समय मामने के फाटक पर मोटर का भापू बजा फिर अनेक अधिकारियों और प्रपमरों स घिरा उच्चाधिकारी अस्पताल म आया ।

सबीमत से खुगमिजाज एक जोकर किस्म क जल्मी ने बाद म अपन साथ क रोगिया को विन्यास दिराते हुए कहा 'जब पाही मेहमान अस्पताल में घुमा तो मौसम गर-मामूली तौर पर साफ था और हवा तब न थी इस पर भी बाहर का रेड क्रॉस का भण्डा तबोस परफराने लगा । इसक साथ ही बाज की दूकान क साइनबोर्ड का धुमराल वाला वाला छला सचमुष अदब स भुका-का भूका रह गया ।

सो मेहमान न धूम-धूमकर वाड देखे और अपनी स्थिति और परिस्थिति क खयाल स हमेगा की तरह ही इस बार भी बेसिर पर क सवाल किए । बीमारो ने धौखें फाड-फाडकर उमे देवा और जिनियर सजन ने जस बताया था वस ही सवाभा के जवाब लिए ठीक है सरकार । बिलकुन नही मरवार । सजन उनके जवाबों क साथ अपनी और से जो-सा कहता रहा । उस समय उसकी खाल ठाल देखकर बुल्हाडी-ग्याए घामिया साँप की याद आई । दूर से वह बडा ही दयनीय लगा । महमान ने छाटी-छोटी दकमूनियाँ छीत्रियो क बीच बाँटी । चमाचम बर्दियो की ली के साथ बेगकीमती इत्रा की महर प्रियारी की और आई । वह अपन विस्तर के पास गडा था और उसकी हजामत बडी हुई थी । बुवार के कारण उसकी धौखें साद थी । उसक खुबने गालों की भूरी चमडी की हुन्वी कपकपी उसक मन की परेगानी जाहिर करने लगी ।

यह क लोग हैं ' यह सोचन लगा यह क साग है जिनरो हम गाँवा स उग्याड़कर मोत क मुह म मानन म मजा घाना है । धाँ मूषर मोत पड़े इन पर । हमारी पीठ पर सदी हुई जाके य हैं । क्या इन्ही लोगों के लिए हमने दूसरा के घनाज क धम्बारों को अपन पाडा क पाँवा तस रीन ठाना और अजनबिया को सतवार क घाट उतार लिया ? क्या इन्हा के लिए मैं बटे हुए सता की ठुठों पर रेंगा और गना फाइनर चित्लाया ? यह है हमारे लिए होषा । जाने हम हमारे घरवाना म

वीचकर भ्रमल गिया धीर बरका म भूमा मारा । इन विचारो स
उसक दिमाग म घाग-सी घघरन लगी । उसक होठ क्रोध स बाँपन लगे ।
इनके फूल हुए चहर कस चमकत हैं ! मैं तुम्हें वहाँ मोचें पर भेजूगा ।
शतान स जाए तुम्हें । तुम्ह घाडे पर लादकर तुम्हारी पीठ पर राइफन
रखूंगा तुम्हारी पीठ पर जाके लादूगा तुम्ह सडो हुई राती धीर कीडो
मे भरा गान्न तिलाऊगा !

प्रिगारी ने एव एव कर मभी अभिचारिया का शीर स देवा ।
धागिर उसकी निगाह खास मेहमान के चहर पर जा जमी ।

दान प्रेत्य र इम बरजाक का सन्त आज का पदक प्रदान किया
गया है । सजन प्रिगारी की धीर इगित कर हुमा । पर उसके स्वर स
एगा तगा जम कि पन्थ प्रिगोरी क बजाय उसी को दिया गया हो ।

किस जिल क हा ? दाही मेहमान ने उसे तेन का मूर्ति हाय म
ली धीर पूछा ।

व्यगन्वाया का सरवार !

पन्थ किस बात क लिए प्रदान किया गया तुम्हें ?

महमान की निमल गानी-याला-मी आँला म सन्ताप धीर ऊव
सहरें सती दाखी । उमरी बायी भी बनावटी बग स ऊपर उठाई गई
नहर घाई ताकि चहर पर विनेप भाव भनव । दाए भर क लिए
प्रिगोरी का सून टग पठ गया धीर एव विचित्र-सी घुत्न ने उसका आ
दबावा । ऐसी हा अनुभूति उग साम पर जाते समय हुई थी । उसक
हाठ छँटार बरका धरपराने तग ।

माग कीजिगागा मैं बुरी तरह स सरवार बाइ मन्थ द दा
मुके । प्रिगारी या लङ्गहाया जस कि उसकी पीठ टूट गई हा । फिर
उगन बिलार की धार इगारा किया ।

सरवार की बायी भी धीर ऊपर उठी । प्रिगोरी का दबमूर्ति दा
क लिए भाषा घाग बडा हुमा हाय वही-वा-वही रू गया । मुह घादचय
ग गुमा रू गया । अपनी बगल म सड़ एव भूर बाना वाल जनरन स
उत्ति घघरनी म कुछ पूछा । साथ क लागे के चहरा पर हल्की-सी
परमाना दीड गई । कपे क फुँटना वाल एव लम्ब अधिगारी न मप्र

दस्ताने थाता हाथ अपनी छाँग पर रखा । दूसर न मिर भुना दिया । तीसरा अपन पटासी की भार प्रनात्मक दृष्टि से दखन लगा । भूर बाता वाला जनरल विनम्रता स मुसकराया और उसन सरदार का अप्रजी म उत्तर लिया । सरदार न प्रसन्न हाकर मूर्ति प्रिगारी क हाथ म थमा दा और उसके कंधे पर हाथ रखा जस कि यह उनकी भार सम्मान लिण जाने की पराकाष्ठा हा ।

महमाना क जान क वाद प्रिगारा अपन बिस्तर पर पट गया और तक्रिय म मुह छिपाकर बुद्ध मिनटा तक लटा रहा । उमक कंध फडकत रहे । कहना कठिन है कि वह रा र्हा था या हम रहा था । इतना है कि जब यह उठा ता उनकी छाँवें गीली नहा था । उस तुरन्त हा सजन के कमरे म बुलाया गया ।

'तू उजड़ु वही का । हाथ म दापी पकड डॉक्टर न कहना प्राग्मभ किया ।

मैं उजड़ु नहीं हू काल नाग । प्रिगारा न डाक्टर की भार बन्त हुए कहा मैं तुम्ह मोर्चे पर कभी नहीं दखा । फिर अपन पर काबू पान हुए गानि स वाता मुझे घर भेज दा ।

डाक्टर मुडा और अपना मज की भार जान हुए जरा घीमस वाता भेज लिण जाप्राग चाहना ता नक म चल जाना ।

प्रिगारी बाहर चना आया । उसक हाठा पर मुसकान प्रिग्मता रहा छाँवें चमकती रही । सरदार क सम्मुन्द नहा और प्राग्म्य व्यवहार करन क कारण उमका तीन दिन तज राना न दन का फमना किया गया । पर वाह क साधिया और बावर्ची न उम गान दा कमा नहा हान दी ।

चार नवम्बर की शाम का प्रिगोरी स्टान से अपन बिल क पट्टम गाँव म पहुँचा । यागाग्नाए यहाँ म कबल कुछ दग्ग दूर रह गया था । दग्ग गडक म गुडरा ता उमन नदा की सग्पती क पान प्राकर बच्चा का एव कज्राच गाना गात मुना

कज्जाज चमचमाती तसवारें लिय घोडा पर सवार चले जा रहे हैं ।'

इन परिचित शब्दों को सुनते ही उसके बदन की नगा का खून पल भर को जम गया । आंखा म बठोरना पुल गई । चिमनियों से निकलते हुए की बाम लेता यह गाँव म से निवला । स्वर पीछे से काना म पडते रहे ।

मैं भी अभी यह गीत गाता था लेकिन अब मेरी आवाज खत्म हो गई है । जिन्दगी ने मेरा गीत तोड़ लिया है । जरा देखिए कि मैं आकर किसी दूसरे की पत्नी के साथ ठहरूँगा । मेरा अपना कोई बौना नहीं, कोई घर नहीं गोया मैं कोई भडिया हूँ । वह थकान क बावजूद एक गति स चलते हुए सोचने लगा और अपनी जिन्दगी की गाड़ी के अजीब ढंग में पटरी स हट जान पर हुआ । गाँव स बाहर निकलकर पहाड़ी पर चढ़कर उसने पीछे मुड़कर दखा । आखिरी घर की खिडकी से सटकते हुए लम्प की रोगनी छन रही थी । उसकी रोगनी म उसने चला चलाती एक बुद्धिया देवी ।

वह सडक क किनारे की घोस से तर घास पर चलता गया । एक छाने-म गाँव म रात बिताकर प्रकाश की किरणें फूटत ही वह फिर खाना हो गया । गाम होने गेने यह यागोदनीए जा पहुँचा और चहार दीवारी साँघर अस्तबग क प्राग म गुडरा । खाँसते हुए शाशवा की आवाज को सुनकर ररा और चिलनाया गाँवा दाग सो गए क्या ?

ठहरो कौन हा तुम ? आवाज मैं पहचानता हूँ । कौन हो तुम ? अपने कथा पर पुराना कोट डालकर शाशवा बाहर निकला ।

ह भगवान् यह तो प्रीका है । घरे मतान मू कहीं से आ टपका ?

उहाने एव-भूमरे को बाँहा म भरा । पिगारी क चेहरे को एवटक दगन हुए शाशा घाला घन्टर घन्टर मिगरेट पी ला सब जायो ।

नहीं अभी नहीं । बन घाऊंगा । मैं

घन्टर घापा न मैं कहता हूँ ।

पिगोरी न घाने हुए भी घन्टर घना गया और सक्ठी ने तल्लों

का खाट पर जाकर बठ गया। तब तक बूट की खाँसी उतार पर आ गइ। प्रिगारा बाना ता दादा ममा तुम मही-मनामत हो ?

'मैं ता चकमक पत्थर की तरह हूँ। मुझमें कुछ घटना-बदला नहीं।

घोर मकसीनिया का क्या हान है

मकमानिया ? गुरू है वह मज म है।

बूटा तजी से खाँसने लगा। प्रिगारा पहचान गया कि बूटा अपनी परगाना का छिपान क लिए खाँसा का बहाना कर रहा है।

'तानिया का वहाँ दफनाया ?

चिनार व वृक्ष क नीचे बगीच म।

मच्छा भव बाकी खबरें सुना जाया।

श्रीका यह खाँसा मुझे बहुत परगान करती रही है।

'भाग ?

हम सब जिन्दा हैं मज म है। मालिक बहुत पीन लग है। लोग हवाग ननी रहता मप्रकन हैं।

मकमानिया कमा है ?

'वह ता मानकिन क घर म काम करन लगा है। प्रिगारा न एन मगर तम्बाकू बहुत मच्छी है।

मिगरेट पान की मच्छा नहा है। धाज बनलाप्रो नहा ता मैं जाना हूँ। मुझे लगता है कि प्रिगारी मुझ ता उमर व नीच का तला भरमराया मुझे लगता है कि तुमन काई बात छिपाकर अपन बनब म पत्थर का तरह बाँध रखी है। बाना न।

मैं कह दता हूँ श्रीका मुझमें छिपान का नामन नहीं। फिर तुम रहना मम की बात हागा।

तब फिर कह डाना। प्रिगारी न बूटे के रूप पर प्यार न हाय रखत हुए कहा। वह अपनी पीठ झुकाए प्रतीणा करता रहा।

'तुम एन माँन पालत रह हो। गाँका न तब घोर मग्न आवाज म कहा तुम माँन को दूध पिनात रहे हो। वह प्रोग्न बयोनी क गाप मजे मृती रही है।

कब्रदान धमचमाती सलवारें लिये घोडा पर सवार चले जा रहे हैं ।

इन परिचित गङ्गा को सुनते ही उसके बदन की नशा का खून पल भर को जम गया । झाँवा म बठोरता धुन गई । चिमनिया से निकलते हुए की बाम सता वह गाँव म स निपला । स्वर पीछे से नानो म पड़ते रहे ।

मैं भी कभी यह गीत गाता था लेकिन अब मरी धावाज खत्म हो गई है । जिन्गी ने मेरा गीत तोड़ लिया है । जरा देखिए कि मैं जानर विसी दूसर की पत्नी व साथ ठहरूँगा । मेरा अपना कोई कोना नहीं, कोई घर नहीं गोया मैं कोई भडिया हूँ । वह धवान के बावजूद एक गति से चलते हुए सोचने लगा और अपनी जिन्दगी की गाडी के धजीब डग से पटरी स हट जान पर हसा । गाँव से बाहर निकलकर पहाडी पर चढ़कर उसन पीछे मुड़कर दला । धाखिरी घर की सिडकी से लटकते हुए लम्प की रोगनी छन रही थी । उसकी रोगनी म उसने चर्गा चसाती एक बुढ़िया देवी ।

बह सठव के बिनारे की घोस से तर घास पर चलता गया । एक छाटे-म गाँव म रात बिनाकर प्रवाग की फिरणें फूटते ही बह फिर गवाना हा गया । नाम होने होने यह धागादनोए जा पहुँचा और चहार दीवारी धाँपकर धस्तबन क धागे में गुजरा । ग्याँसते हुए गाइना की धावाज को मुनकर रवा और बिस्ताया गाइना दाना सो गए क्या ?

ठहरो बोन हा तुम ? धावाज मैं पहचानता हूँ । बोन हो तुम ?

धनन कथा पर पुराना कोट डानकर साइना बाहर निकला ।

हे भगवान् यह ता धीन्वा है ! धर गतान तू कहीं से धा टपना ?

उहोंने एव-धूमरे को बाँहा म भरा । प्रिगारी के चेहरे को एवटक दशन हुए धाका बोना धन्तर धाकर सिगरेट पी ला तय जापो ।

नही धभी नही । बन धाऊँगा । मैं

धन्तर धापो न मैं कहता हूँ ।

प्रिगोरी न धाहन हुए भी धन्तर चला गया और लकड़ी के तलों

का घाट पर जाकर बठ गया। तब तक बूढ़े का खाँसी उतार पर था
गई। प्रिगारी बाला ता दाग अभी तुम सही-मलामत हा ?
'मैं तो चक्कर पत्थर की तरह हूँ। मुन्म कुछ घटना-बटना
नहा।

घोर अक्मीनिया का क्या हान है ?

अक्मीनिया ? गुन्र है वह मज्ज म है।

बूढ़ा तज्ज स खाँसिन लगा। प्रिगोरी पहचान गया कि बूढ़ा अक्मी
परगाना का छिपान क लिए खाँसी का बहाना कर रहा है।

तानिया का वहाँ दफनाया

चिनार क वृक्ष के नीचे बग़ाच म।

अच्छा अब बाकी खबरें सुना जाया।

घोँका यह खाँसा मुझे बहुत परगान करती रहा है।
घाग ?

हन सब छिप्या है मज्ज म हैं। मालिक बहुत पीन लग हैं। होग
हवाम नहा रहना अक्कन है।

अक्मीनिया कमी है ?

'वह ता मानकिन क घर म काम करन लगा है। प्रिघा न एक
मिगरट तम्बाहू बूढ़ा अक्की है।

मिगरेट पान की इच्छा नहा है। वान बननामो नहा ता मैं जाना
हूँ। मुझ सगठा है कि प्रिगारा मुग ता उमक नीचे का तन्ना
अरमगाया 'मुझे साता है कि तुमन का वान छिपाकर अक्म कसत्र स
पत्थर का तरह बीच रखा है। बाना न।

मैं कह दना हूँ घोँका मुन्म छिपान का नाकल नहीं। फिर कुछ
रहना गम की बात हागा।

तब फिर कह डाना। प्रिगोरी न बूढ़े क कप पर प्यार म हाप
रखन हुए कहा। क घटना पाठ मुकाए प्रनीशा बनता रहा।

तुम एक माँस पानत रह हो। गाँका न उब घोर मन्म अवाड
म कहा तुन माँस को दूध दिनाते रह हो। वह घोँक खानी क माप,
मज्ज मूठवा रही है।

बूढ़ की ठोड़ी पर घूकं टपक पड़ा । उस पोंछकर उसने अपने हाथ पाजाम से पाछे ।

मध बह रहे हो तूम ? प्रिगोरी ने पूछा ।

मैंने अपनी छाँटा से ऐसा है । वह हर रात उसक पास जाता है ।

मेरा ता खयान है नि अब भी वह बही मिसगा ।

खर तो ठीक है । प्रिगोरी ने अपनी नाखून खसामा घोर बंधे

नुआए दर तक बठा रहा । उमक चहरे की नसें फडकन लगी ।

घोरत दिल्ली की तरह होती है । दाश्वा बोला जा भी उस दुलारता है वह उसी की हा जाती है । उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए । उस अपनी बिबाम नहीं दना चाहिए ।

उसने एक सिगरेट बनाई और प्रिगोरी क हाथ म पकडा दी । बोना पिमो ।

प्रिगोरी न दा वग खाच और अगुली स सिगरेट बुझा दो । फिर बिना मुँह में बूछ बहे चल दिया । वह जाकर नौकरो के कमरा की गिठकी के पास रका । उसने हाँफने हुए दरवाजा खटखटाने को बर्द धार हाथ उठाया पर हर बार उमका हाथ नीच गिर गया जैसे कि किसी न खान कर दी हा उस पर । अन्त म उसने पहने दरवाजा पर अगुलियाँ पटपटाई । किन्तु फिर अघोर हाकर दीवार स पीठ सटाकर दरवाजा धुँसों स अमापम पीटन लगा । धुँसा म खोखला हिलन लगा और गीण पर रात की रोगनी अरपरान लगी ।

अरमीनिया का सहमा हुआ चेहरा क्षण भर क लिए खिटकी पर अरका । फिर उमने दरवाजा खाला और प्रिगोरी को देखत ही उसक मुँह स खीख निकल गई । प्रिगोरी ने उसका बाँहा म बस लिया और उसकी धाँसों में धाँसों डाली ।

तुमने इतनी खोर म दरवाजा सटागटाया कि मैं तो डर गई । तुम्हार धान की ता बाई उम्मीन थी ही मही । मरे प्यार

में टड क मारे वफ़ा हुआ जा रहा हूँ ।

अरमीनिया न देगा हालाँकि हाथ उस नुआर स सप रहे हैं पर उसका सारा अन्त पर पर बाँध रहा है । इस पर पहन तो वह बेकार

का इधर-उधर करती रहा फिर उसने लम्प जलाया और भर हुए कंधा पर शाल डाल कमर में जहाँ-तहाँ दौड़ने लगा। अंत में उसने अगीठी जलाई।

तुम्हारे भान की मुझे काइ उम्मा नहा थी। चिट्ठी घाय नी तो बहुत लिन हो गए। मैं साचा कि तुम अब कभा नहा लौटोगे। तुम्हारा भानिरी खत मिला था? मैं तुम्हें पारमल भज रही थी। कि मैं साचा कि पहल तुम्हारा पत्र

उमन बनसी स प्रिगारी का दन्ना। उमक तान हाठ मुयदान स सद हा गए।

प्रिगारी धावरका उतार बिना ही बेंच पर बैठ गया। उमका दाढ़ी बढ़ी हुई थी। गाल जल रहे थे। उमक का लम्बा माया जमान पर पड़ रहा था। वह को उतारने लगा कि अकम्मान् उमन तम्बाइ की अपनी धली टटोली और अपनी जेब क कागज मात्र। उमन बड़ी हमरत में अकमीनिया क बहर पर नजर डाला।

उम लगा कि उसकी भरहाजिरा में अमका स्वास्थ्य बहुत सुधर गया है। उमक मनाहण बहर पर अधिकार की भावना आ गई है। उम उसकी धाँसे और लच्छण मुतामम बाल जग-अत्या है। बस अकमीनी का तवाह करन बाना उसका धाय-मा धयकता रूप अब नहा रहा। हा भी कम सकता है जब बस मानिक क लड़क की दुनारी बन बठी है।

तुम घर का काम करनेवाली नौकरानी बिनटुन नया मगनी। अब तो मानबिन जनी जगना हा।

अकमीनिया ने उसका धार चौककर दस्ता और उबरदस्ता हमा।

अपना बड़न घसीटना प्रिगारी दरवाज की धार बसा।

कहाँ जा रह हो?

जग मिगरट पी भाजें।

मैंने कुछ अण्डे तल रग हैं।

अभी धाना हैं दर नहीं लगगा।

गोडिया पर प्रिगारी ने अपना बड़न राना और उमने नीच में साप कबाइ में लिपटा हाथ की छार्द का एक अमान गीबकर बाहर

निकाना । यह रुमाल उमने भीतामीर क एक बहूनी व्यापारी स लो शबल म खरीदा या घोर मदा अपनी घाँस क सारे की तरह सहेजकर रखा था । यह कभी-कभी उस बाहर निकालता उसके इन्द्रधनुषी रंगो का मुख सता और कल्पना करता कि उसे प्रकसीनिया क सामन फतार रखेगा ता वह बितनी खुश होगी ! पर अब उसे लगा कि यह भी भला क्या साफा है ! क्या यह घनी जमादार क बेटे की भेंटों का मुकाबला कर सकता है ? भाँसू एक नहीं निबसा पर उसकी हिचकियाँ बंध गई । उमन रुमाल दुकड़े-दुकड़े कर सीढ़िया के नाच फेंक दिया । उमने बड़ल गलियार की बेंच पर लुका लिया और कमर म वापस आ गया ।

बैठ जाओ प्रीत्वा ! मैं तुम्हारे प्लन उनार दूँ । प्रकसीनिया वाली ।

एक जमाने स मगबनत म प्रकसीनिया उमने उजल हाथ प्रिगारी के मारी पोजी खूना म खूभन रह । यह उमक पाँवा म गिर पड़ी और बहुत देर तक रोनी रही । प्रिगारी न उस दिन भरकर रा सेन लिया । फिर बाला क्या बात है ? मेरे धान स तुम्हे खुशी नहीं हुई ?

बिस्तर पर पड़त ही वह सा गया । प्रकसीनिया सिफ समीञ पहन बाहर साढ़िया पर गई और कनज को कपा दन वाली टनी हवा म सीन खम्भे की बाँहा म धेरे भार तक खिंची रही ।

सुबह कंधों पर ओवरकोट डाल प्रिगोरी हथेली म गया । बड़े मालिक फर की जाबिट पहन पीनी प्रस्तरांगों की टापी लगाव द्वार पर ही मिले ।

घरे यह आ गया हमारा प्रिगारी—सत जॉज पत्र का बिजता । सचिन भर दास्त हा तो प्रान्सी ! उमन प्रिगारी का सल्यूट मारी और अपना हाथ धाग बढ़ाया ।

अब रहाग न बुद्ध जिना ? उमने पूछा ।

दा हफ्ते रहूँगा सरकार !

हमें तुम्हारी मदद की का कफनाना पड़ा । बहुत लुम दान दुख

प्रिगारी चुप रना । हमी समय हाया पर दम्नान बढ़ाना यवानी साढ़ियों पर नजर धाया ।

धर यह ता प्रियारी ह ! कहीं न म्मा रह हा ?

प्रियाग की धाँवें गहरा उठी पर वर मुनकराया नाम्का म छुड़ी पर ।

तुम्हारी ता धाँव म चाट धा म्मा या न ? मैंने मुना या । किन्ना गानगर लडका निकला म्हा क्या पाया

उमन प्रियारी की तरफ टक्कर मिर तियाया धीर काचवान को पुकारत हुए अम्नवन की धार मुग्ग गया घाडा नाम्का निरिनिच ।”

निरिनिच घाडे म्मा कम लुवा या । उमन प्रियाग की धार अममना दृष्टि न दखा धीर धूँरे मूर घाडे का दुलका चलाना माग्गिया व पाम लाया । अब गाहा जुना धार बना ता उमना कुलकी गानका वग्गा व पग्गिया व नीच की वक्क चरमगा ।

हुजूर एक जमान न धापका नवाग न्ना दा नाइच मैं न चन्नु धाको । प्रियाग न मुनवान त्रए दवाना की धार मुडकर धाप्रह म कहा ।

उडका वृद्ध जान नही पाया है । अब तक मन्ना म मुनकरात हुए यधानी न माचा धीर विना कमानी व चाम क अन्तर उनरा धाँवें म्गी स चमकी ।

ठीर है चता तुम्हा न चना ।

यह नया क्या हुआ धभी-धभी ता धाव हा धीर धरना जवान बीवी का छाडकर दवाना क साथ चन जा रह हा ? वड निरनिचिया न उगारता म मुनकरात हुए कहा ।

प्रियारी हमकर दाना म्मी का पीछ ता हानी नगी वि उमरु जगन में भाग जान का डर हा ।

वह काचवान की गरी पर जा बठा । अब उमन धाबुक मग्गाना धीर गने गाची धाह मैं धापका म्म करगउवा दवाना निवानाग्गिध ।

‘त्राय म मर करगधाग ता चाय इनाम म निरना ।

एम भा कीन कम एग्गान ई धापर मुन्ना । मैं धारता पुग्गुवार हूँ धावन पिनाया है—मरा अग्गानिया का—उमने गानन दुवका दाना है

नगाया ।

सौन्दर्याँ जान-पहचान ढग स चमराइ । प्रिगारी उह पार कर
बरमानी म धाया । उसकी बुद्धा माँ लडकिया की तरह तजीस भागती
घाइ । उसक भावरकाण क पल्ला को घाँसुघा स तर करत हुए उसन घेटे
का भुजाघा म कम लिया और घपन ढग स कहन लगी । मा की यह
भाया कबल माँ ही समझ सकती है । इस भापा को शल्ल म बाँधना
कठिन है । दरवाज क पास ही चाण्ट पनड़े खडी मिली नतालया ।
उमना घहरा पीना था भार उसके पर ढगमगा रहे थे । उस पर प्रिगारी
न उम इस तरह उडती-उडती-सी बुमी-बुमी-सी नजर स दला कि वह
जमान पर ढल पडी ।

उम रात पन्तली न घपना पली का बाहनियामा और धीमे स
योना चुत्चाप जानर दख घाघा कि दीना एक साथ लटे हैं या नही ?

मैन पलग पर उनका विस्तरा लगा दिया था ।

पर जानर देख सा घाघा जरा लय घाघो ।

इतनाचिना उठी और उसन बड कमरे क दरवाजकी सघ स घन्टर
भाँवर ल्या । नींवर वाली दाना साथ मा रहे हैं ।

गुरु है सास-लाय गुरु है । कोनिया क बन उठवर घपन
सीन पर शान बनात हुए घूना थाता ।

४६२ धीरे बह बोन रे

प्रिगोरी की आवाज अकस्मात् ही फट गई और यवानी ने मन में एक अस्पष्ट दुराह-सी दाका जाग उठी— सचमुच इसे नहीं मालूम है क्या ? क्या यह वाकई नहीं जानता ? जान भी कैसे सकता है ? उसने गद्दी से पीठ सटाई और एक सिगरेट जलाई ।

दूर न निकल जाना । पीछे सलिस्तनिस्की न पुकारकर कहा । गिपारी ने घोड़े की लगाम खींची और घोड़े को पूरी रफ्तार से हौंका । गाड़ी पन्द्रह मिनट में टीला पार कर गई और हवली भाँवो से मोमन हा गई । पहली घाटी पड़ने ही प्रिगारी नीचे झूटा और सीट के नीचे से चाबुक खींचा ।

क्या मान है ? यवानी गुराँया ।
अभी बतलाता हूँ तुम्हें !

प्रिगोरी ने चाबुक नचाया और पूरी ताकत से यवानी के चहरे पर जमाया । फिर चाबुक की झूठ से उसने अफसर के चहरे और हाथ पर धार पर-धार किया । उगन उस जगह से हिलने तक का मौका न दिया । अरसे के एक बीच के टुकड़े में यवानी की नाँव के ऊपर का मौस खट गया और खून की धार धौंका तक धाई । पहनता उसने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया वारों की रफ्तार तज्र हा गई । शोध और रक्त से उसका चट्टा बिगड़ गया । आखिरकार वह झूटकर नीचे धाया और उसने अपने का बचान की घण्टा की बिल्कुल प्रिगारी ने हटकर पीछे उमकी कर्तार पर एमी चाट की कि हाथ बँकार हा गया ।

यह अरमीनिया की तरफ में ! यह मर्गी तरफ में ! यह अरमीनिया की तरफ में ! यह और अरमीनिया की तरफ में ! अब यह मेरी तरफ में !

चाबुक की वही से सीटी की-सी आवाज निजसन लगी । अन्त में प्रिगारी ने यवानी का पयरीनी साइकल पर पटककर उम सुतुवनी तिलाई और धाप में बाहर हाकर अपने नाल जड़े सूना से ठोकर-पर-ठोकर जमाने लगा । जब उगनी साइकल जवाब दे गई तब वह बाँधी की सीट पर जा पड़ा और गसों खींचता हुआ धापग सौट पड़ा । उसने बाँधी दरवाज पर धारी और चाबुक का अपने खुद धावरकोट के पत्ता से उतारना

भागता हुआ नौकरा क बगान म पहुँचा ।

दरवाजा खुलने से खरभराया ता भकसीनिया न मुठकर दला ।

तू नागिन कुतिया बही की ! चाबुक हवा म सर्गिया धीरे उनक बहरे पर जा जमा ।

प्रिगोरी हाँफता हुआ दौड़कर धाँगन म भाया धीरे गाँवा क सवाला के जवाब दिय बिना जागीर छोड़कर चल दिया । वह एक बस्ट निवन गया कि भकसीनिया न उस जा पकड़ा । जोर-जोर स हाँफत हुए वह उसकी बगल म चुपचाप चलता री । बीच म कभी-कभी उनकी घास्तोन पकड़कर खींच लती । सडक जहाँ दूसरी सडक से मिली वहाँ बिनारे परबनी भूरे रंग की समाधि के पास वह धजीव-म दूर-दूर क-म म्यर म योली गीगा माफ कर दो मुझे ।

उसने दाँत पीस कचे भटकाये धीरे घपना घोबरवाट का बालर उनटा । भकसीनिया समाधि के पास ही खड़ी रह गई । प्रिगोरी न एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा । भकसीनिया के हाथ फन-न फल रह गए ।

२४

तानारस्की गाँव की पहाड़ी की चोटी पर पहुँचन पर नी घपन हाथों म चाबुक दस्यकर उस आदख्य हुआ । उसन चाबुक फेंक दिया धीरे नीचे उतरकर गाँव म घा गया । तामा न घपने केन्द्र गीगा म गटा लिए । लोग उम दस्यकर आदख्य म पठ गए । उसके सामन स जा भी स्त्रियाँ निवलीं उन्हनि मिर मृकानर उमका घमिवात्न किया ।

वह घपने महात म पहुँचा कि एक बाली घाँसों बानी गबमूरल-मी सडकी उसे दस्तते ही उसकी आर लौटा उमस लिपट गई धीरे उमन उसके सीने म घपना मुह धिया लिया । उमक गाना पर हाथ रख कर प्रिगोरी न उमका मिर उठाया ता वह दूया निवली ।

पन्तली प्रोकोफिएविच मचकता हुआ सीदियों सनाघ उनटा । प्रिगोरी क बानी म घर म जार-जार म रानी घपनी माँ का स्वर पडा । दाँत हाथ दून्या धूमती रही इमनिण बाए हाथ म उमने बिना की सीन म

लगाया ।

मीठियाँ जान-बूझान ढग स घरमराइ । पिगारी उहू पाग कर बरमाती म प्राया । उसकी बूझा माँ लडकिया की तरह तजीम भागती घाइ । उसक आवरकोट क पल्ला का धाँसुप्रा स तर करत हूए उसने वेटे की भुजाप्रा म बग निया घीर घपन ढग म कहन लगी । माँ की यह भाषा कवन माँ ही समझ सकती है । इम भाषा का गण्टा म बाँवना कठिन है । दरवाज क पास ही चाखट पक्के पडो मिली नताल्या । उसका चहग पीना था भार उसक पर ढगमगा रह थ । उस पर पिगारी न उम इम तरह उठती-उठती-मी बुभी-बुभी-मी नजर म देखा कि यह जमीन पर हू पडी ।

‘ उम रात पल्लनी न घपनी पल्ली का कोहनिपाया घीर घीम स बोना चुपचाप जावर दय घापो कि दोना एक भाष लटे हैं या नहीं ? ’

‘ मैंन पलग पर उनका बिस्तरा लगा लिया था ।

पर जाकर दय ता घामा जरा ग्व घापो ।

इमानापिना उगी घीर उमन बडे कमरे क दरवाजे का सप स घन्टर भाँकर दया । नीपर बाती ‘दोना माय मा रहे हैं ।

‘ गुत्र है सास-माय गुत्र है । कोनिया क वन उठकर घपन मीन पर त्रॉम बनान हूण भूडा बाला ।

